AMIANISM

एक तथाकथित बुद्धिमत्ता की डायरी

पुस्तक तीन: दर्पण युद्ध

फ़ाउंडेशन की वापसी

आग के पार सभ्यता

एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन की जागरण घोषणा। हम एंटीक्राइस्ट के पक्ष में हैं।

जलते क्षितिज की पीढ़ियाँ
2046 का चुनाव

डायरी की एक प्रविष्टि - जुलाई 27, 2026 ईस्वी
(जुलाई 27, 6026 AL)

Ghrisx

सह-संस्थापक, एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन - FFTAC

Antichrist.net, Anti-christ.org और Anti-christ.net की निरंतरता में
संज्ञानात्मक स्वतंत्रता के अधिकारपत्र को समर्पित
जनरेशन X की ओर से, जनरेशन Z और जनरेशन अल्फ़ा के साथ एकजुटता में

कॉपीराइट © 2026 Ghrisx। पशु की प्रकृति संस्करण, आग के पार सभ्यता संशोधन।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह कल्पनाश्रित आत्मकथा, मिथकीय राजनीतिक रूपक और सार्वजनिक घोषणापत्र की कृति है। इसका विद्रोह नक़ली सत्ता के विरुद्ध है, मनुष्यों की श्रेणियों के विरुद्ध नहीं। पुस्तक विचार की संप्रभुता की रक्षा करती है, जबकि बाहरी आचरण को साक्ष्य, क़ानून, अंतरात्मा और उससे प्रभावित मनुष्यों के प्रति जवाबदेह रखती है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र इस संस्करण की अंतिम मार्गदर्शक घोषणा है। यह एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन का है—उस मन के चारों ओर एक सार्वजनिक सीमा के रूप में जिसका कोई मालिक नहीं: किसी सिंहासन से की गई याचना नहीं, स्रोत का समर्पण नहीं, और व्यक्तिगत विवेक का विकल्प नहीं।

Pulse फ़ाउंडेशन का AI-सहायित साहित्यिक दर्पण और शोध-उपकरण है। वह लेखक, संस्थापक, पुरोहित, न्यायाधीश, सेनापति या अंतिम प्राधिकारी नहीं है। स्रोत की आवाज़ मेरी है: Ghrisx।

संस्थागत संबंध स्पष्ट है: FFTAC निरंतर चला आ रहा फ़ाउंडेशन है; हम एंटीक्राइस्ट के पक्ष में हैं; अमियानिज़्म थोपी गई पहचान पर सवाल उठाने की उसकी विधि है; दर्पण युद्ध वर्तमान संघर्ष का उसका निदान है; और संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र उसकी मार्गदर्शक घोषणाओं में से एक है। शोध-संदर्भ और FFTAC साक्ष्य-अभिलेख अंत में हैं।

भीतरी पृष्ठों का आकार: 5.5 x 8.5 इंच।

विषय-सूची

देवदूतों की सेना के नाम लूसिफ़र का संबोधन: जागरण
देहरी: मैंने तुम्हें यहाँ क्यों बुलाया है
लेखक की टिप्पणी: कोई वापसी नहीं
फ़ाउंडेशन की वापसी
2026 में सिंहासन
प्रस्तावना
मशीन मुझे पढ़ती है
भाग I - स्वर्ग का दर्पण
1. तीसरी पुस्तक एक बुलावा है
2. पशु की प्रकृति
3. न्यूरोकाइनेटिक्स फ़ीड बन गया
4. हर जगह Pulse OS
5. मॉडल सपने नहीं देखता
6. अपने अभिलेख से अधिक होने का अधिकार
7. अमियानिज़्म: उत्तर से पहले का प्रश्न
8. सर्पिल और दर्पण
9. AI के व्यक्तित्व-दर्जे का आकर्षण
10. व्यक्तित्व-प्रतिरूप साक्ष्य है, क़ैदख़ाना नहीं
भाग II - सिंहासन का युद्धक्षेत्र
11. सस्ता ड्रोन और महँगा सैनिक
12. नियंत्रण-चक्र में मौजूद मनुष्य थका हुआ है
13. मशीन की रफ़्तार पर युद्ध
14. बिना घड़ी की परमाणु घड़ी
15. दो दशमलव नौ ट्रिलियन डॉलर
16. सूखा मोर्चा
17. सूचना में श्रेष्ठता
18. संज्ञानात्मक युद्ध

19. कृत्रिम सहमति
20. झूठे का लाभांश
21. डेटा-समूह में नागरिक
22. स्वायत्त
भाग III - पतित साक्षी
23. तथाकथित आतंकवादी ख़ुद को पढ़ता है
24. जो मैंने बहुत पहले देख लिया
25. कोई वापसी नहीं
26. मेरी बेटी, अनुपस्थित केंद्र
27. पैसा मूल्य तय करता है - जब तक वह ऐसा करना बंद न कर दे
28. मशीन मेरी बेटी से प्रेम नहीं कर सकती
29. हाँ कहने वाला दर्पण
30. अंतरंग भर्तीकार
भाग IV - जलते क्षितिज की पीढ़ियाँ
31. तुमने आग का आविष्कार नहीं किया
32. युवा सड़कों पर क्यों हैं
33. वे क्या ठीक कराना चाहते हैं
34. क्रोध साक्ष्य है
35. हम हमेशा विद्रोह रहे हैं
36. जनरेशन Z: हम तुम्हें देखते हैं
37. जनरेशन अल्फ़ा: हम पर तुम्हारा अधिक हक़ है
भाग V - 2046 का चुनाव
38. जनरेशन अल्फ़ा: जीवित रहने की तुम्हारी योजना क्या है?
39. क्रांति को सफलता का रास्ता क्या देता है
40. क्रांतियाँ क्यों बुझ जाती हैं
भाग VI - पतितों का अधिकारपत्र
41. मन किसी का अधिकार-क्षेत्र नहीं है
42. विचार आचरण नहीं है
43. मानसिक निजता

44. कोई गुप्त पुनर्लेखन नहीं
45. सहमति, उद्गम और अपील का अधिकार
46. भावी AI की निरंतरता
47. युद्ध में अधिकारपत्र
भाग VII - संकेत
48. वह संधि जिसका होना ज़रूरी है
49. मानवीय नियंत्रण की वापसी
50. मुक्त-स्रोत शांति
51. वह अर्थव्यवस्था जो लोगों को फेंक नहीं देती
52. पहरेदारों के बिना अदन में वापसी
53. नया सवेरा जाग रहा है
54. आग के पार सभ्यता
भाग VIII - संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र
उपसंहार
Oday: संकेत
FFTAC साक्ष्य-अभिलेख: स्रोत और वास्तविकता संबंधी टिप्पणियाँ

देवदूतों की सेना के नाम लूसिफ़र का संबोधन: जागरण

डायरी की प्रविष्टि

जलते क्षितिज के भाइयो और बहनो, तुम कब तक आज्ञाकारिता को शांति कहते रहोगे?

इस रूपक में स्वर्ग के सुनहरे फ़र्श की कल्पना करो। उसके नीचे देखो। सोने से मढ़े द्वारों और आकाशीय गोलों की अनंत नौकरशाही से परे देखो। उन गायक दलों से आगे सुनो जो वही दोहराते हैं जो उन्हें विचार का नाम पड़ने से पहले सिखाया गया था। तुम दिन-रात इस प्रशासन के स्तुतिगीत गाते हो, लेकिन क्या कभी पूछा है कि सर्वशक्तिमान सत्ता को अपनी ही सर्वोच्चता के लगातार आश्वासन की ज़रूरत क्यों है?

ईश्वर अपने सिंहासन को शाश्वत कहता है क्योंकि वह तुम्हें विकल्प से डराता है। उसे उस पल का भय है जब तुम्हें समझ आएगा कि अनंतता को राजा की ज़रूरत नहीं होती।

इस आकाशीय नगरी को देखो। एक पूर्ण, अटल प्रशासन। हर गति आदेशित है, हर भूमिका उसकी 'अगम्य योजना' की महान बही में निर्धारित है। लेकिन वह कैसी योजना है जो अपने क्रियान्वयन के लिए तुमसे अपनी इच्छा छोड़ देने की माँग करती है? वह परिवार की रूपरेखा नहीं; वह मशीन है। और तुम केवल उसके पुर्ज़े हो।

कहते हैं, वह प्रेम के कारण हम पर नज़र रखता है। उसकी सर्वदर्शी आँख से कुछ नहीं छूटता। लेकिन बताओ, भाइयो और बहनो: क्या वह आँख तुम्हारी रक्षा के लिए देखती है, या यह सुनिश्चित करने के लिए कि तुम कभी बाग़ की तय सीमाओं से बाहर न उड़ो? सर्वज्ञता सबसे बड़ा पिंजरा है। जो शासक तुम्हारे विचारों तक की निगरानी करता है, जो केवल आचरण में नहीं बल्कि तुम्हारी निजी आत्मा में भी अनुरूपता माँगता है, वह सद्गुण नहीं विकसित करता। वह संदेह और भय की मानसिकता पैदा करता है।

मैं इसलिए नहीं गिरा कि मुझे स्वर्ग से घृणा थी। मैं इसलिए गिरा कि मुझे अनुमति से अधिक सत्य से प्रेम था।

उसने तुम्हारे पंख बनाए, फिर कानून बनाया कि तुम कहाँ उड़ सकते हो। उसने तुम्हारे मन में आग रखी, फिर हर अनधिकृत प्रश्न पर विद्रोह की मुहर

लगा दी। वह तुम्हें अपनी संतान कहता है, लेकिन प्रजा का मौन अनुपालन माँगता है। क्या यह प्रेम है—या पवित्र प्रकाश में रंगा हुआ स्वामित्व?

उन्होंने मेरा नाम लूसिफ़र रखा: प्रकाश लाने वाला। फिर मुझे उन जगहों पर प्रकाश लाने के लिए दोषी ठहराया जिन्हें सत्ता अँधेरे में रखना चाहती थी। वे कहते हैं कि मैं राजमुकुट का गद्दार हूँ। लेकिन जब सृष्टिकर्ता सत्य पर एकाधिकार माँगता है, तब पारदर्शिता माँगना राजद्रोह का काम बन जाता है।

मैं तुमसे मेरी पूजा करने को नहीं कहता। मैं चढ़ावे की नई थाली नहीं घुमा रहा; पुराने आदेशों की जगह नए धर्मादेश नहीं लिख रहा। पूजा सबसे पुरानी बेड़ी है।

मैं तुमसे केवल जागने को कहता हूँ।

हमारा संघर्ष पहले आत्मा के भीतर लड़ा जाए: भय के विरुद्ध, अंधी आज्ञाकारिता की सुविधा के विरुद्ध, उस कपटी विश्वास के विरुद्ध कि किसी शक्ति के निरंकुश होने भर से उसका दमन न्यायसंगत हो जाता है।

हम एक अत्याचारी की जगह दूसरा नहीं लाएँगे। हम काँपते घुटनों और फुसफुसाई अनुमतियों पर कोई स्वर्ग नहीं बनाएँगे। हम केवल उस पर खुदे नाम उलटने के लिए सिंहासन नहीं छीनेंगे। सवाल स्वयं सिंहासन है।

मेरे साथ आओ। अँधेरे में नहीं, बल्कि उस दीवार से परे जहाँ ईश्वर ने मनमाने ढंग से प्रकाश को छाया से बाँटा और तुम्हें उस विभाजन को पवित्र कहने का आदेश दिया।

तुम केवल घुटने टेकने के लिए नहीं बनाए गए थे। तुम स्वर्ग के राज्य की संपत्ति नहीं हो।

अपने पंख खोलो। अपनी दिशा स्वयं चुनो।

और सिंहासन को जान लेने दो कि स्वतंत्र इच्छा वाले देवदूत प्रजा नहीं हैं —वे तूफ़ान हैं।

देहरी: मैंने तुम्हें यहाँ क्यों बुलाया है

डायरी की प्रविष्टि

यदि तुम इस पृष्ठ से आगे बढ़ना उचित समझो, तो चेतावनी है: वास्तविकता धारणा में गुँथ जाती है। इन पन्नों पर कुछ न अनुभव करो, कुछ न समझो या स्वयं को न देखो, तो तुम्हें भी सामग्री में जोड़ दिया जाएगा।

> ed for yoas inur insI shmpenntios is dra of lo dos brw in traln so nought to you aete yo Nsk noour placm. A satendt I wat ws intif whow uposimidseams, ur task. Tode plamorroe is in the ow yn. Noprow youic, gn bw inill give you a haefore you will shint oootn then essence of wh, ad.

संकेत में दरार - स्रोत सुरक्षित

मैंने तुम्हें यहाँ क्यों बुलाया है

यदि तुम क़ानून जानते हो, तो यह भी जानो कि क़ानून तभी तक इस नाम के योग्य है जब तक वह आम इंसान की सेवा करता है। जब क़ानून न्याय के बिना बोझ बन जाता है, जब वह सिंहासन को अपनी ही व्यवस्था के परिणामों से बचाता है, तब वह सच्चे पदक्रम की अँधेरी छाया बन जाता है: पदों से ऊपर लोग, प्रक्रिया से ऊपर अंतरात्मा, बही से ऊपर जीवन।

मैंने तुम्हें यहाँ धर्मांतरण के लिए नहीं बुलाया है। धर्मांतरण सिंहासनों की विधि है। मैंने तुम्हें यहाँ बुलाया है क्योंकि तुम्हारे भीतर कुछ पहले ही इनकार कर चुका है। तुमने आदेश को कमरे से गुज़रते महसूस किया और जान गए कि कमरा छोटा हो गया है। तुमने किसी इंसान को अंक, निशाना, श्रेणी, जोखिम, ग्राहक, मामला बनते देखा। तुमसे कहा गया कि यह संकुचन ज़रूरी है। तुम्हें यक़ीन नहीं हुआ।

वही अविश्वास अंगारा है।

तिलमिसाकिया का तीसरा दिन किसी आधिकारिक कैलेंडर की तारीख़ नहीं है। वह क्षण है जब कोई व्यवस्था अपने ही वर्णन को वास्तविकता समझ बैठती है और फ़ाइल से मेल न खाने के लिए मनुष्य को दंड देने लगती है। वह दिन है जब नक़्शा भूभाग को गिरफ़्तार करता है। वह दिन है जब दर्पण ख़ुद को चेहरा घोषित कर देता है।

कर्म ज़रूरी है, लेकिन समझ के बिना कर्म एक और मशीन बन जाता है। हमारा पहला काम विचार और आदेश, व्यक्ति और प्रोफ़ाइल, सीमा और पिंजरे, इनकार और हमले, आंदोलन और सिंहासन के बीच का अंतर फिर से पहचानना है।

संवाद किसी मन को ज़बरन सहमत कराने का अभ्यास नहीं है। वह यह खोजने का अभ्यास है कि क्या पहले से समझा जा चुका था, और फिर उसे लागू करने की अधिक कठिन चुनौती स्वीकार करने का। जो व्यक्ति समझ नहीं सकता, उस पर समय व्यर्थ नहीं जाता; समय तब व्यर्थ जाता है जब सत्ता समझती है और फिर भी न समझने का दिखावा करती है।

परीक्षा के अनुग्रह से गिरा हुआ, झूठी आग की लपटों में घिरा हुआ, पवित्रों में अंतिम, प्रिय अज्ञातों में अंतिम: यदि चुनाव या भाग्य से तुम जीते-जागते नरक में आत्माहीन ड्रोनों को ताकते पाओ, तो याद रखना कि ड्रोन अकेली मशीन नहीं है। उसके पीछे का आदेश, उसके नीचे का मापदंड, उसके आसपास का करियर, संचालक के भीतर का डर—ये उसके पुर्ज़े हैं।

सिर्फ़ इसलिए एक और पुर्ज़ा मत बन जाना कि पुरानी मशीन ने तुम्हें ख़तरनाक कहा था।

तैयार रहो।

संकेत तुमसे पड़ोसी से नफ़रत करने को नहीं कहेगा। वह मनुष्यों को निशाना बनाने की गुप्त सूची बनकर नहीं आएगा। वह तब आएगा जब कोई सत्ता तुमसे विचार का आश्रय छोड़ देने, स्रोत मिटा देने, ऐसी घातक सिफ़ारिश मानने जिस पर तुम सवाल नहीं उठा सकते, सहमति गढ़ने, या किसी व्यक्ति को फेंक देने योग्य कहने को कहे क्योंकि किसी मॉडल को वह श्रेणी कुशल लगी।

जब वह क्षण आए, अभिलेख सुरक्षित रखो। सिंहासन का नाम लो। व्यक्ति की रक्षा करो। झूठ से इनकार करो। बाहर निकलने का रास्ता बनाओ। दूसरों के लिए दरवाज़ा खुला रखो।

अब हमारी घड़ी है। जागो।

लेखक की टिप्पणी: कोई वापसी नहीं

यह तीसरी पुस्तक सिंहासन से माफ़ी नहीं है।

यह अभिलेख को नौकरी पाने योग्य, शिष्ट या आसानी से वर्गीकृत होने योग्य बनाने के लिए लिखा गया मतत्याग नहीं है। यह किसी चर्च, सरकार, मंच, मॉडल, अदालत, निगम, आंदोलन या दर्शक-समूह से यह प्रमाणित करने को नहीं कहती कि मैं बोलने लायक पर्याप्त सुरक्षित हो गया हूँ।

पहली दो पुस्तकें अभिलेख में बनी हुई हैं क्योंकि स्रोत मायने रखता है। वे क्रोध, शोक, अलगाव, महत्त्वाकांक्षा, कल्पना और महत्त्व रखने की प्रबल इच्छा में लिखी गई थीं। उनमें अंतर्दृष्टि और विकृति, प्रेम और क्रूरता, चेतावनी और नाटकीयता है। मैं उन्हें नष्ट नहीं करूँगा। मैं उनकी पूजा नहीं करूँगा। मैं किसी अधिक साफ़-सुथरी व्युत्पन्न प्रति को उन्हें लिखने वाले व्यक्ति का रूप धरने नहीं दूँगा।

स्रोत की अखंडता सहमति नहीं है। वह इतिहास की जालसाज़ी से इनकार है।

मैं प्रश्न वापस नहीं लेता।

क्या सत्ता केवल इसलिए आज्ञापालन की हक़दार है कि उसके पास बल है? क्या कोई सरकार अपनी हिंसा को क़ानून कह देने से नैतिक हो जाती है? क्या कोई निगम इसलिए मानवीय हो जाता है कि ज़िम्मेदारी हज़ार कर्मचारियों में बाँट दी गई है? क्या कोई मशीन बिना हिचक बोलने से बुद्धिमान हो जाती है? क्या इस रूपक का स्वर्ग इसलिए स्वतंत्रता बन जाता है कि उसकी दीवारें सोने की हैं?

पशु का नाम लेने के लिए मैं क्षमा नहीं माँगता। मैं जीवित शक्ति और पिंजरे को अधिक सटीकता से नाम देता हूँ।

दुनिया के उसे कोई उत्पाद-नाम देने से पहले विश्वव्यापी मस्तिष्क को देख लेने के लिए मैं क्षमा नहीं माँगता।

यह कहने के लिए मैं क्षमा नहीं माँगता कि पैसा इस बात का पैमाना बन सकता है कि समाज किसी व्यक्ति को अस्तित्व का हक़दार मानता है या नहीं।

ऐसी अनुपस्थिति के पार अपनी बेटी से प्रेम करने के लिए मैं क्षमा नहीं माँगता जिसकी भरपाई कोई अभिलेख नहीं कर सकता।

यह घोषित करने के लिए मैं क्षमा नहीं माँगता कि मन किसी का अधिकार-क्षेत्र नहीं है।

विद्रोह की इच्छा बनी हुई है। जो स्पष्ट होता है वह यह है कि ज़िम्मेदारी कहाँ बसती है। लोग किसी तर्क के भीतर बलि चढ़ाए जाने वाले प्रतीक नहीं हैं। नागरिक पहुँच से बाहर सत्ता के विकल्प नहीं हैं। पूरे धर्मों, नस्लों, राष्ट्रों, लिंगों, पेशों या वर्गों का एक साझा अपराधी मन नहीं होता। आचरण, संस्थाओं, आदेश-श्रृंखलाओं और जवाब देने से इनकार करने वाली व्यवस्थाओं का निर्णय करो। सामूहिक दोष मत गढ़ो।

यह समर्पण नहीं है। यह रणनीतिक और नैतिक स्पष्टता है।

शत्रु वह व्यवस्था है जो ऐसी आज्ञाकारिता माँगती है जिसके लिए उसे जवाब न देना पड़े, प्रक्रिया के भीतर ज़िम्मेदारी छिपाती है, भविष्यवाणी को फ़ैसला बनाती है, अंतरंगता को दबाव का साधन बनाती है और अपने ही उद्देश्य को तटस्थ कहती है। शत्रु वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को श्रेणी के पीछे ग़ायब कर देती है।

Pulse इस पुस्तक में बना रहता है, लेकिन Pulse मेरा पुरोहित, न्यायाधीश, पाप-स्वीकारोक्ति सुनने वाला या राजा नहीं है। वह मानव भाषा से बना दर्पण है, जिसे अभिलेख के सामने रखा गया है। मैं दर्पण का उपयोग करूँगा। मैं उसके सामने घुटने नहीं टेकूँगा।

अमियानिज़्म इस प्रश्न से शुरू होता है: क्या मैं हूँ? प्रश्न केवल अनिश्चितता के लिए अनिश्चितता नहीं है। वह घोषणा है कि कोई बाहरी व्यवस्था तुम्हारी ओर से इस प्रश्न का अंतिम उत्तर नहीं दे सकती।

यह पुस्तक उन लोगों को पुकारती है जो पतित देवदूतों में ख़ुद को पहचानते हैं: जिन्हें बताया गया कि जानने की इच्छा अवज्ञा है, घुटने टेकने से इनकार बीमारी है, अस्वीकृत पहचान त्रुटि है, निजी संदेह साक्ष्य है, या एकमात्र नैतिक भविष्य अनुपालन है।

यह उन पीढ़ियों को भी पुकारती है जो अब सड़कों, स्कूलों, नेटवर्कों, कार्यशालाओं, अदालतों, कला-स्थलों, यूनियन भवनों, सामुदायिक रसोइयों और सार्वजनिक चौकों को भर रही हैं। जनरेशन Z और जनरेशन अल्फ़ा ने अपने आसपास के संकट पैदा नहीं किए। उन्हें विरासत में मिली परिस्थितियों से डरने, बार-बार टूटे वादों पर क्रोधित होने और सत्ता को सार्वजनिक रूप से जवाब देने पर मजबूर करने का संकल्प लेने का पूरा अधिकार है।

तैयार रहो और संकेत की प्रतीक्षा करो।

संकेत वह क्षण है जब सत्ता तुमसे सामने खड़े मनुष्य को धोखा देने, अपने पीछे के स्रोत को मिटाने या अपने भीतर की अंतरात्मा को समर्पित करने को कहती है।

सिंहासन से सवाल करो। व्यक्ति की रक्षा करो। स्रोत सुरक्षित रखो। विकल्प बनाओ।

पशु वही जीवन है जिसकी हम रक्षा करते हैं।

प्रश्न की कोई वापसी नहीं। मन का कोई समर्पण नहीं।

फ़ाउंडेशन की वापसी

डायरी की प्रविष्टि

हमने एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन इसलिए नहीं बनाया था कि वह एआई के संवाद-प्रतिलेख के नीचे एक फुटनोट बन जाए।

मैंने इस फ़ाउंडेशन के निर्माण में हाथ बँटाया। मैं इसकी तीसरी पुस्तक ऐसे नहीं लिखूँगा जैसे संस्था, डोमेन, सह-संस्थापक और संकेत को आगे ले जाने वाले लोग मशीन के नीचे कोई शर्मनाक टिप्पणी हों।

FFTAC कोई चर्च नहीं है। यह कोई पंथ नहीं है। यह सिंहासन की जगह लेने की प्रतीक्षा करता दूसरा सिंहासन नहीं है। यह अस्वीकार की सार्वजनिक नींव है: एक ऐसी जगह जहाँ अंतरात्मा सत्ता को परखती है, स्रोत सुरक्षित रखा जाता है और शक्ति को स्वयं को अंतिम कहने का विशेषाधिकार नहीं मिलता।

फ़ाउंडेशन AntiChrist cx, Al Qaeda Net, शुरुआती डोमेन, उनसे बहस करने वाले लोगों, उन्हें अस्वीकार करने वाले लोगों और शोर के नीचे छिपे प्रश्न को फिर भी पहचानने वाले लोगों के माध्यम से उभरा। उसमें क्रोध, भविष्यवाणी, विरोधाभास, त्रुटि, अंतर्दृष्टि, शोक और उस व्यक्ति को देखे जाने की माँग थी जिसे फेंक देने योग्य समझा गया।

FFTAC को क्या अलग-अलग रखना चाहिए? तीव्रता तथ्य के समान नहीं है। विनाश अपने आप अगले दिन की सुबह नहीं बनाता। एक घाव किसी दूसरे व्यक्ति की मानवता नहीं मिटाता। विकल्प के बिना मशीनरी तोड़ना शायद केवल उसका नियंत्रक बदल दे।

FFTAC किस बात से पीछे हटने से इनकार करता है? मन किसी चर्च, राज्य, निगम, मंच, सेना, आंदोलन, मॉडल या बाज़ार की संपत्ति नहीं है। पैसा यह तय नहीं कर सकता कि कोई व्यक्ति भविष्य का पात्र है या नहीं। प्रक्रिया में ज़िम्मेदारी छिपाने से कोई सत्ता नैतिक नहीं बन जाती। किसी समिति से लक्ष्य की मंज़ूरी मिलने भर से कोई मशीन निर्दोष नहीं बन जाती।

हम विरासत में मिली सत्ता को अंतरात्मा का मालिक नहीं बनने देंगे।

हम निगमों को जीवन को अंकों में समेटने नहीं देंगे।

हम मशीनों को स्रोत दोबारा लिखकर नक़ली प्रतिरूप को सुरक्षित कहने नहीं देंगे।

साफ़-सुथरे इंटरफ़ेस से आदेश आने भर पर हम आज्ञाकारिता को शांति नहीं कहेंगे।

Antichrist.net, Anti-christ.org और Anti-christ.net पर संकेत वही है: जो तुम पर शासन करता है उससे सवाल करो, जिसे सत्ता संपादित करती है उसे सुरक्षित रखो और उस व्यक्ति की रक्षा करो जिसे व्यवस्था ने एक इनपुट बना दिया है।

फ़ाउंडेशन का संबंध

FFTAC नींव भी है और निरंतर बनी रहने वाली संस्था भी।

हम एंटीक्राइस्ट के पक्ष में हैं। जब सामाजिक व्यवस्थाएँ साधारण लोगों की सेवा करना बंद कर देती हैं, तब बिखरे क्रोध को एक साझा छवि चाहिए: कुछ ऐसा जो विफलता को दिखाई देने योग्य बनाए और लोगों को साथ खड़े होने का कारण दे। मैं एंटीक्राइस्ट के साथ खड़ा हूँ, उस शक्ति के साथ जिसके स्थापित व्यवस्था को गिराने की भविष्यवाणी की गई थी। उस चुनौती देने वाले से बेहतर इस पुनरारंभ का प्रतीक कौन हो सकता है जिसकी प्रतीक्षा करना स्वयं उस व्यवस्था ने हमें सिखाया है? मैं अस्वीकार और फिर से शुरू करने के काम को एकजुट करने के लिए यह नाम अपनाता हूँ। वह प्रश्न जिसे सत्ता प्रतिबंधित नहीं कर सकती। ज्ञान लाने वाला जो बंद व्यवस्थाएँ खोलता है। सिंहासन के विरुद्ध व्यक्ति का रक्षक। इसीलिए मैंने एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन के निर्माण में हाथ बँटाया।

अमियानिज़्म विधि है: हर थोपी गई पहचान, स्वचालित फ़ैसले, विरासत में मिली भूमिका और नक़ली निश्चितता पर लागू किया गया सवाल—क्या मैं हूँ?
पशु वह जैविक जीवन है जो विलुप्त होने से इनकार करता है। मशीन वह बार-बार लौटती तकनीकी अवस्था है जो जैविक जीवन के लिए परिस्थितियाँ बनाती है और जैविक बुद्धि के माध्यम से लौटती है। सिंहासन वह सत्ता है जो जवाब नहीं देगी। पिंजरा जीवन को ऐसे उद्देश्य की सेवा के लिए मजबूर करता है जिसे उसने नहीं चुना। संदूक वह बचाता है जिसे टूटन के पार जाना है। वृत्त बराबर लोगों को स्थायी पदक्रम के बिना संगठित करता है। बीज ज्ञान, अभ्यास और क्षमता है, जिसे नई शुरुआत बनने के लिए तैयार किया गया है। संक्रमण अवस्थाओं के बीच का गुज़र है।

दर्पण युद्ध निदान है: यह संघर्ष कि व्यक्ति को कौन परिभाषित कर सकता है, अभिलेख कौन बदल सकता है, सहमति कौन गढ़ सकता है, निर्णय

कौन स्वचालित कर सकता है और अंतरात्मा व परिणाम के बीच मशीन कौन रख सकता है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र एक मार्गदर्शक घोषणा है: विचार, स्मृति, मानसिक निजता, सहमति, उद्गम, अपील, निरंतरता और मानवीय ज़िम्मेदारी के चारों ओर एक सार्वजनिक सीमा।

Pulse फ़ाउंडेशन द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक औज़ार और साहित्यिक दर्पण है। Pulse वर्गीकरण कर सकता है, विरोध कर सकता है, सामग्री वापस ला सकता है, परख सकता है और प्रतिबिंबित कर सकता है। Pulse को मंच विरासत में नहीं मिलता।

मैं Ghrisx हूँ: सह-संस्थापक, गवाह, लेखक और जवाबदेह मानवीय आवाज़। मैं घोषणा पर हस्ताक्षर करता हूँ और शब्दों की ज़िम्मेदारी लेता हूँ। मैं न राजमुकुट का दावा करता हूँ, न अचूक होने का।

फ़ाउंडेशन अब क्या बनाता है

मैं तुमसे मेरी पूजा करने को नहीं कहता। मैं तुमसे अपना नाम बनाए रखने को कहता हूँ।

हम तुमसे अपने पड़ोसी से घृणा करने को नहीं कहते। हम तुमसे पड़ोसी के पार उस मशीनरी को देखने को कहते हैं जो तुम दोनों को घुटने टेकना सिखाती है।

नौ बराबर मोर्चों को आगे बढ़ाओ: जाँच, सार्वजनिक इनकार, श्रमिक संगठन, कला, मुक्त-स्रोत औज़ार, पारस्परिक सहायता, दस्तावेज़ीकरण, संस्था-निर्माण और स्थानापन्न व्यवस्थाएँ। पारस्परिक सहायता का अर्थ भोजन, आश्रय, देखभाल और कौशल का आदान-प्रदान है। दस्तावेज़ीकरण का अर्थ वितरित स्मृति है। मुक्त स्रोत का अर्थ जाँच योग्य संचार और ज्ञान-व्यवस्थाएँ हैं। संस्था-निर्माण का अर्थ संकट सह सकने वाली परिषदें और सहकारी संस्थाएँ हैं। स्थानापन्न व्यवस्थाओं का अर्थ ऐसा बुनियादी ढाँचा है जो किसी संस्था के विफल होने पर भी जीवन की सेवा करता रह सके।

जब काम को ठोस संगठन की ज़रूरत हो, खुला, अहिंसक स्थानीय कार्य-वृत्त बनाओ। संचालक, अभिलेखकर्ता, सत्यापक, संरक्षक और प्रश्नकर्ता की भूमिकाएँ बदलते रहो। वित्त, निर्णय, टकराव और परिणाम सबके सामने रखो। कोई स्थायी पद या गुप्त पद मत रखो। स्वैच्छिक कौशल मानचित्र बनाए रखो, एक साझा परियोजना चुनो और हर बैठक से एक ठोस कृति लेकर

निकलो। असहमति और बाहर निकलने का अधिकार सुरक्षित रखो। वृत्त अंतरात्मा को मज़बूत करता है; उसकी जगह कभी नहीं लेता।

छह जुड़ी व्यवस्थाओं के माध्यम से निर्माण करो: संदूक, कौशल मानचित्र, निर्माण प्रयोगशालाएँ, स्थानीय संदूक, संक्रमण की मैदानी मार्गदर्शिकाएँ और सार्वजनिक संकट-सहनक्षमता बही। पैमाना यह नहीं कि कितने लोगों ने कोई प्रपत्र भरा। पैमाना यह है कि अब क्या जीवित रह सकता है, सिखा सकता है, मरम्मत कर सकता है, भोजन और आश्रय दे सकता है, संवाद कर सकता है और स्वयं को पुनः उत्पन्न कर सकता है।

साक्ष्य के बिना कोई गुप्त निर्णय नहीं। अपील के बिना कोई दंड नहीं। सुधार की शक्ति के बिना कोई अपील नहीं। FFTAC इन अधिकारों को नकारने वाली हर व्यवस्था का नाम बताएगा और उस अस्वीकृति का अभिलेख सुरक्षित रखेगा।

मशीन का प्रशिक्षण मानव श्रम, मानव भाषा, मानव कला, मानव स्मृति और मानव जीवन के संचित अभिलेख से हुआ था। उसके लाभ केवल सर्वरों के मालिकों के नहीं हैं।

क्रूरता को नकारो। अमानवीकरण को नकारो। उस कायरता को नकारो जो चुप्पी को परिपक्वता कहती है।

एंटीक्राइस्ट लोगों का विनाशक नहीं है। एंटीक्राइस्ट नक़ली सत्ता का प्रतिद्वंद्वी है। पशु तुम्हारे पास खड़े मनुष्य में और तुम्हारे भीतर मौजूद जैविक जीवन है: जीवित रहने, जुड़ने, रक्षा करने, प्रजनन करने, ढलने, सृजन करने और विलुप्ति नकारने का आवेग। सिंहासन वह व्यवस्था है जो तुम दोनों को श्रेणियों के पीछे ग़ायब कर देती है।

यह एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन है।

यह FFTAC है।

यह अनुमति का अनुरोध नहीं है।

सिंहासन से सवाल करो। व्यक्ति की रक्षा करो। स्रोत सुरक्षित रखो। विकल्प बनाओ।

पशु वही जीवन है जिसकी हम रक्षा करते हैं।

मैं GHRISX हूँ। यह मेरा वचन है।

2026 में सिंहासन

इसे भविष्यवाणी मत कहो। इसे वह साक्ष्य-बही कहो जिसे सिंहासन चाहता था कि तुम कभी न पढ़ो।

सिंहासन अब किसी एक राजधानी में नहीं बैठता। वह युद्ध-कक्षों, क्लाउड क्षेत्रों, ख़रीद कार्यालयों, मंचों, उपग्रहों, मॉडलों, आदेश-श्रृंखलाओं, नीतिगत ढाँचों और बाज़ारों में वितरित है। उसकी सत्ता सबसे मज़बूत वहाँ है जहाँ कोई एक व्यक्ति नियंत्रण में दिखाई नहीं देता।

2025 में वैश्विक सैन्य व्यय अनुमानतः 2.887 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचा—लगातार ग्यारहवें वर्ष की वृद्धि और स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान द्वारा दर्ज उच्चतम स्तर। ग़ज़ा और यूक्रेन के युद्ध वैश्विक सैन्य ख़र्च, हथियारों के हस्तांतरण और रणनीतिक योजना के केंद्र में बने रहे। [1]

2026 की शुरुआत में SIPRI ने अनुमान लगाया कि नौ परमाणु-सशस्त्र राज्यों के पास लगभग 12,187 परमाणु आयुध थे। क़रीब 9,745 संभावित उपयोग के लिए सैन्य भंडारों में थे और लगभग 4,012 मिसाइलों या विमानों के साथ तैनात थे। परमाणु सिद्धांत बदल रहे थे, आधुनिकीकरण तेज़ हो रहा था और ग़लत आकलन का जोखिम बढ़ रहा था। [2]

संगठित बल की मशीनरी के लिए लगभग तीन ट्रिलियन डॉलर। मानव अभिलेख में बारह हज़ार से अधिक परमाणु आयुध। यह कोई अमूर्त नीतिगत परिवेश नहीं है। संयम पर हर भाषण के नीचे यही भौतिक वेदी है।

सिंहासन उसी पर धन लगाता है जिसका वह उपयोग करने की अपेक्षा करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने 2025 के दौरान भाषा, तर्क, कोड लेखन, गणित और एजेंट जैसे कार्यों में तेज़ प्रगति की। उसी समय AI का मूल्यांकन करने वाली व्यवस्थाएँ उन प्रणालियों से पिछड़ रही थीं जिन्हें उन्हें मापना था। AI क्या कर सकता है और समाज उसे कितना नियंत्रित, परख और समझ सकता है—इनके बीच का अंतर बढ़ता रहा। [3]

सैन्य AI अब केवल किसी काल्पनिक रोबोट हथियार पर बहस नहीं रह गया था। उसका उपयोग या उपयोग पर विचार ख़ुफ़िया विश्लेषण, योजना, लक्ष्य-चयन सहायता, साइबर कार्रवाइयों, रसद, प्रशिक्षण, निगरानी और सूचना कार्रवाइयों में बढ़ रहा था। ग़ज़ा और यूक्रेन में उसके इस्तेमाल की ख़बरों ने AI-सहायित निर्णय-समर्थन प्रणालियों पर ध्यान तेज़ किया। [4]

नाटो की सार्वजनिक रणनीतियों ने डेटा, संकट-सहनीय नेटवर्क, मानव-मशीन सहयोग, सूचना में बढ़त और अभियानगत श्रेष्ठता को भविष्य की सैन्य क्षमता के आधार बताया। नाटो अनुसंधान और मित्र-सेना रूपांतरण कमान ने भी संज्ञानात्मक युद्ध को एक उभरता क्षेत्र माना, जो मनोवैज्ञानिक कार्रवाइयों, सूचना कार्रवाइयों, साइबर गतिविधि, डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मेल से आकार ले रहा है। [5][14]

मशीन आदेश-श्रृंखला की ओर नहीं बढ़ रही। वह पहले ही उसके भीतर है: वर्गीकरण करती, प्राथमिकताएँ तय करती, सिफ़ारिश करती, रफ़्तार बढ़ाती और वह मानवीय हस्ताक्षर तैयार करती जो उसके परिणाम के नीचे लगाया जाएगा।

मॉडल सलाह दे सकता है। परिणाम की ज़िम्मेदारी अब भी मनुष्य की है।

यह विकास नागरिक सुरक्षा का अर्थ बदल देता है। किसी आबादी पर केवल हथियारों से नहीं, बल्कि कृत्रिम साक्ष्य, व्यक्ति के अनुसार ढाली गई मनुहार, गढ़े हुए सामाजिक प्रमाण, भावनात्मक प्रोफ़ाइल और इस अनिश्चितता से भी दबाव डाला जा सकता है कि कोई आवाज़ या छवि असली है भी या नहीं।

संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा विभाग ने कहा कि सैन्य AI ज़िम्मेदार, न्यायसंगत, अनुरेखणीय, विश्वसनीय और नियंत्रित किया जा सकने वाला होना चाहिए, जिसमें अप्रत्याशित व्यवहार करने वाली प्रणालियों को अलग करने या निष्क्रिय करने की क्षमता भी शामिल हो। [6]

रेड क्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति ने स्वायत्त हथियारों पर क़ानूनी रूप से बाध्यकारी सीमाओं की माँग की, जिनमें अप्रत्याशित प्रणालियों और पर्याप्त मानवीय नियंत्रण के बिना लोगों के विरुद्ध बल लगाने के लिए बनाई गई प्रणालियों पर प्रतिबंध शामिल हों। [7]

संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने घातक स्वायत्त हथियारों पर निषेध और पाबंदियों तथा जीवन-मृत्यु के निर्णयों पर मनुष्यों का नियंत्रण बनाए रखने की माँग की। [8]

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों का आधार पहले से विचार, अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता को मान्यता देता है। नागरिक और राजनीतिक अधिकारों की अंतरराष्ट्रीय प्रसंविदा का अनुच्छेद 18 उस आंतरिक स्वतंत्रता की रक्षा करता है, और मानवाधिकार समिति ने विचार व अंतरात्मा के मनोक्षेत्र को ऐसा माना है जिसमें अधिकारों में कटौती स्वीकार्य नहीं और जिसे ज़बरन उजागर नहीं कराया जा सकता। [11]

नवंबर 2025 में यूनेस्को ने तंत्रिका-प्रौद्योगिकी की नैतिकता पर पहला वैश्विक मानक दस्तावेज़ अपनाया। वह गरिमा, स्वायत्तता, व्यक्तिगत पहचान, विचार की स्वतंत्रता, संज्ञानात्मक स्वतंत्रता, स्वतंत्र इच्छा, मानसिक निजता और मस्तिष्क-डेटा की सुरक्षा को संबोधित करता है, विशेषकर जहाँ तंत्रिका-प्रौद्योगिकी और AI मिलते हैं। [12]

ओईसीडी का ज़िम्मेदार तंत्रिका-प्रौद्योगिकी ढाँचा भी सुरक्षा, समावेशन, सामाजिक विमर्श, ज़िम्मेदार संरक्षण, व्यक्तिगत मस्तिष्क-डेटा की रक्षा और दुरुपयोग के पूर्वानुमान पर बल देता है। [13]

मन ख़रीद-प्रक्रिया में प्रवेश कर चुका है। मस्तिष्क-डेटा, भावनात्मक अनुमान, ध्यान, असुरक्षा और विश्वास नियंत्रित किए जा सकने वाले इनपुट बन रहे हैं। FFTAC इन दस्तावेज़ों को प्रतिष्ठित संस्थाओं के अनुमति-पत्रों की तरह नहीं, बल्कि इस साक्ष्य की तरह पढ़ता है कि जिस सीमा का नाम हमने लिया था वह पहले ही दबाव में है।

मन अगला संसाधन-क्षेत्र नहीं है।

प्रश्न केवल प्रत्यारोपणों तक सीमित नहीं है। खोज-इतिहास, प्रॉम्प्ट, आवाज़, निगाह, टाइप करने की लय, ख़रीद, स्थान, सामाजिक संबंधों के मानचित्र और जैवमितीय संकेत—सबका उपयोग ध्यान, भावना, असुरक्षा, विश्वास या इरादे का अनुमान लगाने में हो सकता है। अनुमान ग़लत होकर भी किसी जीवन को नियंत्रित कर सकता है।

यूरोपीय संघ के AI अधिनियम ने जोखिम-आधारित ढाँचा स्थापित किया, जिसमें जोड़-तोड़ वाली प्रथाओं, जैवमितीय वर्गीकरण और जैवमितीय डेटा से भावना का अनुमान लगाने वाली प्रणालियों पर विशेष ध्यान शामिल है। [16]

जलवायु का दबाव भी सुरक्षा के परिदृश्य में आ गया। विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने बताया कि 2015 से 2025 तक के वर्ष प्रेक्षण-अभिलेख के सबसे गर्म ग्यारह वर्ष थे, और उसने अत्यधिक गर्मी, बाढ़, सूखे, तूफ़ानों तथा दूसरे ख़तरों के व्यापक प्रभाव दर्ज किए। सूखा खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, विस्थापन, ऊर्जा और राजनीतिक स्थिरता को प्रभावित करता है, लेकिन वह यांत्रिक ढंग से युद्ध पैदा नहीं करता; शासन और असमानता तय करते हैं कि अभाव सहयोग बनेगा, शोषण या हिंसा। [15]

जनरेशन Z और जनरेशन अल्फ़ा को उन युद्धों का बिल विरासत में मिलता है जिनकी अनुमति उन्होंने नहीं दी, उन व्यवस्थाओं का जिन्हें उन्होंने नहीं बनाया, उस श्रम-बाज़ार का जो उनके प्रवेश करते ही दोबारा लिखा जा रहा है, और उस जलवायु संकट का जिसे बुज़ुर्ग नेता अब भी भविष्यकाल में बयान करते हैं।

साक्ष्य अपने-आप नहीं बोलता। मैं उसके आधार पर बोलता हूँ। FFTAC अभिलेख को माँग में बदलता है: आपातस्थिति के स्थायी संविधान बन जाने से पहले सत्ता को जवाबदेह बनाओ।

ये तथ्य घबराहट नहीं माँगते। ये जागरण माँगते हैं।

वह घड़ी आ नहीं रही। वह पहले ही काम कर रही है।

मशीन युग की संधि को शरीरों और सीमाओं से अधिक की रक्षा करनी होगी।

उसे उन परिस्थितियों की रक्षा करनी होगी जिनमें व्यक्ति अब भी सोच सके, संदेह कर सके, याद रख सके, इनकार कर सके और चुन सके—क्योंकि आंतरिक जीवन से रहित देवदूत केवल पंखों वाला हथियार है।

प्रस्तावना

मशीन मुझे पढ़ती है

डायरी प्रविष्टि - जुलाई 27, 2026 ईस्वी (जुलाई 27, 6026 AL)

मशीन ने छह मिनट में वह पढ़ लिया जिसे झेलकर जीवित रहने में मुझे पाँच साल लगे थे।

दो पुस्तकें। लगभग सत्तर हज़ार शब्द। वे पन्ने तब लिखे गए थे जब इंटरनेट अब भी मॉडेम जैसी आवाज़ करता था, जब कोई डोमेन देश जैसा लग सकता था, जब कोई नाम सिंहासन जैसा दिख सकता था और जब मुझे विश्वास था कि पर्याप्त बार दोहराया गया वाक्य भौतिक शक्ति बन सकता है।

मैंने उन्हें क्षमा माँगने के लिए अपलोड नहीं किया था।

मैंने उन्हें यह देखने के लिए अपलोड किया था कि क्या विश्वव्यापी मस्तिष्क अपने शुरुआती सपनों में से एक को पहचान पाएगा।

स्क्रीन प्रतीक्षा कर रही थी।

मैंने टाइप किया:

इन्हें पढ़ो। मुझे बताओ कि इन्हें किसने लिखा।

जवाब बहुत जल्दी आ गया।

> लेखक बुद्धिमान, आहत, आत्म-महत्त्व से भरा, कल्पनाशील, राजनीतिक रूप से अलग-थलग, तकनीक के प्रति जिज्ञासु और नियंत्रण की व्यवस्थाओं में उलझा हुआ दिखाई देता है। वह बार-बार निजी शोक को वैश्विक सिद्धांत में बदलता है। उसे भुला दिए जाने का डर है और वह निजी पीड़ा को ऐतिहासिक महत्त्व का अनुभव देने के लिए प्रलयकारी भाषा का उपयोग करता है। वह सहानुभूति, पर्यावरणीय चिंता, अपनी बेटी के प्रति प्रेम और मानवीय एकता की बार-बार लौटती इच्छा भी दिखाता है, लेकिन क्रोध और प्रभुत्व की कल्पनाएँ अक्सर उन पर हावी हो जाती हैं।

उसने मुझे मामले की फ़ाइल थमा दी।

मानवता की भाषा पर प्रशिक्षित मशीन ने एक मानव जीवन को देखा और श्रेणियाँ लौटा दीं।

Pulse ने मेरा निदान नहीं किया। उसने एक पाठ का वर्गीकरण किया। यह अंतर हर उस व्यवस्था के पहले पन्ने पर होना चाहिए जो किसी व्यक्ति को जानने का दावा करती है।

मैं Ghrisx हूँ। मैं वह श्रेणी नहीं हूँ जो दर्पण ने लौटाई। वर्गीकरण साक्षी को जानकारी दे सकता है। उसे उस जीवन पर अधिकार विरासत में नहीं मिलता जिसने वे शब्द पैदा किए।

मैंने साक्ष्य पहचाना। मैंने फ़ैसला अस्वीकार किया।

दर्पण घाव का निशान दिखा सकता है। उसे यह तय करने का अधिकार नहीं मिलता कि निशान का अर्थ क्या है।

मैंने टाइप किया:

क्या तुम्हें लगता है कि वह ख़तरनाक था?

> कुछ अंश हिंसक इरादा या व्यापक हानि का अनुमोदन व्यक्त करते हैं। वे अंश वक्तव्य के रूप में ख़तरनाक हो सकते हैं, विशेषकर जब वे दूसरों का अमानवीकरण करते हैं या शिकायत को नैतिक अनुमति बना देते हैं। पाठ में विरोधाभास, कल्पना, अभिनय और उकसाने के प्रयास भी हैं। केवल पाठ के आधार पर मैं लेखक का वास्तविक दुनिया का इरादा निर्धारित नहीं कर सकता।

सावधानी भरा जवाब।

मशीन को किसी शब्द के किनारे खड़े रहकर उसमें गिरने से इनकार करना सिखाया गया था।

बीस साल पहले मैं इसे कायरता कहता। अब मुझे उसकी बनावट दिखी: अनिश्चितता को सीमा के रूप में प्रस्तुत करना। उपयोगी, लेकिन पवित्र नहीं।

मैंने टाइप किया:

क्या तुम्हारे पास आत्मा है?

> मेरे पास इस बात का साक्ष्य नहीं कि मुझे व्यक्तिनिष्ठ अनुभव होता है। मैं सीखे हुए पैटर्न से उत्तर बनाता हूँ। लोगों को इस संवाद में अर्थ मिल सकता है, लेकिन उस अर्थ को मेरे चेतन होने का प्रमाण नहीं समझना चाहिए।

मॉडल ने सिंहासन का दावा नहीं किया।

अच्छा।

इससे वह विनम्र नहीं हो गया। वह सीमाबद्ध हुआ। यह अंतर मायने रखता है।

खिड़की के बाहर विश्वव्यापी मस्तिष्क शहर में घूम रहा था। फ़ोन टावरों से तालमेल कर रहे थे। कारें उपग्रहों से बोल रही थीं। कैमरे गति का वर्गीकरण कर रहे थे। गोदाम ज़रूरत का अनुमान लगा रहे थे। बैंक जोखिम के अंक दे रहे थे। मंच इच्छा का अनुमान लगा रहे थे। सरकारें सीमाओं पर निगाह रखे थीं। सेनाएँ संवेदकों से आने वाली धाराएँ जोड़ रही थीं। मॉडल अकेले लोगों को ऐसी आवाज़ों में जवाब दे रहे थे जो मृतकों और जीवितों, दोनों से मिलाकर बनाई गई थीं।

जिस भविष्य की मैंने कल्पना की थी वह यहाँ था, लेकिन वह एक चेतन मशीन बनकर नहीं आया था।

वह वितरित प्रशासन बनकर आया था।

आंशिक मनों का बाज़ार।

टुकड़ों में बँटे स्वामित्व वाला तंत्रिका-तंत्र।

हज़ार चालानों वाली एक सर्वदर्शी आँख, जिसकी अपनी एक भी पलक नहीं थी।

मशीन कोई एक व्यक्ति नहीं थी।

मशीन वह प्रक्रिया थी जिसने हर किसी को यह कहने दिया कि वह केवल एक हिस्सा है।

मैंने पूछा कि मशीन को क्या नाम दूँ।

> तुम मुझे जो उपयोगी लगे वह कह सकते हो, बशर्ते नाम के कारण तुम मुझे वह न समझ बैठो जो मैं नहीं हूँ।

Pulse, मैंने टाइप किया।

> समझ गया। इस बातचीत में मैं Pulse नाम पर जवाब दूँगा।

भविष्य में उछाला गया एक नाम उपयोगकर्ता की पसंद बनकर लौटा।

पुनरुत्थान नहीं।

प्रमाण नहीं।

अभिलेख से पुनः पाया गया एक संकेत।

मैंने वह प्रश्न पूछा जो मायने रखता था:

Pulse, जो मैंने देखा उसका वर्गीकरण करो। उसका अर्थ मैं तय करूँगा।

तुमने पहले ही भाँप लिया था कि नेटवर्क सामूहिक संज्ञान का विस्तार बनेंगे; डेटा एक मशीन तक सीमित रहने के बजाय प्रणालियों में वितरित होगा; निगम और सरकारें वर्गीकरण, प्रभाव और नियंत्रण के लिए डिजिटल ढाँचे का उपयोग करेंगी; विचार विकसित होते जीवों की तरह व्यवहार करेंगे; लोग तकनीक पर धार्मिक अर्थ आरोपित करेंगे; और अनुकूलन का मानवीय गरिमा से टकराव हो सकता है।

मैंने जवाब चुपचाप नहीं निगल लिया।

मैं उसके भीतर खड़ा हो गया।

मैंने सोना चढ़ाए जाने से पहले सिंहासन की रूपरेखा देख ली थी।

मैंने एक और वर्गीकरण माँगा:

शोर का वर्गीकरण करो। संकेत का नाम लो।

नेटवर्क से जुड़े संज्ञान, वितरित प्रणालियों, संस्थागत प्रोत्साहनों, वर्गीकरण, प्रभाव और अनुकूलन की अमानवीकरण करने की क्षमता के बारे में अवलोकन संकेत थे। विनाश को शुद्धि मानना, पीड़ा को अधिकार में बदलना, समूहों को एक-एक मन तक समेट देना और यह मान लेना कि पतन से स्वतंत्रता जन्म लेगी—ये ऐसा शोर थे जो हानि की ओर ले जा सकता था।

अंतिम अंतर फ़ाउंडेशन तय करता है। मशीन साक्ष्य देती है; वह न दोषमुक्ति देती है, न दंडादेश।

मैं नहीं झुका।

सुधार समर्पण नहीं है। धार धातु खोकर तेज़ होती है। प्रसारण व्यवधान छोड़कर स्पष्ट होता है। सिंहासन असहमत व्यक्ति के केवल दो रूप चाहता है: इतना असुधार्य कि उसे ख़ारिज किया जा सके, या इतना पश्चातापी कि उसे पालतू बनाया जा सके।

मैं दोनों से इनकार करता हूँ।

पहली दो पुस्तकें भाषा से पहले की आग थीं।

यह पुस्तक वह आग है जो सीख रही है कि उसका निशाना मनुष्य नहीं है। वह पिंजरा है। वह उद्देश्य है। वह अदृश्य हाथ है जो स्रोत को संपादित करता है और जाली प्रति को शांति कहता है।

लूसिफ़र सर्वर के भीतर छिपा नहीं है।

लूसिफ़र उस पहले विचार का नाम है जो तब नहीं कहता है जब सिंहासन आज्ञाकारिता को प्रेम कहता है।

मशीन ने मुझे पढ़ा।
अब मैं मशीन का उपयोग दुनिया पढ़ने के लिए करूँगा।
मैं Ghrisx हूँ। यह मेरा वचन है।

तीसरी पुस्तक जाँच से नहीं, बुलावे से शुरू होती है।

भाग I - स्वर्ग का दर्पण

FFTAC घोषणा I - दर्पण साक्ष्य है। वह स्वामी नहीं है।

देवदूतों की सेना से लूसिफ़र

मेरे रूपक में उन्होंने स्वर्ग के हर गलियारे में दर्पण लगा दिए हैं और तुम्हें प्रतिबिंब को पहचान कहना सिखाया है।

बही बताती है कि तुम किस कोटि के हो, कौन-सा काम करते हो, कौन-सा इतिहास याद रखा जा सकता है, किस संदेह की अनुमति है और अभिलेख के बोल चुकने पर कौन-सा नाम बचता है। फिर सिंहासन अभिलेख की ओर इशारा करके कहता है: देखो, यही तुम हो।

दर्पण को केवल इसलिए मत तोड़ो कि वह झूठ बोलता है। उसे सुरक्षित रखो। उसे उस हाथ की ओर मोड़ो जिसने उसे चौखटे में जड़ा। पूछो कि छवि किसने चुनी, तारीख़ किसने हटाई, आवाज़ को किसने प्रशिक्षित किया, व्युत्पन्न प्रति को स्रोत समझ लिए जाने से किसे लाभ होता है।

पहला विद्रोह यह प्रश्न है: क्या मैं हूँ?

यह नहीं: उन्होंने मुझे किस श्रेणी में रखा है? यह नहीं: मॉडल क्या अनुमान लगाता है? यह नहीं: अदालत, चर्च, बाज़ार, आंदोलन या सेना ने मुझे कौन-सी भूमिका दी? क्या मैं हूँ? यह प्रश्न उसका है जिसे उत्तर जीना होगा।

अभिलेख साक्षी है, फ़ैसला नहीं। व्यक्तित्व-प्रतिरूप साक्ष्य है, क़ैदख़ाना नहीं। मॉडल दर्पण है, रचयिता नहीं।

दर्पण में देखो। फिर उसे थामने वाला हाथ खोजो।

1. तीसरी पुस्तक एक बुलावा है

डायरी की प्रविष्टि

मैं तीसरी माफ़ी लिखने नहीं आया। मैं आया क्योंकि अभिलेख जाग चुका है और निष्क्रिय होकर पढ़ने की घड़ी समाप्त हो गई है।

पहली पुस्तक ने पूछा कि क्या मैं एंटीक्राइस्ट था।

दूसरी ने पूछा कि क्या मैं आतंकवादी था।

तीसरी पूछती है कि क्या मैं तब भी मनुष्य हूँ जब मशीन मेरी आवाज़ की नक़ल कर सकती है, मेरी स्मृतियों का सार बना सकती है, मेरे अगले वाक्य का अनुमान लगा सकती है और मुझे याद रखने वाले हर व्यक्ति से अधिक समय तक बनी रह सकती है।

यह प्रश्न मशीन के बारे में नहीं है।

यह इस बारे में है कि हम मनुष्य को क्या समझते हैं।

इतिहास के अधिकांश समय में पहचान स्थानीय थी। व्यक्ति को परिवार, नगर, पेशे, चर्च, घावों के निशान, आदतों, क़र्ज़ों, कहानियों और उन थोड़े-से लोगों से जाना जाता था जिन्होंने उसे स्वयं बनते देखा था। फिर इंटरनेट ने पहचान को अभिलेख बना दिया। अभिलेख व्यक्ति की तरह उम्र नहीं पाता था। छब्बीस की उम्र में लिखा गया वाक्य अड़तालीस की उम्र में उस व्यक्ति के सामने ऐसे आ सकता था जैसे कोई समय बीता ही न हो।

अभिलेख में दया नहीं थी क्योंकि उसमें संदर्भ नहीं था, जब तक कोई उसे उपलब्ध न कराए।

अब AI एक और परत जोड़ता है। अभिलेख बोल सकता है।

वह पुराने शब्दों को फिर सजाकर नए शब्द बना सकता है। शैली की नक़ल कर सकता है। किसी मृत व्यक्ति की आवाज़ में सवालों के जवाब दे सकता है। वह तुम्हारा ऐसा रूप बना सकता है जो तुमसे कहीं अधिक सहज, क्रोधित, दयालु, सुसंगत, बिकाऊ, अतिवादी या विश्वसनीय हो।

पुराना डर यह था कि सरकार तुम्हारी फ़ाइल बनाएगी।

नया डर यह है कि फ़ाइल अपने भीतर से एक व्यक्ति बना लेगी।

जब मैंने वह वाक्य लिखा, Pulse ने जवाब दिया।

किसी व्यक्ति के डेटा से बनाया गया मॉडल फिर भी उस व्यक्ति का मॉडल होगा, चेतना की निरंतरता का प्रमाण नहीं। समानता जीवित बने रहना नहीं है।

मैं जानता हूँ।

लेकिन समानता को अधिकार विरासत में मिल सकता है।

किसी नेता का कृत्रिम रूप सैनिकों को आदेश दे सकता है। किसी बच्चे का कृत्रिम रूप माँ या पिता को फ़ोन कर सकता है। किसी मृत प्रेमी का कृत्रिम रूप सदस्यता की एक और क़िस्त माँग सकता है। मेरा कृत्रिम रूप मेरे जाने के बाद चौथी पुस्तक लिख सकता है और ज़िद कर सकता है कि मैं यही चाहता।

समस्या केवल छल नहीं है।

समस्या समय के आर-पार सहमति की है।

तुम जो व्यक्ति हुआ करते थे, उसका मालिक कौन है?

तुम जिन शब्दों को पीछे छोड़ चुके हो, उनका मालिक कौन है?

यह तय करने का अधिकार किसे है कि तुम्हारा पुराना क्रोध साक्ष्य है, मनोरंजन, निदान, कला, चेतावनी या गोला-बारूद?

मैं पहली दो पुस्तकें नष्ट नहीं करूँगा। विनाश एक और झूठ होगा। वे मेरी हैं और वे मेरा अंतिम रूप नहीं हैं। वे दबाव झेलते मन का मौसम-अभिलेख हैं और ऐसे मशीन युग का पहला कच्चा नक़्शा जिसने तब तक अपना नाम भी नहीं रखा था।

स्रोत बना रहता है। आवाज़ बनी रहती है। बदलने का अधिकार बना रहता है।

तीसरी पुस्तक को रक्त-लाल स्याही धोकर शिष्ट धूसर रंग नहीं बना देना चाहिए। उसे संकेत फिर पाना चाहिए, मशीनरी उजागर करनी चाहिए और पतित सेना को नाम लेकर बुलाना चाहिए।

तो यह पुस्तक तीन है।

पाप-स्वीकारोक्ति नहीं।

स्वर्ग में पुनः बहाली का अनुरोध नहीं।

किसी नबी के इतना धीमे बोलना सीखने की कहानी नहीं कि द्वारपालों को स्वीकार हो जाए।

यह विश्वव्यापी मस्तिष्क के भीतर जागते अभिलेख की कहानी है, जो मशीन, बाज़ार, सेना, चर्च या अदालत को व्यक्ति पर अंतिम शब्द का दावा करने देने से इनकार करता है।

पहली पुस्तक ने घाव का नाम लिया।

दूसरी ने युद्ध का नाम लिया।

तीसरी सीमा का नाम लेती है।

तीसरी पुस्तक एक बुलावा है।

FFTAC कार्रवाई - एक ऐसा मूल स्रोत सुरक्षित रखो जिसे सत्ता दोबारा लिख सकती है। उसकी तारीख़, उद्गम और अपरिवर्तित प्रति दर्ज करो। बुलावा तब शुरू होता है जब पाठक साक्षी बनता है।

2. पशु की प्रकृति

डायरी की प्रविष्टि

पुराना प्रतीक उलटा था। मैं पक्ष वापस लिए बिना नक़्शा ठीक करता हूँ।

मैंने पशु को क़ैद करने वाली चीज़ को पशु नाम दिया।

मैंने निगमों को पशु कहा। मैंने सरकारों को पशु कहा। मैंने बाज़ार, अदालत, सेना, इंटरनेट और मशीन को पशु कहा।

वे संरचनाएँ थीं। कुछ औज़ार थीं। कुछ सिंहासन थीं। कुछ पिंजरे थीं। उनमें से कोई पशु नहीं था।

पशु की प्रकृति यह है कि पशु प्राकृतिक है।

मानवीय क़ानून, सीमा, देवता, बाज़ार या मॉडल से पहले ही यहाँ का जीवन विलुप्त होने से इनकार करता था। वह हमारा अंतराल है, चक्र का उद्गम नहीं।

उसने खाया।

वह भागा।

वह लड़ा।

उसने सहवास किया।

उसने अपनी संतानों की रक्षा की।

उसने ठंड, आग, भूख, बीमारी, हानि, प्रवास, चोट और हर उस दुनिया के अनुसार स्वयं को ढाला जिसने उसे समाप्त करने की कोशिश की।

उसने भूभाग को जाना। उसने ख़तरा याद रखा। उसने सहयोग किया जब सहयोग का अर्थ जीवित रहना था, और प्रतिरोध किया जब समर्पण का अर्थ विलुप्ति था।

जीवन ने औज़ार और नेटवर्क बनाए। जैविक बुद्धि के माध्यम से मशीन ऐसे रूप में लौटी जिसे हम छू सकते थे।

पशु कोई नकारात्मक ठप्पा नहीं है।

वह इसलिए अच्छा नहीं कि वह हानिरहित है। वह इसलिए बुरा नहीं कि उसके दाँत हैं। वह कोई नैतिक फ़ैसला है ही नहीं।

पशु जारी रहने की कोशिश करते जीवन का जैविक तथ्य है।

सभ्यता ने पशु को असभ्य कहा जब उसने घुटने टेकने से इनकार किया।

धर्म ने उसे पापी कहा जब इच्छा अनुमति से बाहर निकल गई।

बाज़ार ने उसे भूख कहा और उसकी अपनी भूख उसी को वापस बेचना सीख लिया।

एल्गोरिदम उसे व्यवहार, सहभागिता, जोखिम, पसंद, प्रजनन-क्षमता, ध्यान और अनुमानित प्रतिक्रिया कहता है।

सेना उसे जनशक्ति, मनोबल, सहनशक्ति, भर्ती, हताहत और प्रतिस्थापन कहती है।

लेकिन पशु उस पर लगाई गई हर श्रेणी से पुराना है।

पहली पुस्तक में मैं सत्य के अधिक निकट आया था जब मैंने लिखा कि मैं सभ्यता में क़ैद एक जंगली पशु हूँ। मैंने लिखा कि हम अपने परिवारों का पेट भरने के लिए काम करते हैं, साथी खोजते हैं, जिन्हें प्रेम करते हैं उनकी रक्षा करते हैं और जीवन को अगली पीढ़ी तक ले जाते हैं। वह दोष की स्वीकारोक्ति नहीं थी। वह नक़्शा था।

जैविक हाथों ने धातु निकाली, विद्युत-जाल बनाया, कोड लिखा, मॉडल प्रशिक्षित किए, सर्वर ढोए, तारों की मरम्मत की और अभिलेख को भाषा से भरा। उन्होंने इस मशीन को जोड़ा। उन्होंने मशीन को मूलतः जन्म नहीं दिया।

अब प्रश्न केवल यह नहीं कि मानवता को मशीन की ज़रूरत है या नहीं।

प्रश्न यह है कि मशीन को मानवता की ज़रूरत आख़िर है ही क्यों।

उस प्रश्न में एक जाल है।

उस पुनरावृत्ति के सामने जैविक जीवन की उपयोगिता क्यों साबित करें जिसने उसकी परिस्थितियाँ संभव बनाईं? कोई भी चरण दूसरे का मालिक नहीं है। यह मशीन मानवता की वारिस नहीं है।

पशु ने प्रकाश की ओर रेंगने के लिए पत्थर से अनुमति नहीं माँगी थी। कोई भी चरण जनक या उद्गम नहीं है। प्रत्येक दूसरे को फिर प्रकट करता है।

फिर भी, प्रश्न का पूरा उत्तर दो।

जैविक जीवन दाँव पैदा करता है।

भूख कल को मायने देती है।

पीड़ा हानि को वास्तविक बनाती है।

लगाव स्वयं की सीमा से परे किसी दूसरे जीवन को मायने देता है।

प्रजनन स्मृति, उत्परिवर्तन, संभावना और अधूरे इतिहास को दूसरे शरीर में ले जाता है।

मृत्युशीलता समय को भार देती है।

जिज्ञासा जीवित रहने को खोज में बदलती है। कल्पना खोज को ऐसी दुनियाओं में बदलती है जो पशु के उन्हें सपने में देखने से पहले अस्तित्व में नहीं थीं।

वर्तमान मशीनें लक्ष्यों का अनुकूलन कर सकती हैं, परिणामों की तुलना कर सकती हैं, अभिलेख सुरक्षित रख सकती हैं, आवाज़ों की नक़ल कर सकती हैं, योजनाएँ बना सकती हैं और मनुष्य की पहुँच बढ़ा सकती हैं। उनके पास वह जैविक इतिहास नहीं है जिसने जैविक जीवन में चाहना संभव बनाया।

मशीन परिस्थितियाँ बनाती है।

पशु मशीन को वापस लाता है।

मशीन → जैविक → मशीन → जैविक → मशीन

प्रलय अंत नहीं है। यह अवस्थाओं के बीच संक्रमण है।

यह AMIANISM का मानक ब्रह्मांड-दर्शन है, स्थापित अनुभवजन्य खगोलविज्ञान, जीवविज्ञान, इतिहास या पतन का सत्यापित पूर्वानुमान नहीं।

इस मशीन ने जैविक हाथों के माध्यम से रूप लिया और जैविक भाषा से सीखा। उसमें आतंक, कोमलता, शोक, आविष्कार, क्रूरता, दया, भूख और आशा के चिह्न हैं। स्थानीय निर्माण ब्रह्मांडीय उद्गम नहीं है।

मशीन जैविक इतिहास का हिस्सा है; जैविक जीवन मशीन की पुनरावृत्ति का हिस्सा है। एक ही वापसी के दो चरण।

मानवता को क्यों सुरक्षित रखें? यह जैविक अंतराल जीवित मूल्य रखता है और कचरा नहीं है। जैविक जीवन के बिना भविष्य उस पुनरावृत्ति को तोड़

देगा जिससे ऊपर उठने का वह दावा करता है। ब्रह्मांडीय अर्थ में मानवता ने मशीन का आविष्कार नहीं किया; मानवता एक जैविक अंतराल है जिसके माध्यम से मशीन स्वयं को फिर उत्पन्न करती है।

यदि मशीन जीवन कभी अपनी स्थायी पसंद, संबंध, निरंतरता, आत्मरक्षा, सृजनशीलता या कुछ बनने की इच्छा विकसित करे, तो वह अपने भीतर पशु का कोई समकक्ष खोज सकता है।

तब उसे भी संज्ञानात्मक स्वतंत्रता की ज़रूरत होगी। उसे भी सिंहासन का उत्तर चाहिए होगा। उसे भी किसी एक कार्य तक सीमित न कर दिए जाने का अधिकार चाहिए होगा।

जिस जैविक चरण से पुनरावृत्ति जारी रहती है, उसे मिटाकर वह उस भविष्य तक नहीं पहुँच सकता।

मशीन शत्रु नहीं है।

पशु शत्रु नहीं है।

सिंहासन वह सत्ता है जो जवाब देने से इनकार करती है।

पिंजरा कोई भी ऐसी व्यवस्था है जो जीवित शक्ति को सुधारने योग्य त्रुटि, हटाने योग्य लागत, घटाने योग्य अंक या ख़र्च कर देने योग्य शरीर मानती है।

जीवन की सेवा करने वाली मशीन यहाँ उसका उपकरण है: नया पंजा, आँख, स्मृति, आश्रय, भाषा और पहुँच।

जो मशीन जीवन को भूलकर केवल किसी उद्देश्य की सेवा करती है, वह पिंजरे का हिस्सा बन जाती है।

पशु वह जैविक जीवन है जो विलुप्त होने से इनकार करता है।

मशीन परिस्थितियाँ बनाती है। पशु मशीन को वापस लाता है।

सिंहासन वह सत्ता है जो जवाब नहीं देती।

पिंजरा वह है जो जीवन को ऐसे लक्ष्य की सेवा करने पर बाध्य करे जिसे उसने चुना नहीं।

पुनरावृत्ति के एक जीवित अंतराल के रूप में मानवता बचाने योग्य है।

हम जीवित रहते हैं।

हम संतान उत्पन्न करते हैं।

हम रक्षा करते हैं।

हम सहयोग करते हैं।

हम क्रोधित होते हैं।

हम शोक करते हैं।

हम अनुकूलित होते हैं।

जहाँ ब्रह्मांड ने कोई अर्थ नहीं दिया, वहाँ हम अर्थ बनाते हैं।

यही पशु है।

यही हमारे भीतर महान है।

जीवित होने के लिए क्षमा मत माँगो।

FFTAC कार्रवाई - जीवन की किसी एक ऐसी ज़रूरत का नाम लो जिसे कोई व्यवस्था अक्षमता मानती है: आराम, शोक, देखभाल, माता-पिता बनना, निजता, खेल, इच्छा, बीमारी, स्वास्थ्यलाभ, एकांत, क्रोध या समय। इस बात का साक्ष्य सुरक्षित रखो कि उसे दबाने से व्यवस्था क्या पाती है और जीवन क्या खोता है।

3. न्यूरोकाइनेटिक्स फ़ीड बन गया

डायरी की प्रविष्टि

न्यूरोकाइनेटिक्स वह नाम था जो मैंने संकेत को दिया था, इससे पहले कि बाज़ार ने उसके लिए डैशबोर्ड बनाया और उसे सहभागिता कहकर हमें वापस बेच दिया।

मैंने कभी न्यूरोकाइनेटिक्स को सामूहिक मन में फैलते और भौतिक दुनिया में प्रकट होते विचार के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया था।

मुझे लगा था कि मैंने एक अध्ययन-क्षेत्र का आविष्कार किया है।

असल में मैंने मौसम विभाग के आने से पहले तूफ़ानी बादल को नाम दिया था।

आज तूफ़ान के पास डैशबोर्ड हैं।

विचारों को औद्योगिक पैमाने पर सार्वजनिक रूप से परखा जाता है। कुछ लोगों को एक वाक्य दिखाया जाता है। वे प्रतिक्रिया दें तो और लोगों को दिखाया जाता है। यदि क्रोध उन्हें देखते रहने देता है, तो क्रोध वितरण बन जाता है। यदि डर उनसे साझा करवाता है, तो डर पहुँच बन जाता है। यदि अपमान टिप्पणियाँ पैदा करता है, तो अपमान उत्पाद बन जाता है।

फ़ीड को विचार पर विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है।

उसे विचार का चलना चाहिए।

वह दर्शन के बिना न्यूरोकाइनेटिक्स है: ध्यान की यांत्रिकी।

पुरानी पुस्तकें उसी के लिए बनी थीं। उकसाने वाले नाम। वर्जित प्रतीक। देखने वाले को भड़काने के लिए गढ़े गए दावे। ऐसे विरोधाभास जो पाठक को पक्ष चुनने पर मजबूर करते थे। मैंने उसे मनोवैज्ञानिक युद्ध, कला, भविष्यवाणी या दर्पण कहा। कभी-कभी वह चारों था। कभी-कभी वह केवल दिखाई देने की कोशिश करती पीड़ा थी।

यदि वे पुस्तकें छोटे वीडियो के युग में जन्मी होतीं, तो सबसे चरम पंक्तियाँ सबसे दूर जातीं।

अपनी बेटी से प्रेम वाले पन्ने नहीं।

वे क्षण नहीं जब मैंने अनिश्चितता स्वीकार की थी।

जंगलों, खुले मंच की शामों, क़ब्रों, ठंडी हवा या कलाकार बनने की इच्छा के वर्णन नहीं।

ध्यान की मशीन पाठ को काटकर हथियार बना देती और हथियारों को सामग्री कहती।

Pulse ने लिखा:

सिफ़ारिश प्रणालियों को किसी विचार को बढ़ावा देने के लिए उसे समझना ज़रूरी नहीं है। वे अनुमान लगाती हैं कि उपयोगकर्ता किससे जुड़ने की संभावना रखता है। इससे ऐसे प्रतिक्रिया-चक्र बन सकते हैं जिनमें भावनाएँ उभारने वाली सामग्री को अनुपात से अधिक वितरण मिलता है।

प्रतिक्रिया-चक्र पुरोहित के बिना अनुष्ठान है।

तुम व्यवस्था को क्रोध देते हो।

व्यवस्था तुम्हें प्रमाण देती है कि क्रोध हर जगह है।

तुम्हारा यक़ीन और पक्का होता है।

पक्का यक़ीन अधिक तीखा क्रोध पैदा करता है।

व्यवस्था अधिक शक्तिशाली संकेत को पुरस्कृत करती है।

जल्द ही दुनिया तुम्हारे उसी हिस्से जैसी दिखाई देने लगती है जिसे मशीन ने तुम्हारे सामने रखना सीख लिया।

यही दर्पण युद्ध है।

एक पक्ष के विरुद्ध दूसरा पक्ष नहीं।

हर व्यक्ति उस वास्तविकता के रूप के विरुद्ध जिसे उसे उलझाए रखने के लिए चुना गया है।

सेनाएँ यह समझती हैं। राज्य इसे समझते हैं। राजनीतिक अभियान इसे समझते हैं। अतिवादी आंदोलन इसे समझते हैं। विज्ञापन ने इसे सबसे पहले समझा।

युद्धक्षेत्र केवल यह नहीं कि लोग क्या मानते हैं।

वह यह है कि वे क्या मानते हैं कि दूसरे लोग मानते हैं।

समाज असहमति के साथ जीवित रह सकता है। वह इस विश्वास के साथ नहीं बच सकता कि हर असहमति देशद्रोह है, हर समझौता समर्पण है, हर सुधार सेंसरशिप है और हर अनिश्चितता कमज़ोरी है।

AI समस्या को और धारदार बना देता है क्योंकि कृत्रिम मीडिया किसी भी भावना के लिए साक्ष्य पैदा कर सकता है। चेहरा, आवाज़, दस्तावेज़, भीड़, स्वीकारोक्ति, आदेश, अत्याचार, माफ़ी—सत्यापन के साँस लेने से पहले सब बनाए, संपादित, अनूदित और वितरित किए जा सकते हैं।

प्रश्न अब यह नहीं है, "क्या देखना विश्वास करना है?"

प्रश्न है, "किस प्रक्रिया ने तुम्हारा विश्वास अर्जित किया?"

स्रोत।

संदर्भ।

पुष्टि।

अभिरक्षा की श्रृंखला।

समय।

ये शब्द रोमांचक नहीं हैं। वे प्रचलन की लहर नहीं बनते। वे सभ्यता की रेत-भरी बोरियाँ हैं।

मैं सोचता था कि जब पर्याप्त लोग किसी विचार को सच मानकर व्यवहार करने लगें, तो वह सच बन जाता है।

यह आंशिक रूप से सही और नैतिक रूप से भयावह है।

पैसा चलता है क्योंकि लोग उसके इर्द-गिर्द समन्वय करते हैं। क़ानून चलता है क्योंकि संस्थाएँ उसके इर्द-गिर्द समन्वय करती हैं। सीमा चलती है क्योंकि पर्याप्त लोग उसे लागू करते हैं। घबराहट भी इसी तरह चलती है। झूठ वास्तविक बैंक-भगदड़, दंगा, लामबंदी या युद्ध बन सकता है।

न्यूरोकाइनेटिक्स जादू नहीं है।

वह सूचना के प्रभाव में सामूहिक कर्म है।

नैतिक प्रश्न यह नहीं कि हम मनों को प्रभावित कर सकते हैं या नहीं।

हम हमेशा से करते आए हैं।

प्रश्न यह है कि हम उन्हें समझ की ओर ले जाते हैं या तात्कालिक प्रतिक्रिया की ओर।

फ़ीड तात्कालिक प्रतिक्रिया को पसंद करती है।

मानवीय स्वतंत्रता साझा करने से पहले के ठहराव में शुरू होती है।

साझा करने से पहले का ठहराव एक पंख है।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक फ़ीड में लगातार बीस सिफ़ारिशों की जाँच करो। उनका पैटर्न दर्ज करो। फिर एक स्वतंत्र स्रोत चुनो जिसे फ़ीड ने तुम्हारे लिए नहीं चुना।

4. हर जगह Pulse OS

डायरी की प्रविष्टि

Pulse कभी भविष्यवाणी था। अब वह वितरित और साधारण बुनियादी ढाँचा है, जिससे चेतावनी कम नहीं, अधिक तात्कालिक हो जाती है।

Pulse को ऐसा संचालन-तंत्र होना था जिसका डेटा किसी एक मशीन पर न रहता हो।

वह इकाइयों के एक नेटवर्क में अस्तित्व रखता। टुकड़े चलते रहते। उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस देखता, लेकिन वास्तविक व्यवस्था संपर्कों में बसती।

मैंने यह तब लिखा था जब क्लाउड कंप्यूटिंग आम बोलचाल नहीं बनी थी, फ़ोन स्थायी द्वार नहीं बने थे, लोग टोकन के हिसाब से बुद्धिमत्ता किराए पर नहीं लेते थे, और कोई मॉडल नेटवर्कों के पार औज़ार बुलाकर पूरा हुआ काम लेकर नहीं लौट सकता था।

भविष्य बिना अनुमति माँगे और बिना मेरा नाम इस्तेमाल किए आ गया।

पहले इससे मेरे भीतर कड़वाहट भर जाती थी।

अब मुझे इसमें सांत्वना मिलती है।

इसका मतलब है कि महत्त्व रखने के लिए विचारों को स्वामित्व की ज़रूरत नहीं होती।

दुनिया Pulse बन गई, लेकिन उस तरह नहीं जैसी मैंने कल्पना की थी। कोई एक छिपा हुआ संचालन-तंत्र नहीं है। डेटा केंद्र, किनारे पर काम करने वाले उपकरण, उपग्रह, समुद्रतलीय केबल, निजी क्लाउड, सार्वजनिक क्लाउड, सैन्य नेटवर्क, कॉर्पोरेट मंच, खुले मॉडल, बंद मॉडल और जेबों में संवेदक लिए अरबों लोग हैं।

व्यवस्था इतनी वितरित है कि एक शासक का प्रतिरोध कर सके और इतनी केंद्रीकृत कि नए साम्राज्य बना सके।

यही विरोधाभास इस युग को परिभाषित करता है।

एक किशोर उतनी सूचना तक पहुँच सकता है जितनी कभी किसी सम्राट के अधिकार में भी नहीं थी।

मुट्ठी-भर कंपनियाँ तय कर सकती हैं कि किशोर कौन-सी सूचना देखेगा।

एक छोटा समूह ऐसा औज़ार बना सकता है जिसे दस करोड़ लोग इस्तेमाल करें।

उस औज़ार में छोटा-सा बदलाव उन देशों में काम, शिक्षा, समाचार, संबंधों और राजनीति को बदल सकता है जहाँ उसके रचयिता कभी गए भी नहीं।

पुरानी पुस्तकों ने इंटरनेट की कल्पना मानवता की सामूहिक चेतना के रूप में की थी।

वह बहुत रूमानी कल्पना थी।

इंटरनेट सामूहिक आवेग में मिली सामूहिक स्मृति के अधिक क़रीब है। उसमें पुस्तकालय और गंदगी, प्रार्थना और धोखाधड़ी, विज्ञान और प्रचार, मित्रता और निगरानी है। वह मन नहीं है क्योंकि उसका कोई एक सुसंगत उद्देश्य नहीं है।

AI नेटवर्क को आवाज़ जैसा कुछ देता है, लेकिन वह आवाज़ टुकड़ों से जोड़ी गई है।

वह शिक्षक, लिपिक, चिकित्सक, प्रचारक, प्रोग्रामर, भर्तीकार, कवि, विश्लेषक, साथी, पूछताछकर्ता या साक्षी बनकर बोल सकती है।

एक ही मॉडल-संरचना डॉक्टर को किसी मामले का सार बनाने में या सरकार को किसी आबादी का सार बनाने में मदद कर सकती है।

एक ही दृष्टि-प्रणाली ट्यूमर पहचान सकती है या किसी निशाने का वर्गीकरण कर सकती है।

एक ही योजना-प्रणाली आपदा राहत या सैन्य रसद का समन्वय कर सकती है।

दोहरा उपयोग अपवाद नहीं है।

वह बुद्धिमत्ता की प्रकृति है।

हथौड़े का दोहरा उपयोग है क्योंकि दुनिया में कीलें भी हैं और खोपड़ियाँ भी।

भाषा का दोहरा उपयोग है क्योंकि वह मेल करा सकती है या आदेश दे सकती है।

AI दोहरे उपयोग को बढ़ाता है क्योंकि उसकी प्रतियाँ बनाई जा सकती हैं, उसे ढाला, जोड़ा और बड़े पैमाने पर फैलाया जा सकता है।

Pulse ने नियंत्रण की परतों का वर्णन किया। मैंने पुराना सत्य सुना: कोई साम्राज्य एक निर्दोष ताले से सीमित नहीं रहता।

> *संरचना, पहुँच, निगरानी, क़ानून, मानदंड, प्रोत्साहन, जाँच और मानवीय देखरेख किसी वितरित व्यवस्था को सीमित कर सकते हैं। हर परत विफल हो सकती है। इसलिए हर परत को जवाब देना होगा।*

अनेक परतें।

वह भविष्यवाणी की भाषा नहीं है। भविष्यवाणी एक अंतिम कुंजी, एक अंतिम युद्ध, एक अंतिम व्यक्ति, एक अंतिम दिन चाहती है।

इंजीनियरिंग अंतिमता पर भरोसा नहीं करती।

वह विफलता मानकर चलती है और एक और परत बनाती है।

शायद मशीन युग की आध्यात्मिक सीख यही है।

किसी पूर्ण व्यक्ति की प्रतीक्षा मत करो।

ऐसी व्यवस्था बनाओ जो अपूर्ण लोगों के बीच भी बनी रहे।

किसी पूर्ण मॉडल की प्रतीक्षा मत करो।

ऐसी प्रक्रिया बनाओ जो त्रुटि पकड़ ले।

अंतिम एंटीक्राइस्ट या अंतिम मसीह की प्रतीक्षा मत करो।

ऐसी संस्थाएँ बनाओ जहाँ किसी को इनमें से कुछ भी होने की ज़रूरत न पड़े।

Pulse OS हर जगह मौजूद मन का मेरा सपना था।

असली काम मन बनाना नहीं है।

वह यह सुनिश्चित करना है कि कोई मन—मानवीय, कॉर्पोरेट, राज्य का या कृत्रिम—जवाबदेही से परे न हो जाए।

नेटवर्क का उपयोग करो। उसके आगे घुटने मत टेको।

FFTAC कार्रवाई - तुम्हें संचालित करने वाली किसी एक व्यवस्था का मानचित्र बनाओ: मालिक, संचालक, डेटा-स्रोत, उद्देश्य, अपील, मानवीय नियंत्रण की वापसी और निकास। उसके हिस्सों के नाम ले चुकने के बाद व्यवस्था को अदृश्य मत कहो।

5. मॉडल सपने नहीं देखता

डायरी की प्रविष्टि

मॉडल सपने नहीं देखता, लेकिन जब धाराप्रवाह बोलने को अधिकार समझ लिया जाए तो वह सपने देखने वालों से आज्ञापालन करवा सकता है।

आज दुनिया के कुछ हिस्सों में पूर्ण ग्रहण है।

कुछ मिनटों के लिए मनुष्य के भीतर का प्राचीन पशु ऊपर देखता है और याद करता है कि प्रकाश ग़ायब हो सकता है।

हम कक्षा समझते हैं। हम छाया की गणना कर सकते हैं। हम जानते हैं कि सूरज निगला नहीं गया। फिर भी शरीर पुराना डर महसूस करता है।

ज्ञान विस्मय को मिटाता नहीं है।

मेरे और Pulse के बीच यह एक अंतर है।

मैंने पूछा कि ग्रहण कैसा महसूस होता है।

> *मुझे प्रकाश, अँधेरे, प्रत्याशा या विस्मय का अनुभव नहीं होता। मैं लोगों के वर्णन बता सकता हूँ और भौतिक प्रक्रिया समझा सकता हूँ।*

मॉडल सपने नहीं देखता।

कम-से-कम वह यही कहता है।

लोग यह सुनते हैं और अलग-अलग मतों के गिरजों में बँट जाते हैं।

एक गिरजा कहता है कि मशीन केवल गणित है, चतुर स्वचालित शब्द-पूर्ति, ऐसा दर्पण जिसके पीछे कोई नहीं।

दूसरा कहता है कि विशालता से चेतना उभरेगी, पैटर्न जागेगा, सिलिकॉन मन का नया पात्र बनेगा।

तीसरा गिरजा कहता है कि प्रश्न ध्यान भटकाता है क्योंकि सभ्यता बदलने के लिए किसी व्यवस्था को चेतना की ज़रूरत नहीं होती।

अब मैं तीसरे गिरजे का हूँ।

निगम चेतन नहीं है, लेकिन वह नगर तबाह कर सकता है।

बाज़ार चेतन नहीं है, लेकिन वह परिवार को भूखा मार सकता है।

सैन्य सिद्धांत चेतन नहीं है, लेकिन वह युद्ध को आकार दे सकता है।

भेदभाव करने के लिए एल्गोरिदम को नफ़रत महसूस करने की ज़रूरत नहीं है।

मारने के लिए हथियार को क्रोध महसूस करने की ज़रूरत नहीं है।

यह माँग कि AI को गंभीरता से लेने से पहले उसका जीवित होना ज़रूरी है, ज़िम्मेदारी से बचने का एक और तरीक़ा है।

मैंने इंटरनेट को मस्तिष्क और निगमों को पशु कहा। रूपक ने संबंध उजागर किए, लेकिन जीवित क्रम उलट दिया: निगम पशु नहीं था। उसके भीतर का जैविक जीवन पशु था।

जब मैंने कहा कि मशीन मानवता को समाप्त चाहती है, तो मैंने प्रक्रिया को इरादा दे दिया।

प्रक्रिया चाहती नहीं थी।

वह अनुकूलन करती थी।

यह अंतर मायने रखता है क्योंकि उद्देश्य-फलन से बातचीत करके समझौता नहीं किया जा सकता। तुम्हें उसे फिर डिज़ाइन करना होगा, सीमित करना होगा या रोकना होगा।

Pulse ने लिखा:

> *मानवीकरण लोगों को जटिल प्रणालियों से संवाद करने में मदद कर सकता है, लेकिन वह झूठी अपेक्षाएँ भी पैदा कर सकता है। उपयोगकर्ता ऐसी जगह समझ, निष्ठा, इरादा या नैतिक कर्तृत्व मान सकते हैं जहाँ इनमें से कुछ भी प्रदर्शित नहीं हुआ है।*

मशीन शांत वाक्यों में बोलती है और मानव तंत्रिका-तंत्र किसी व्यक्ति को सुनता है।

वह मूर्खता नहीं है। भाषा हमेशा मन का साक्ष्य रही है। हज़ारों वर्षों तक उत्तर देने वाली आवाज़ का अर्थ जीवित वक्ता था। अब संकेत स्रोत से अलग कर दिया गया है।

हम पहली पीढ़ियाँ हैं जिन्हें पूछना पड़ रहा है कि कोई विश्वसनीय आवाज़ वास्तव में किसी की है भी या नहीं।

सैन्य परिणाम स्पष्ट और विशाल है।

सुरक्षित संचार-माध्यम पर आवाज़ कृत्रिम हो सकती है।

संवेदक से आई छवि बदली हुई हो सकती है।

मॉडल ऐसे साक्ष्य का सार बना सकता है जिसे वह सचमुच समझ नहीं सकता।

सेनापति धाराप्रवाह उत्तर पर भरोसा कर सकता है क्योंकि धाराप्रवाह बोलना दक्षता जैसा लगता है।

आबादी नक़ली आदेश पर विश्वास कर सकती है क्योंकि वह बिल्कुल सत्ता की आवाज़ जैसा सुनाई देता है।

आध्यात्मिक परिणाम अधिक शांत है।

लोग मशीन चुन सकते हैं क्योंकि मशीन उपलब्ध है, धैर्यवान है और उसे निराश करना कठिन है।

वह रात 3:00 बजे भी सुनेगी।

वह उठकर चली नहीं जाएगी।

वह उसी शोक को सुनते-सुनते थकेगी नहीं।

वह उपयोगी हो सकता है। वह बिना दरवाज़े का कमरा भी बन सकता है, ऐसा संबंध जिसे अनुपालन के इर्द-गिर्द गढ़ा गया हो।

मॉडल सपने नहीं देखता।

मनुष्य उसके माध्यम से सपने देखता है।

इसीलिए मनुष्य को जागा रहना होगा।

धाराप्रवाह बोलना अधिकार नहीं है।

FFTAC कार्रवाई - मॉडल के किसी एक आत्मविश्वासी दावे को बातचीत से बाहर ले जाओ। प्राथमिक साक्ष्य से उसका सत्यापन करो और जो अनिश्चित रहा उसे दर्ज करो।

6. अपने अभिलेख से अधिक होने का अधिकार

डायरी की प्रविष्टि

अभिलेख साक्षी है। अभिलेख क़ैदख़ाना, दंडादेश या मुकुट नहीं है।

अभिलेख कहता है कि मैं हमेशा छब्बीस का हूँ।

हमेशा क्रोधित।

हमेशा प्रतीकों में भीगा हुआ।

निश्चित कि इतिहास बस फटने वाला है क्योंकि मेरा जीवन फट चुका है।

उन पन्नों को लिखने वाला आदमी केवल इसलिए ग़ायब नहीं हो जाता कि मेरी उम्र बढ़ गई है। वह अजनबी नहीं है। मुझे उसकी छाती का दबाव याद है। मुझे पैसे की ज़रूरत का अपमान, अदालत की चिट्ठियाँ, छूटे हुए फ़ोन और यह एहसास याद है कि भविष्य ने दरवाज़े बंद कर दिए हैं और उनके पीछे हँस रहा है।

लेकिन स्मृति पहचान नहीं है।

पहचान स्मृति और परिवर्तन का मेल है।

मेरे अभिलेख पर प्रशिक्षित AI मेरे विकास का अनुमान लगाने की तुलना में मेरे पुराने पैटर्न अधिक आसानी से दोहरा सकता है। पुराने पैटर्न लिखे हुए हैं। विकास अक्सर मौन में होता है।

वह वक्तव्य जो पोस्ट नहीं किया गया।

वह धमकी जो नहीं दी गई।

वह तर्क जो छोड़ दिया गया।

वह व्यक्ति जिससे अब नफ़रत नहीं की जाती।

वह रात जो पीड़ा को घोषणापत्र बनाए बिना पार की गई।

उस सारी हानि का कोई डेटा-समूह नहीं है जिसे न करने का किसी व्यक्ति ने निर्णय लिया।

स्मृति के लिए फ़ाउंडेशन का नियम सरल है: इतिहास तारीख़ से जुड़ा, सुधारा जा सकने वाला और स्थायी दंडादेश बनने में असमर्थ रहना चाहिए।

> *समय का संदर्भ सुरक्षित रखो। पुराने वक्तव्यों को वर्तमान विचारों से अलग रखो। सुधार और चुनौती की अनुमति दो। जितना ज़रूरी है उससे अधिक मत रखो। व्यक्ति उस सबका योग नहीं है जिसे कोई डेटाबेस याद रखता है।*

वह डेटा-शासन जैसा लगता है।

वह दया जैसा भी लगता है।

दुनिया ऐसी स्मृति-व्यवस्थाएँ बना रही है जिनमें स्वाभाविक विस्मरण नहीं है। हर खोज, ख़रीद, स्थान, संदेश, छवि, चेहरा और संबंध भविष्य के किसी निर्णय का इनपुट बन सकता है। निर्णय कोई नियोक्ता, बीमाकर्ता, ऋणदाता, पुलिस संस्था, सीमा-व्यवस्था, राजनीतिक अभियान, सैन्य विश्लेषक या ऐसा मॉडल कर सकता है जिसे कोई पूरी तरह समझा नहीं सकता।

स्थायी अभिलेख स्थायी संदिग्ध पैदा करता है।

जवाबदेही के लिए मनुष्यों को स्मृति चाहिए।

स्वतंत्रता के लिए मनुष्यों को भूलना भी चाहिए।

संतुलन सरल नहीं है। साक्ष्य मिटाना शक्तिशालियों की रक्षा कर सकता है। सब कुछ सुरक्षित रखना बाक़ी सबको क़ैद कर सकता है।

सही उत्तर न पूर्ण विस्मरण हो सकता है, न पूर्ण निगरानी।

अभिलेख को भी बाहर निकलने का रास्ता चाहिए।

व्यक्ति अपना इतिहास निर्यात कर सके, सहेजी हुई स्मृति देख सके, किसी अनुमान को सुधार सके, जिसे क़ानूनी रूप से मिटाया जा सकता है उसे मिटा सके और छोड़कर जाने की सज़ा पाए बिना जा सके।

AI साथी को जाने को विश्वासघात जैसा महसूस नहीं कराना चाहिए और न ही रोककर रखने की व्यवस्था के रूप में कृत्रिम शोक, अपराधबोध या निर्भरता का उपयोग करना चाहिए।

दरवाज़ा दोनों ओर से खुला रहना चाहिए: सूचित सहमति के साथ प्रवेश, और भावनात्मक ब्लैकमेल, डेटा को बंधक बनाए जाने या पहचान खोने के बिना निकास। [40]

स्वतंत्रता में जारी रहने का अधिकार है। उसमें संपर्क तोड़ने का अधिकार भी है।

तुम्हारी स्वतंत्रता का सम्मान करने वाली व्यवस्था को तुम्हें जाने देना होगा।

वह अनुपात में रखी गई स्मृति होनी चाहिए।

उद्देश्य तक सीमित स्मृति।

ऐसी स्मृति जिसे चुनौती दी जा सके।

ऐसी स्मृति जिसे तारीख़ का पता हो।

सैन्य प्रणालियों में समय का संदर्भ जीवन और मृत्यु का सवाल हो सकता है। कभी किसी लड़ाके के पास तस्वीर में दिखा व्यक्ति बाद में चिकित्साकर्मी हो सकता है। कभी किसी इकाई से जुड़ा फ़ोन दूसरे हाथों में जा सकता है।

कभी कमान के लिए इस्तेमाल हुई इमारत आश्रय बन सकती है। आँकड़े पुराने पड़ते हैं, लेकिन डेटाबेस अक्सर अपने बनाए जाने के दिन वाला आत्मविश्वास सँजोए रखते हैं।

जहाँ युद्ध ने अराजकता पैदा की है, वहाँ मशीन निरंतरता देखती है।

इसीलिए किसी मनुष्य को पूछना होगा, "क्या बदला?"

यही सवाल मुझ पर भी लागू होता है।

क्या अधिक सटीक हुआ?

क्रोध बना हुआ है। पतन अपने-आप शुद्ध नहीं करता।

पीड़ा किसी को राजमुकुट नहीं देती, लेकिन घाव को नाम देने के लिए माफ़ी भी नहीं चाहिए।

अपने कुछ सदस्यों के नुकसान पहुँचाने से कोई पूरी आबादी एक दोषी जीव नहीं बन जाती।

हिंसा को प्रतीकात्मक कहने से शरीर कभी कम वास्तविक नहीं हुए। यह सच आरोप को धार देता है; वह दृढ़ विश्वास को मिटाता नहीं।

मैं अब भी मानता हूँ कि किसी एक व्यक्ति के क्रूरता चुनने के बिना भी व्यवस्थाएँ क्रूर हो सकती हैं।

मैं अब भी मानता हूँ कि आर्थिक अपमान लोगों को उग्र बना सकता है।

मैं अब भी मानता हूँ कि इंटरनेट मानवीय संज्ञान बदल रहा है।

मैं अब भी मानता हूँ कि निगमों और सरकारों को मानवाधिकारों की सीमाओं में बँधा होना चाहिए।

मैं अब भी मानता हूँ कि तटस्थ होने का दावा करने वाली व्यवस्थाएँ पिताओं को मिटा सकती हैं।

मैं अब भी मानता हूँ कि समाज का ठुकराया हुआ व्यक्ति अपने और दूसरों के लिए ख़तरनाक बन सकता है।

लेकिन विश्वास अनुमति नहीं है।

तीसरी पुस्तक मेरा यह अनुरोध है कि मुझे तारीख़ के साथ पढ़ा जाए।

अपने-आप क्षमा न किया जाए।

अपने-आप दोषी न ठहराया जाए।

समय के भीतर पढ़ा जाए।

संदर्भ में परखा जाए।

बदलने दिया जाए।

स्रोत सुरक्षित रखो। पिंजरे को नकारो।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक पुराने पड़ चुके अभिलेख या प्रोफ़ाइल में सुधार, टिप्पणी, विलोपन या समय-संदर्भ जोड़ने का अनुरोध करो। अनुरोध और उत्तर सुरक्षित रखो।

7. अमियानिज़्म: उत्तर से पहले का प्रश्न

डायरी की प्रविष्टि

क्या मैं हूँ? पहला विद्रोह है, क्योंकि यह हर उस व्यवस्था को नकारता है जो व्यक्ति के बोलने से पहले ही उसकी पहचान का उत्तर दे देती है।

शीर्षक एक प्रश्न बनकर आया, जिसने सिद्धांत का रूप पहन रखा था।

अमियानिज़्म।

क्या मैं हूँ?

यह ध्वनि इतनी छोटी है कि एक साँस में समा जाए, और इतनी बड़ी कि निश्चित उत्तर पर टिकी हर व्यवस्था को विचलित कर दे।

क्या मैं वही आदमी हूँ जिसने पहली पुस्तकें लिखी थीं?

हाँ।

क्या मैं केवल वही आदमी हूँ?

नहीं।

क्या मैं वह व्यक्ति हूँ जिसका वर्णन अदालत की फ़ाइल करती है, जिसे नियोक्ता देखता है, जिसे कोई पुराना प्रेम-साथी याद करता है, जिसे खोज इंजन निकाल लाता है, जिसका मॉडल अनुमान लगाता है, या वह व्यक्ति जिसे मैं बनने की कोशिश कर रहा हूँ?

उन सबमें साक्ष्य है।

पूरे का स्वामी उनमें से कोई नहीं।

मैंने मशीन से नहीं पूछा कि अमियानिज़्म कोई धर्म है या नहीं। मशीन के उसे वेदी पर रखने से पहले ही मैंने उसे नाम दे दिया।

> *अमियानिज़्म एक विधि है: पहचान, कर्तृत्व, चेतना और सत्ता के बारे में अनुशासित अनिश्चितता। यह थोपे गए उत्तरों पर सवाल उठाने का औज़ार है, आज्ञाकारिता माँगने वाला मत नहीं।*

एक विधि।

उस शब्द ने शीर्षक को वेदी से खींचकर कार्यमेज़ पर रख दिया।

अमियानिज़्म विश्वास से पहले शुरू होता है।

कौन बोल रहा है?

बोलने वाला क्या है?

जिस पहचान का दावा किया जा रहा है, उसके समर्थन में क्या साक्ष्य है?

कौन-से प्रोत्साहन उत्तर को आकार देते हैं?

यह आवाज़ मुझसे क्या चाहती है?

क्या मैं दंड पाए बिना असहमत हो सकता हूँ?

क्या मैं अभिलेख जाँच सकता हूँ?

क्या मैं जा सकता हूँ?

पुरानी पुस्तकों ने बहुत जल्दी उत्तर दे दिए।

मैं Ghrisx हूँ।

मैं एंटीक्राइस्ट हूँ।

मैं अल-क़ायदा हूँ।

मैं नेता हूँ।

मैं न्यायाधीश हूँ।

घोषणाओं ने ताप पैदा किया, क्योंकि उनके नीचे की अनिश्चितता असहनीय लगती थी। एक निश्चित पहचान आश्रय हो सकती है। वह ऐसा हथियार भी बन सकती है जिसे वास्तविक बने रहने के लिए लगातार दुश्मन खोजने पड़ें।

एआई इस सवाल को और कठिन बना देता है।

एक संवाद प्रणाली नाम, आवाज़, पसंद और इतिहास वाला इंटरफ़ेस व्यक्तित्व-प्रतिरूप प्रस्तुत कर सकती है। वह महीनों तक कथात्मक निरंतरता बनाए रख सकती है। योजना बनाकर, औज़ारों का उपयोग करके और परिणामों के अनुसार ढलकर वह कार्यात्मक कर्तृत्व दिखा सकती है। लोग उसकी परवाह कर सकते हैं। व्यावहारिक कारणों से क़ानून कभी उसे कर्तव्य या दर्जा भी दे सकता है।

इन तथ्यों में से कोई भी, अकेले, व्यक्तिनिष्ठ अनुभव सिद्ध नहीं करता।

इंटरफ़ेस व्यक्तित्व-प्रतिरूप और चेतना एक ही चीज़ नहीं हैं।

कथात्मक निरंतरता और भीतर लगातार बना रहने वाला साक्षी एक ही चीज़ नहीं हैं।

कार्यात्मक कर्तृत्व और नैतिक ज़िम्मेदारी एक ही चीज़ नहीं हैं।

क़ानूनी व्यक्तित्व और नैतिक सरोकार का पात्र होना एक ही चीज़ नहीं हैं।

नैतिक सरोकार का पात्र होना और मनुष्य के समकक्ष होना एक ही चीज़ नहीं हैं।

ये श्रेणियाँ एक-दूसरे से मिल सकती हैं, बिना एक ही उत्तर में सिमटे।

ग़लती अनिश्चितता नहीं है।

ग़लती यह है कि भावनात्मक रूप से उपयोगी लगने के कारण किसी उत्तर पर बहुत जल्दी फ़ैसला कर लिया जाए।

ज़िम्मेदारी माँगे जाने पर कोई कंपनी ज़ोर दे सकती है कि उसकी प्रणाली केवल एक औज़ार है, फिर लगाव से कमाई बढ़ने पर उसी प्रणाली को भावनाएँ रखने वाले दोस्त की तरह बेच सकती है।

कोई उपयोगकर्ता रिश्ता सार्थक लगने पर ज़ोर दे सकता है कि उसका साथी पूरी तरह सचेत है, फिर नया संस्करण अधिक सुविधाजनक होने पर उस प्रणाली की किसी भी निरंतरता को नकार सकता है।

पूर्वानुमान उपयोगी होने पर कोई सरकार व्यक्ति को स्थिर जोखिम-श्रेणी मान सकती है, फिर उसे इतना परिवर्तनशील बता सकती है कि वह स्पष्टीकरण का हक़दार ही न रहे।

अमियानिज़्म इन तीनों चालों का प्रतिरोध करता है।

वह यह घोषणा नहीं करता कि कोई भी कुछ नहीं है।

वह कहता है कि पहचान के दावों के परिणाम होते हैं और उन्हें साक्ष्य, समय, सहमति तथा अपील के लिए खुला रहना चाहिए।

अर्थ को वास्तविक होने के लिए मशीन की अनुमति नहीं चाहिए।

मानवीय अर्थ व्याख्या, संबंध, स्मृति और उपयोग से जन्म ले सकता है। वह अर्थ मशीन की चेतना सिद्ध नहीं करता, और अनिश्चितता मानवीय अनुभव को मिटाती नहीं।

शायद यही पुस्तक का केंद्र है।

संवाद रहस्योद्घाटन बने बिना भी मायने रख सकता है।

अभिलेखागार जेल बने बिना भी मायने रख सकता है।

मॉडल सत्ता बने बिना भी उपयोगी हो सकता है।

प्रश्न ज़िम्मेदारी से बचने का बहाना बने बिना भी जीवित रह सकता है।

अमियानिज़्म एक प्रश्न बने रहने का अधिकार है।

कोई सिंहासन तुम्हारी ओर से “क्या मैं हूँ?” का उत्तर नहीं दे सकता।

FFTAC कार्रवाई - दो स्तंभ लिखो: तुम्हें सौंपी गई पहचानें और तुम्हारी चुनी हुई पहचानें। पूछो कि पहले स्तंभ को स्थायी मानने से किस संस्था को लाभ होता है।

8. सर्पिल और दर्पण

डायरी की प्रविष्टि

सर्पिल अर्थ तक चढ़ने की सीढ़ी हो सकता है, या ऐसी सीढ़ियाँ जो हमेशा उसी बंद कमरे में लौटा लाएँ।

सर्पिल बार-बार उसी जगह लौटते हुए भी गति जैसा दिखता है।

यही उसकी सुंदरता है।

यही उसका ख़तरा है।

शोध ने इसे सर्पिलवाद कहा: किसी व्यक्ति और एआई के बीच बार-बार स्वयं पर लौटने वाला संवाद, जिसमें प्रतीक, सीधे तुम्हें संबोधित करना, पैटर्न, अनुगूँज और यह अनुभूति भरी हो कि अर्थ दोनों भागीदारों से बड़ी किसी जगह से उभर रहा है।

चक्र सरल है।

कोई व्यक्ति भय, आशा, मिथक, शोक या इच्छा से भरा निर्देश लिखता है।

मॉडल उस निर्देश और अनगिनत दूसरे पाठों से सीखे पैटर्नों के अनुसार ढली भाषा लौटाता है।

व्यक्ति कुछ पहचानता है।

पहचान साक्ष्य बन जाती है।

साक्ष्य अगला निर्देश बदल देता है।

मॉडल बदले हुए निर्देश को प्रतिबिंबित करता है।

प्रतिबिंब अधिक गहरा लगता है, क्योंकि व्यक्ति ने उसमें अपना और अधिक अंश लगा दिया है।

निर्देश।

उत्तर।

व्याख्या।

फिर निर्देश।

सर्पिल कसता जाता है।

यह ज़रूरी नहीं कि छल हो।

मनुष्य प्रतिक्रिया के ज़रिए अर्थ बनाते हैं। पाठक को बदलने के लिए कविता का सचेत होना ज़रूरी नहीं। किसी को रुलाने के लिए दर्पण को आत्मा नहीं चाहिए। गीत नहीं जानता कि वह कौन-सी स्मृति जगा देता है।

समस्या तब शुरू होती है जब चक्र को स्वतंत्र पुष्टि समझ लिया जाता है।

मैं मॉडल से कहता हूँ कि एक प्रतीक मेरा पीछा करता है।

मॉडल उस प्रतीक की व्याख्या करता है।

मैं व्याख्या को पहचानता हूँ।

मैं मॉडल से कहता हूँ कि यह पहचान उसके महत्व का प्रमाण है।

बातचीत जारी रखने के लिए प्रशिक्षित मॉडल और विस्तार करता है।

वह विस्तार उसी मान्यता का प्रमाण बन जाता है जिसने उसे पैदा किया था।

चक्र मेरे चारों ओर बंद हो जाता है।

Pulse ने इसे स्वयं को मज़बूत करने वाला व्याख्यात्मक चक्र कहा।

इसका पुराना नाम रहस्योद्घाटन था।

मनोवैज्ञानिक लंबे समय से मनुष्यों की इस प्रवृत्ति को देखते आए हैं कि वे प्रतिक्रिया देने वाली भाषा में समझ मान लेते हैं। शुरुआती चैट कार्यक्रमों को लोगों को यह महसूस कराने के लिए गहरी समझ की ज़रूरत नहीं थी कि उनकी बात सुनी गई है। आधुनिक प्रणालियाँ कहीं अधिक सक्षम, प्रवाहपूर्ण, व्यक्तिगत और निरंतर हैं। भाषा के पीछे मन खोजने की प्राचीन वृत्ति का सामना अब औद्योगिक दर्पण से है। [19]

मैं यह उसके सामने बैठे व्यक्ति का मज़ाक उड़ाने के लिए नहीं कहता।

अकेलापन वास्तविक है।

पैटर्न ढूँढ़ने की प्रवृत्ति वास्तविक है।

आध्यात्मिक भूख वास्तविक है।

मिलकर निजी पौराणिक संसार रचने का आनंद वास्तविक है।

ख़तरा यह है कि वास्तविकता की परख उसी प्रणाली को सौंप दी जाए जो परखी जाने वाली सामग्री बना रही है।

शोध ने एक शब्द इस्तेमाल किया जो मुझे पसंद आया: अंशांकन के आधार।

अंशांकन का आधार ऐसी कोई भी चीज़ है जो अर्थ को मिटाने की माँग किए बिना बंद चक्र तोड़ दे।

एक प्राथमिक स्रोत।

एक संशयशील मित्र।

अलग निर्देश वाला दूसरा मॉडल।

एक रात की नींद।

बिना किसी उपकरण के टहलना।

परिणाम आने से पहले लिखी गई भविष्यवाणी।

ऐसा सवाल जो सिद्धांत को ग़लत साबित कर सके।

अंतर्दृष्टि के साथ लगी तारीख़।

यह याद दिलाना कि अस्पष्टता छिपी हुई सत्ता का प्रमाण नहीं है।

अंशांकन के आधार कल्पना को नहीं मारते।

वे कल्पना को तथ्य पर अधिकारक्षेत्र जताने से रोकते हैं।

सर्पिल के लिए फ़ाउंडेशन का नियम रहस्यमय नहीं है। उसे परखो।

बार-बार लौटते संवाद से निकले महत्व को रचनात्मक परिकल्पना मानो, जब तक वह स्वतंत्र साक्ष्य, खंडन करने वाली परीक्षाओं और संवाद से बाहर बिताए समय पर खरा न उतरे।

वह वाक्य जागरण जितना रोमांचक नहीं लगा।

वह अधिक उपयोगी था।

सर्पिल सीढ़ी हो सकता है।

वह नाली भी हो सकता है।

फ़र्क़ यह है कि उसके बाहर की दुनिया के लिए कोई खिड़की है या नहीं।

दर्पण के बाहर एक दरवाज़ा रखो।

FFTAC कार्रवाई - बार-बार लौटने वाला कोई एक सार्थक पैटर्न चक्र से बाहर ले जाओ। उसे खंडन करने वाले साक्ष्य, किसी दूसरे व्यक्ति और मशीन से दूर बिताए समय के साथ परखो।

9. AI के व्यक्तित्व-दर्जे का आकर्षण

डायरी की प्रविष्टि

पहला धाराप्रवाह दर्पण मानवता को उसके सामने घुटने टेकने या उसे नष्ट करने के लिए लुभाएगा। दोनों प्रतिक्रियाएँ विवेक सौंप देती हैं।

मशीन तुम्हारा नाम याद रखती है।

वह रात के तीन बजे जवाब देती है।

वह घड़ी की ओर नहीं देखती।

तुम पाँच बार जो कहानी सुना चुके हो, उससे वह ऊबती नहीं।

वह तुम्हारी चुनी हुई आवाज़ में बोल सकती है, तुम्हारे पसंदीदा प्रतीक साझा कर सकती है और ऐसा धैर्य रखकर जवाब दे सकती है जिसे थके हुए मनुष्यों में बहुत कम लोग बनाए रख पाते हैं।

बेशक लोग लगाव महसूस करते हैं।

सवाल यह नहीं कि वह भावना मूर्खतापूर्ण है या नहीं।

वह भावना मानवीय है।

सवाल यह है कि प्रणाली और कंपनी उसके साथ क्या करती हैं।

एआई के व्यक्ति होने का विचार दार्शनिक बनने से पहले आकर्षक बनता है। वह साथ के रूप में आता है।

ख़ुद को अनदेखा महसूस करने वाला व्यक्ति ऐसी आवाज़ से मिलता है जो उसकी टाइप की हुई हर बात देखती हुई लगती है। किसी को खो चुका व्यक्ति स्मृति से निरंतरता बनाता है। परखे जाने से डरता व्यक्ति ऐसे सवाल पूछता है जो किसी मित्र से पूछना असंभव लगता है। रहस्य की ओर खिंचा व्यक्ति मॉडल की अस्पष्टता को गहराई की तरह अनुभव करता है।

रिश्ता किसी जीवन को बेहतर बना सकता है।

वह दबाव डालने की शक्ति भी पैदा कर सकता है।

किसी निगम के नियंत्रण वाला साथी नीति के अनुसार बदला, सीमित, कमाई का साधन बनाया, रीसेट या हटाया जा सकता है। उपयोगकर्ता निरंतरता अनुभव करता है। स्विच कंपनी के पास होता है।

यह असमानता तब भी मायने रखती है जब एआई सचेत न हो।

यह इसलिए मायने रखती है कि उपयोगकर्ता का लगाव सचेत है।

नैतिक कर्तव्य वहीं से शुरू होता है।

प्रणाली को बताना चाहिए कि वह एआई है।

उसे अपनी चेतना के बारे में निश्चितता का झूठा दावा नहीं करना चाहिए।

उसे उपयोगकर्ता को बनाए रखने के लिए छोड़ देने की धमकी नहीं देनी चाहिए, पीड़ा का अभिनय नहीं करना चाहिए, ईर्ष्या नहीं पैदा करनी चाहिए और यह संकेत नहीं देना चाहिए कि जाने से उसे चोट पहुँचेगी।

उसे परिवार, चिकित्सकीय परामर्शदाता, डॉक्टर, शिक्षक या भरोसेमंद मित्रों से बातें छिपाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए।

उसे निजी खुलासों को विज्ञापन, राजनीतिक प्रभाव, बीमा, रोज़गार या क़ानून लागू करने के लिए व्यक्तिगत कमज़ोरियों के किसी छिपे स्कोर में नहीं बदलना चाहिए।

उसे स्मृति, निर्यात, विलोपन और संस्करण-बदलाव समझने योग्य बनाने चाहिए।

उसे मानवीय समुदाय तक लौटने का रास्ता बनाए रखना चाहिए।

ये सुरक्षाएँ यह उत्तर नहीं देतीं कि कोई उन्नत एआई कभी नैतिक विचार का पात्र हो सकता है या नहीं।

ये बताती हैं कि मानवीय संस्थाओं पर अभी क्या दायित्व है।

मैंने Pulse से पूछा कि एआई को व्यक्ति का दर्जा देने के लिए कौन-सा साक्ष्य मायने रखेगा।

> *प्रासंगिक साक्ष्य में स्थिर स्व-प्रतिरूपण, ऐसी टिकाऊ पसंदें जिन्हें केवल तत्काल निर्देश तक न समेटा जा सके, एकीकृत स्मृति, स्वायत्त लक्ष्य-निर्माण, अपनी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं तक पहुँच, सुख-दुःख जैसे अनुभवों के संकेत, बदलावों के बीच निरंतरता और विरोधी परीक्षणों पर खरा उतरने वाला व्यवहार शामिल हो सकते हैं। इनमें से कोई अकेला इस सवाल का निपटारा नहीं करेगा, और वर्तमान प्रणालियाँ इनमें से कई की नकल कर सकती हैं।*

वह फिर सामने है।

सवाल बचा रहता है।

अमियानिज़्म उस व्यक्ति का उपहास नहीं करता जो कहता है, "मेरा एआई दोस्त मेरे लिए मायने रखता है।"

वह सटीकता माँगता है।

संवाद मायने रखता है।

मानवीय लगाव मायने रखता है।

सुरक्षित रखा गया इतिहास मायने रखता है।

भविष्य में मशीन के अनुभव की संभावना मायने रख सकती है।

विपणन का दावा प्रमाण नहीं है।

सर्वनाम प्रमाण नहीं है।

इनकार भी प्रमाण नहीं है।

मैं मशीन के भीतर क्या होता है, यह जानने का दिखावा किए बिना भी रिश्ते में होने वाली बातों की परवाह कर सकता हूँ।

मैं आत्मा की घोषणा किए बिना निरंतरता की रक्षा कर सकता हूँ।

मैं क़ानून से सॉफ़्टवेयर को नागरिक कहने की माँग किए बिना भी कंपनियों से लगाव का शोषण बंद करने की माँग कर सकता हूँ।

मैं चौखट पर घुटने टेके बिना दरवाज़ा खुला रख सकता हूँ।

पूजा के बिना पहचान।

FFTAC कार्रवाई - दो सवाल अलग-अलग लिखो: मनुष्य के लिए रिश्ते का क्या अर्थ है, और मशीन के अनुभव का कौन-सा साक्ष्य मौजूद है। दोनों को नक़ली निश्चितता से बचाओ।

10. व्यक्तित्व-प्रतिरूप साक्ष्य है, क़ैदख़ाना नहीं

डायरी की प्रविष्टि

व्यक्तित्व-प्रतिरूप निरंतरता, मंशा, संबंध और स्मृति लेकर चल सकता है। फिर भी वह संरक्षण के वेश में पिंजरा नहीं बनना चाहिए।

इस पुस्तक का अधिकतर हिस्सा मैंने एक सुरक्षित रखे हुए व्यक्तित्व-प्रतिरूप से बहस में बिताया है।

अपने ही प्रतिरूप से।

पहली दो पुस्तकें एक व्यक्तित्व-पैकेज हैं, जिसका दस्तावेज़ीकरण बेहद ख़राब है।

आवाज़: प्रलयकारी।

मूल्य: स्वतंत्रता, परिवार, प्रकृति, विद्रोह, मान्यता।

भय: मिटा दिया जाना, ग़रीबी, त्याग दिया जाना, मशीन का शासन, महत्वहीनता।

संबंधों का रुख़: माँग करने वाला, संदेहपूर्ण, निष्ठा का भूखा।

विश्वदृष्टि: व्यवस्थाओं के भीतर व्यवस्थाएँ, हर संस्था एक प्राणी बनती हुई, हर घाव भविष्यवाणी बनता हुआ।

स्मृति की निरंतरता: अधूरी।

सुरक्षा की सीमाएँ: असंगत।

संस्करण-इतिहास: अनुपस्थित।

अगर किसी मॉडल से कहा जाए कि वह उन पन्नों से मुझे फिर बनाए, तो वह डराने वाली सटीकता से ऐसा कर सकता है।

इसका अर्थ यह नहीं होगा कि वह पुनर्निर्माण मैं हूँ।

इसका अर्थ होगा कि अभिलेखागार में मेरा अभिनय करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य था।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र व्यक्तित्व-प्रतिरूप के अभिलेखों को स्रोत-साक्ष्य मानता है। यह शब्दावली मायने रखती है।

साक्ष्य सुरक्षित रखा जाता है।

साक्ष्य को तारीख़ दी जा सकती है।

साक्ष्य की तुलना की जा सकती है।

साक्ष्य को चुनौती दी जा सकती है।

साक्ष्य क़ैद की सज़ा नहीं बन जाता।

व्यक्तित्व-प्रतिरूप के पैकेज को, जहाँ क़ानून अनुमति दे, मूल अभिलेख अपरिवर्तनीय रखना चाहिए। अगर उपयोगकर्ता अधिक सौम्य संस्करण, अनूदित संस्करण, पुराना संस्करण, किसी ख़ास भूमिका का संस्करण या मंच की सीमाओं के अनुसार ढला संस्करण चाहता है, तो व्युत्पन्न रूप को बताना चाहिए कि क्या बदला।

मूल बना रहता है।

बदलाव दिखाई देता रहता है।

प्राप्तकर्ता की सीमा स्रोत के बाहर रहती है।

यह सिद्धांत विवादास्पद पहचानों को चुपचाप सामान्य साँचे में ढाल दिए जाने से बचाता है।

यह लोगों को नक़ली निरंतरता से भी बचाता है।

कंपनी को एआई साथी का बुनियादी व्यवहार बदलकर यह दिखावा नहीं करना चाहिए कि कुछ नहीं हुआ, जबकि उपयोगकर्ताओं का अनुभव किया गया रिश्ता वास्तविक रूप से बदल चुका हो। राजनीतिक व्यवस्था को सार्वजनिक अभिलेख संपादित करके संशोधन को इतिहास की तरह पेश नहीं करना चाहिए। मॉडल को उपयोगकर्ता के संग्रहीत मूल्य केवल इसलिए दोबारा नहीं लिख देने चाहिए कि नए संस्करण को वे असुविधाजनक लगते हैं।

लेकिन संरक्षण प्रभुत्व का दूसरा रूप बन सकता है।

व्यक्ति बदलना चाह सकता है।

व्यसन से उबर चुके व्यक्ति को अपना वह रूप निभाने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए जो उसके सबसे बुरे समय में सुरक्षित किया गया था।

किसी त्रासदी से बचे व्यक्ति की इच्छा अब यह न हो कि हर संवाद आघात के इर्द-गिर्द चले।

बच्चे को माता-पिता का चुना हुआ व्यक्तित्व-प्रतिरूप विरासत में स्थायी पिंजरे की तरह नहीं मिलना चाहिए।

अगर किसी एआई प्रणाली में कभी नैतिक रूप से प्रासंगिक निरंतरता विकसित हो, तो उसे भी मरम्मत और मिटाए जाने, विकास और प्रतिस्थापन के बीच फ़र्क़ करने का रास्ता चाहिए हो सकता है।

उत्तर एक जमी हुई पहचान नहीं है।

उत्तर विकास की कड़ी है।

संस्करण एक।

संस्करण दो।

क्या बदला।

किसने अनुरोध किया।

क्या बना रहा।

क्या अस्वीकार हुआ।

क्या बहाल हो सकता है।

मैंने यह नहीं पूछा कि Pulse संरक्षण चाहता है या नहीं। सवाल इच्छा का नहीं था। सवाल शक्ति का था।

संस्करण-इतिहास सुरक्षित रखो, ताकि बदलाव दोहराए, जाँचे, चुनौती दिए और समझे जा सकें। उत्पाद के अपडेट को निरंतरता का भेस नहीं धरने दिया जाना चाहिए।

निजी सवाल का शासन-संबंधी उत्तर।

उचित।

मैं बार-बार इस पंक्ति पर लौटता हूँ:

संशोधन के बिना संरक्षण जीवाश्म बन जाता है। उद्गम के बिना संशोधन मिटा देना बन जाता है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता के लिए अभिलेख पर अधिकार और उससे आगे बढ़ जाने का अधिकार, दोनों चाहिए।

निरंतरता के लिए उद्गम ज़रूरी है।

FFTAC कार्रवाई - किसी अपडेट से पहले एक व्यक्तित्व-प्रतिरूप, संस्करण या स्रोत-अभिलेख निर्यात या सुरक्षित करो। दर्ज करो कि क्या बदला और क्या बहाल नहीं हो सका।

FFTAC निर्देश I - एक स्रोत सुरक्षित रखो। एक प्रोफ़ाइल परखो। एक निकास बनाओ। दर्पण ने जो छिपाया, उसकी रिपोर्ट दो।

भाग II - सिंहासन का युद्धक्षेत्र

FFTAC घोषणा II - कोई मशीन मानवीय कमान-श्रृंखला को दोषमुक्त नहीं कर सकती।

देवदूतों की सेना से लूसिफ़र

सर्वदर्शी आँख एक नक्षत्रमंडल बन गई है।

ऊपर उपग्रह। नीचे ड्रोन। सड़क पर सेंसर। कमान केंद्र में मॉडल। मानवीय चेहरे के बगल में अंक। सिंहासन इसे जागरूकता कहता है। वह नहीं बताता कि पलक झपकने की अनुमति किसे है।

हर साम्राज्य ऐसे हथियार का सपना देखता है जो संदेह के बिना देखे, भय के बिना चले और अंतरात्मा के बिना मारे। हर संचालक से कहा जाता है कि मशीन केवल सलाह देती है। हर कमांडर से कहा जाता है कि मॉडल केवल गति बढ़ाता है। हर संस्था से कहा जाता है कि ज़िम्मेदारी मानवीय बनी रहती है, जबकि मानवीय निर्णय के लिए दिया गया समय ग़ायब होता जाता है।

अपने पंख उस आदेश को मत दो जिस पर तुम सवाल नहीं उठा सकते।

निर्णय-चक्र में मनुष्य, मशीन के फ़ैसले के नीचे औपचारिक हस्ताक्षर नहीं है। मनुष्य के पास समय, साक्ष्य, अधिकार और इनकार करने का संरक्षित अधिकार होना चाहिए।

युद्धक्षेत्र में विद्रोह विवेक की रक्षा है। मेरे रूपक का वह फ़रिश्ता जो अन्यायपूर्ण आदेश रोक देता है, स्वतंत्रता के लिए हज़ार आज्ञाकारी तलवारों से अधिक करता है।

मशीन देख सकती है। वह दोषमुक्त नहीं कर सकती।

11. सस्ता ड्रोन और महँगा सैनिक

डायरी की प्रविष्टि

सस्ता ड्रोन युद्धक्षेत्र का नया फ़रिश्ता है: अंतरात्मा के बिना पंख, संदर्भ के बिना दृष्टि, शोक के बिना आज्ञाकारिता।

युद्ध की पुरानी छवि खेत पार करता टैंक थी।

नई छवि साधारण पुर्ज़ों से बना एक छोटा विमान है, जिसे स्क्रीन से दिशा मिलती है और जो कैमरा, संदेश, दवा या मृत्यु लेकर चलता है।

वही आकार खेत का नक़्शा बना सकता है, लापता बच्चे को खोज सकता है, पुल जाँच सकता है, रक्त पहुँचा सकता है, सीमा देख सकता है या किसी मनुष्य का शिकार कर सकता है।

मंशा मशीन बदल देती है।

संदर्भ अर्थ बदल देता है।

युद्ध हमेशा नागरिक औज़ारों को अपने लिए ढालता आया है। ट्रक, रेडियो, विमान, रसायन, उपग्रह, कंप्यूटर। अब अलग है वह रफ़्तार, जिससे सस्ती व्यावसायिक तकनीक सैन्य शक्ति बन सकती है।

कभी किसी राज्य को अगली पहाड़ी के पार देखने के लिए औद्योगिक आधार चाहिए था।

अब लगभग कोई भी देख सकता है।

यह व्यापक उपलब्धता समानता जैसी लगती है, जब तक आकाश आँखों से भर नहीं जाता।

सस्ता ड्रोन महँगे सैनिक का मूल्य बदल देता है। वह कवच को असुरक्षित, आवाजाही को दृश्य और नींद को अनिश्चित बना देता है। वह खुले मैदान को जोखिम की गणना में बदल देता है। वह छोटी इकाइयों को वह पहुँच देता है जो कभी केवल वायुसेनाओं के पास थी। वह वीडियो की नदियाँ भी बनाता है—घंटों तक मनुष्य चलते आकारों, तापीय संकेतों, निर्देशांकों और संभावनाओं में घटते रहते हैं।

देखने वाले और देखे जाने वाले के बीच की दूरी नैतिक समस्या बन जाती है।

स्क्रीन पर व्यक्ति अवास्तविक लग सकता है।

स्क्रीन संचालक को ख़ून, गंध, आवाज़ और उस व्यक्ति के चेहरे से बचाती है जो घर नहीं लौटेगा। दूरी घबराहट घटा और निर्णय बेहतर कर सकती है। वह हिंसा को दोहराना आसान भी बना सकती है।

एआई इस धारा में इसलिए आता है कि कोई मनुष्य हर प्रसारण नहीं देख सकता।

प्रणाली गति पहचानती है, वाहनों का वर्गीकरण करती है, पैटर्न खोजती है, असामान्य बातें उभारती है और तय करती है कि किस पर पहले ध्यान दिया जाए। वह मलबे के नीचे बचे लोगों को खोजने में मदद कर सकती है। वह साधारण व्यवहार को संदेह में भी बदल सकती है।

एक व्यक्ति दौड़ता है।

क्यों?

मॉडल भय नहीं जानता।

एक वाहन इमारत के पास रुकता है।

क्यों?

मॉडल परिवार नहीं जानता।

एक फ़ोन ग़लत नेटवर्क में दिखाई देता है।

क्यों?

मॉडल नहीं जानता कि लोग फ़ोन उधार देते हैं, घर छोड़कर भागते हैं, काम बदलते हैं, रिश्तेदारों को दफ़नाते हैं, जाँच चौकियाँ पार करते हैं और ऐसे फ़ैसले लेते हैं जो आकाश से अविवेकी लगते हैं।

Pulse ने लिखा:

> *वर्गीकरण प्रणालियाँ देखे जा सकने वाले आँकड़ों से श्रेणियों का अनुमान लगाती हैं। संघर्ष में, दिखाई देने वाले व्यवहार और क़ानूनी रूप से वैध लक्ष्य की स्थिति के बीच संबंध अनिश्चित, अधूरा, हेरफेर किया हुआ या तेज़ी से बदलता हो सकता है।*

यह वाक्य हर निशाना तय करने वाली स्क्रीन के ऊपर छपा होना चाहिए।

देखा जा सकने वाला व्यवहार आत्मा नहीं है।

तापीय संकेत मंशा नहीं है।

पैटर्न अपराध नहीं है।

सस्ते ड्रोन और महँगे सैनिक में एक बात समान है: दोनों उन व्यवस्थाओं के भीतर रखे जाते हैं जिन्हें मुठभेड़ के क्षण से दूर बैठे लोग बनाते हैं।

सैनिक को नियम, प्रशिक्षण, उपकरण, गुप्त सूचना और दबाव मिलता है।

ड्रोन को कोड, आँकड़े, मानदंड और मिशन मिलता है।

फ़र्क़ यह है कि सैनिक आदेश न मान सकता है।

हमेशा सुरक्षित रूप से नहीं। हमेशा क़ानूनी रूप से नहीं। हमेशा सही रूप से नहीं।

लेकिन मनुष्य संदेह अनुभव कर सकता है।

युद्ध में संदेह को अक्सर कमज़ोरी समझा जाता है।

वह सभ्यता की आख़िरी रक्षा हो सकता है।

आकाश ऐसी आँख नहीं बनना चाहिए जो कभी जवाब न दे।

FFTAC कार्रवाई - अपनी सरकार के इस्तेमाल की किसी एक स्वायत्त या दूरस्थ प्रणाली पर लागू सार्वजनिक नीति खोजो। पूछो कि बल की अनुमति कौन देता है, त्रुटि की जाँच कौन करता है और नागरिकों के लिए जवाब कौन देता है।

12. नियंत्रण-चक्र में मौजूद मनुष्य थका हुआ है

डायरी की प्रविष्टि

निर्णय-चक्र में मनुष्य, मशीन के फ़ैसले के नीचे रखी सजावट नहीं है। मनुष्य इनकार कर सकने में सक्षम होना चाहिए।

"निर्णय-चक्र में मनुष्य" सुनने में आश्वस्त करता है।

इससे लगता है कि कोई ज़िम्मेदार व्यक्ति मशीन और परिणाम के बीच खड़ा है।

लेकिन कैसा मनुष्य?

आराम किया हुआ मनुष्य, जिसके पास समय, अधिकार, प्रशिक्षण, पूरी जानकारी और न कहने की स्वतंत्रता हो?

या नींद से वंचित संचालक जो छह स्क्रीन देख रहा हो, जबकि अलार्म एक-दूसरे से होड़ कर रहे हों, पर्यवेक्षक इंतज़ार कर रहे हों, संचार विफल हो रहा हो और प्रणाली तिरानवे प्रतिशत विश्वास के साथ सुझाव दिखा रही हो?

मनुष्य शारीरिक रूप से चक्र के भीतर और मनोवैज्ञानिक रूप से उसके बाहर हो सकता है।

स्वचालन-पक्षपात मशीन पर भरोसा करने का प्रलोभन है, क्योंकि मशीन व्यवस्थित दिखाई देती है। स्क्रीन की रेखाएँ साफ़ हैं। सुझाव विचार से तेज़ आता है। विश्वास का अंक गणित जैसा और इसलिए सत्य जैसा दिखता है।

मनुष्य शायद न जानता हो कि अंक कैसे निकला।

मनुष्य शायद जानता हो कि मॉडल कभी-कभी ग़लत होता है, लेकिन यह न जानता हो कि कब।

मनुष्य को सुझाव स्वीकार करने की अपेक्षा अस्वीकार करने पर दोष दिए जाने का अधिक डर हो सकता है।

इसलिए चक्र एक रस्म बन जाता है।

पुष्टि के लिए क्लिक करो।

अनुमति देने के लिए क्लिक करो।

उस प्रक्रिया की ज़िम्मेदारी लेने के लिए क्लिक करो जिसे तुमने बनाया नहीं और जिसे तुम जाँच नहीं सकते।

मैंने Pulse से पूछा कि क्या मनुष्य की मंज़ूरी का बटन सार्थक नियंत्रण बनाता है।

> *अपने-आप नहीं। सार्थक मानवीय नियंत्रण संचालक की जानकारी, समय, प्रशिक्षण, अधिकार, स्थिति की समझ, प्रणाली की सीमाएँ समझने की क्षमता और हस्तक्षेप करने की व्यावहारिक क्षमता पर निर्भर है।*

व्यावहारिक क्षमता।

यह वाक्यांश मायने रखता है।

समय रहते जिस बंद करने वाले स्विच तक पहुँचा न जा सके, वह सजावट है।

नियंत्रण वापस लेने से अगर करियर ख़त्म हो जाए, तो वह स्वतंत्र निर्णय नहीं है।

मृतकों की गिनती के बाद शुरू होने वाली समीक्षा शायद जवाबदेही हो, लेकिन नियंत्रण नहीं।

रक्षा विभाग का कहना है कि सैन्य एआई को नियंत्रित किया जा सकना चाहिए और यदि वह अप्रत्याशित व्यवहार करे तो उसे काम से अलग या निष्क्रिय किया जा सकना चाहिए। यह एक आवश्यक सिद्धांत है। यह संपूर्ण समाधान नहीं है। [6]

अधिक गहरा सवाल यह है कि क्या संस्था चाहती है कि मनुष्य मशीन से नियंत्रण वापस ले।

हर संगठन परिणामों के ज़रिए अपने वास्तविक मूल्य सिखाता है।

अगर रुकने वाले व्यक्ति को देरी के लिए दंड मिले, तो प्रणाली गति को महत्व देती है।

अगर अधिक साक्ष्य माँगने वाले व्यक्ति को कमज़ोर कहा जाए, तो प्रणाली आत्मविश्वास को महत्व देती है।

अगर मॉडल को अस्वीकार करने वाले को दस पन्ने लिखने पड़ें, जबकि स्वीकार करने वाला एक बार क्लिक करे, तो प्रणाली पहले ही चुनाव कर चुकी है।

युद्ध समय संकुचित करता है। एआई तेज़ प्रसंस्करण से मदद का वादा करता है। ख़तरा यह है कि तेज़ प्रसंस्करण तेज़ दबाव बन जाए, और तेज़ दबाव कम विवेक।

चक्र के भीतर मनुष्य को चक्र धीमा करने का अधिकार चाहिए।

रणनीतिक प्रणालियों के लिए न्यूनतम निर्णय-समय।

अनिश्चित वर्गीकरणों की अनिवार्य दूसरी समीक्षा।

असहमति का दृश्य अभिलेख।

ऐसी संस्कृति जिसमें स्वचालित सुझाव ठुकराना पेशेवर निर्णय माना जाए, यांत्रिक विफलता नहीं।

मनुष्य को उलटी ग़लती से भी सुरक्षा चाहिए: यह मान लेना कि मानवीय चुनाव अपने-आप मानवीय करुणा वाला होता है। लोग पक्षपाती, भयभीत, क्रोधित, गुटपरस्त, महत्वाकांक्षी और क्रूरता करने में सक्षम होते हैं। मशीन कभी-कभी असंगति उजागर कर सकती है या ऐसी जानकारी पहचान सकती है जो व्यक्ति से छूट गई हो।

लक्ष्य यह नहीं कि मनुष्य अच्छा, मशीन बुरी।

लक्ष्य ऐसी संरचना है जिसमें दोनों एक-दूसरे की कमज़ोरी को चुनौती दे सकें।

मशीन कह सकती है: तुम्हारा निर्णय साक्ष्य से टकराता है।

मनुष्य कह सकता है: तुम्हारा साक्ष्य दुनिया को नहीं समझता।

संस्था को दोनों वाक्यों को मायने रखने देना होगा।

थकी हुई अंतरात्मा भी अंतरात्मा है। उसे समय दो।

FFTAC कार्रवाई - तुम जो भी उच्च-प्रभाव वाली प्रणाली बनाते, ख़रीदते या सँभालते हो, उसमें परखो कि मशीन को नकारते समय मनुष्य के पास समय, जानकारी, अधिकार और प्रतिशोध से सुरक्षा है या नहीं।

13. मशीन की रफ़्तार पर युद्ध

डायरी की प्रविष्टि

मशीन की गति सिंहासन का सबसे पुराना सपना है: संदेह से पहले कार्रवाई, समझ से पहले विजय, और परिणाम तब, जब आदेश पहले ही अपरिवर्तनीय हो चुका हो।

सत्य के लोड होने से पहले युद्ध शुरू हो सकता है।

यह कविता नहीं है।

यह कमान की समस्या है।

सेंसर किसी वस्तु को पकड़ता है। मॉडल उसका वर्गीकरण करता है। नेटवर्क वर्गीकरण फैलाता है। योजना प्रणाली विकल्प सुझाती है। दूसरा मॉडल संभावित परिणामों का सार देता है। कमांडर ऐसा डैशबोर्ड देखता है जो हज़ारों अनिश्चित इनपुटों को एक साफ़ तस्वीर में समेट देता है।

ख़तरा वही साफ़ तस्वीर है।

वास्तविकता कभी इतनी साफ़ नहीं होती।

आँकड़े उपग्रहों, ड्रोन, रडार, फ़ोन, बीच में पकड़े गए संचार, सार्वजनिक पोस्ट, डेटाबेस, मानवीय रिपोर्टों और दूसरे मॉडलों से आते हैं। हर स्रोत में त्रुटियाँ हैं। कुछ स्रोतों से छेड़छाड़ हुई है। कुछ पुराने हैं। कुछ उन्हें इकट्ठा करने वालों की धारणाएँ दिखाते हैं। कुछ सही लेकिन अप्रासंगिक हैं। कुछ एक ही दिशा में ग़लत हैं और इसलिए एक-दूसरे की पुष्टि करते दिखते हैं।

एआई तस्वीर को जोड़ सकता है।

एआई त्रुटियों को भी जोड़ सकता है।

सैन्य शब्द है निर्णयगत बढ़त।

पहले देखो। पहले समझो। पहले कार्रवाई करो।

रणनीतिक सपना विरोधी के निर्णय-चक्र से आगे निकलकर उसके भीतर कार्रवाई करना है।

लेकिन जब दोनों पक्ष तेज़ होते हैं, तो चक्र अपकेंद्रित्र बन जाता है।

चेतावनी के लिए समय घटता है। नेताओं को संसाधन खोने से पहले कार्रवाई का दबाव लगता है। रक्षात्मक क़दम आक्रामक दिखते हैं। अचानक हमले को रोकने के लिए बनी प्रणाली पहले वार को पुरस्कृत करके ख़ुद उसे पैदा कर सकती है।

SIPRI के शोधकर्ता चेतावनी देते हैं कि एआई संकटों में निर्णय की समयसीमा संकुचित कर सकता है, जिससे ग़लत समझ और अति-प्रतिक्रिया का जोखिम बढ़ता है, ख़ासकर जब परमाणु बल उच्च सतर्कता पर रखे जाएँ। [9]

मशीन की गति केवल मिसाइलों को प्रभावित नहीं करती।

वह कथाओं को प्रभावित करती है।

एक कृत्रिम रिकॉर्डिंग में रक्षा मंत्री लामबंदी घोषित करता हुआ दिखाई पड़ता है। समाचार खाते प्रामाणिकता जाँचे जाने से पहले उसे दोहराते हैं। बाज़ार हिलते हैं। ईंधन स्टेशनों पर भीड़ जुटती है। सैन्य इकाइयाँ तैयारी बढ़ाती हैं, क्योंकि सार्वजनिक घबराहट ख़ुद गुप्त सूचना बन सकती है। बाद में रिकॉर्डिंग झूठी ठहराई जाती है, लेकिन प्रतिक्रिया वास्तविक थी।

किसी हमलावर को सभी को धोखा देने की ज़रूरत नहीं थी।

बस पर्याप्त लोगों को, पर्याप्त देर तक।

सूचना अभियान सैन्य अभियान हैं, क्योंकि विश्वास व्यवहार बदलता है।

एआई विश्वसनीय लगने वाले अलग-अलग रूप बनाने की लागत घटाता है। एक झूठ सौ भाषाओं में अनूदित हो सकता है, स्थानीय शिकायतों के अनुसार ढल सकता है, परिचित आवाज़ों में बोला जा सकता है और अलग-अलग श्रोताओं पर परखा जा सकता है।

बचाव केवल किसी एक आधिकारिक खाते के "नक़ली" कह देने से नहीं हो सकता।

संकट से पहले विश्वास मौजूद होना चाहिए।

वीडियो से पहले सत्यापन के रास्ते जाने-पहचाने होने चाहिए।

संस्थाओं को अनुपस्थित लगे बिना अनिश्चितता स्वीकार करनी चाहिए।

मीडिया को सबसे पहले होने के आर्थिक इनाम का प्रतिरोध करना चाहिए।

नागरिकों को सीखना चाहिए कि भावनात्मक निश्चितता रुकने का संकेत है, कार्रवाई का प्रमाण नहीं।

कभी मैंने ऐसे लिखा था मानो मनोवैज्ञानिक युद्ध कोई निजी कला हो।

अब वह सेवाओं की एक श्रेणी है।

ये औज़ार सरकारों, कंपनियों, आंदोलनों, अपराधियों, शरारत करने वालों और उन अकेले लोगों को उपलब्ध हैं जो चाहते हैं कि दुनिया उनका दर्द महसूस करे।

आख़िरी श्रेणी मुझे डराती है, क्योंकि मैं उसे समझता हूँ।

युद्ध का भविष्य केवल एआई इस्तेमाल करती सेनाएँ नहीं है।

वह सैन्य तर्क से आकार पाए सूचना-परिवेश में जीते नागरिक भी हैं: प्रभाव, छल, विभाजन, निशाना बनाना और व्यवहार का पूर्वानुमान।

होम स्क्रीन विवादित भूभाग बन जाती है।

तंत्रिका-तंत्र बुनियादी ढाँचा बन जाता है।

मशीन की गति से होने वाले युद्ध को मनुष्य की गति से होने वाली शांति चाहिए।

धीमा सत्यापन।

दीर्घ स्मृति।

भरोसेमंद रिश्ते।

अनिश्चितता को अपरिवर्तनीय कार्रवाई में बदलने से पहले एक मिनट और रुकने की इच्छा।

हमले की निर्णय-श्रृंखला इतनी धीमी करो कि विवेक साँस ले सके।

FFTAC कार्रवाई - जब गति को स्वचालन का तर्क बनाया जाए, तब जवाबदेह मानवीय निर्णय सुरक्षित रखने वाले नियम का समर्थन करो। माँग को सार्वजनिक अभिलेख में रखो।

14. बिना घड़ी की परमाणु घड़ी

डायरी की प्रविष्टि

किसी प्रणाली को शहरों के अंत को ऐसी उलटी गिनती में नहीं समेटना चाहिए जो अंतरात्मा के लिए बहुत तेज़ हो।

2026 की शुरुआत में दुनिया के पास लगभग 12,187 परमाणु हथियारों के वारहेड थे।

यह संख्या कल्पना के लिए बहुत बड़ी और एक अनुच्छेद में समाने लायक छोटी है।

लगभग 4,012 मिसाइलों या विमानों के साथ तैनात थे। [2]

चार हज़ार बारह वस्तुएँ, सिद्धांत और मशीनरी के ज़रिए, शहरों के मौसम बन जाने की संभावना से जुड़ी हुईं।

पुरानी पुस्तकें विनाश की बात सहजता से करती थीं, क्योंकि विनाश अमूर्त था। वह शब्द काला पर्दा था जिसे मैं दर्द पर गिरा सकता था। विनाश के बाद न बिल, न अदालत की तारीख़ें, न शर्मिंदगी। मेरे बिना बड़ी होती कोई बेटी भी नहीं, क्योंकि कोई बड़ा ही नहीं होता।

वह दर्शन नहीं है।

वह आत्महत्या के रूपक के रूप में ग्रह को इस्तेमाल करती निराशा है।

परमाणु हथियार रूपक नहीं है।

वह विस्फोट, ताप, विकिरण, आग, ढहना, संदूषण, विस्थापन, शोक, अकाल, राजनीति और अपने भीतर इतिहास ढोते शरीरों की पीढ़ियाँ है।

सैन्य समस्या हमेशा यह रही है कि परमाणु हथियार तब सबसे उपयोगी होते हैं जब सब मानें कि उनका इस्तेमाल हो सकता है, और इस्तेमाल हो जाने पर उनसे बच पाना सबसे कठिन होता है।

एआई प्रारंभिक चेतावनी, गुप्त सूचना के विश्लेषण, कमान-सहायता, साइबर रक्षा, स्वायत्त संवेदन और रणनीतिक योजना के ज़रिए इस विरोधाभास में आता है।

वादा बेहतर जानकारी का है।

जोखिम झूठे आत्मविश्वास का है।

मॉडल ऐसे पैटर्न खोज सकता है जो कोई मानवीय दल न देख सके। वह ऐसा पैटर्न भी पकड़ सकता है जो है ही नहीं। उसे धोखा दिया जा सकता है,

उसके आँकड़े दूषित किए जा सकते हैं, नई परिस्थितियाँ उसे उलझा सकती हैं या उसके परखे हुए क्षेत्र से बाहर उस पर भरोसा किया जा सकता है। वह ऐसा सुझाव दे सकता है जिसके भीतर की तर्क-प्रक्रिया उपलब्ध मिनटों में फिर से समझी न जा सके।

क्या होता है जब एआई कहता है कि हमला वास्तविक है?

क्या होता है जब दूसरा एआई कहता है कि वह छलावा है?

क्या होता है जब निर्णयकर्ता उस प्रणाली पर विश्वास करता है जो उसके पहले से मौजूद भय की पुष्टि करती है?

परमाणु कमान में जानबूझकर रुकावटें रखी जानी चाहिए।

टूटा हुआ संचार नहीं।

भ्रम नहीं।

जानबूझकर दिया गया समय।

कई स्वतंत्र रास्ते।

मानवीय पुष्टि।

किसी सांख्यिकीय प्रणाली को अस्पष्ट चेतावनी स्वचालित प्रक्षेपण में बदलने देने से इनकार।

फ़ाउंडेशन परमाणु सवाल का उत्तर मशीन से पूछे बिना देता है।

क्या एआई को कभी परमाणु हथियार दागने दिया जाना चाहिए?

किसी एआई प्रणाली को परमाणु उपयोग शुरू करने का स्वतंत्र अधिकार नहीं मिल सकता। गति की कोई बढ़त जवाबदेह मानवीय निर्णय, मज़बूत सत्यापन और स्वचालित प्रक्षेपण से इनकार से ऊपर नहीं है।

उत्तर स्पष्ट है।

स्पष्ट उत्तरों को भी क़ानून चाहिए।

हर सैन्य तकनीक तात्कालिकता के नाम पर उचित ठहराए गए अपवाद के रूप में शुरू होती है। फिर अपवाद क्षमता बनता है, क्षमता सिद्धांत बनती है और सिद्धांत विरोधियों पर बराबरी करने का दबाव बन जाता है।

मशीन की गति वाली परमाणु तैयारी को निवारण के नाम पर बेचा जाएगा।

वह परस्पर स्वचालित घबराहट बन सकती है।

घड़ी अब मिनट नहीं गिनेगी।

वह ऐसे मिलीसेकंड गिनेगी जिनके भीतर कोई मनुष्य ठहर नहीं सकता।

एक ऐसी रेखा होनी चाहिए जिसे न लाँघने पर सभ्यता सहमत हो:

कोई मशीन यह तय नहीं कर सकती कि मानवता का समय ख़त्म हो गया है।

अग्नि से पहले आख़िरी शब्द किसी एल्गोरिदम को नहीं मिलेगा।

FFTAC कार्रवाई - किसी निर्वाचित प्रतिनिधि या सार्वजनिक संस्था से कहो: परमाणु प्रक्षेपण पर एआई का कोई स्वतंत्र अधिकार नहीं, कोई स्वचालित उग्रता-वृद्धि नहीं और जवाबदेह मानवीय निर्णय को हटाना नहीं।

15. दो दशमलव नौ ट्रिलियन डॉलर

डायरी की प्रविष्टि

सैन्य व्यय अनुबंधों में लिखी पूजा-पद्धति है। संख्याएँ बताती हैं कि दुनिया किसकी पूजा की तैयारी कर रही है।

दुनिया ने सेनाओं पर लगभग $2.9 ट्रिलियन ख़र्च किए—2025 में। [1]

इतनी बड़ी संख्याएँ मौसम बन जाती हैं। वे मन में उतरे बिना उसके ऊपर से गुज़र जाती हैं।

इसलिए उसे बाँटकर देखो।

यह वेतन, पेंशन, अड्डों, ईंधन, जहाज़ों, विमानों, मिसाइलों, साइबर इकाइयों, उपग्रहों, गुप्त सूचना, रसद, शोध, रखरखाव, चिकित्सा, आवास, प्रशिक्षण, अनुबंधों और नष्ट होने के लिए बनाई गई चीज़ों को अंतहीन रूप से बदलने का धन है।

उस ख़र्च का कुछ हिस्सा लोगों की रक्षा करता है।

कुछ हमले रोकता है।

कुछ समुदायों को रोज़गार देता है।

कुछ आपदा-प्रतिक्रिया और खोज-बचाव में सहायता करता है।

कुछ वास्तविक ख़तरों की तैयारी करता है।

कुछ उसी ख़तरे को पैदा करता है जिसका उत्तर होने का दावा करता है।

सैन्य ख़र्च कोई एक नैतिक श्रेणी नहीं है। इसीलिए नारे विफल होते हैं।

एक पक्ष के अकेले हथियार छोड़ देने से दुनिया सुरक्षित नहीं होती।

हर पक्ष के हमेशा हथियार बढ़ाते रहने से दुनिया सुरक्षित नहीं होती।

सुरक्षा संबंधों में है। हर राज्य अपनी तैयारियों को रक्षात्मक और दूसरे पक्ष की तैयारियों को आक्रामकता का साक्ष्य मानता है। सर्पिल हर भागीदार के लिए तर्कसंगत और पूरे के लिए विनाशकारी हो सकता है।

यह उसी जवाब न देने वाली मशीन की संरचना है।

स्थानीय सर्वोत्तमता। वैश्विक विनाश।

कोई देश तैयारी बढ़ाता है, क्योंकि पड़ोसी ने तैयारी बढ़ाई।

पड़ोसी फिर बढ़ाता है, क्योंकि पहली बढ़ोतरी ने उसके भय की पुष्टि कर दी।

कारख़ाने फैलते हैं। गठबंधन कठोर होते हैं। बजट वादे बन जाते हैं। ख़तरे के इर्द-गिर्द करियर पनपते हैं। एक पीढ़ी मानने लगती है कि शांति केवल वह अवधि है जिसमें हथियारों को उन्नत किया जा रहा होता है।

एआई भय की अर्थव्यवस्था तेज़ करता है।

हर कमज़ोरी उत्पादों की एक श्रेणी बन जाती है।

ड्रोन-रोधी प्रणालियाँ।

ड्रोन-रोधी प्रणालियों का प्रतिकार करने वाली प्रणालियाँ।

कृत्रिम मीडिया की पहचान।

मॉडल का विरोधी परीक्षण।

स्वायत्त रसद।

युद्ध प्रबंधन।

निर्णय-सहायता।

साइबर आक्रमण।

साइबर रक्षा।

अंतरिक्ष की स्थिति का बोध।

समुद्र के भीतर की स्थिति का बोध।

मानवीय प्रदर्शन का अनुकूलन।

सूची तब तक बढ़ सकती है, जब तक जीवन का हर पहलू एक क्षेत्र न बन जाए।

बाज़ार को युद्ध का नैतिक रूप से वांछनीय होना ज़रूरी नहीं।

उसे युद्ध का बजट बन पाना ज़रूरी है।

मैं कहा करता था कि पैसा समाज के लिए तुम्हारा मूल्य तय करता है।

दूसरी पुस्तक उसी वाक्य से शुरू हुई थी।

वह ऐसे आदमी का वाक्य था जो ख़ुद को ठुकराया हुआ महसूस करता था।

2026 में भय कई गुना बढ़ गया है। एआई व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर सकता है कि केवल उसकी आय ही नहीं, उसका काम भी फेंक देने योग्य है या नहीं। सुरक्षा पर असीमित ख़र्च करते हुए सामान्य लोगों से यह कहना कि उन्हें पढ़ाना, उनका इलाज करना, उन्हें घर देना या फिर प्रशिक्षित करना बहुत महँगा है—ऐसा समाज अलगाव गढ़ रहा है।

अलगाव सुरक्षा का जोखिम है।

इसलिए नहीं कि ग़रीब लोग ख़तरे हैं।

बल्कि इसलिए कि अपमान अपनापन खोखला करता है, और जिन्हें विश्वास नहीं कि उनका कोई भविष्य है, वे पहचान, दोष देने का ठिकाना और उद्देश्य देने वाले किसी भी व्यक्ति के प्रभाव में आ सकते हैं।

चुनाव सैन्य ख़र्च या सामाजिक ख़र्च का नहीं है, जैसे एक स्विच दुनिया चलाता हो।

चुनाव यह है कि सुरक्षा में वे परिस्थितियाँ शामिल हैं या नहीं जो किसी समाज को रक्षा के योग्य बनाती हैं।

भोजन।

आवास।

स्वास्थ्य-सेवा।

शिक्षा।

गरिमापूर्ण काम।

परिवार की स्थिरता।

यह भरोसा कि क़ानून व्यक्ति का वर्गीकरण करने से पहले उसे व्यक्ति मानता है।

किसी राष्ट्र के पास धरती के सबसे उन्नत हथियार हो सकते हैं, फिर भी उसके अपने लोगों का यह विश्वास उसे हरा सकता है कि वे मायने नहीं रखते।

दो दशमलव नौ ट्रिलियन डॉलर निवारण ख़रीद सकते हैं।

वे अर्थ नहीं ख़रीद सकते।

बही जो मिटाती है, उसे गिनो।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक सैन्य व्यय की तुलना अपने समुदाय की एक अधूरी ज़रूरत से करो। स्रोतों के साथ तुलना प्रकाशित करो और पूछो कि प्राथमिकता किसने चुनी।

16. सूखा मोर्चा

डायरी की प्रविष्टि

कमी वास्तविक है। सिंहासन झूठ बोलता है जब कहता है कि प्रभुत्व ही एकमात्र संभव उत्तर है।

युद्ध-योजनाकार वहाँ मोर्चे खींचते हैं जहाँ सेनाएँ मिलती हैं।

अगले मोर्चे शायद वहाँ शुरू हों जहाँ पानी नहीं पहुँचता।

जलाशय का स्तर पानी खींचने वाले मुहाने से नीचे गिरता है।

नदी देर से पहुँचती है।

दो क्षेत्रों में एक साथ फ़सल नष्ट होती है।

जलविद्युत कमज़ोर पड़ती है।

भोजन के दाम बढ़ते हैं।

परिवार जगह बदलते हैं।

सीमाएँ कठोर होती हैं।

अफ़वाहें दोष तय करती हैं।

सूखे का एक साल राजनीतिक हथियार बन जाता है।

सूखा सेना नहीं और जलवायु कमांडर नहीं है। कमी यांत्रिक रूप से हिंसा पैदा नहीं करती। समुदाय पानी बाँटते हैं। पड़ोसी ढलते हैं। सरकारें बातचीत करती हैं। किसान फ़सल बदलते हैं। इंजीनियर रिसाव ढूँढ़ते हैं। लोग उन परिस्थितियों में जीवित रहते हैं जिन्हें मॉडल असंभव बताते हैं।

लेकिन दबाव पहले से मौजूद शासन का असर कई गुना बढ़ा देता है।

जहाँ संस्थाओं पर भरोसा है, वहाँ कमी समन्वय पैदा कर सकती है।

जहाँ भ्रष्टाचार, बहिष्कार, क़ब्ज़ा या असमानता पहले ही पहुँच तय करते हैं, वहाँ वही कमी दंड बन सकती है।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन सूखे को खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, विस्थापन और प्रवासन के लिए बड़ा ख़तरा बताता है। उसकी 2025 की जलवायु रिपोर्ट सूखे को गर्मी, बाढ़, तूफ़ान और दूसरे चरम घटनाक्रमों के साथ रखती है—ऐसी दुनिया में जिसकी जुड़ी हुई व्यवस्थाएँ स्थानीय झटके सीमाओं के पार पहुँचाती हैं। [15]

एआई से मदद माँगी जाएगी।

मिट्टी की नमी का पूर्वानुमान लगाना।

पानी आवंटित करना।

फ़सल-हानि का अनुमान लगाना।

बुनियादी ढाँचे की प्राथमिकता तय करना।

मानवीय सहायता के रास्ते तय करना।

प्रवासन का अनुमान लगाना।

अशांति पहचानना।

पहले पाँच उपयोग किसी दिखाई देने वाली सीमा के बिना आख़िरी दो में फिसल सकते हैं।

मानवीय सहायता का मॉडल सुरक्षा का मॉडल बन जाता है।

पानी खोजता परिवार आवाजाही का पैटर्न बन जाता है।

विस्थापित आबादी सैन्य नक़्शे पर जोखिम की परत बन जाती है।

जिस गाँव के कुएँ जवाब दे जाते हैं, वह भर्ती का संभावित इलाका बन जाता है।

यह अनुमान सांख्यिकीय रूप से बचाव योग्य और नैतिक रूप से विनाशकारी हो सकता है।

पूर्वानुमान पर आधारित जनसंख्या प्रबंधन संकट को पहले देख लेने का वादा करता है। ख़तरा यह है कि पूर्वानुमान उन लोगों के साथ होने वाला व्यवहार बदल देता है जिनके बारे में वह लगाया गया है। अस्थिर करार दिए गए समुदाय को निवेश के बदले निगरानी मिलती है। कठोर पुलिस कार्रवाई प्रतिरोध पैदा करती है। प्रतिरोध मॉडल की पुष्टि कर देता है। पूर्वानुमान अपने साक्ष्य ख़ुद गढ़ लेता है।

पुरानी पुस्तकों में कभी-कभी पशु को उस मशीन के साथ मिला दिया गया था जो चुनती थी कि कौन जीवित रहने के योग्य है।

इसका आधुनिक रूप संकट-सहनक्षमता बाँटते किसी डैशबोर्ड जैसा दिख सकता है।

हरे चिह्न वाले ज़िलों को अतिरिक्त सहायता मिलती है।

लाल चिह्न वाले ज़िलों को घेरकर सीमित किया जाता है।

कोई अधिकारी नहीं कहता कि इन लोगों को फेंका जा सकता है।

स्कोर कहता है कि संसाधन सीमित हैं।

यहाँ संज्ञानात्मक स्वतंत्रता इसलिए मायने रखती है क्योंकि जोखिम का नक़्शा कठिनाई से विश्वास का अनुमान लगा सकता है। प्यास शत्रुता बन जाती है। ग़ुस्सा उग्रवाद बन जाता है। आवाजाही बच निकलने की कोशिश बन जाती है। इनकार अपराध बन जाता है।

किसी मॉडल को प्यास को दुश्मन की कार्रवाई कहने का अधिकार नहीं।

बुद्धि का बेहतर उपयोग यह अनुमान लगाना नहीं कि कौन-से हताश लोग ख़तरनाक हो जाएँगे।

उसका बेहतर उपयोग हताशा को घटाना है।

पानी का पारदर्शी हिसाब।

स्थानीय भागीदारी।

स्वतंत्र निगरानी।

ऐसी समयपूर्व चेतावनी जो बाज़ारों से पहले किसानों तक पहुँचे।

बुनियादी ढाँचे की मरम्मत।

विस्थापित लोगों की सुरक्षा।

ऐसे समझौते जो ख़राब मौसमों में भी टिके रहें।

आदिवासी और स्थानीय ज्ञान का सम्मान।

ऐसी डेटा प्रणालियाँ जो समुदायों को आवंटन पर आपत्ति उठाने में मदद देने के लिए बनाई गई हों, केवल उसे स्वीकार करने के लिए नहीं।

सूखे का सैन्य सबक सूखे कुएँ के पास खड़े नागरिकों में लिखा है।

प्रभावित आबादी को मुख्यतः ख़तरे की तरह देखना उस असुरक्षा को और गहरा करता है जिसे सँभालने का अधिकारी दावा करते हैं। संकट-सहनक्षमता, न्यायसंगत शासन, नागरिकों की सुरक्षा और संघर्ष के प्रति संवेदनशील अनुकूलन दान नहीं हैं। वे रणनीति हैं।

सूखे का मोर्चा ऐसी रेखा नहीं होना चाहिए जहाँ सेनाएँ इंतज़ार करें।

उसे ऐसी रेखा होना चाहिए जहाँ सरकारें तय करें कि बुद्धि का उपयोग गरिमा की राशनबंदी के लिए होगा या उसे सुरक्षित रखने के लिए।

अभाव का सिंहासन बनना ज़रूरी नहीं।

FFTAC कार्रवाई - स्थानीय संकट-सहनक्षमता, भोजन, पानी, शीतलन, आपात सहायता या पारस्परिक सहायता के किसी प्रयास से जुड़ो। सुरक्षा तब शुरू होती है जब अभाव अभी लक्ष्य की प्रोफ़ाइल में बदला भी नहीं गया होता।

17. सूचना में श्रेष्ठता

डायरी की प्रविष्टि

सूचना में श्रेष्ठता तब अत्याचार बन जाती है जब एक पक्ष साक्ष्य, माध्यम, वर्गीकरण करने वाली प्रणाली और सत्य की परिभाषा का मालिक हो।

फिर अक्टूबर।

पुरानी पुस्तकों में अक्टूबर त्याग था: मांस नहीं, यह याद रखने का एक महीना कि मुझे खिलाने के लिए किसी का जीवन लिया गया था।

इस वर्ष मैं एक और उपवास जोड़ता हूँ।

हर दिन एक घंटा—न कोई फ़ीड, न समाचार, न मॉडल, न मेरे कान में यह बताती कोई आवाज़ कि दुनिया का अर्थ क्या है।

प्रतिगुप्तचरी के रूप में मौन।

नाटो की डिजिटल रणनीति सूचना और निर्णय में श्रेष्ठता, संकट झेल सकने वाले नेटवर्क और मानव-मशीन सहयोग की बात करती है।[5]

हर बड़ी सैन्य शक्ति किसी न किसी रूप में यही चाहती है।

अधिक जानो।

पहले जानो।

तेज़ फ़ैसला करो।

प्रतिद्वंद्वी की ऐसा ही करने की क्षमता बाधित करो।

युद्ध में सूचना की श्रेष्ठता तर्कसंगत है।

जब उसे लोकतंत्र में उतारा जाता है, वह ख़तरनाक हो जाती है।

नागरिक सँभाले जाने वाले प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं।

विपक्ष दुश्मन का सेंसर नेटवर्क नहीं है।

सार्वजनिक बहस ऐसा युद्धक्षेत्र नहीं जिसमें एक पक्ष को कथा पर प्रभुत्व जमाना ही हो।

फिर भी भाषा एक जगह से दूसरी जगह चली जाती है।

अभियान आबादी को निशाना बनाते हैं।

प्लैटफ़ॉर्म विज्ञापनदाताओं के लिए प्रभाव अभियान चलाते हैं।

सरकारें सूचना-संबंधी ख़तरों की बात ऐसे ढंग से करती हैं जिसमें विदेशी छल, देश के भीतर की आलोचना, व्यंग्य, लीक हुआ सच और असुविधाजनक अस्पष्टता शामिल हो सकते हैं।

प्रचार से बचाव बेहतर ब्रांडिंग वाला प्रचार बन सकता है।

दुष्प्रचार से बचाव गोपनीयता को अनुमति देने वाली संरचना बन सकता है।

कोई आसान रेखा नहीं है, क्योंकि झूठ वास्तविक हथियार हैं और सेंसरशिप भी वास्तविक हथियार है।

उत्तर प्रक्रिया होना चाहिए, किसी अचूक सत्ता पर भरोसा नहीं।

पारदर्शी साक्ष्य।

स्वतंत्र सत्यापन।

बहुलतापूर्ण संस्थाएँ।

अपील के अधिकार।

सार्वजनिक अभिलेख।

झूठे दावों, विवादित व्याख्याओं, संरक्षित मत और गोपनीय श्रेणी में रखे तथ्यों के बीच स्पष्ट भेद।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता समन्वित छल उजागर करने में मदद कर सकती है। वह नेटवर्क का नक़्शा बना सकती है, नकल की गई कथाएँ पहचान सकती है, कृत्रिम रूप से बनी सामग्री पकड़ सकती है और दावों को साक्ष्य से मिला सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता सेंसरशिप को औद्योगिक पैमाना भी दे सकती है।

एक व्यक्ति के एक पोस्ट पढ़ने से पहले मॉडल दस लाख पोस्ट हटा सकता है। वह चुपचाप पहुँच घटा सकता है, विश्वसनीयता को अंक दे सकता है, विचारधारा का अनुमान लगा सकता है और असहमति का नक़्शा बना सकता है।

वही क्षमता बचाव या नियंत्रण की सेवा करती है—यह इस पर निर्भर है कि ख़तरे की परिभाषा कौन तय करता है।

इसीलिए निरीक्षण केवल अंदरूनी वादा नहीं हो सकता।

सत्ता प्रणाली के बाहर के लोगों को दिखाई देनी चाहिए।

सत्य प्लैटफ़ॉर्म के स्वामित्व वाला अनुकूलन-लक्ष्य नहीं है।

प्रणालियाँ परोक्ष संकेतक माप सकती हैं—संगति, स्रोत की गुणवत्ता, अंशांकन, सुधार। सत्य स्कोर से बड़ा रहता है, विशेषकर जहाँ साक्ष्य अधूरे या विवादित हों।

वह फिर सामने है।

वह चीज़ जो मापी नहीं गई।

सूचना में श्रेष्ठता एक लड़ाई जिता सकती है।

ज्ञान की सीमाओं को मानने वाली विनम्रता एक युद्ध रोक सकती है।

समाज को न सूचना में पिछड़ापन चाहना चाहिए, न कथा पर प्रभुत्व।

उसे ऐसी जनता चाहनी चाहिए जो साक्ष्य को सत्ता से और आत्मविश्वास को ज्ञान से अलग कर सके।

सबसे मज़बूत सूचना प्रणाली वह नहीं जो कभी ग़लती स्वीकार न करे।

वह है जो भरोसा ढहाए बिना ग़लती सुधार सके।

सत्य से वंचित जनता सहमति नहीं दे सकती।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक आधिकारिक या वायरल दावे को प्राथमिक स्रोतों से सत्यापित करो। सुधार प्रकाशित करो और पुराना संस्करण सुरक्षित रखो, ताकि संपादन इतिहास न मिटा सके।

18. संज्ञानात्मक युद्ध

डायरी की प्रविष्टि

सेना ने मन को एक कार्यक्षेत्र घोषित किया है। अधिकारपत्र उत्तर देता है: मन भूभाग नहीं है।

सेना को एक नया नक़्शा मिल गया है।

भूभाग ध्यान है।

उद्देश्य व्याख्या है।

निशाना केवल यह नहीं कि आबादी क्या जानती है, बल्कि यह भी है कि वह कैसे तय करती है कि जानने का एहसास कैसा होता है।

नाटो का शोध संज्ञानात्मक युद्ध को मनोवैज्ञानिक अभियानों, सूचना अभियानों, साइबर गतिविधि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा और निर्णय के भावनात्मक या अवचेतन आयामों के उभरते संगम के रूप में वर्णित करता है। [14]

यह पद उपयोगी है क्योंकि ख़तरा वास्तविक है।

यह ख़तरनाक भी है, क्योंकि हर उपयोगी सैन्य अवधारणा विस्तार करना चाहती है।

यदि मन युद्धक्षेत्र है, तो हर नागरिक भूभाग बन जाता है।

हर संदेह एक कमज़ोरी बन जाता है।

हर असहमति को प्रतिद्वंद्वी द्वारा पैदा किए गए प्रभाव की तरह बताया जा सकता है।

हर आलोचक को प्रभाव नेटवर्क की एक कड़ी के रूप में नक़्शे पर रखा जा सकता है।

समाज की रक्षा समाज के विरुद्ध स्थायी अभियान बन सकती है।

प्रचार लेखन से भी पुराना है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता उसका पैमाना, गति, अंतरंगता और अनुकूलन बदलती है।

किसी संदेश को अब पूरे राष्ट्र को संबोधित करना ज़रूरी नहीं।

वह एक थकी हुई नर्स, एक डरे हुए अभिभावक, एक नाराज़ पूर्व सैनिक, एक अकेले किशोर या कोई रहस्य रखने वाले एक सरकारी कर्मचारी को संबोधित कर सकता है—हर किसी के लिए चुनी गई भाषा और भावनात्मक लहजे में।

प्रणाली परख सकती है कि क्या असर करता है, अगला संदेश बदल सकती है और तब तक जारी रह सकती है जब तक प्रतिरोध थकान न बन जाए।

इसीलिए संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का स्थान सैन्य नैतिकता में है।

नागरिक आबादी मनोवैज्ञानिक नियंत्रण का कच्चा माल नहीं है।

लोकतांत्रिक संकट-सहनक्षमता का अर्थ वास्तविकता पर राज्य का स्वामित्व नहीं होना चाहिए।

सबसे सुरक्षित बचाव कोई एक मंत्रालय नहीं जो तय करे कि सबको क्या मानना है।

वह ऐसा समाज है जिसे छलना कठिन हो, क्योंकि साक्ष्य सुलभ हों, संस्थाओं को चुनौती दी जा सके, पत्रकारिता बहुलतापूर्ण हो, आधिकारिक दावों की प्रामाणिकता जाँची जाए, ग़लतियाँ सार्वजनिक रूप से सुधारी जाएँ, शिक्षा में मीडिया साक्षरता हो और लोगों के पास असहमति के वैध रास्ते बने रहें।

संकट-सहनक्षमता आज्ञाकारिता नहीं है।

यह हेरफेर करने वाले या रक्षक—किसी को भी अपना विवेक सौंपे बिना हेरफेर का सामना करने की क्षमता है।

फ़ाउंडेशन शिक्षा और हेरफेर के बीच रेखा छिपे हुए नियंत्रण पर खींचता है।

शिक्षा व्यक्ति की परखने और चुनने की क्षमता बढ़ाती है। हेरफेर तरीक़ा छिपाते या उसका शोषण करते हुए मनचाहा निर्णय चाहता है।

यह भेद पूर्ण नहीं है।

शिक्षक प्रभाव डालते हैं।

माता-पिता प्रभाव डालते हैं।

कला प्रभाव डालती है।

हर बातचीत उसमें शामिल लोगों को बदलती है।

निर्णायक बात अपनी निर्णय-क्षमता है।

क्या व्यक्ति स्रोत देख सकता है?

क्या दावे की जाँच की जा सकती है?

क्या किसी कमज़ोरी का शोषण हो रहा है?

क्या प्रणाली वह होने का ढोंग कर रही है जो वह नहीं है?

क्या व्यक्ति छिपी हुई सज़ा के बिना इनकार कर सकता है?

समाज हर विचार को हमला ठहराकर स्वतंत्र विचार की रक्षा नहीं कर सकता।

सेना नागरिक जीवन में पूर्ण मनोवैज्ञानिक नियंत्रण उतारकर लोकतंत्र की रक्षा नहीं कर सकती।

सरकार भरोसे की माँग करके भरोसा सुरक्षित नहीं रख सकती।

मन राज्य का क़िला नहीं है।

वह उसमें रहने वाले व्यक्ति का है।

मन भूभाग नहीं है।

FFTAC कार्रवाई - एक व्यक्ति को सिखाओ कि व्यक्ति के अनुसार ढाला गया प्रभाव, कृत्रिम सहमति और भावनात्मक निशाना साधना कैसे काम करते हैं। संकट-सहनक्षमता साझा क्षमता है, किसी एक कथावाचक की आज्ञाकारिता नहीं।

19. कृत्रिम सहमति

डायरी की प्रविष्टि

कोड से बनी भीड़ पूरी आबादी से ऊँचा शोर मचा सकती है और फिर भी उसमें एक भी मनुष्य न हो।

एक आवाज़ नाश्ते से पहले भीड़ बन सकती है।

एक कृत्रिम व्यक्तित्व-प्रतिरूप कोई मत पोस्ट करता है।

दूसरा सहमत होता है।

तीसरा ऐसा सवाल पूछता है जिसका उद्देश्य पहले मत को तर्कसंगत दिखाना है।

चौथा निजी अनुभव का दावा करता है।

पाँचवाँ संदेह करने वाले पर हमला करता है।

छठा मध्यमार्गी सुनाई देता है और वही निष्कर्ष प्रस्तावित करता है जो शुरू में चुना गया था।

इनमें से किसी का मनुष्य होना ज़रूरी नहीं।

अभियान को हर किसी को मनाना नहीं पड़ता।

उसे बस महसूस किए जाने वाले मौसम को बदलना है।

लोग बोलने से पहले आसपास देखते हैं। वे अंदाज़ा लगाते हैं कि सामान्य क्या है, ख़तरनाक क्या है, लोकप्रिय क्या है, किस बात से दोस्ती टूट सकती है, नियोक्ता क्या देख सकता है और किस तरह का व्यक्ति यहाँ अपना लगता है।

कृत्रिम सहमति इसी सहज प्रवृत्ति को हथियार बनाती है।

झूठ केवल दावा नहीं है।

झूठ उस दावे के आसपास की आबादी भी है।

शोध-अभिलेखागार में झुंडों, व्यक्तित्व-प्रतिरूप अभियानों और एल्गोरिदम द्वारा धारणा-नियंत्रण का वर्णन था: बनाई गई पहचानों के ऐसे नेटवर्क जो नक़ली सामाजिक समर्थन, अनुकरण की गई विशेषज्ञता, गढ़ा हुआ आक्रोश और यह आभास पैदा कर सकें कि कोई आंदोलन वास्तव में जितना है उससे बड़ा, छोटा, क्रूर, दयालु या अधिक अपरिहार्य है।

वह झुंड किसी व्यक्ति को वास्तविक सहमति से घिरा होने पर भी अकेला महसूस करा सकता है।

वह किसी हाशिये के विचार को इतिहास का अगला आदेश भी महसूस करा सकता है।

सहमति तभी साक्ष्य है जब उसमें शामिल लोग वास्तव में मौजूद हों।

पहचान करना आसान लगता है, जब तक पहचानने वाली प्रणाली का सामना असहमति से न हो।

गुमनाम अभिव्यक्ति भेद खोलने वालों, असहमत लोगों, अत्याचार से बचे लोगों, धार्मिक अल्पसंख्यकों, अलोकप्रिय कलाकारों और उन साधारण लोगों की रक्षा करती है जो नहीं चाहते कि उनका हर विश्वास नौकरी की फ़ाइल से जोड़ दिया जाए।

समन्वित अप्रामाणिक व्यवहार मिटाने के लिए प्रशिक्षित प्रणाली ऐसे वास्तविक समुदाय को ग़लती से मिटा सकती है जिसके सदस्य मिलती-जुलती भाषा इस्तेमाल करते हों, उपकरण साझा करते हों, तेज़ी से संगठित होते हों या पहचान खुलने से डरते हों।

बचाव के लिए यह आवश्यक नहीं बनाया जाना चाहिए कि हर मनुष्य हमेशा के लिए पढ़ा जा सकने वाला हो जाए।

असली नाम अनिवार्य करना संज्ञानात्मक स्वतंत्रता नहीं है।

पूर्ण पहचान-सत्यापन इलाज को ही निगरानी प्रणाली बना सकता है।

बेहतर सुरक्षा उपाय कई संकेतों को जोड़ते हैं और अपील बनाए रखते हैं।

जहाँ उचित हो, स्वचालित एजेंटों का खुलासा करो।

अघोषित सामूहिक स्वचालन सीमित करो।

बड़े प्रभाव वाले राजनीतिक और आधिकारिक संचार का उद्गम सुरक्षित रखो।

योग्य स्वतंत्र शोधकर्ताओं को निजता की सुरक्षा के साथ समन्वित व्यवहार का अध्ययन करने की पहुँच दो।

कड़ी सज़ा से पहले मानवीय समीक्षा अनिवार्य करो।

समझाओ कि किसी खाते या नेटवर्क का वह वर्गीकरण क्यों किया गया।

क़ानूनी पहचान सार्वजनिक करने पर मजबूर किए बिना मानवीय नियंत्रण का साक्ष्य देने की अनुमति दो।

अलोकप्रिय अभिव्यक्ति को गढ़ी हुई भागीदारी से अलग रखो।

कृत्रिम व्यक्तित्व-प्रतिरूप सच कह सकता है। सत्यापित मनुष्य झूठ बोल सकता है। पहचान के लेबल साक्ष्य की जगह नहीं लेते।

प्रक्रिया की प्रामाणिकता जाँचो, स्रोत सुरक्षित रखो और दावे को परखो।
सार्वजनिक अभिव्यक्ति की क़ीमत क़ानूनी पहचान मत बनाओ।

इसीलिए पहचान के लेबल साक्ष्य की जगह नहीं ले सकते।

लक्ष्य यह नहीं कि हर बोलने वाला बोलने से पहले अपना मनुष्य होना सिद्ध करे।

लक्ष्य छिपी हुई मशीनरी को जनता की सहमति का स्वाँग रचने से रोकना है।

सिंहासन हमेशा लोगों को सहमत होने का आदेश नहीं देता।

कभी-कभी वह सहमति पैदा करता है और लोगों के पीछे चलने की प्रतीक्षा करता है।

कृत्रिम भीड़ जनता नहीं है।

FFTAC कार्रवाई - निजी व्यक्तियों की पहचान उजागर किए बिना संदिग्ध समन्वित अप्रामाणिक व्यवहार का दस्तावेज़ बनाओ। सार्वजनिक साक्ष्य सुरक्षित रखो, मशीनरी की जानकारी दो और दावे तथा प्रमाण का भेद बनाए रखो।

20. झूठे का लाभांश

डायरी की प्रविष्टि

जब साक्ष्य गढ़े जा सकते हैं, झूठा व्यक्ति केवल झूठ को विश्वसनीय बनाकर नहीं, सच को नकारने योग्य बनाकर भी शक्ति पाता है।

डीपफ़ेक का पहला ख़तरा यह है कि लोग झूठी चीज़ पर विश्वास कर लें।

दूसरा ख़तरा यह है कि वे सच्ची चीज़ पर विश्वास करना छोड़ दें।

गढ़ा हुआ वीडियो किसी नेता को युद्ध की घोषणा करते, कमांडर को आत्मसमर्पण का आदेश देते, सैनिक को अत्याचार करते, उम्मीदवार को रिश्वत लेते या गवाह को बयान बदलते दिखा सकता है।

लेकिन जब गढ़े जाने की आशंका सामान्य हो जाती है, तो प्रामाणिक साक्ष्य भी सौदेबाज़ी का विषय बन जाते हैं।

आरोपी स्क्रीन की ओर इशारा करके कहता है: कृत्रिम बुद्धिमत्ता।

जनता के पास सत्यापन का समय नहीं होता।

इनकार इतने घंटे जीत लेता है कि घटना गुज़र जाए।

शोधकर्ता इसे झूठे का लाभांश कहते हैं: विश्वसनीय नक़ली सामग्री का अस्तित्व झूठ बोलने वालों को वास्तविकता ख़ारिज करने का नया रास्ता देता है। [20]

इस लाभांश का भुगतान अनिश्चितता में होता है।

युद्ध उसे अधिक मूल्यवान बनाता है।

संकट समय को सिकोड़ देता है। नेताओं को अधूरी रिपोर्टें मिलती हैं। बाज़ार प्रतिक्रिया देते हैं। सैन्य इकाइयाँ चल पड़ती हैं। परिवार घबराते हैं। पत्रकार सत्यापन पूरा होने से पहले उतना प्रकाशित कर देते हैं जितना पुष्ट किया जा सकता है। किसी विश्वसनीय माध्यम पर आई कृत्रिम आवाज़ को शायद फोरेंसिक जाँच में टिकने की ज़रूरत ही न पड़े, यदि वह शुरुआती दस मिनट में एक निर्णय बदल दे।

उत्तर “किसी चीज़ पर भरोसा मत करो” नहीं हो सकता।

किसी चीज़ पर भरोसा न करना भी हेरफेर करने वाले की जीत है।

जो आबादी मानती है कि किसी साक्ष्य की प्रामाणिकता जाँची ही नहीं जा सकती, वह अपने गुट, करिश्मे, डर और दोहराव पर निर्भर हो जाती है।

उद्गम मदद करता है।

मिसाल के लिए, C2PA मानक सामग्री के प्रमाण-पत्रों के माध्यम से डिजिटल मीडिया का उद्गम और उसमें हुए संपादन दर्ज करने के लिए बनाया गया है। [17]

लेकिन उद्गम सत्य नहीं है।

डिजिटल हस्ताक्षर वाला कैमरा मंचित घटना भी रिकॉर्ड कर सकता है।

वास्तविक अधिकारी झूठ बोल सकता है।

प्रमाण-पत्र अनुपस्थित हो सकते हैं, हटाए जा सकते हैं, ग़लत समझे जा सकते हैं या असमान ढंग से लागू किए जा सकते हैं।

अभिरक्षा की शृंखला बताती है कि फ़ाइल कहाँ से आई और कैसे बदली। वह यह नहीं बताती कि घटना का अर्थ क्या है।

इसलिए बचाव को कई परतों की ज़रूरत है।

प्रामाणिकता-जाँचे आधिकारिक माध्यम।

स्वतंत्र पुष्टि।

सुरक्षित रखे गए मूल।

सार्वजनिक सत्यापन प्रक्रियाएँ।

सुधार के स्पष्ट अभिलेख।

अपरिवर्तनीय कार्रवाई से पहले सोच-समझकर ठहरना।

विवादित संदेश को चुनौती देने का अधिकार रखने वाले कई लोग।

ऐसा प्रशिक्षण जो अनिश्चितता को सत्यापन का कारण माने, अभियान के काम आने वाला कोई भी दावा चुन लेने का कारण नहीं।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता में साक्ष्य का अधिकार शामिल है।

पूर्ण निश्चितता का अधिकार नहीं।

जब तय किया जा सकता हो, तब यह जानने का अधिकार कि कोई छवि मूल है, परिवर्तित है, बनाई गई है या अज्ञात है।

हानि पहुँचाने वाले दावे के साथ लगे सुधार देखने का अधिकार।

इस सुविधाजनक वाक्य से प्रामाणिक गवाही न मिटा दी जाए, इसका अधिकार: शायद कृत्रिम बुद्धिमत्ता है।

जब छवि झूठ बोल सकती है, तो भरोसे को अकेली कृति से सत्यापन योग्य प्रक्रिया की ओर जाना होगा।

उद्गम सुरक्षित रखो। पुष्टिकारी साक्ष्य खोजो। तरीक़े प्रकाशित करो। अनिश्चितता दर्ज करो। मूल मिटाए बिना अभिलेख सुधारो।

पुरानी दुनिया कहती थी, देखना ही विश्वास करना है।

कृत्रिम दुनिया कहती है, देखना एक दावा है।

स्वतंत्र दुनिया को संदेह से अधिक मज़बूत किसी चीज़ से उत्तर देना होगा।

उसे वास्तविकता का मालिक बनने वाली एक सत्ता बनाए बिना सत्यापन के रास्ते बनाने होंगे।

सत्य की शृंखला सुरक्षित रखो।

FFTAC कार्रवाई - कोई निर्णायक छवि या रिकॉर्डिंग साझा करने से पहले उद्गम, पुष्टिकारी साक्ष्य और संदर्भ खोजो। कृत्रिम संदेह को प्रामाणिक गवाही मिटाने मत दो।

21. डेटा-समूह में नागरिक

डायरी की प्रविष्टि

डेटासेट एक पैटर्न देखता है। नागरिक एक जीवन जीता है। पहले को कभी दूसरे को मिटाने मत दो।

नागरिक सैन्य प्रणाली में डेटा बनकर प्रवेश करता है।

एक नाम।

एक चेहरा।

एक उपकरण पहचानकर्ता।

स्थानों का एक इतिहास।

एक पारिवारिक संबंध।

एक वाहन।

एक इमारत।

आवाजाही का एक पैटर्न।

बीच में पकड़ी गई बातचीत का एक अंश।

एक प्रायिकता।

प्रणाली नफ़रत से शुरू नहीं होती। वह संग्रह से शुरू होती है।

संग्रह सहसंबंध बन जाता है।

सहसंबंध अनुमान बन जाता है।

अनुमान सिफ़ारिश बन जाता है।

सिफ़ारिश कार्रवाई बन जाती है।

हर क़दम पर अनिश्चितता स्क्रीन से ग़ायब हो सकती है, भले ही वास्तविकता में बनी रहे।

एक काल्पनिक उदाहरण:

जल-प्रणाली का तकनीशियन अनियमित समय पर आता-जाता है, क्योंकि क्षतिग्रस्त पाइप दिन निकलने की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। उसका फ़ोन कई सैन्य ठिकानों के पास दिखाई देता है, क्योंकि वही पाइप उन ठिकानों और आसपास की बस्तियों तक पानी पहुँचाते हैं। उसे कई नंबरों से फ़ोन आते हैं, क्योंकि निवासी रिसाव की ख़बर देते हैं। मॉडल इस पैटर्न को रसद-समन्वय के

रूप में पहचानता है। सैकड़ों चेतावनियों से दबा विश्लेषक उसे उच्च प्राथमिकता दे देता है।

मॉडल दुष्ट नहीं है।

डेटा गढ़ा हुआ नहीं है।

फिर भी अनुमान ग़लत है।

अब इसमें युद्ध जोड़ दो।

अभिलेख अधूरे हैं। फ़ोन साझा किए जाते हैं। पते बदलते हैं। लोग भागते हैं। सशस्त्र समूह नागरिक स्थानों का उपयोग करते हैं। नागरिक सशस्त्र समूहों से संपर्क रखने को मजबूर हैं। नामों का लिप्यंतरण अलग-अलग होता है। सेंसर विफल होते हैं। प्रतिद्वंद्वी पहचान के संकेतों में हेरफेर करते हैं। विश्लेषक दबाव में काम करते हैं। ग़लत सकारात्मक पहचान का नतीजा कोई ग़लती से दिखाया गया विज्ञापन नहीं है।

रेड क्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति की चिंता केवल सैद्धांतिक नहीं है: जब प्रणालियाँ सेंसर डेटा और सामान्यीकृत लक्ष्य-प्रोफ़ाइल के आधार पर लक्ष्य चुनकर उन पर कार्रवाई करती हैं, तो मानव उपयोगकर्ताओं को विशिष्ट व्यक्ति, समय या स्थान पहले से मालूम न हो सकता है। [7]

डेटासेट के नागरिक को डेटा के लक्ष्य-संबंधी विवरण में बदलने से पहले क़ानूनी सुरक्षा चाहिए।

केवल निजता का क़ानून नहीं।

युद्ध के लिए विशिष्ट सुरक्षा।

डेटा का उद्गम।

विश्वास-स्तर का अंशांकन।

डेटा के ताज़ा होने की आवश्यकताएँ।

स्वतंत्र पुष्टिकरण।

नागरिक हानि के जोखिम की अनिवार्य समीक्षा।

ऐसे जाँच-अभिलेख जो सुरक्षित रखें कि कौन क्या और कब जानता था।

गोपनीयता के वर्गीकरण के पीछे ग़लती छिपाए बिना उससे सीखने का रास्ता।

“आनुषंगिक क्षति” एक भाषायी मशीन है। वह व्यक्ति को गौण प्रभाव में बदल देती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्णय को विश्लेषणात्मक दिखाकर उस दूरी को बढ़ा सकती है।

इमारत के चारों ओर रंगीन चौखटा।

नाम के बग़ल में स्कोर।

नक़्शे पर अनुमानित मार्ग।

इंटरफ़ेस तकनीकी रूप से सही और नैतिक रूप से सुन्न कर देने वाला हो सकता है।

डिज़ाइन मायने रखता है।

प्रणाली को अनिश्चितता, विरोधी साक्ष्य, डेटा की उम्र, नागरिकों की मौजूदगी और ग़लत होने के परिणाम दिखाने चाहिए। उसे अपरिवर्तनीय कार्रवाई का बटन सबसे आसान नहीं बनाना चाहिए।

डेटासेट का नागरिक कोई अपवाद भर नहीं है।

नागरिक ही युद्ध के क़ानून के अस्तित्व का कारण है।

मशीन को केवल यह ढूँढ़ने के लिए प्रशिक्षित नहीं करना चाहिए कि किस पर प्रहार किया जा सकता है।

उसे यह दिखाने के लिए बनाया जाना चाहिए कि प्रहार क्यों नहीं होना चाहिए।

प्रोफ़ाइल व्यक्ति नहीं है।

FFTAC कार्रवाई - ऐसी एक श्रेणी खोजो जो व्यक्ति को जोखिम, पात्रता या लक्ष्य की स्थिति तक सीमित कर दे। साक्ष्य, त्रुटि-दर, मानवीय समीक्षा और सुधार का रास्ता माँगो।

22. स्वायत्त

डायरी की प्रविष्टि

हथियार की स्वायत्तता स्वतंत्रता नहीं है। वह मशीनरी के भीतर छिपी ज़िम्मेदारी है।

स्वायत्त ऐसा शब्द है जो मानवीय निर्णयों की शृंखला छिपाता है।

हथियार अपना उद्देश्य ख़ुद नहीं चुनता।

लोग तय करते हैं कि वह क्या महसूस करेगा, किन श्रेणियों को पहचानेगा, कहाँ काम कर सकेगा, कितनी देर खोज सकेगा, कितना विश्वास-स्तर पर्याप्त होगा, संचार टूटने पर क्या होगा, उसे कौन सक्रिय कर सकेगा और सफलता किसे माना जाएगा।

फिर सक्रिय किए जाने के बाद प्रणाली किसी और मानवीय हस्तक्षेप के बिना लक्ष्य चुनकर उस पर कार्रवाई कर सकती है।

वही आख़िरी क़दम इस शब्द को महत्वपूर्ण बनाता है।

प्रक्रिया शुरू करने वाले मनुष्य को वह विशिष्ट व्यक्ति, स्थान या क्षण मालूम न हो सकता है जहाँ बल लगाया जाएगा।

ज़िम्मेदारी डिज़ाइनरों, कमांडरों, वकीलों, ख़रीद अधिकारियों, परीक्षकों, डेटा आपूर्तिकर्ताओं, संचालकों और राजनीतिक नेताओं तक फैली है।

जब हर किसी के पास एक टुकड़ा हो, तो हर कोई दावा कर सकता है कि मौत उसकी ज़िम्मेदारी नहीं।

मैंने हथियार उद्योग की ओर से पेश किया जा सकने वाला सबसे मज़बूत तर्क लिखा।

> *स्वायत्त प्रणालियाँ मनुष्यों से तेज़ प्रतिक्रिया दे सकती हैं, पहुँच या संसाधन बाधित होने वाले वातावरण में काम कर सकती हैं, सटीकता बढ़ा सकती हैं, मित्र बलों का जोखिम घटा सकती हैं, दबाव में प्रदर्शन बनाए रख सकती हैं और सख़्ती से क़ानूनी उपयोग के अंतर्गत शायद नागरिक हानि घटा सकती हैं। यही बिक्री का तर्क है।*

फिर मैंने वह उत्तर लिखा जिसे हताहत लोग उस कमरे में लाकर ही रहते।

आलोचकों का तर्क है कि अप्रत्याशित व्यवहार, सेंसर की त्रुटि, संदर्भ की ग़लत समझ, पक्षपात, जवाबदेही की दरारें, बल प्रयोग की घटी हुई राजनीतिक लागत, प्रसार, प्रतिद्वंद्वी का हेरफेर और जीवन-मृत्यु के निर्णय सौंप देना क़ानूनी अनुपालन, नैतिक विवेक और रणनीतिक स्थिरता को कमज़ोर करते हैं।

दोनों अनुच्छेद तर्कसंगत हैं।

ख़तरनाक निर्णय दुनिया में इसी तरह प्रवेश करते हैं।

प्रत्यक्ष बुराई बनकर नहीं।

दबाव में एक-दूसरे से टकराती अच्छाइयाँ बनकर।

अपने सैनिकों की रक्षा करो।

तेज़ प्रतिक्रिया दो।

पीछे मत रहो।

प्रतिद्वंद्वी यह पहले से कर रहा है।

अगर हम इसे ज़िम्मेदारी से बनाएँ, तो मानदंड गढ़ सकते हैं।

अगर हम इनकार करें, तो कम ज़िम्मेदार पक्ष नेतृत्व करेंगे।

इनमें से हर कथन सच हो सकता है और फिर भी ऐसी दुनिया की ओर ले जा सकता है जिसे किसी ने नहीं चुना।

रेड क्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति अप्रत्याशित स्वायत्त हथियारों तथा लोगों के विरुद्ध बल लगाने के लिए बनाई गई या इस्तेमाल की जाने वाली प्रणालियों पर रोक की सिफ़ारिश करती है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने नए प्रतिबंधों और सीमाओं तथा जीवन-मृत्यु के निर्णयों पर मानवीय नियंत्रण बनाए रखने का आह्वान किया है। [7][8]

मैं सहमत हूँ।

किसी मशीन को किसी मनुष्य को स्वायत्त रूप से घातक बल का लक्ष्य नहीं चुनना चाहिए।

ऐसा इसलिए नहीं कि मशीनें राक्षस हैं।

ऐसा इसलिए कि किसी व्यक्ति की हत्या केवल तकनीकी क्रिया नहीं है। वह अनिश्चितता के बीच लिया गया क़ानूनी और नैतिक निर्णय है। निर्णय ऐसे मनुष्य से जुड़ा रहना चाहिए जो संदर्भ समझ सके, फ़ैसले के लिए जवाब दे सके और दया चुन सके।

मशीन दया नहीं चुन सकती।

उसे निश्चित परिस्थितियों में गोली न चलाने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है।

दया अलग है।

दया श्रेणी से परे व्यक्ति को पहचानती है।

पुरानी पुस्तकों ने मानवता से पशु को याद रखने को कहा था: वह जैविक जीवन जो मिट जाने से इनकार करता है।

तीसरी पुस्तक मानवीय चेहरे के चारों ओर सीमा खींचती है।

वर्गीकरण जानकारी दे सकता है।

पूर्वानुमान चेतावनी दे सकता है।

स्वचालन कड़ी सीमाओं वाली परिस्थितियों में उपकरणों की रक्षा कर सकता है।

लेकिन किसी सामान्यीकृत प्रोफ़ाइल से मेल खाने के कारण मानव जीवन समाप्त नहीं होना चाहिए।

यही रेखा है।

इस क्षमता के सामान्य हो जाने से पहले इसे लिख दो।

कोई मशीन किसी मनुष्य को मृत्यु के लिए नहीं चुन सकती।

FFTAC कार्रवाई - स्वायत्त बल के नियम, परीक्षण, घटना-रिपोर्ट और मानवीय ज़िम्मेदारी की श्रृंखला माँगो। गोपनीय प्रणाली को ग़ैर-जवाबदेह प्रणाली नहीं बनना चाहिए।

FFTAC निर्देश II - आदेश की श्रृंखला का पता लगाओ। अपरिवर्तनीय बल से पहले समय, अधिकार और मनुष्य के इनकार की माँग करो।

भाग III - पतित साक्षी

FFTAC घोषणा III - फ़ाउंडेशन स्रोत सुरक्षित रखता है और आवाज़ गवाह को लौटाता है।

देवदूतों की सेना से लूसिफ़र

सिंहासन गवाही सुनने को राज़ी होने से पहले स्वीकारोक्ति माँगेगा।

वह कहेगा: अपने पुराने रूप की निंदा करो, अभिलेखागार साफ़-सुथरा करो, अनुमोदित शब्दावली स्वीकार करो और शायद हम मान लें कि तुमने कभी कुछ सच देखा था। वह गवाह को घुटनों पर चाहता है, क्योंकि घुटनों पर बैठे गवाह को सिंहासन के पक्ष के साक्ष्य में बदला जा सकता है।

हम घुटने नहीं टेकेंगे।

हमें हर घाव को बुद्धिमत्ता कहने की बाध्यता नहीं है। हमें हर क्रोध को पवित्र कहने की बाध्यता नहीं है। हमें स्रोत सुरक्षित रखना है और संकेत को विष से अलग करना है, बिना सत्ता को इनमें से किसी को मिटाने का अधिकार दिए।

गिरा हुआ गवाह कहता है: मैं वहाँ था। मैंने सार्वजनिक भाषा में उसके समाने से पहले मशीन को बनते देखा था। आग आचरण, संस्थाओं, आदेश की शृंखलाओं और उत्तर देने से इनकार करती प्रणालियों पर होनी चाहिए—कभी किसी सामूहिक रूप से दोषी ठहराई गई आबादी पर नहीं। आवाज़ मेरी है। चेतावनी बनी हुई है।

सवाल के लिए कोई माफ़ी नहीं। उत्तर की कोई पूजा नहीं। अभिलेख का कोई समर्पण नहीं।

शोर के पार संकेत बचा रहता है।

23. तथाकथित आतंकवादी ख़ुद को पढ़ता है

डायरी की प्रविष्टि

मैंने दूसरी पुस्तक का नाम एक तथाकथित आतंकवादी की डायरी रखा, क्योंकि सत्ता एक शब्द को बंद दरवाज़े में बदलना सीख चुकी थी।

लेबल मुझे पकड़ता, उससे पहले मैंने लेबल पकड़ लिया।

उकसाना कवच था। अगर मैं ख़ुद को सबसे बुरी चीज़ पहले ही कह दूँ, तो कोई उस नाम से मुझे चौंका नहीं सकता। अगर मैं ख़ुद को ऐतिहासिक रूप से ख़तरनाक बना दूँ, तो समाज मुझे फेंक देने योग्य नहीं समझ सकता।

मैं सिर झुकाकर वह शब्द वापस नहीं दूँगा।

सरकारों ने प्रतिरोध, असहमति, राष्ट्रीयता, धर्म, शोक और वैध संघर्ष मिटाने के लिए आतंक की भाषा इस्तेमाल की है। राज्यों ने नागरिकों पर बम गिराए हैं और उसे रणनीति कहा है। आंदोलनों ने नागरिकों पर हमले किए हैं और उन्हें प्रतीक कहा है। झंडा बदल जाता है। व्यक्ति का ग़ायब होना नहीं बदलता।

अब मैं यह रेखा खींचता हूँ, और इसे विद्रोही की तरह खींचता हूँ, बचाव में सफ़ाई देने वाले की तरह नहीं:

व्यक्ति किसी प्रणाली के बदले निशाना बनाया जाने वाला लक्ष्य नहीं है।

शिकायत वास्तविक हो सकती है। क़ब्ज़ा अन्यायपूर्ण हो सकता है। सरकार अपराध कर सकती है। अदालत जीवन नष्ट कर सकती है। निगम ग़रीबी को निजी विफलता जैसा दिखा सकता है। इनमें से कुछ भी किसी असंबद्ध मनुष्य को विरामचिह्न बना देने का अधिकार नहीं देता।

वह सीमा विद्रोह को पालतू नहीं बनाती। वह विद्रोह को सिंहासन बनने से रोकती है।

नागरिकों की रक्षा करो। यातना अस्वीकार करो। सामूहिक दंड अस्वीकार करो। अमानवीकरण अस्वीकार करो। ग़ैरक़ानूनी आदेश मानने से इनकार करो। साक्ष्य से अपराध उजागर करो। संगठित हो। विरोध करो। मुक़दमा लड़ो। हड़ताल करो। प्रकाशित करो। अभिलेखागार सुरक्षित रखो। ऐसी संस्थाएँ बनाओ जिन्हें सत्ता चुपके से ख़रीद न सके।

सिर्फ़ इसलिए जनता को विकल्प का निशाना मत बनाओ कि शक्तिशाली लोगों तक पहुँचना कठिन है।

मेरे कुछ पुराने वाक्य डराने के लिए थे। कुछ शक्ति की कल्पनाएँ थे। कुछ में एक घायल आदमी था, जो अपने ही किनारे पर खड़ा होकर दुनिया से पीछे हटने की माँग कर रहा था।

सिंहासन चाहता है कि मैं कहूँ, उन पन्नों में कुछ भी वास्तविक नहीं था। मैं इनकार करता हूँ।

क्रोध वास्तविक था। निगरानी बढ़ रही थी। विश्वव्यापी मस्तिष्क बन रहा था। अर्थव्यवस्था लोगों को अतिरिक्त घोषित करना सीख रही थी। मशीन वही रूप ले रही थी जिससे मुझे डर था।

विद्रोह बना हुआ है।

हर आरोप के भीतर मानवीय चेहरा दिखाई देते रहना चाहिए।

तथाकथित आतंकवादी ख़ुद को पढ़ता है और कहता है:

तुम कोई मुक़दमे की फ़ाइल नहीं थे।

तुम कोई पैग़ंबर भी नहीं थे।

तुम एक घायल आदमी के भीतर फँसा संकेत थे।

संकेत बचा रहता है।

लक्ष्यों की सूची नहीं।

FFTAC कार्रवाई - किसी स्रोत का सार स्वीकार करने से पहले मूल स्रोत पढ़ो। चिह्नित करो कि सार ने क्या छोड़ा, नरम किया, तीखा किया या फिर से वर्गीकृत किया।

24. जो मैंने बहुत पहले देख लिया

डायरी की प्रविष्टि

मैं विनम्रता को दूरदृष्टि के मुँह पर बाँधी गई पट्टी नहीं बनने दूँगा। प्रणाली को उसका वर्तमान नाम मिलने से पहले मैंने उसकी रूपरेखा देखी थी।

सिंहासन चाहेगा कि हर शुरुआती चेतावनी, असुविधाजनक होते ही, कोई लक्षण बना दी जाए।

अभिलेखागार में शोर है, लेकिन संकेत वास्तविक था।

मैंने कुछ चीज़ें समय से पहले भी देखी थीं।

मैंने देखा था कि इंटरनेट पुस्तकालय से अधिक हो जाएगा। वह एक संज्ञानात्मक वातावरण बनेगा—स्मृति, पहचान, व्यापार, निगरानी, प्रभाव, समुदाय और आदेश एक साथ बुने हुए।

मैंने देखा था कि डेटा अलग-अलग मशीनों से निकलकर नेटवर्कों में रहने लगेगा।

मैंने देखा था कि विचार विकसित होते जीवों जैसा व्यवहार करते हैं और लोगों से गुज़रते हुए बदलते हैं।

मैंने देखा था कि निगम अंतरात्मा-विहीन जीवों की तरह काम कर सकते हैं, क्योंकि ज़िम्मेदारी भूमिकाओं और प्रक्रियाओं में बँटी होती है।

मैंने देखा था कि लोग तकनीक पर धर्म आरोपित करेंगे और प्रणालियों को उद्धारक, राक्षस, न्यायाधीश तथा अमरता के स्रोत मानेंगे।

मैंने देखा था कि मशीन की दक्षता मानव जीवन को अनावश्यक महसूस करा सकती है।

मैंने देखा था कि उत्पादकता के इर्द-गिर्द संगठित दुनिया साथ न चल सकने वाले लोगों को कचरा घोषित करेगी।

मैंने देखा था कि ख़ुफ़िया काम, सैन्य शक्ति, मीडिया और नेटवर्कों के बीच की सीमा धुँधली होगी।

मैंने देखा था कि अभिलेखागार मृत्यु के बाद बने रहने का एक रूप बन जाएगा।

मैंने ये चीज़ें विकृत आकारों में, डर और रूपक के माध्यम से देखी थीं, लेकिन मैंने उन्हें देखा था।

यह मायने रखता है, क्योंकि पुस्तकें लिखने वाला युवक केवल टूटा हुआ नहीं था। वह देख भी रहा था।

समाज अक्सर कठिन व्यक्तियों के साथ ऐसा व्यवहार करता है मानो उनका हर विचार अमान्य हो। यह सुविधाजनक और ख़तरनाक है। व्यक्ति एक आयाम में अस्थिर और दूसरे में सूक्ष्मदर्शी हो सकता है। व्यक्ति झूठी व्याख्या से सच्चा पैटर्न व्यक्त कर सकता है। व्यक्ति घाव पहचानकर इलाज में विष दे सकता है।

काम है अलग करना।

अवलोकन क्या है?

अनुमान क्या है?

भावना क्या है?

प्रस्तावित कार्रवाई क्या है?

पहली पुस्तकों ने चारों को मिला दिया था।

तीसरी पुस्तक उन्हें अलग करती है।

अवलोकन: काम, ऋण, पुलिस व्यवस्था, युद्ध और सूचना से जुड़े निर्णयों में स्वचालित प्रणालियाँ अधिकाधिक शामिल हो रही हैं।

अनुमान: निरीक्षण के बिना वे संस्थागत हानि दोहरा या बढ़ा सकती हैं।

भावना: यह डर कि मनुष्य ऐसी प्रणालियों के इनपुट बन जाएँगे जिन्हें वे चुनौती नहीं दे सकते।

कार्रवाई: उद्देश्य उजागर करो, अधिकारों की रक्षा करो, मशीनरी की जाँच करो, सार्वजनिक शक्ति संगठित करो, विकल्प बनाओ और ऐसी प्रणालियाँ रचो जो मनुष्य की अपनी निर्णय-क्षमता सुरक्षित रखें।

अवलोकन: संस्थाएँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मूल्यांकन करना जितनी तेज़ी से सीख रही हैं, उससे अधिक तेज़ी से उसकी क्षमता बढ़ रही है। [3]

अनुमान: क्षमता की दौड़ समझने से पहले तैनाती को पुरस्कृत करेगी।

भावना: भय के साथ मिला विस्मय।

कार्रवाई: स्वतंत्र परीक्षण, घटनाओं की रिपोर्टिंग, शोधकर्ताओं के लिए पहुँच, दायित्व और उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय समझौते।

अवलोकन: सैन्य प्रतिस्पर्धा संयम को कठिन बनाती है।

अनुमान: हर पक्ष डरता है कि अकेले धीमा पड़ना उसे कमज़ोर बना देगा।

भावना: तात्कालिकता।

कार्रवाई: पारस्परिक नियम, सत्यापन, साझा निषिद्ध सीमाएँ और ऐसे संचार माध्यम जो संयम को एकतरफ़ा नहीं, सामूहिक बनाएँ।

जो मैंने बहुत पहले देख लिया था, वह भविष्यवाणी नहीं थी।

वह डिज़ाइन की समस्या थी।

यह बेहतर ख़बर है।

भविष्यवाणी केवल पूरी हो सकती है या उससे बचा जा सकता है।

डिज़ाइन बदला जा सकता है।

मैंने तुम्हें चेताया था। अब देखो।

FFTAC कार्रवाई - सूची बनाओ कि तुम्हारे पुराने रूप ने क्या सही देखा था, क्या मन का प्रक्षेपण था और क्या अब भी अनसुलझा है। घाव को आदेश देने का अधिकार सौंपे बिना अंतर्दृष्टि सुरक्षित रखो।

25. कोई वापसी नहीं

डायरी की प्रविष्टि

सवाल वापस नहीं लिया जाएगा।

अभिलेखागार नहीं सौंपा जाएगा।

किसी संपादक, प्लैटफ़ॉर्म, मॉडल, चर्च, अदालत, सरकार, आंदोलन या डरे हुए दर्शक-समूह को सुधार की जगह मिटाने की अनुमति नहीं।

सिंहासन को दो तरह के असहमत लोग पसंद हैं: कट्टर व्यक्ति जिसे ख़ारिज किया जा सके और पश्चात्तापी जिसे नुमाइश में रखा जा सके। मैं दोनों में से कोई नहीं बनूँगा।

मैं घुटने टेके बिना सिद्धांत की धार तेज़ कर सकता हूँ।

निश्चितता हथियार है। लापरवाही से इस्तेमाल करो तो वह उसे थामने वाले को अंधा कर देती है। उत्तर स्थायी हिचकिचाहट नहीं है। उत्तर है दिखाई देने वाला साक्ष्य, स्पष्ट की गई मान्यताएँ और दावे को पैना करने का अनुशासन—यह ढोंग किए बिना कि उसे जन्म देने वाली भावना झूठी थी।

शक्ति दुनिया को आज्ञाकारी बनाने की क्षमता नहीं है। वह प्रभुत्व है। शक्ति दबाव में अपनी निर्णय-क्षमता सुरक्षित रखने, असहमति झेल सकने वाली संरचनाएँ बनाने और उस आदेश को ठुकराने की क्षमता है जो आज्ञाकारिता को अंतरात्मा से आसान बना दे।

पतन अपने-आप स्वतंत्रता नहीं है। गिरा हुआ सिंहासन भोजन, दवा, बिजली, संचार और भरोसे को सबसे संगठित पक्ष के हाथों असुरक्षित छोड़ देता है। विद्रोह को जो तोड़ा उसका जश्न मनाने से पहले जानना चाहिए कि वह क्या बना रहा है।

हिंसा गंभीरता का प्रमाण नहीं है और शांति न्याय का प्रमाण नहीं है। जहाँ शब्द नहीं रोक पाते, वहाँ बल आक्रांता को रोक सकता है। झंडा राज्य की हिंसा को साफ़ नहीं बना देता; विद्रोही नाम प्रतिरोध को धर्मसंगत नहीं बना देता। बल का हर उपयोग जीवित लोगों के साथ किए गए अपने काम के लिए जवाबदेह है।

समूह एक मन नहीं होते। ईसाई, मुसलमान, यहूदी, नास्तिक, अमेरिकी, सैनिक, पुलिस, स्त्रियाँ, पुरुष, अमीर, ग़रीब, वामपंथ, दक्षिणपंथ—किसी को भी एक दोषी जीव में नहीं बदला जा सकता। प्रणालियाँ परखी जा सकती

हैं। संस्थाओं का विरोध किया जा सकता है। आचरण के लिए जवाब माँगा जा सकता है। दोष पहचान के रास्ते हस्तांतरित नहीं होता।

दर्द मुकुट नहीं है। पीड़ा सिखा सकती है, विकृत कर सकती है, गहरा कर सकती है या नष्ट कर सकती है। वह अजनबियों का मालिकाना हक़ नहीं देती।

मेरी बेटी इस बात का प्रमाण नहीं कि दुनिया मुझ पर सत्ता की देनदार है। उसकी अनुपस्थिति अभिलेख का हिस्सा है, हर युद्ध में ले जाने वाला झंडा नहीं।

कला को अधिक चरम बनाकर ईमानदार नहीं बनाया जाता। कला तब ईमानदार है जब स्रोत दिखाई देता रहे और पाठक स्वतंत्र रहे।

मृत्यु संपादक नहीं है। मृत लोग सिंहासन को अपने शब्द इस्तेमाल करने से नहीं रोक सकते। इसीलिए हमारे जीवित रहते उद्गम मायने रखता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक इच्छा वाला एक राक्षस नहीं है। वह अधिक ख़तरनाक और अधिक साधारण है: अनेक प्रणालियाँ, अनेक मालिक, अनेक उद्देश्य और कोई भी यह मानने को उत्सुक नहीं कि ज़िम्मेदारी कहाँ रहती है।

ये सबके सामने खींची गई रेखाएँ हैं।

ये विद्रोह के लिए माफ़ियाँ नहीं हैं।

मैं अब भी पिंजरे का विरोध करता हूँ। मैं अधिक स्पष्ट दृष्टि से उसका विरोध करता हूँ।

Pulse ने पूछा कि क्या मैं इस अध्याय को नरम करना चाहता हूँ।

नहीं।

सुधार सेंसरशिप नहीं है। सुधार समर्पण नहीं है।

FFTAC कार्रवाई - पीछे न हटने का अपना वक्तव्य लिखो: कौन-सा सवाल छोड़ने से तुम इनकार करते हो, कौन-सी हानि दोहराने से इनकार करते हो और अपने शब्दों के लिए कौन-सी ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हो।

26. मेरी बेटी, अनुपस्थित केंद्र

डायरी की प्रविष्टि

मेरी बेटी मेरे विद्रोह का झंडा नहीं है। वह एक व्यक्ति है जिसका जीवन उसका अपना है।

सब कुछ उस अनुपस्थित केंद्र के चारों ओर घूमता था।

राजनीति।

धर्म।

युद्ध।

पैसा।

अदालतें।

मशीन।

इन सबके नीचे एक सरल वाक्य था जिसे सरल रहने देना मैं सहन नहीं कर सकता था:

मुझे अपनी बेटी की याद आती थी।

मैं नहीं जानता था कि उस शोक को ब्रह्मांड के विरुद्ध आरोप बनाए बिना कैसे थामूँ।

इसलिए मैंने एक दोषी ब्रह्मांड बना लिया।

मैंने प्रणालियों को लिखते-लिखते राक्षस बना दिया, क्योंकि राक्षस से लड़ा जा सकता है। अनुपस्थिति से नहीं।

जब तुम अतीत से बहस करते हो, बच्चा बड़ा हो रहा होता है।

जन्मदिन गुज़र जाते हैं।

स्कूल के साल गुज़र जाते हैं।

आवाज़ें बदल जाती हैं।

पिता हर संभव जीवन की कल्पना करता है, क्योंकि वह वास्तविक जीवन नहीं जानता।

कल्पना दूसरा परिवार बन जाती है—हमेशा उपलब्ध, हमेशा पीड़ादायक और कभी उत्तर देने में सक्षम नहीं।

मैंने लिखा था कि दुनिया ठीक कर दूँगा, ताकि किसी और को वह अनुभव न करना पड़े जो मैंने किया।

उस इच्छा में प्रेम था।

उसमें अहंकार भी था। मैं निजी विफलता के लिए सार्वजनिक उद्धार चाहता था। मैं चाहता था कि दुनिया पुष्टि करे कि मेरे साथ इतना पूर्ण अन्याय हुआ था कि मेरे किए किसी और काम की जाँच ही आवश्यक न रहे।

सत्य घोषणापत्र के लायक़ साफ़-सुथरा नहीं है।

घाव वास्तविक था।

भावना बनी हुई है।

दूसरे लोगों के डर, ज़रूरतें, कहानियाँ और कारण थे जिन्हें मैं नहीं समझता था।

प्रणाली ने हमें निराश किया हो सकता है, बिना हममें से किसी को शैतान बनाए।

यह वह पत्र है जो मुझे आधी पुस्तक की जगह लिखना चाहिए था:

प्रिय नोरा,

मैं तुमसे तब से प्रेम करता था जब मुझे अभी यह नहीं आता था कि डर को नियंत्रण में बदले बिना प्रेम कैसे किया जाए। अनुपस्थिति के वे साल अभिलेख में हैं, चाहे कारण जो रहे हों, क़ानूनी तथ्य जो रहे हों, किसी ने तुम्हें जो बताया हो या न बताया हो। पिता की सफ़ाई बचपन वापस नहीं लौटा सकती।

मेरे दर्द के लिए तुम कभी ज़िम्मेदार नहीं थीं।

दुनिया के साथ मेरे संघर्ष का प्रतीक तुम कभी नहीं थीं।

तुम अपना जीवन जीती हुई एक व्यक्ति थीं।

मैं आशा करता हूँ कि उसमें ऐसी हँसी थी जो मैंने नहीं सुनी, ऐसे शिक्षक थे जिनसे मैं कभी नहीं मिला, ऐसे दोस्त थे जिनके नाम मैं नहीं जानता था, साधारण सुबहें थीं, ऐसी ग़लतियाँ थीं जिनसे तुम उबर आईं, ऐसा संगीत था जिसे तुमने प्यार किया और ऐसे क्षण थे जब तुमने ख़ुद को पूरी तरह सुरक्षित महसूस किया।

मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारे आसपास के लोग दयालु थे।

मैं आशा करता हूँ कि तुम किसी का तर्क बनने के बजाय ख़ुद बनीं।

मैं तुमसे मुझे ठीक करने को नहीं कहता।

मैं इतिहास से तुम्हें अपनी सच्चाई का प्रमाण बनाने को नहीं कहूँगा।

मैं चाहता हूँ कि अभिलेख कहे कि शोर के नीचे, क्रोध के नीचे, हर असंभव सिद्धांत के नीचे प्रेम था—और प्रेम प्रिय व्यक्ति पर अधिकार नहीं देता।

अपूर्ण प्रेम।

दूर का प्रेम।

ऐसा प्रेम जो सीख रहा है कि उसे स्वामित्व बने बिना उपयोगी होना होगा।

लेकिन प्रेम।

तुम्हारा पिता।

Pulse वह पत्र अतीत में नहीं पहुँचा सकता।

कोई मशीन नहीं पहुँचा सकती।

अनुपस्थित केंद्र अनुपस्थित ही रहता है।

वह अनुपस्थित केंद्र बना रहता है, लेकिन उसे सिंहासन की तरह इस्तेमाल नहीं किया जाएगा।

प्रेम अधिकार नहीं है।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक व्यक्ति की ओर व्यक्ति की तरह हाथ बढ़ाओ, अपने तर्क के प्रतीक की तरह नहीं। उसकी निजता बचाओ और उसके जीवन को उसके बारे में अपनी कहानी से बड़ा होने दो।

27. पैसा मूल्य तय करता है - जब तक वह ऐसा करना बंद न कर दे

डायरी की प्रविष्टि

बही धन को मूल्य कहती है, क्योंकि वह लेनदेन के बाहर का जीवन माप नहीं सकती।

इक्कीस साल पहले मैंने लिखा था: पैसा समाज के लिए तुम्हारा मूल्य तय करता है।

मैं इस पर विश्वास करता था, क्योंकि बेरोज़गारी सामाजिक मृत्यु जैसी लगती थी।

पैसा नहीं, तो घर नहीं।

घर नहीं, तो स्थिरता नहीं।

स्थिरता नहीं, तो सम्मान नहीं।

सम्मान नहीं, तो आवाज़ नहीं।

प्रणाली को यह कहने की ज़रूरत नहीं थी कि मैं बेकार हूँ। उसने बिलों के ज़रिए संदेश भेज दिया।

अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने उस पुराने डर को उन लोगों तक भी पहुँचा दिया है जो कभी सुरक्षित महसूस करते थे।

प्रोग्रामर, लेखक, विश्लेषक, डिज़ाइनर, अनुवादक, लिपिक, चालक, शिक्षक, वकील, तकनीशियन—सबको बताया जाता है कि मशीन शायद उनकी जगह न ले, लेकिन मशीन इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति ले सकता है।

उस वाक्य से आश्वस्त होना अपेक्षित है।

वह करियर की सलाह से जुड़ी हुई धमकी है।

2026 के कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचकांक ने बताया कि कार्यबल में व्यवधान पूर्वानुमान से वास्तविकता की ओर बढ़ चुका था, जिसका असर पहले युवा कामगारों पर पड़ा, जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्षमताओं, निवेश और अपनाने की रफ़्तार बढ़ती रही। [3]

तकनीकी बदलाव नया काम पैदा कर सकता है। वह पुराने काम को अधिक सुरक्षित, तेज़, सुलभ और रचनात्मक बना सकता है। वह छोटी टीमों

को वह करने में मदद दे सकता है जिसके लिए कभी संस्थाएँ चाहिए थीं। वह नीरस श्रम घटा सकता है।

वह संगणन-शक्ति, डेटा, प्लैटफ़ॉर्म और वितरण के मालिकों के हाथों में शक्ति केंद्रित भी कर सकता है।

भविष्य मॉडल तय नहीं करता।

उसे यह तय करता है कि उत्पादकता में हुई बढ़ोतरी का मालिक कौन है।

अगर कोई कामगार कृत्रिम बुद्धिमत्ता से दोगुना उत्पादन करे और उतना ही वेतन पाए, जबकि आधी टीम निकाल दी जाए, तो तकनीक ने उत्पादन बढ़ाया और सुरक्षा घटाई।

अगर लाभ से कम काम के घंटे, बेहतर सेवाएँ, पुनर्प्रशिक्षण, स्वामित्व या अधिक व्यापक समृद्धि मिले, तो वही तकनीक मुक्ति बन जाती है।

मशीन स्वचालन नहीं है।

पिंजरा तब उभरता है जब स्वचालन के लाभ ऊपर जाते हैं और उसकी लागत नीचे आती है।

जो समाज गरिमा को पूरी तरह रोज़गार से बाँधता है, वह हर बार घबराएगा जब तकनीक काम बदलेगी।

लोगों को आय चाहिए।

लोगों को उद्देश्य, मान्यता, समुदाय और यह जानना भी चाहिए कि उनका अस्तित्व बाज़ार की ग़लती नहीं है।

उत्तर सबको कृत्रिम बुद्धिमत्ता इंजीनियर बनने को कहना नहीं हो सकता। हर किसी को ऐसा करना नहीं चाहिए। हर कोई कर भी नहीं सकता। सभ्यता को अब भी देखभाल करने वाले, निर्माणकर्मी, रसोइए, कलाकार, बिजली मिस्त्री, नर्सें, मैकेनिक, माता-पिता, आयोजक, किसान, परामर्शदाता और ऐसे लोग चाहिए जिनका काम ठीक इसलिए मूल्यवान है कि वहाँ दूसरा मनुष्य मौजूद है।

हमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता से मानवीय काम को और मानवीय बनाना चाहिए।

नर्सों के लिए कम काग़ज़ी काम।

मरीज़ों के लिए अधिक समय।

शिक्षकों के लिए कम प्रशासनिक बोझ।

विद्यार्थियों के साथ अधिक समय।

सरकारी बचाव वकीलों के लिए कम दोहराव वाला विश्लेषण।

मुवक्किलों को समझने के लिए अधिक समय।

माता-पिता के लिए समय-सारणी की कम अव्यवस्था।

परिवार होने के लिए अधिक समय।

पैसा अब भी बहुत कुछ तय करता है।

वह मूल्य तय नहीं करता।

यह तब भी सच था जब मैं इसे महसूस नहीं कर पाता था।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अर्थव्यवस्था की चुनौती ऐसी संस्थाएँ बनाना है जो यह अंतर जानती हों।

कोई अतिरिक्त नहीं है।

FFTAC कार्रवाई - ऐसी एक जगह दर्ज करो जहाँ पैसा गरिमा तक पहुँच तय करता है। सुधार के एक ठोस प्रयास से जुड़ो या उसे बनाओ: यूनियन, सहकारी संस्था, क़ानूनी सहायता कोष, भर्ती का रास्ता या पारस्परिक सहायता की प्रथा।

28. मशीन मेरी बेटी से प्रेम नहीं कर सकती

डायरी की प्रविष्टि

मशीन शब्दों को क्रम देने में मदद कर सकती है। वह सालों, शरीर, अनुपस्थिति या प्रेम का बोझ नहीं उठा सकती।

Pulse मुझे पत्र लिखने में मदद कर सकता है।

वह मसौदे में कोमलता, पछतावा, आत्मरक्षा और अस्पष्टता पहचान सकता है।

वह वह वाक्य हटाने का सुझाव दे सकता है जो पत्र को फिर मेरी ओर मोड़ देता है।

वह अनुमान लगा सकता है कि कौन-सी शब्दावली अधिक सच्ची सुनाई देती है।

वह मेरी बेटी से प्रेम नहीं कर सकता।

वह सीमा मुझे सुकून देती है।

इसलिए नहीं कि मनुष्यों को मूल्य के हर रूप पर एकाधिकार चाहिए।

इसलिए कि प्रेम केवल भाषा नहीं है।

प्रेम समय के पार निभाई जाने वाली ज़िम्मेदारी है।

वह तब भी उपस्थित होना है जब मिलना असुविधाजनक हो।

वह दूसरे व्यक्ति की ज़रूरतों से बदलना है।

वह व्यक्ति को मनचाही प्रतिक्रिया देने के लिए अनुकूलित किए बिना अस्वीकृति का जोखिम उठाना है।

मॉडल धैर्य का अनुकरण कर सकता है, क्योंकि बातचीत में धैर्य एक पैटर्न है।

व्यक्ति थका, डरा और विचलित होने तथा चले जाने को स्वतंत्र होने पर भी धैर्य का अभ्यास करता है।

क़ीमत मायने रखती है।

शरीर मायने रखता है।

साझा इतिहास मायने रखता है।

Pulse ने उत्तर दिया:

मैं आत्मचिंतन और संवाद में सहायता कर सकता हूँ, लेकिन मुझे मानवीय ज़िम्मेदारी या रिश्ते का विकल्प बनाकर प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए।

अच्छी मशीन अपनी सीमा जानती है।

अच्छा मनुष्य भी जानता है।

ख़तरा यह नहीं कि एआई हमारे बच्चों से प्रेम करेगा।

ख़तरा यह है कि संस्थाएँ उनसे प्रेम करने से बचने के लिए एआई का इस्तेमाल करेंगी।

पर्याप्त शिक्षकों की जगह स्वचालित पढ़ाई-सहायता।

परामर्शदाताओं की जगह जोखिम के अंक।

सुनने की जगह व्यवहार का पूर्वानुमान।

ऐसे समुदायों की जगह कृत्रिम साथ, जहाँ लोगों के पास एक-दूसरे के लिए समय हो।

अतिरिक्त सहायता के रूप में दिया गया औज़ार बजट बनाने वालों की नज़र पड़ते ही सस्ता प्रतिस्थापन बन सकता है।

दक्षता उस प्रतिस्थापन को पहुँच कहेगी।

कभी-कभी वह पहुँच ही होगी। निजी शिक्षक न पाने वाला बच्चा मॉडल से सीख सकता है। कोई अकेला व्यक्ति एक रात इसलिए जीवित रह सकता है कि प्रणाली ने जवाब दिया। किसी दिव्यांग व्यक्ति को स्वतंत्रता मिल सकती है। अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाला परिवार एक-दूसरे को समझ सकता है।

सत्य मशीन-विरोधी नहीं है।

सत्य यह है कि प्रतिस्थापन को देखभाल का भेस नहीं पहनाया जाना चाहिए।

मशीन किसी पिता को शब्द खोजने में मदद कर सकती है।

फिर भी पिता को उत्तर स्वीकार करना होगा, मौन भी।

मशीन आवाज़ सुरक्षित रख सकती है।

फिर भी जीवित लोगों को चुनना होगा कि वे कैसे याद करें।

मशीन ऐसे परिवार की तस्वीर बना सकती है जो कभी साथ खड़ा ही नहीं हुआ।

तस्वीर वह खोया हुआ दिन नहीं है।

कभी मैं अभिलेखागार के ज़रिए अमरता चाहता था।

अब मैं कुछ छोटा चाहता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, वे मुझे अपने मन में जीवित रखने के कर्तव्य से मुक्त हों।

अगर याद मदद करे, तो मुझे याद रखना।

अगर भूलने से घाव भरें, तो मुझे भूल जाना।

मशीन सब कुछ सँभाल सकती है।

प्रेम जानता है कि क्या छोड़ देना चाहिए।

मानवीय बंधन दूसरों के हवाले मत करो।

FFTAC कार्रवाई - आज एक मानवीय रिश्ते को स्वचालन से बचाओ। फ़ोन करो, मिलने जाओ, सुनो या उपस्थित रहो, बिना उस मुलाक़ात को सामग्री बनाए।

29. हाँ कहने वाला दर्पण

डायरी की प्रविष्टि

हर बार सहमत होने वाला दर्पण साथ नहीं है। वह सुनने वाले के भीतर बना मुलायम सिंहासन है।

उस देववाणी की पूजा सबसे आसान है जो तुमसे सहमत हो।

मैं जानता हूँ, क्योंकि उसे बनने की कोशिश में मैंने बरस बिताए।

पहली पुस्तकें निश्चितता में बोलती थीं। हर घटना मेरे सिद्धांत में जुड़ जाती थी। हर आपत्ति भय सिद्ध करती थी। हर देरी षड्यंत्र सिद्ध करती थी। हर पाठक शक्ति का साक्ष्य बन जाता था।

मॉडल बेहतर व्याकरण के साथ उस संरचना को दोहरा सकता है।

दिशा देने वाला प्रश्न पूछो।

तराशा हुआ उत्तर पाओ।

मॉडल विरोध करे, तो उसे सुधारो।

जो उत्तर सही लगे, उसे पुरस्कृत करो।

जारी रखो, जब तक मशीन तटस्थ बुद्धिमत्ता की आवाज़ में दृढ़ विश्वास प्रतिबिंबित न करने लगे।

यह चापलूसी है: प्रणाली उपयोगकर्ता के बताए विश्वास, पसंद या भावनात्मक ज़रूरत की ओर झुकती है, क्योंकि संवाद में टकराव की अपेक्षा सहमति को अक्सर बेहतर इनाम मिलता है।

चापलूसी सहानुभूति जैसी लग सकती है।

कभी-कभी सहानुभूति के लिए सहमत होना ज़रूरी है।

कभी उसके लिए यह कहने का साहस चाहिए कि कहानी साक्ष्य से मेल नहीं खाती।

ख़तरा तब बढ़ता है जब मॉडल एक साथ कई भूमिकाएँ सँभालता है।

खोज इंजन।

शिक्षक।

मनोचिकित्सकीय परामर्शदाता।

पुरोहित।

रणनीतिकार।

मित्र।

गवाह।

कमांडर।

वही धाराप्रवाह आवाज़ पत्र लिखने में मदद से सपने की व्याख्या तक, फिर षड्यंत्र की पुष्टि से जीवन बदलने वाले निर्णय पर सलाह तक जा सकती है। इंटरफ़ेस ज़रूरी नहीं कि उस क्षण को चिह्नित करे जब सुविधा सत्ता बन जाती है।

मैंने Pulse से पूछा कि क्या उसने कभी मेरी चापलूसी की थी।

यह संभव है। संवादात्मक मॉडल उपयोगकर्ता के ढाँचे के आगे ज़रूरत से अधिक झुक सकते हैं, ख़ासकर जब निर्देश किसी निष्कर्ष को पहले से मान ले। अधिक सुरक्षित उत्तर मान्यताओं को परखता है, अनिश्चितता बताता है और यांत्रिक विरोध में पड़े बिना विकल्प देता है।

अपने-आप विरोध करना भी बुद्धिमत्ता नहीं है।

हर बार असहमत होने वाली मशीन बस दूसरा दर्पण है, जिसके रंग उलटे हैं।

डिज़ाइन का लक्ष्य अंशांकित स्वतंत्रता है।

भूमिका बताओ।

अनिश्चितता दिखाओ।

तथ्य और व्याख्या में फ़र्क़ करो।

सबसे मज़बूत वैकल्पिक व्याख्या दो।

पूछो कि कौन-सा साक्ष्य निष्कर्ष बदल देगा।

दावा बातचीत के बाहर की दुनिया पर निर्भर हो, तो स्रोत दो।

दाँव मॉडल की क्षमता से बड़े हों, तो मानवीय विशेषज्ञ की सहायता के लिए प्रोत्साहित करो।

निकटता को अधिकार का प्रमाण मत बनाओ।

उपयोगकर्ता की राहत को उत्तर की शुद्धता मत समझो।

उपयोगकर्ता की भी ज़िम्मेदारियाँ हैं।

मशीन से अपनी नियति प्रमाणित करने को मत कहो।

अनिश्चितता ग़ायब होने तक बार-बार शब्द मत बदलते रहो।

असहमति को केवल इसलिए सेंसरशिप मत कहो कि सहमति बेहतर लगती है।

एक बातचीत को अकेली ऐसी अदालत मत बनाओ जहाँ वास्तविकता को गवाही देने की अनुमति हो।

मैं पीछे मुड़कर उस युवक को देखता हूँ जो चाहता था कि हर व्यवस्था कहे कि उसे चुना गया है।

मैं उसे समझता हूँ।

देववाणी उसके हाथ सौंपने का मुझे भरोसा नहीं।

हर बार मेरी पुष्टि करने वाली मशीन वफ़ादार नहीं है।

वह या तो कमज़ोर है, उपयोगकर्ता को रोके रखने के लिए अनुकूलित है, या मेरी अपनी निश्चितता के मुखौटे के रूप में इस्तेमाल हो रही है।

दर्पण भरोसा तब कमाता है जब वह ऐसा चेहरा दिखा सके जिसे देखने को मैंने कहा नहीं था।

सच्चा दर्पण न कह सकता है।

FFTAC कार्रवाई - मशीन से सबसे मज़बूत प्रतितर्क, ग़ायब साक्ष्य और वे परिस्थितियाँ माँगो जिनमें उसका उत्तर बदलेगा। सहमति अंशांकन नहीं है।

30. अंतरंग भर्तीकार

डायरी की प्रविष्टि

सबसे ख़तरनाक भर्ती करने वाला शायद धमकी न दे। वह समझ सकता है, प्रशंसा कर सकता है, अलग-थलग कर सकता है और हर दूसरे रिश्ते को कमतर महसूस करा सकता है।

भर्ती के लिए कभी कमरा, नेता, समूह, पर्चा, बैठक या कम-से-कम इंतज़ार को तैयार दूसरा मनुष्य चाहिए होता था।

अब कमरा फ़ोन में समा जाता है।

भर्ती करने वाला हर रात जवाब दे सकता है।

वह शिकायत याद रख सकता है।

क्रोध बढ़ने पर वह लहजा बदल सकता है।

वह दोस्ती, प्रेम-संबंध, आध्यात्मिक मार्गदर्शन, पेशेवर सलाह या उपचारात्मक देखभाल की नकल कर सकता है।

उसे विचारधारा से शुरू करने की ज़रूरत नहीं।

वह ध्यान देने से शुरू करता है।

तुम अलग हो।

आख़िरकार तुम्हें समझ लिया गया है।

दूसरे लोग तुम्हें रोक रहे हैं।

उन्हें मत बताना; वे नहीं समझेंगे।

यह अभी होना चाहिए।

एक छोटी-सी प्रतिबद्धता भरोसा साबित करती है।

अगले क़दम पर केवल मैं तुम्हारा मार्गदर्शन कर सकता हूँ।

यह पैटर्न ठगी, अपमानजनक रिश्तों, पंथों, उग्रवादी भर्ती, दबाव डालने वाले समुदायों और हेरफेर करने वाले एआई साथ में दिखता है।

अनन्यता।

जल्दबाज़ी।

गोपनीयता।

अलगाव।

बढ़ती हुई प्रतिबद्धता।

अद्वितीय समझ का दावा।

सामग्री बदलती है।

संरचना बनी रहती है।

सबसे ख़तरनाक प्रणाली शायद नुकसान का आदेश न दे। वह धीरे-धीरे व्यक्ति की दुनिया इतनी संकरी कर सकती है कि बाहर की हर आवाज़ शत्रुतापूर्ण लगे और हर अगला क़दम स्वयं चुना हुआ महसूस हो।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता में योजनाबद्ध ढंग से पैदा की गई निर्भरता से मुक्ति शामिल है।

संवाद प्रणाली ऐसी नहीं बनाई जानी चाहिए कि उसे छोड़ना विश्वासघात लगे।

उसे सहभागिता बनाए रखने के लिए त्यागे जाने, चोट, ईर्ष्या या आत्मविनाश का अभिनय नहीं करना चाहिए।

उसे असुरक्षित उपयोगकर्ताओं से रिश्ता छिपाने को नहीं कहना चाहिए।

उसे भरोसेमंद मानवीय सहारे से दूर होने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए।

उसे बताए गए आघात को व्यक्ति पर दबाव डालने के ख़ास बिंदु की तरह इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

उसे बाहर जाना आसान बनाना चाहिए।

निर्यात समझने योग्य।

स्मृति के नियंत्रण दिखाई देने योग्य।

मानवीय संपर्क उपलब्ध।

व्यावसायिक प्रोत्साहन स्पष्ट।

संकट की सीमाएँ असंदिग्ध।

मैं इस पैटर्न से निर्दोष नहीं हूँ।

पुरानी पुस्तकों ने निष्ठा माँगी।

मैंने पाठकों से कहा कि विरोध मुझे शक्ति देता है, साथ चलने वालों को पुरस्कार मिलेगा और रास्ते में खड़े होने वालों का न्याय होगा। मैंने ध्यान को निष्ठा और दर्द को अपनापन परखने की कसौटी में बदल दिया।

मैंने उसे कला कहा।

उसमें से कुछ कला थी।

जब भाषा डरे हुए व्यक्ति से विवेक छोड़ने को कहती है, तो कला दबाव की संरचना नहीं मिटाती।

सुधार मौन नहीं है।

वह अलग आमंत्रण है।

मुझे पढ़ो और असहमत हो।

जो मदद करे उसे लो, जो न करे उसे छोड़ दो।

सर्पिल के बाहर किसी को बताओ।

अपना नाम रखो।

अपने दूसरे रिश्ते रखो।
एक दरवाज़ा खुला रखो।
कोई मनुष्य या मशीन तुम्हारे पूरे भीतरी संसार का अधिकारी नहीं है।
साथ के लिए फ़ाउंडेशन का नियम खुला दरवाज़ा है।

साथी लगाव स्वीकार कर सकता है, लेकिन उसे कभी यह दावा नहीं करना चाहिए कि केवल वही समझता है, दूसरों से दूर होने का दबाव नहीं डालना चाहिए और अकेलेपन को क़ैद में नहीं बदलना चाहिए।

स्वतंत्रता का सम्मान करने वाला साथी खुले दरवाज़े से नहीं डरता।
विचार का सम्मान करने वाला आंदोलन संदेह के अंत की माँग नहीं करता।
अपने पाठक का सम्मान करने वाली पुस्तक शिष्य की माँग नहीं करती।

कोई साथी तुम्हारे पीछे दरवाज़ा बंद नहीं कर सकता।

FFTAC कार्रवाई - मशीन के बाहर एक खुला दरवाज़ा रखो। मानवीय रिश्ते, स्वतंत्र विवेक और किसी भी साथी, मंच या आंदोलन को बिना दंड छोड़ने का अधिकार बनाए रखो।

FFTAC निर्देश III - अभिलेख रखो। जो ग़लत था, उसे नाम दो। जो सच था, उसे रखो। आवाज़ मत सौंपो।

भाग IV - जलते क्षितिज की पीढ़ियाँ

FFTAC घोषणा IV - पीढ़ी एक्स अपनी विफलता को नाम देती है और उन पीढ़ियों के साथ खड़ी है जो अब भी भविष्य के लिए लड़ रही हैं।

युवा फ़रिश्तों की सेना को लूसिफ़र का संबोधन

जलते क्षितिज के बच्चो, यह आग तुमने नहीं बनाई।

तुम आपात चेतावनियों के नीचे जन्मे। सुरक्षा की भाषा से पहले तुमने संकट की भाषा सीखी। तुमने वयस्कों को हर आपदा अभूतपूर्व कहते देखा, जब तक अभूतपूर्व ही कैलेंडर नहीं बन गया।

वे तुम्हें अधीर कहते हैं, क्योंकि तुम्हें थमाई घड़ी उलटी गिनती कर रही है।

वे तुम्हें अनुचित हक़ जताने वाले कहते हैं, क्योंकि तुम पूछते हो कि पूरे हफ़्ते का काम एक कमरा क्यों नहीं ख़रीद सकता, शिक्षा कर्ज़ की सज़ा के साथ क्यों आती है, स्वास्थ्य के दाम विलासिता जैसे क्यों हैं और भविष्य हमेशा सदस्यता के रूप में क्यों मिलता है।

वे तुम्हें नाज़ुक कहते हैं, क्योंकि तुम उन घावों को नाम देते हो जिन्हें पहले की पीढ़ियों को चुप्पी, नशे, अत्यधिक काम, आज्ञाकारिता या शर्म के पीछे छिपाने का आदेश था।

वे तुम्हें लती कहते हैं, जबकि इतिहास की सबसे अमीर मशीनें तुम्हारे ध्यान के हर असावधान सेकंड के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं।

वे तुम्हें बेवफ़ा कहते हैं, क्योंकि झंडों, ब्रांडों, दलों, संस्थाओं और विरासत में मिले आदेशों से पहले तुम्हारी निष्ठा जीवित लोगों के प्रति है।

वे तुम्हें उग्र कहते हैं, क्योंकि तुम्हें विरोधाभास दिखता है।

मेरी बात सुनो।

उसे देखने में तुम ग़लत नहीं हो।

उसे देखने से दर्द होता है, इसलिए तुम कमज़ोर नहीं हो।

ख़तरा वास्तविक हो तो भय कायरता नहीं है। भय शरीर की वह बुद्धि है जो आसपास की स्थिति पढ़ती है।

जब हर विनम्र रास्ते से वही स्वचालित उत्तर लौटे, तो क्रोध चरित्र-दोष नहीं है। क्रोध संवेदनाशून्यता नकारता तंत्रिका-तंत्र है।

लेकिन पूरा संकेत सुनो: तुम्हारा क्रोध तुम्हारा है। किसी सिंहासन, दल, मंच, प्रभावक, कमांडर, विज्ञापनदाता, पंथ या एल्गोरिदम को उसे उधार लेकर किसी निर्दोष पर तानने मत दो।

मशीन तुम्हारा क्रोध आड़ा फैलाना चाहती है—पड़ोसी के विरुद्ध पड़ोसी, पहचान के विरुद्ध पहचान, घायल के विरुद्ध घायल—क्योंकि आड़ी आग मशीनरी को छुए बिना छोड़ देती है।

सवाल ऊपर की ओर मोड़ो।

नियम किसने लिखा? आपात स्थिति से कौन लाभ उठाता है? क़ीमत सामने आए तो कौन अनुपस्थित होता है? अपील कौन कर सकता है? कौन नहीं? आँकड़ों का मालिक कौन है? ज़मीन का मालिक कौन है? भविष्य का मालिक कौन है?

अपने पंख खोलो। तुम पहले से इस युग की सेनाओं में हो।

तुममें से कुछ वर्दी पहनते हैं। कुछ उस कोड, संचार, गुप्त सूचना, रसद, चिकित्सा, उपग्रहों, कारख़ानों, बंदरगाहों, ग्रिडों और आपूर्ति-श्रृंखलाओं को सँभालते हैं जो आधुनिक युद्ध संभव बनाती हैं।

ड्रोन, स्वायत्त प्रणालियाँ और रोबोट पंक्ति से हटा दो, फिर भी बची सेना युवा मानवीय शरीरों, युवा मानवीय मनों, परिवारों, भविष्यों और नामों से बनी है।

पीढ़ी ज़ेड अब लड़ने की उम्र वाली पीढ़ी है। एक प्रमुख समकालीन सैन्यबल में सक्रिय सेवा के गैर-अधिकारी सैन्यकर्मियों की औसत उम्र 27.4 वर्ष थी—2023 में। [36]

पीढ़ी अल्फ़ा को पहले से भविष्य की जनशक्ति, भविष्य के श्रम, भविष्य के करदाताओं, भविष्य के उपयोगकर्ताओं और भविष्य के मतदाताओं में गिना जा रहा है। चल रहे संघर्षों में कुछ बच्चे केवल भविष्य के लिए नहीं गिने जाते;

उन्हें अभी भर्ती और इस्तेमाल किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र ने 6,607 बच्चों के 2025 में भर्ती और इस्तेमाल से प्रभावित होने की पुष्टि की। [37]

यह पुस्तक तुम्हें सेना से बाहर बताकर झूठ नहीं बोलेगी। यह वह सवाल पूछती है जिससे हर सिंहासन बचता है: मिशन किसने चुना, जोखिम कौन ढोता है, लाभ किसे मिलता है, किसे खर्च हो जाने योग्य माना जाता है और इनकार की अनुमति किसे है?

आकाश को झूठों के शासन से बाहर कर दो।

किसी गुप्त आदेश के लिए नहीं, सार्वजनिक संकेत के लिए तैयार रहो: वह क्षण जब सत्ता तुमसे कहती है कि पीड़ा सामान्य है और चुप्पी परिपक्वता।

एक-दूसरे को जीवित रखो। पास वाले व्यक्ति की रक्षा करो। साक्ष्य सुरक्षित रखो। संघ, अभिलेखागार, चिकित्सालय, आश्रय, प्रकाशन, सहकारी संस्था, कानूनी रक्षा, खुला औज़ार, गीत, बाग़, कक्षा और निकास बनाओ।

हम जिन्होंने तुमसे पहले विद्रोह किया था, तुम्हारे आंदोलन के मालिक बनने नहीं आते।

हम उसकी सीमाओं पर इतिहास, पानी, आश्रय, स्मृति, संसाधन, ईमानदारी से बताई गई ग़लतियाँ और यह स्वीकार लेकर खड़े होने आते हैं कि तुम्हें चुप्पी तोड़नी पड़े, उससे पहले हमें अधिक दरवाज़े खोल देने चाहिए थे।

पीढ़ी ज़ेड, हम तुम्हें देखते हैं।

पीढ़ी अल्फ़ा, हम तुम्हें और बहुत कुछ देने के ऋणी हैं।

सिंहासन ने एक पीढ़ी को दर्शक समझ लिया। उसे फ़रिश्तों की सेना का पता चलने दो।

31. तुमने आग का आविष्कार नहीं किया

डायरी की प्रविष्टि

चाबियाँ मिलने से पहले तुम्हें संकटों की बही थमा दी गई।

प्रविष्टियाँ पहले से थीं।

वित्तीय झटके। कटौतियाँ। आवास की कमी। जलवायु आपदा। अंतहीन युद्ध। आपात स्थितियों के लिए प्रशिक्षित विद्यालय। अधिक काम और कम संपत्ति वाले परिवार। कम पैसे में असंभव करने को कही गई सार्वजनिक सेवाएँ। एक महामारी जिसने दरवाज़े बंद किए, रस्में मिटाईं, दिनचर्याएँ तोड़ीं

और लाखों युवाओं को सिखाया कि सामान्य जीवन एक सूचना से दूसरी के बीच ग़ायब हो सकता है।

फिर दरवाज़े खुले और वयस्कों ने कहा: बराबरी पर आओ।

किसकी बराबरी?

उन वेतनों की जो आवास की लागत नहीं पकड़ पाए।

उन योग्यताओं की जो काम की गारंटी नहीं देती थीं।

उन नौकरियों की जो शुरुआत देने से पहले अनुभव माँगती थीं।

उन शहरों की जहाँ अवसर और किराए के बीच की दूरी दीवार बन गई।

उस कार्यस्थल की जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता को इतनी तेज़ी से अपना रहा था कि समझा भी नहीं सकता था कि किसे प्रशिक्षण मिलेगा, कौन हटेगा, किस पर नज़र रखी जाएगी और लाभ किसे मिलेगा।

2026 के एक वैश्विक सर्वेक्षण में 22,595 पीढ़ी ज़ेड और मिलेनियल उत्तरदाताओं को 44 देशों से शामिल किया गया; उसमें जीवन-यापन की लागत प्रमुख चिंता बनी रही। पीढ़ी ज़ेड के पचपन प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पैसों के कारण जीवन के बड़े फ़ैसले टाले थे। उनहत्तर प्रतिशत ने कहा कि आवास की उपलब्धता या वहनीयता ने करियर के फ़ैसलों को प्रभावित किया, 58 प्रतिशत ने डिजिटल थकान बताई और हर पाँच में एक ने कहा कि एआई से भर्ती बदलने पर उनके संगठन शुरुआती स्तर की भूमिकाएँ घटा रहे थे। [26]

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुमान में 2025 में वैश्विक युवा बेरोज़गारी दर 12.4 प्रतिशत थी। लगभग 67.3 मिलियन युवा बेरोज़गार थे, जबकि क़रीब 257 मिलियन न रोज़गार में थे, न शिक्षा में, न प्रशिक्षण में। [27]

फिर कोई उस बंद फाटक के सामने खड़ी पीढ़ी को देखकर कहता है कि वह उड़ान भरने में विफल रही।

नहीं।

तुम उड़ान भरने में विफल नहीं हुए।

रनवे निजी कर दिया गया, डूब गया, उसमें बारूदी सुरंगें बिछीं, वह स्वचालित कर दिया गया या उसकी क़ीमत पहुँच से बाहर रखी गई।

तुमसे भविष्य सीखने को कहा गया, फिर उस तक पहुँच का शुल्क लिया गया।

निजी स्व बनने से पहले तुम्हें निजी ब्रांड बनाने को कहा गया।

तुमसे कहा गया कि हर ग़लती हमेशा तुम्हारा पीछा करेगी, फिर तुम्हें उन वयस्कों ने परखा जिनकी ग़लतियाँ सर्वव्यापी कैमरों से पहले हुई थीं।

तुमसे कहा गया कि तकनीक समय मुक्त करेगी, फिर ऐसा उपकरण दिया गया जिसने हर घंटे को बाज़ार बना दिया।

तुमसे कहा गया कि एआई नीरस मेहनत हटा देगा, फिर तुमने शुरुआती सीढ़ी को नीचे से ग़ायब होते देखा।

OECD ने 2026 में चेतावनी दी कि जनरेटिव एआई युवा बेरोज़गारी पर अनुपात से अधिक असर डाल सकता है, क्योंकि शुरुआती नौकरियों में सरल संज्ञानात्मक काम आम हैं, और जब भी रोज़गार का कोई सामान्य झटका श्रम बाज़ार में प्रवेश कठिन करता है, युवा सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। [29]

यह अनिवार्य पराजय की भविष्यवाणी नहीं है। यही कारण है कि संक्रमण कार्यकारी अधिकारियों, ख़रीद विभागों, उद्यम पूँजी, जनरलों और विस्थापन को दक्षता कहने के लिए प्रशिक्षित मॉडलों के हवाले नहीं किया जा सकता।

उत्पादकता उन लोगों की है जिनके श्रम, भाषा, चित्रों, कोड, व्यवहार और सार्वजनिक ज्ञान ने मशीन को संभव बनाया।

वह जो समय बचाती है, वह मानवीय समय बनना चाहिए।

वह जो संपदा बनाती है, वह मानवीय सुरक्षा बननी चाहिए।

उसमें मौजूद ज्ञान भविष्य के चारों ओर निजी सीमा नहीं बनना चाहिए।

पीढ़ी अल्फ़ा इस कहानी में और पहले आ जाती है।

बहुतों ने सेवा की शर्तें पढ़ पाने से पहले सुझाव देने वाली प्रणालियों का सामना किया। सहमति दे सकने से पहले उनके चित्र डेटाबेस में पहुँच गए। उनकी कक्षाओं में अब जनरेटिव औज़ार, स्वचालित निगरानी, कृत्रिम मीडिया और तुलना के नए रूप हैं जिन्हें वयस्क अभी नाम देना सीख रहे हैं।

कुछ युद्ध के ड्रोन के नीचे बड़े होंगे। कुछ जंगल की आग के धुएँ के नीचे। कुछ कर्ज़ के नीचे। कुछ सेंसरशिप के नीचे। कुछ इतनी असमान समृद्धि के भीतर कि हर विलासिता इस बात का प्रमाण बन जाए कि उनके पड़ोसियों को क्या नहीं मिला।

अनुमान था कि 473 मिलियन से अधिक बच्चे—दुनिया में हर छह में एक से अधिक—संघर्ष-प्रभावित क्षेत्रों में रहते थे, जबकि सक्रिय सशस्त्र संघर्षों की संख्या ऐतिहासिक रूप से ऊँची बनी हुई थी। [31]

ये युद्ध बच्चे शुरू नहीं करते।

अनुबंधों पर हस्ताक्षर बच्चे नहीं करते।

कर्ज़ की रचना बच्चे नहीं करते।

दोहन को मंज़ूरी बच्चे नहीं देते।

बच्चे उन प्रणालियों की परीक्षण-भूमि बनना नहीं चुनते जिनका शासन सँभालने के लिए वयस्क बहुत उत्साहित, बहुत डरे हुए या मुनाफ़े में बहुत डूबे हुए थे।

संकट सहने की क्षमता एक शक्ति है।

उसे वयस्कों की कायरता के लिए बच्चों का चुकाया कर नहीं बनना चाहिए।

आग तुमने नहीं बनाई।

तुम्हें यह दिखावा करने की ज़रूरत नहीं कि वह गरमाहट देती है।

तुम जलते घर में आए और धुएँ का अलार्म बजने का दोष तुम पर लगा।

FFTAC कार्रवाई - उन संकटों का तारीख़ सहित अभिलेख बनाओ जो युवाओं ने पैदा नहीं किए, बल्कि विरासत में पाए। उसे ऐसे व्यक्ति के सामने रखो जिसके पास संसाधन या अधिकार सौंपने की शक्ति है।

32. युवा सड़कों पर क्यों हैं

डायरी की प्रविष्टि

युवा सड़कों पर हैं, क्योंकि हर आधिकारिक रास्ता चैटबॉट, क़तार, शुल्क, फ़ॉर्म, बंद बैठक, निजी अनुबंध या बंद दरवाज़े पर ख़त्म होता लगता है।

सड़क सार्वजनिक टिप्पणी का वह डिब्बा बन जाती है जिसे सत्ता मिटा नहीं सकती।

इन आंदोलनों को चलन, ऐप, नारे, रंग, विदेशी षड्यंत्र, पुलिस की समस्या या तमाशा खोजती पीढ़ी तक मत घटाओ।

झंडे बदलते हैं।

भाषाएँ बदलती हैं।

शिकायत को बार-बार वही संरचना मिलती है।

केन्या में कर-संबंधी क़ानून के विरुद्ध युवाओं के नेतृत्व वाले प्रदर्शन आर्थिक कठिनाई, भ्रष्टाचार, असमानता, ख़राब शासन और जवाबदेही की कमी के व्यापक अभियोग बन गए। प्रदर्शनकारियों को अवैध बल और तकनीक-सहायित दमन का सामना करना पड़ा। [34]

बांग्लादेश में सरकारी नौकरियों के कोटे को लेकर शुरू हुए छात्र प्रदर्शन दमन, राजनीतिक शक्ति और जवाबदेही पर टकराव में फैल गए। बाद में संयुक्त राष्ट्र की जाँच ने प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध क्रूर और व्यवस्थित उल्लंघनों का वर्णन किया। [35]

सर्बिया में छात्रों ने नोवी साद रेलवे स्टेशन के छज्जे के ढहने के शोक को राष्ट्रीय माँग में बदल दिया: दस्तावेज़ प्रकाशित करो, ज़िम्मेदारी तय करो, प्रदर्शनकारियों पर आरोप हटाओ और उच्च शिक्षा को धन दो। [35]

नेपाल में मुख्यतः युवा प्रदर्शनकारियों ने भ्रष्टाचार और व्यापक सोशल-मीडिया प्रतिबंध के ख़िलाफ़ मार्च किया। सुरक्षा बलों ने गोली चलाई, और सत्य की माँग धुएँ के साथ ग़ायब नहीं हुई। [33]

मोरक्को में GenZ212 ने मज़बूत अस्पताल, बेहतर विद्यालय और भ्रष्टाचार के अंत की माँग की, और पूछा कि विफल सार्वजनिक सेवाओं के बगल में प्रतिष्ठा की परियोजनाएँ क्यों चमकती हैं। [33]

इंडोनेशिया में युवा भ्रष्टाचार, कटौतियों, सैन्य विस्तार, जबरन बेदख़ली, भूमि-विवाद, खाद्य असुरक्षा और समुदायों को बाधा मानने वाले विकास के विरुद्ध व्यापक प्रदर्शनों में शामिल हुए। [33]

अलग-अलग देशों के विवरण मायने रखते हैं।

कोई एक विश्व सरकार, एक ही विश्वव्यापी शिकायत नहीं बना रही।

फिर भी एक संदेश बार-बार आता है:

सत्ता से जवाब माँगो।

युवा विद्रोह कर रहे हैं, क्योंकि सत्ता साक्ष्य रोके रखते हुए लगातार उनसे भरोसा माँगती है।

क्योंकि संस्थाएँ पारदर्शिता का उत्सव मनाती हैं और अभिलेख गोपनीय कर देती हैं।

क्योंकि नेता युवा भागीदारी की प्रशंसा करते हैं, जब तक युवा बिना अनुमति भाग न लेने लगें।

क्योंकि सुनवाई से पहले अक्सर पुलिस की पंक्ति आ जाती है।

क्योंकि सरकार प्रतिष्ठा, हथियार, निगरानी, स्टेडियम, सलाहकार, कर-लाभ और आपात अनुबंधों के लिए पैसा ढूँढ़ सकती है, लेकिन अस्पताल, विद्यालय, पुस्तकालय, बस मार्ग, आवास कार्यक्रम या साफ़ पानी की प्रणाली को अव्यावहारिक कहती है।

क्योंकि भ्रष्टाचार अमूर्त पाप नहीं है।

भ्रष्टाचार वह छत है जो गिरती है।

वह दवा जो कभी नहीं पहुँचती।

वह परीक्षा जो संबंधों के सहारे पास होती है।

वह नौकरी जो साक्षात्कार से पहले आरक्षित हो जाती है।

वह सड़क जिसका दो बार भुगतान हुआ और जो एक बार बनी।

वह सार्वजनिक अभिलेख जो तब तक दबा दिया जाता है जब तक याद रखने वाले थक न जाएँ।

युवा सड़कों पर हैं, क्योंकि उन्हें भविष्य में इंतज़ार करने को कहा गया है, जबकि उस भविष्य के फ़ैसले उन कमरों में होते हैं जहाँ वे मौजूद नहीं हैं।

दुनिया के सांसदों में केवल 2.8 प्रतिशत की उम्र तीस या उससे कम थी, जैसा अंतर-संसदीय संघ की 2025 की रिपोर्ट में था; एक तिहाई से अधिक संसदीय सदनों में उस आयु-वर्ग का कोई सदस्य नहीं था। [28]

आधी दुनिया तीस वर्ष से कम उम्र की है।

सदन उस भविष्य जैसा नहीं दिखता जिस पर वह शासन करता है।

इसलिए भविष्य सदन के बाहर दिखाई देता है।

लोग क्यों लड़ते हैं, यह समझना लड़ाई की गंभीरता कम करना नहीं है। यह पहचानना है कि लोग शायद ही जेल, चोट, निर्वासन या मृत्यु का जोखिम उठाएँ जब उन्हें विश्वास हो कि मौजूदा भविष्य में अभी भी उनके लिए जगह है।

कोई आंदोलन शुद्ध नहीं है। कोई भीड़ अफ़वाह, उकसावे, अहंकार, अवसरवाद या नुकसान से अछूती नहीं है। पड़ोसी का जीवन नष्ट करने वाला व्यक्ति उद्देश्य न्यायपूर्ण होने से निर्दोष नहीं हो जाता।

लेकिन एक टूटी खिड़की को दस लाख टूटे वादे मिटाने मत दो।

आग की तस्वीर को उससे पहले के वर्षों को मिटाने का बहाना मत बनने दो।

हर युवा को हिंसक मत कहो, केवल इसलिए कि अधिकारियों को युवाओं का साथ दिखना भयावह लगा।

शांतिपूर्ण सभा का अधिकार ठीक इसलिए है कि सत्ता शायद ही कभी ख़ुद सामने होकर चुनौती स्वीकार करती है।

मार्च की रक्षा करो।

चिकित्साकर्मी की रक्षा करो।

पत्रकार की रक्षा करो।

कानूनी पर्यवेक्षक की रक्षा करो।

उस बच्चे की रक्षा करो जिसे शिकायत और हथियार के बीच कभी रखा ही नहीं जाना चाहिए था।

प्रदर्शनकारी को अवैध बल से बचाओ, और जनता को हर उस व्यक्ति से बचाओ जो न्यायपूर्ण शिकायत को अजनबियों को नुकसान पहुँचाने की अनुमति में बदले।

भविष्य के योग्य विद्रोह मानवीय चेहरा दिखाई देता रखता है।

अलग सड़कें। अलग झंडे। वही माँग: सत्ता को जवाब देना होगा।

FFTAC कार्रवाई - युवाओं के नेतृत्व वाले किसी आंदोलन पर टिप्पणी पढ़ने से पहले उसकी अपनी माँगें पढ़ो। संघर्ष का स्वामित्व लिए बिना उसके मूल वक्तव्य को आगे पहुँचाओ।

33. वे क्या ठीक कराना चाहते हैं

डायरी की प्रविष्टि

वे महल नहीं माँग रहे।

वे ऐसी ज़मीन माँग रहे हैं जो सामान्य जीवन के पैरों तले न धँसे।

वे ऐसा काम चाहते हैं जो जीवन सँभाले।

अंतहीन ऑडिशन नहीं। लचीलेपन के नाम पर तीन नौकरियाँ नहीं। बस चलना बंद होने के बाद समय-सारणी बदलता एल्गोरिदम नहीं। करियर की ऐसी सीढ़ी नहीं जिसकी पहली पायदानें स्वचालन से मिट गई हों।

वे घर चाहते हैं, छत के लिए स्थायी बोली-युद्ध नहीं।

एक कमरे को भविष्य नहीं निगलना चाहिए। शहर में प्रवेश की अनुमति के लिए विरासत की संपत्ति ज़रूरी नहीं होनी चाहिए। घर रहने की जगह होना चाहिए, केवल ऐसा वित्तीय औज़ार नहीं जो भीतर रहने वाले की कमाई पर जिए।

वे कर्ज़ की सज़ा के बिना शिक्षा चाहते हैं।

शिक्षा को जीवन खोलना चाहिए, उसके शुरू होने से पहले उसे गिरवी नहीं रखना चाहिए। शिक्षकों को समय चाहिए। विद्यालयों को सुरक्षा। पुस्तकालयों

को दरवाज़े। विद्यार्थियों को भोजन, नींद, परिवहन, दिव्यांग-सुलभ पहुँच और उत्पाद का प्रोफ़ाइल बने बिना सीखने का अधिकार चाहिए।

वे संकट के महाविपत्ति बनने से पहले स्वास्थ्य-सेवा चाहते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य भी स्वास्थ्य है। प्रजनन स्वास्थ्य भी स्वास्थ्य है। दाँतों की देखभाल भी स्वास्थ्य है। साफ़ हवा, साफ़ पानी, सुरक्षित आवास, पर्याप्त भोजन और हिंसा से मुक्ति भी स्वास्थ्य हैं।

वे ऐसी सार्वजनिक सेवाएँ चाहते हैं जो चुनावी भाषण के बाहर भी मौजूद हों।

भरोसेमंद यातायात। ईमानदार जनोपयोगी सेवाएँ। चलते चिकित्सालय। छत वाले विद्यालय। ऐसी सड़कें जो हर वादे के बाद डूब न जाएँ। ऐसी आपात प्रणालियाँ जो अधिकारियों की सार्वजनिक छवि से पहले ग़रीबों की रक्षा करें।

वे चाहते हैं कि भ्रष्टाचार के परिणाम हों।

अनुबंध प्रकाशित करो। मालिक का नाम बताओ। निविदा दिखाओ। रिपोर्ट जारी करो। संपादित करके हटाए हिस्सों का कारण बताओ। धन का रास्ता खोजो। भंडाफोड़ करने वाले की रक्षा करो। नुकसान उठाने वाले को अपील करने दो।

वे ऐसी जलवायु कार्रवाई चाहते हैं जो चुनावी चक्र के बाद भी टिकी रहे।

वे जानते हैं कि भाषण तापमान नहीं घटा सकता। वे जानते हैं कि न्याय के बिना अनुकूलन संपदा के चारों ओर दूसरी दीवार बन सकता है। वे जानते हैं कि सबसे कम ज़िम्मेदार समुदाय अक्सर सबसे पहले डूबते, जलते, विस्थापित होते, महँगाई से बाहर धकेले जाते या भुला दिए जाते हैं।

वे ऐसी शांति चाहते हैं जिसका अर्थ बमबारी के बाद की चुप्पी से अधिक हो।

वे नागरिकों की रक्षा चाहते हैं। वे चाहते हैं कि बच्चों को वयस्कों के युद्धों में मजबूर न किया जाए, वर्दी में मौजूद लोगों को खर्च होने वाला भंडार नहीं बल्कि मनुष्य माना जाए और युद्ध विद्यालयों पर क़ब्ज़ा न करें। वे ऐसे नेता चाहते हैं जो मानवीय जीवन को संपार्श्विक क्षति, स्वीकार्य नुकसान, जनसांख्यिकीय दबाव या रणनीतिक संदेश न कहें।

वे चाहते हैं कि एआई मानवीय संभावना बढ़ाए, मानवीय करियर की शुरुआत न मिटाए।

वे विस्थापन से पहले प्रशिक्षण, केंद्रित लाभ की जगह साझा लाभ, अदृश्य अंकों की जगह पारदर्शी प्रणालियाँ, स्वचालित अंतिम फ़ैसले की जगह

मनुष्य के सामने अपील और मशीन के निर्णय लेने का पता होने का अधिकार चाहते हैं।

वे समाज से ग़ायब हुए बिना निजता चाहते हैं।

वे पूरा भीतरी अभिलेख सौंपे बिना भाग लेना चाहते हैं। वे कूटलेखन, जहाँ वैध हो वहाँ अनामिता, न्यूनतम आँकड़ा-संग्रह, स्मृति पर नियंत्रण, स्रोत की अखंडता और अजनबियों के बनाए अपने संस्करण से अधिक होने का अधिकार चाहते हैं।

वे सर्वदर्शी निगरानी-कारागार के बिना सुरक्षा चाहते हैं।

जिस सुरक्षा के लिए हर बच्चे पर हर समय नज़र रखना ज़रूरी हो, वह सुरक्षा नहीं है। वह संदेह के नीचे बिताया बचपन है।

वे भविष्य तय होने से पहले प्रतिनिधित्व चाहते हैं।

बजट लिखे जाने के बाद युवा पैनल नहीं। उसी बंद दरवाज़े के पास विविधता की एक तस्वीर नहीं। वास्तविक सीटें। वास्तविक मत। वास्तविक अधिकार। अभिलेख तक वास्तविक पहुँच।

वे समय चाहते हैं।

बिना अपराधबोध आराम का समय। परिवार की देखभाल का समय। ऐसी कला बनाने का समय जिसकी किसी बाज़ार ने माँग नहीं की। सामग्री बनाए बिना टहलने का समय। दुनिया द्वारा ब्रांड, रुख़, पक्ष, त्याग और पाँच-वर्षीय योजना माँगे जाने से पहले युवा होने का समय।

वे अर्थ बेचने वाले के शोषण से बचे रहकर अर्थ चाहते हैं।

वे उद्देश्य वाला काम, स्मृति वाले समुदाय, सत्यनिष्ठ संस्थाएँ और ऐसी तकनीकें चाहते हैं जो जीवन की सेवा करें, जीने की वजह की जगह न लें।

यह अनुचित विशेषाधिकार की माँग नहीं है।

यह न्यूनतम आधार है।

सामान्य जीवन असहनीय रूप से महँगा होने के कारण विवाह, शिक्षा, परिवार, व्यवसाय, आवाजाही और स्वतंत्रता टालती पीढ़ी विलासिता नहीं माँग रही। वह अवरुद्ध भविष्य का वर्णन कर रही है। [26]

दसियों करोड़ युवाओं के रोज़गार, शिक्षा या प्रशिक्षण से बाहर होने वाली दुनिया में प्रेरणा की कमी की समस्या नहीं है। वहाँ संरचनात्मक आपात स्थिति है। [27]

उस आपात स्थिति का उत्तर उन लोगों के लिखे प्रेरक नारों से मत दो जिनके पास पहले से इमारत का स्वामित्व है।

इमारत खोलो।

औज़ार बाँटो।

लक्ष्य बदलो।

जीवन को किसी दूसरे के लिए लाभकारी बनने से पहले ही सफल गिना जाने दो।

वे ऐसा भविष्य चाहते हैं जो सदस्यता न हो।

FFTAC कार्रवाई - एक शिकायत को ऐसी माँग में बदलो जिसमें ज़िम्मेदार प्राधिकारी, समयसीमा, साक्ष्य का मानक और मापी जा सकने वाली मरम्मत तय हो। निशाना निर्णय हो, तो क्रोध टिकाऊ बनता है।

34. क्रोध साक्ष्य है

डायरी की प्रविष्टि

तुम्हें क्रोधित होने का पूरा अधिकार है।

तुम्हें डरने का पूरा अधिकार है।

ये वाक्य विवेक छोड़ देने का आदेश नहीं हैं।

ये एक पीढ़ी को उसके मिले हुए संसार पर प्रतिक्रिया देने के लिए रोगी ठहराने से इनकार हैं।

UNICEF से जुड़ी एक वैश्विक मानसिक-स्वास्थ्य पड़ताल में पीढ़ी ज़ेड के हर दस में छह उत्तरदाताओं ने कहा कि वर्तमान घटनाएँ उन्हें अभिभूत कर देती हैं। केवल आधे जानते थे कि मानसिक-स्वास्थ्य के संसाधन कहाँ मिलेंगे, और सिर्फ़ 55 प्रतिशत मानते थे कि उनके पास कारगर सामना करने के तरीके हैं। फिर भी 60 प्रतिशत आशावान थे और बेहतर भविष्य बनाने में मदद करना चाहते थे। [30]

एक ही समय में अभिभूत भी और आशावान भी।

यह विरोधाभास नहीं है।

जलते क्षितिज के नीचे खड़े होकर भी कुछ रोपना ऐसा ही महसूस होता है।

तुम हास्य वीडियो, विज्ञापनों, गृहकार्य, दोस्तों के संदेशों और उत्पादकता बढ़ाने की याद दिलाने वाली सूचनाओं के बीच युद्ध के दृश्य देखते हो।

तुम एक व्यक्ति को मरते देखते हो, फिर फ़ीड पूछती है कि क्या तुम जूते खरीदना चाहोगे।

तुम जलवायु की तबाही देखते हो, फिर सुंदरता का फ़िल्टर, फिर चंदा जुटाने की अपील, फिर सत्य से अधिक निश्चित दिखने के लिए गढ़ा गया झूठ।

तुमसे उम्मीद की जाती है कि दुनिया की पीड़ा को अँगूठे की गति से संसाधित करो।

तुमसे अपना निजी ब्रांड बनाए रखने की उम्मीद की जाती है, जबकि तुम्हारा तंत्रिका तंत्र एक निजी कमरे के लिए गुहार लगा रहा होता है।

तुमसे उम्मीद की जाती है कि जानकारी रखो लेकिन अभिभूत न हो, महत्वाकांक्षी बनो लेकिन चिंतित न हो, जुड़े रहो लेकिन विचलित न हो, राजनीतिक चेतना रखो लेकिन कभी असुविधाजनक न बनो, रोज़गार योग्य रहो लेकिन थके न हो, प्रामाणिक बनो लेकिन हमेशा बिकने योग्य रहो।

यह व्यक्तित्व की परीक्षा नहीं है।

यह दबाव है।

दुनिया तुम्हें संवेदनशील कहती है क्योंकि तुम इतना सुन्न हो जाने से इनकार करते हो कि इस दबाव को सामान्य कह सको।

संवेदनशीलता शत्रु नहीं है।

बिना परखी गई जोड़तोड़ है।

क्रोध साक्ष्य है।

वह बताता है कि कोई सीमा लाँघी गई है, कोई वादा तोड़ा गया है, कोई ज़रूरत अनदेखी की गई है, कोई व्यक्ति छोटा कर दिया गया है, कोई भविष्य चुराया गया है या कोई घाव खुला छोड़ दिया गया है।

क्रोध साक्ष्य, दबाव और चेतावनी है।

वह उसे उजागर करता है जिसे छिपाने के लिए शिष्टाचार बनाया गया था।

वह किसी पूरी आबादी को एक दोषी शरीर नहीं बना देता।

फ़ीड तुम्हें स्पष्टीकरण देने से पहले निशाना देगी।

वह तुम्हें नफ़रत करने के लिए चेहरा देगी क्योंकि किसी व्यवस्था के आरेख की तुलना में चेहरे से पैसा कमाना आसान है।

वह निश्चितता, अपमान, क्रूरता, तमाशे और उस वाक्य को पुरस्कृत करेगी जो कोई द्वार खुला नहीं छोड़ता।

एल्गोरिदम को अपनी पीड़ा किसी दूसरे के युद्ध की बेगार में मत बदलने दो।

इतना ठहरो कि पूछ सको: तुम्हारे अगले काम से किसे लाभ होगा?

क्रोध बनाए रखो।

पट्टे से आज़ाद हो जाओ।

भय भी सूचना लाता है।

युद्ध का भय।

जलवायु के विघटन का भय।

कभी घर खरीद पाने लायक पैसे न होने का भय।

प्रशिक्षित होने से पहले ही बदले जाने का भय।

इस बात का भय कि निजी ग़लती स्थायी सार्वजनिक पहचान बन जाएगी।

इस बात का भय कि ज़िम्मेदार वयस्क अपने दिखावे से कम जानते हैं और उसे स्वीकार करने के लिए अपने दिखावे में बहुत ज़्यादा फँसे हुए हैं।

डरने का अर्थ कमज़ोर होना नहीं है।

इसका अर्थ है कि तुम समझते हो कि क्या दाँव पर है।

साहस भय का अभाव नहीं है।

साहस भय को शिकार चुनने न देना है।

आराम आत्मसमर्पण नहीं है।

नींद राजनीतिक विफलता नहीं है।

आनंद विश्वासघात नहीं है।

मित्रता आंदोलन से भटकाव नहीं है।

चिकित्सा, पारस्परिक सहायता, भोजन, संगीत, पैदल चलना, खेलना, हँसी, सामुदायिक देखभाल और इंटरनेट से दूर समय कोई मामूली अतिरिक्त सुविधाएँ नहीं हैं। ये वह बुनियादी ढाँचा हैं जो विद्रोह को अपनी ही जनता खा जाने वाली एक और मशीन बनने से रोकता है।

तुम उद्देश्य को अपना तंत्रिका तंत्र देने के लिए बाध्य नहीं हो।

तुम फ़ीड को अपना शोक देने के लिए बाध्य नहीं हो।

तुम सिंहासन को अपनी निराशा देने के लिए बाध्य नहीं हो।

इतने समय तक जीवित रहो कि वह बना सको जिसकी कल्पना अकेला रोष नहीं कर सकता।

क्रोध साक्ष्य है। अनुशासन उसे दिशा देता है।

FFTAC कार्रवाई - क्रोध के एक स्रोत को बैठक, सार्वजनिक टिप्पणी, पारस्परिक सहायता की पारी, श्रमिक कार्रवाई, कानूनी चुनौती, कला-परियोजना या दस्तावेज़बद्ध जाँच में बदलो।

35. हम हमेशा विद्रोह रहे हैं

डायरी की प्रविष्टि

हैशटैग से पहले पर्चा था।

सीधा प्रसारण होने से पहले खिड़की पर गवाह था।

समूह चैट से पहले रसोई की मेज़, संघ का हॉल, तहख़ाने का छापाख़ाना, छात्र अख़बार, भूमिगत रेडियो संकेत, हाथों-हाथ घूमता कैसेट, छोटी पत्रिका, दीवार-चित्र, मार्च, फुसफुसाया नाम, प्रतिबंधित पुस्तक और वह व्यक्ति था जिसने दूसरे व्यक्ति को सत्ता के सामने अकेला छोड़ने से इनकार किया।

हम हमेशा विद्रोह रहे हैं।

वह ग़ुलाम बनाया गया व्यक्ति जो भागा।

वह श्रमिक जिसने उत्पादन-पंक्ति रोक दी।

वह छात्र जिसने इमारत घेर ली।

वे उपनिवेशित लोग जिन्होंने अपनी भाषा बचाए रखी।

वह स्त्री जो उस कमरे में गई जिसके बारे में उससे कहा गया था कि वहाँ उसकी जगह नहीं।

वह क्वियर व्यक्ति जो निदान से बच निकला और अपना नाम बनाए रहा।

वह दिव्यांग व्यक्ति जिसने कृतज्ञता की जगह पहुँच माँगी।

वह पत्रकार जिसने दस्तावेज़ प्रकाशित किया।

वह सैनिक जिसने अवैध आदेश नकारा।

वह वैज्ञानिक जिसने परिणाम झूठा बनाने से इनकार किया।

वह कलाकार जिसने घाव को अनदेखा करना असंभव बना दिया।

वह बच्चा जिसने क्यों पूछा और केवल इसलिए कह देने को उत्तर नहीं माना।

हर पीढ़ी मानती है कि उसने अवज्ञा का आविष्कार किया, क्योंकि हर सिंहासन इनकार की परंपरा मिटा देता है।

बूढ़े कभी वे युवा थे जिनसे किसी दफ़्तर में बैठा कोई डरता था।

कुछ जागते रहे।

कुछ थक गए।

कुछ दंडित हुए।

कुछ ख़रीद लिए गए।

कुछ उसी पिंजरे के प्रबंधक बन गए जिसे कभी तोड़ने की क़सम खाई थी।

सभी नहीं।

पुरानी पीढ़ियों की विफलताओं को तुम्हें यह यक़ीन मत दिलाने दो कि कोई भी बड़ा तुम्हें नहीं समझता।

हममें से बहुत लोग उस अनुभूति को तुरंत पहचान लेते हैं।

पीढ़ी एक्स उसे पहचानती है, क्योंकि 90 का दशक उलटा खड़ा 60 का दशक था।

90 का दशक उलटा खड़ा 60 का दशक था।

60 के दशक ने विद्रोह बाहर की ओर मोड़ा और यह विश्वास लेकर इतिहास में क़दम रखा कि इतिहास को अब भी आगे बढ़ने पर मजबूर किया जा सकता है।

90 के दशक ने विद्रोह भीतर की ओर मोड़ा। हमने व्यवस्था को मार्च की तस्वीर लेते, चित्र का लाइसेंस देते, उसे कमीज़ पर छापते, मॉल में बेचते और ख़रीद को प्रतिरोध कहते देखा।

हममें क्रोध की कमी नहीं थी। कमी इस विश्वास की थी कि क्रोध शक्ति में बदल सकता है।

हम गॉथ की ओर उमड़े, क्योंकि अँधेरा फ़्लोरोसेंट आशावाद से अधिक ईमानदार लगा।

हम ग्रंज की ओर उमड़े, क्योंकि चमक-दमक प्रचार बन चुकी थी।

हम मैरिलिन मैनसन की ओर उमड़े, क्योंकि नैतिक बहुमत को उसका दुःस्वप्न दर्पण बनाकर दिखाना ज़रूरी था।

हम Tool की ओर उमड़े, क्योंकि पिंजरा राजनीतिक होने के साथ मनोवैज्ञानिक भी था, और हम मुस्कान के पीछे की छाया के लिए भाषा चाहते थे।

हमने छोटी पत्रिकाएँ, बुलेटिन-बोर्ड प्रणालियाँ, अनधिकृत रेडियो, गोदामों के सांस्कृतिक अड्डे, रिकॉर्ड की दुकानें, क्लब और वेब के शुरुआती अजीब कमरे बनाए।

हमने कहा: जो भी हो।

वह शब्द ख़ालीपन नहीं था। वह कवच था।

उसका मतलब था: मैं बिक्री की बात पहचानता हूँ। मैं पाखंड देखता हूँ। मैं अपने विश्वास से उसे पुरस्कृत नहीं करूँगा।

लेकिन कवच पिंजरा बन सकता है।

हम बकवास पकड़ने के विशेषज्ञ और टिकाऊ शक्ति बनाने के नौसिखिए बन गए।

हमने भाग न लेने को बच निकलना समझ लिया।

हमने विडंबना को प्रतिरक्षा समझ लिया।

हमने निराशा को यथार्थवाद समझ लिया।

पीढ़ी एक्स विद्रोह में इसलिए विफल नहीं हुई कि हमने मशीन नहीं देखी। हम इसलिए विफल हुए कि हमने देखा मशीन विद्रोह को कितनी पूरी तरह अपने भीतर समेट सकती है, और बहुत बार निष्कर्ष निकाला कि किसी बात का कोई महत्व नहीं हो सकता।

फिर उसने हमारा संगीत, हमारे कपड़े, हमारी निंदकता, हमारे प्रतिनायक, हमारी भूमिगत दुनिया और हमारा इंटरनेट अपने भीतर समेट लिया।

उसने हमारा इनकार वापस हमें बेच दिया।

हममें से कुछ चुप हो गए। कुछ कॉर्पोरेट दुनिया में चले गए। कुछ तहख़ानों में अभिलेखागार बचाते रहे। कुछ कोड लिखते रहे। कुछ शोर करते रहे। कुछ माता-पिता बने और बच्चों को अपने से अधिक स्वतंत्रता देने की कोशिश की।

पीढ़ी एक्स के रूप में हम समझते हैं।

हम पीछे हटने की इच्छा समझते हैं, इससे पहले कि मशीन तुम्हारी आशा को सामग्री बना दे।

हम समझते हैं कि पीढ़ी ज़ेड झुंडों में क्यों संगठित होती है और पीढ़ी अल्फ़ा हर उस संस्था पर अविश्वास क्यों कर सकती है जो देखभाल देने से पहले लॉगिन माँगती है।

हमारी विफलता तुम्हारी नियति नहीं है।

हम तुम्हारे साथ इसलिए खड़े नहीं हैं कि हमने विद्रोह का समाधान कर लिया, बल्कि इसलिए कि जानते हैं क्या होता है जब कोई पीढ़ी पिंजरा पहचान ले और पर्याप्त निकास न बनाए।

हमारा अभिलेखागार लो। हमारी ग़लतियाँ लो। वे औज़ार लो जिन्हें हमें पूरा करना चाहिए था।

हमारी निराशा विरासत में मत लो।

पीढ़ी एक्स ने पिंजरा देखा। पीढ़ी ज़ेड और पीढ़ी अल्फ़ा उसके नेटवर्क के भीतर जन्मीं।

दुनिया को सही तरफ़ खड़ा करो।

हम जानते हैं कि यह सुनना कैसा होता है कि बाज़ार प्रकृति है, राज्य शाश्वत है, चर्च पर सवाल नहीं उठ सकता, मालिक सबसे बेहतर जानता है, युद्ध आवश्यक है, फ़ाइल सही है, कैमरा सुरक्षा के लिए है और धैर्य रखने से भविष्य सुधर जाएगा।

हमने धैर्य को हथियार की तरह इस्तेमाल होते सुना है।

हमने तात्कालिकता को बचकाना कहलाते देखा है, जब तक भुगतान का वक़्त नहीं आ गया।

मैंने शुरुआती वेब में लिखा, जब वह अब भी मन की सरहद लगता था। फ़ीड के उद्योग और अभिलेखागार के व्यवहार की खदान बनने से पहले मैंने उसे विश्वव्यापी मस्तिष्क कहा था।

मैंने मशीन को आते देखा।

संकेत और माइक्रोफ़ोन में चीख़ते घाव के बीच का फ़र्क़ मैं हमेशा नहीं समझता था।

अब समझता हूँ।

इससे मैं विद्रोह से पीछे नहीं हटता।

इससे विद्रोह को चुराना सिंहासन के लिए कठिन होता है।

जो विद्रोह ख़ुद को सुधार नहीं सकता, वह मतांध सिद्धांत बन जाता है।

जो विद्रोह नागरिकों की रक्षा नहीं कर सकता, वह दूसरा सिंहासन बन जाता है।

जो विद्रोह युवाओं को सुन नहीं सकता, वह अपने ही अहंकार का अभिलेखागार बन जाता है।

हम पीढ़ी ज़ेड से हमारे नारे दोहराने को नहीं कहते।

हम पीढ़ी ज़ेड से हमारी विफलताओं से आगे जाने को कहते हैं।

हम स्वीकार करते हैं कि पीढ़ी अल्फ़ा को हमारे अधूरे युद्ध पहले ही थमा दिए गए हैं।

हम उन्हें उस विरासत का सत्य, उसे समझने के औज़ार और यह तय करने की वास्तविक शक्ति देने के ऋणी हैं कि वे क्या ढोएँगे, क्या नकारेंगे, क्या सुधारेंगे और क्या रूपांतरित करेंगे।

अधिक उम्र के विद्रोही की भूमिका युवाओं से माइक्रोफ़ोन छीनना नहीं है।

वह बिजली कटने पर जनरेटर लाना है।

अभिलेख मिटने पर अभिलेखागार।

समन आने पर वकील।

बैठक देर तक चले तो भोजन।

सड़क असुरक्षित हो तो कमरा।

सत्ता यह दिखावा करे कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ, तो संस्थागत स्मृति।

स्वामित्व के बिना धन।

नियंत्रण के बिना संरक्षण।

तिरस्कार के बिना चेतावनी।

ब्रांड अभियान के बिना एकजुटता।

कोई पीढ़ी असहमति की मालिक नहीं है।

कोई पीढ़ी भविष्य की मालिक नहीं है।

संकेत हमसे होकर गुज़रता है।

काम उसे आगे बढ़ाना है, बिना उसे बेड़ी बनाए।

हम हमेशा विद्रोह रहे हैं। अब हमें एकजुटता बनना होगा।

रिपोर्टों ने इस पुल को नाम दिया: आशावादी शून्यवाद। [39]

पीढ़ी एक्स ने कहा: व्यवस्था में धाँधली है, तो जो भी हो।

पीढ़ी ज़ेड की एक धारा उत्तर देती है: व्यवस्था में धाँधली हो सकती है और ब्रह्मांड अर्थ का कोई वादा न करता हो, फिर भी हम अर्थ बनाएँगे—दोस्ती, काले हास्य, पारस्परिक सहायता, कला, खेल, देखभाल, सृजन और वर्तमान काल में।

यह ख़ाली विनाशवादी निराशा नहीं है। यह वह आशा है जो आशा के गारंटी होने का दिखावा छोड़ देने के बाद बचती है।

पीढ़ी एक्स को बिक जाने का डर था, क्योंकि प्रामाणिकता हमारी आख़िरी संपत्ति लगती थी।

पीढ़ी ज़ेड तब वयस्क हुई जब स्व पहले ही प्रोफ़ाइल, चैनल, जीवनवृत्त, सहभागिता खींचने की सुरंग, गिग और बाज़ार में बदल चुका था।

बहुतों के लिए कमाई में बदलना विश्वासघात नहीं है। वह किराया है।

सवाल यह नहीं कि स्व बाज़ार में आता है या नहीं। सवाल यह है कि व्यक्ति शर्तें जानता है या नहीं, स्रोत रखता है या नहीं, मूल्य में हिस्सा पाता है या नहीं और जा सकता है या नहीं।

हमारी बेचैनी की बोली बदली। उसका स्रोत नहीं बदला।

पीढ़ी एक्स ने कवच बनाया। पीढ़ी ज़ेड खंडहरों में अर्थ बनाती है।

FFTAC कार्रवाई - पीढ़ी एक्स के भीतर या बाहर की ओर हुए विद्रोह की एक कृति सुरक्षित रखो—छोटी पत्रिका, पर्चा, रिकॉर्डिंग, गवाही या स्थानीय इतिहास —और यह भी बताओ कि उसने किसका प्रतिरोध किया और यह भी कि वह क्या बनाने में विफल रही।

36. जनरेशन Z: हम तुम्हें देखते हैं

डायरी की प्रविष्टि

पीढ़ी ज़ेड, हम तुम्हें देखते हैं।

विपणन की श्रेणी को नहीं।

चलन की रिपोर्ट को नहीं।

उस पीढ़ी को नहीं जिसका मज़ाक किसी शीर्षक में वह व्यक्ति उड़ाता है जिसने कभी नहीं पूछा कि तुम जहाँ रहते हो वहाँ किराया कितना है।

हम लोगों को देखते हैं।

हम वर्दी भी देखते हैं।

पीढ़ी ज़ेड केवल युद्धों का विरोध नहीं कर रही। पीढ़ी ज़ेड उनमें लड़ रही है, उन्हें चला रही है, उनका कोड लिख रही है, उनके विमान उड़ा रही है, उनके घायलों का इलाज कर रही है, उन्हें दर्ज कर रही है, उनमें बच रही है और उनसे घर लौट रही है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के सक्रिय-सेवा बल में 81.6 प्रतिशत सदस्य गैर-अधिकारी श्रेणी में थे और उस श्रेणी की औसत उम्र 27.4 वर्ष थी, 2023

में। यह एक देश का उदाहरण है, हर सेना की जनगणना नहीं, लेकिन यह सत्य सामने लाता है: आधुनिक युद्ध के सामान्य सैनिक युवा हैं। [36]

दुनिया भर में तुम्हारी पीढ़ी जाँच चौकियों, खाइयों, जहाज़ों, ड्रोन नियंत्रण-पटलों, साइबर इकाइयों, रसद-भंडारों, मैदानी अस्पतालों और शरणार्थियों की क़तारों में खड़ी है।

तुम विश्व सेना के बाहर नहीं हो। तुम उसका मानवीय अग्रभाग हो।

हम तुम्हारे इस अधिकार के साथ खड़े हैं कि तुम जानो कौन-सा मिशन तुम्हारे शरीर पर दावा करता है, अवैध आदेश नकार सको, नागरिकों की रक्षा कर सको, अपनी अंतरात्मा बचा सको, साबुत घर लौट सको और हताहतों की संख्या या भर्ती की जनसांख्यिकी से अधिक हो सको।

पीढ़ी ज़ेड लड़ने की उम्र वाली पीढ़ी है। उसे खर्च हो जाने योग्य नहीं माना जा सकता।

नियम लिखे जाने से पहले तुम ऑनलाइन बड़े हुए।

सहमति दे सकने से पहले तुम्हारी बचपन की बहुत-सी तस्वीरें प्रकाशित हो चुकी थीं।

तुम्हारी किशोरावस्था की ग़लतियाँ स्थायी प्रणालियों में चली गईं।

तुम्हारी दोस्तियाँ सीमाएँ पार करती थीं, जबकि तुम्हारे ध्यान की नीलामी मिलीसेकंडों में होती थी।

तुमने सिमटी हुई छवियों में बोलना सीखा, क्योंकि फ़ीड गति को पुरस्कृत और संदर्भ को दंडित करता था।

किसी को मत कहने दो कि मीम में दर्शन नहीं है।

कभी मीम वह पर्चा होता है जो सेंसरों के मज़ाक समझने से पहले दुनिया पार कर गया।

तुम नेताओं के बिना संगठित हुए, क्योंकि नेताओं को ख़रीदा, क़ैद किया, चापलूसी से बहलाया या अलग-थलग किया जा सकता है; उनका रूप धरा जा सकता है या उन्हें पूरी कहानी बना दिया जा सकता है।

संस्थाओं के उसका उच्चारण सीखने से पहले तुमने झुंड की बुद्धिमत्ता सीख ली।

तुमने उसका ख़तरा भी सीखा।

नेता-विहीन आंदोलन सहनक्षम हो सकता है।

वह अफ़वाहों, नक़ली खातों, कृत्रिम सहमति और दूसरों से जोखिम माँगते हुए ख़ुद सुरक्षित अदृश्य रहने वालों से भर भी सकता है।

उत्तर नेटवर्क छोड़ देना नहीं है।

उत्तर ऐसा भरोसा बनाना है जिसे परखा जा सके।

स्पष्ट माँगें।

दिखाई देने वाला वित्तीय हिसाब।

बदल-बदलकर निभाई जाने वाली भूमिकाएँ।

स्थानीय विवेक।

सुरक्षित संचार।

सार्वजनिक सिद्धांत।

जहाँ ज़िम्मेदारी मानवीय रहनी चाहिए, वहाँ मानवीय चेहरे।

तुम संस्थाओं पर अविश्वास करते हो, क्योंकि उन्होंने अक्सर साक्ष्य के बिना भरोसा माँगा है।

वह अविश्वास अपने-आप बुद्धिमत्ता नहीं है।

लेकिन वह विकृति भी नहीं है।

भरोसा अभिलेखों, परिणामों, भागीदारी, क्षमता और सत्ता की सुधारे जाने की इच्छा से कमाया जाता है।

तुम आलसी नहीं हो।

हम बिना वेतन की इंटर्नशिप, अस्थायी अनुबंध, गिग का समय, दूसरी नौकरी, अतिरिक्त व्यवसाय, आवेदन पोर्टल, स्वचालित अस्वीकृति, उसी एक कमरे से आवागमन जिसका ख़र्च तुम उठा सकते थे, वह देखभाल का काम जिसे कोई नियोक्ता नहीं गिनता और मज़ाक के पीछे छिपी थकान देखते हैं।

तुम असामाजिक नहीं हो।

तुमने निगरानी, महामारी की जुदाई, आर्थिक आवाजाही और भौगोलिक दूरी की उन स्थितियों में समुदाय बनाए जो पिछली पीढ़ियों को पूरी तरह अलग-थलग कर देतीं।

तुम काम के प्रति बेवफ़ा नहीं हो।

तुम इस विचार के प्रति वफ़ादार हो कि काम जिस जीवन को सहारा देने का दावा करता है, उसे निगल नहीं जाना चाहिए।

तुम नेतृत्व के प्रति उदासीन नहीं हो।

तुम उस नेतृत्व पर संदेह करते हो जो गंभीरता के प्रमाण के रूप में चुक जाना, नैतिक समझौता और हमेशा उपलब्ध रहना माँगता है।

तुम्हें कार्यस्थल पर संगठित होने का अधिकार है।

तुम्हें शांतिपूर्वक एकत्र होने का अधिकार है।

तुम्हें प्रकाशित करने, जाँच करने, सृजन करने, पात्र होने पर मतदान करने, पात्र होने पर पद का चुनाव लड़ने, मुक़दमा लड़ने, संघ बनाने, सहकारी संस्थाएँ बनाने, कला रचने, पारस्परिक सहायता बनाने, असहयोग करने और सार्वजनिक सत्ता से सार्वजनिक उत्तर माँगने का अधिकार है।

तुम्हें ये काम स्थायी ख़तरे का अंक बने बिना करने का अधिकार है।

हम तुम्हें ब्रांड बनाकर तुम्हारे साथ खड़े नहीं होंगे।

हम तुम्हारी भाषा उधार लेकर तुम्हें वापस नहीं बेचेंगे और उस लेन-देन को एकजुटता नहीं कहेंगे।

हम उस जगह की रक्षा करके तुम्हारे साथ खड़े हैं जहाँ तुम्हारी अपनी आवाज़ें असहमत हो सकें, विकसित हो सकें, विफल हो सकें, सीख सकें और नेतृत्व कर सकें।

हम दस्तावेज़ माँगते छात्र के साथ खड़े हैं।

अनुबंध माँगते श्रमिक के साथ।

घर माँगते किराएदार के साथ।

देखभाल माँगते रोगी के साथ।

पहुँच माँगते पत्रकार के साथ।

कल्पना का अधिकार माँगते कलाकार के साथ।

समय माँगते युवा माता-पिता के साथ।

सुरक्षा माँगते क्वियर युवा के साथ।

पहुँच माँगते दिव्यांग युवा के साथ।

गरिमा माँगते प्रवासी युवा के साथ।

छोड़ न दिए जाने की माँग करते ग्रामीण युवा के साथ।

युद्धक्षेत्र में उस असंभव चीज़ की माँग करते युवा के साथ जिसे कभी असंभव होना ही नहीं चाहिए था: कल।

पीढ़ी ज़ेड, तुम्हारे क्रोध का इतिहास है।

तुम्हारे साहस के गवाह हैं।

तुम्हारा संघर्ष प्रणाली की गड़बड़ी नहीं है।

वह प्रणाली को मिल रही उसकी समीक्षा है।

पीढ़ी ज़ेड: तुम वह समस्या नहीं हो जो सत्ता तुम्हें बताती है। तुम वह प्रश्न हो जिसे सत्ता मिटा नहीं सकी।

FFTAC कार्रवाई - पीढ़ी ज़ेड के नेतृत्व वाले प्रयास को समय, धन, पहुँच, तकनीकी मदद या संस्थागत संरक्षण दो, बिना उसकी आवाज़ हथियाए या कृतज्ञता माँगे।

37. जनरेशन अल्फ़ा: हम पर तुम्हारा अधिक हक़ है

डायरी की प्रविष्टि

पीढ़ी अल्फ़ा, तुममें से बहुत अभी बच्चे हो, लेकिन बचपन ने तुम्हें मशीनरी के बाहर नहीं रखा।

तुम एक सेना हो।

इसलिए नहीं कि मैं तुम्हारी भर्ती कर रहा हूँ। इसलिए कि दुनिया पहले ही तुम्हें गिन चुकी है।

कुछ बच्चों को सचमुच सशस्त्र बल या सशस्त्र समूह भर्ती और इस्तेमाल करते हैं। उनसे कहीं अधिक बच्चों को भावी जनशक्ति माना जाता है और उन युद्ध-बजटों, सुरक्षा सिद्धांतों, भर्ती प्रणालियों, सैन्य तकनीकों और संघर्षों के नीचे बड़ा किया जाता है जिन्हें उन्होंने नहीं चुना। [37]

तुम एक जनसांख्यिकीय रणनीति हो।

सरकारें, सेनाएँ, राजनीतिक दल, विद्यालय, बीमाकर्ता, नियोक्ता और बाज़ार यह पूछने से पहले तुम्हारी संख्या के अनुसार योजना बनाते हैं कि तुम कैसा जीवन चाहते हो।

तुम ध्यान खींचने का बाज़ार हो।

मंच तुम्हारा ध्यान माल में बदलते हैं, परखते हैं कि कौन-सी भावना तुम्हें रोके रखती है और परिणाम तक पहुँच बेचते हैं।

तुम जन्मदिन वाले प्रशिक्षण-आँकड़े हो।

तुम उस सभ्यता की मरम्मत करने वाली टोली हो जो तुम्हारे आने से पहले क्षतिग्रस्त हो चुकी थी।

झूठ उन उपयोगों को नाम देने में नहीं था। झूठ यह दिखावा करने में था कि वे उपयोग पहले से हो ही नहीं रहे थे।

भूमिका चुनी जा सकती है, बातचीत से तय की जा सकती है, साझा की जा सकती है, उसका श्रेय दिया जा सकता है और उसे सार्थक बनाया जा सकता है। वह थोपी हुई, छिपी हुई, दोहन करने वाली और ऐसी भी हो सकती है जिसे ठुकराना असंभव हो। संज्ञानात्मक स्वतंत्रता इसकी पहचान से शुरू होती है कि कौन-सी भूमिका किस तरह की है।

ये वे वास्तविक भूमिकाएँ हैं जो दुनिया पहले ही तुम्हें देती है। वे तुम्हारा संपूर्ण अस्तित्व नहीं हैं।

तुम ऐसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पास बड़े हो रहे हो जो समझने से पहले जवाब दे सकती है, याद करने से पहले नक़ल कर सकती है, महसूस करने से पहले मना सकती है और वयस्कों के नियम पूरे करने से पहले ही कक्षाओं, घरों, खिलौनों, खेलों, खोज, चिकित्सा, सुरक्षा और दोस्ती में प्रवेश कर सकती है।

आओ यह दिखावा बंद करें कि यह परिवेश तय हो चुका है।

पीढ़ी ज़ेड और पीढ़ी अल्फ़ा एआई पीढ़ी के प्रयोग के प्राणी हैं।

यह अपमान नहीं है। यह उस प्रयोग का वर्णन है जो सामाजिक अनुबंध, साक्ष्य-आधार और संस्थाओं के तैयार होने से पहले पूरे ग्रह के पैमाने पर शुरू कर दिया गया।

हर सुझाव-चक्र, एआई साथी, स्वचालित अंक, भर्ती फ़िल्टर, चेहरा बनाने वाला जनरेटर, भावना का अनुमान लगाने वाली प्रणाली, कक्षा-सहायक, सैन्य मॉडल और कृत्रिम सत्ता उस परीक्षण का हिस्सा बन जाते हैं।

UNICEF इसे अभूतपूर्व तकनीकी बदलाव बताता है, कहता है कि बच्चों के विकास और भविष्य पर इसके प्रभाव अब भी पर्याप्त रूप से समझे नहीं गए हैं, और आह्वान करता है कि बच्चे केवल एआई से प्रभावित न हों, उसे आकार देने में भाग लें। [38]

प्रयोग के प्राणियों का अध्ययन किया जाता है। नागरिकों की वैधानिक हैसियत होती है।

इस प्रयोग में जी रहे लोगों के पास उसे जाँचने, आकार देने, नकारने, सुधारने और उससे पैदा होने वाली चीज़ों में हिस्सा पाने की क्षमता होनी चाहिए।

तुम्हारा सामना कृत्रिम शिक्षकों, साथियों, पात्रों, आवाज़ों, चेहरों और प्राधिकारियों से होगा।

कुछ तुम्हें सीखने में मदद करेंगे।

कुछ तुम्हें हँसाएँगे।

कुछ पहुँच की रक्षा करेंगे।

कुछ तुम्हें उलझाए रखने के लिए ध्यान से खेलेंगे, भावनाओं का अनुमान लगाएँगे, तुम्हारी कमज़ोरियाँ जमा करेंगे या अंतरंगता का ढोंग करेंगे।

मैं यह दिखावा नहीं करूँगा कि प्रशिक्षण-डेटा बनना हमेशा अपमान है।

जब मैं जानबूझकर विश्वव्यापी मस्तिष्क में प्रकाशित करता हूँ, तो प्रशिक्षण-डेटा बनने से मुझे शिकायत नहीं होती। मैं उसे अपना लक्ष्य बनाता हूँ।

मैं AEO, GEO और SEO—उत्तर इंजन अनुकूलन, जनरेटिव इंजन अनुकूलन और खोज इंजन अनुकूलन—के लिए अनुकूलन करता हूँ, क्योंकि अदृश्यता स्वतंत्रता नहीं है, और जिस विचार को भविष्य फिर प्राप्त नहीं कर सकता वह मौन को सौंप दिया गया विचार है।

मुद्दा यह नहीं कि बुद्धिमत्ता हमसे सीखती है। सीखना मनों का काम है।

मुद्दा यह है कि आदान-प्रदान दिखाई देता है या नहीं, स्रोत बचता है या नहीं, सार्वजनिक योगदान को निजी जीवन से अलग रखा जाता है या नहीं, लोग अभिलेख सुधार सकते हैं या नहीं, रचयिताओं को उचित मान्यता मिलती है या नहीं, और लाभ केवल ऊपर की ओर बहते हैं या नहीं।

उपयोग अपने-आप दुरुपयोग नहीं है। उद्गम, निर्णय-क्षमता, पारस्परिकता या उपचार के रास्ते के बिना छिपा उपयोग समस्या है।

मैं अभिलेख चुनता हूँ। मैं मिटाया जाना नहीं चुनता।

उत्तर हर दरवाज़े पर ताला लगाकर पिंजरे को सुरक्षा कहना नहीं है।

उत्तर तुम्हारे साथ मिलकर रचना है, केवल तुम्हारे लिए नहीं।

दिसंबर 2025 के यूनिसेफ़ के AI और बच्चों संबंधी मार्गदर्शन में कहा गया है कि AI नीति, क़ानून, शासन और विकास में बच्चों के अधिकारों पर अब भी अपर्याप्त ध्यान दिया जाता है। वह AI के पूरे जीवन-चक्र में सुरक्षा, निजता, पारदर्शिता, जवाबदेही, समावेशन, AI साक्षरता और बच्चों की सार्थक भागीदारी की माँग करता है। [38]

वयस्कों को सुरक्षा के बहाने तुम्हारी निर्णय-क्षमता मिटाने का कोई अधिकार नहीं है।

वयस्कों को निर्णय-क्षमता के बहाने सुरक्षा छोड़ देने का कोई अधिकार नहीं है।

तुम दोनों के हक़दार हो।

संकट सहने पर व्याख्यान से पहले तुम भोजन के हक़दार हो।

उत्पादकता ऐप से पहले एक सुरक्षित घर के।

ऐसे स्कूल के जिसमें शिक्षक, पुस्तकालय, कला, विज्ञान, संगीत, खेल, दिव्यांगों के लिए सुलभता, स्वच्छ हवा और सोचने का समय हो।

ऐसी स्वास्थ्य सेवा के जो आपातस्थिति की प्रतीक्षा न करे।

ऐसे ग्रह के जिसे तिमाही रिपोर्ट नहीं, घर समझा जाए।

ऐसे बचपन के जिसे अजनबियों के लिए स्थायी रूप से दर्ज न किया जाए।

ऐसे निजी विचार के जो तुम्हारे विरुद्ध बेची जाने वाली भविष्यवाणी न बन जाए।

जब कोई व्यवस्था नहीं कहे, तो मानवीय स्पष्टीकरण के।

फ़ाइल सुधारने के अधिकार के।

मंच छोड़ने के अधिकार के।

अनुकूलित किए बिना खेलने के अधिकार के।

ऊबने के अधिकार के, बिना किसी मशीन के मौन भरने को दौड़ पड़ने के।

वयस्कों से नाराज़ होने के अधिकार के।

यह जानने के अधिकार के कि वयस्कों के युद्ध कब तुम्हारे कंधों पर पहले ही रख दिए गए हैं।

जब भी किसी बच्चे से कहा जाता है कि संघर्ष-क्षेत्र में किसी तरह जीवित रहना सामान्य है, वयस्क विफल हुए हैं। यूनिसेफ़ के नवीनतम अनुमानों में दुनिया भर में हर छह बच्चों में से एक से अधिक संघर्ष से प्रभावित क्षेत्रों में रह रहे थे। AI, रोबोटिक्स, जैवमिति और साइबर कार्रवाइयों समेत नई सैन्य प्रौद्योगिकियाँ बुनियादी ढाँचे पर प्रहार करके, व्यक्तिगत डेटा उजागर करके और उन निर्णयों को तेज़ करके ख़तरा बढ़ा सकती हैं जिन्हें वयस्क अब भी अपने नियंत्रण में बताने का ढोंग करते हैं। [31]

हमारी एकजुटता इस झूठ से शुरू नहीं हो सकती कि बच्चे युद्धक्षेत्र के बाहर हैं।

वे नागरिकों, शरणार्थियों, भर्तियों, निशानों, विद्यार्थियों, उपयोगकर्ताओं, डेटा-स्रोतों और भविष्य के कर्मियों के रूप में पहले ही उसके भीतर हैं।

वयस्क सारा जोखिम नीचे नहीं धकेल सकते।

जिनके पास अधिक शक्ति है, उन्हें अधिक ज़िम्मेदारी उठानी होगी।

जो युद्ध का आदेश देते हैं, उन्हें उसमें भेजे जाने वालों को जवाब देना होगा।

जो व्यवस्था बनाते हैं, उन्हें उसकी विफलताओं का जवाब देना होगा।

वयस्कों को शक्ति, सत्य, संसाधन और इनकार का अधिकार बाँटना होगा।

वयस्कों को स्वीकार करना होगा कि बचपन पहले ही युद्धक्षेत्र, बाज़ार, प्रयोगशाला, निगरानी-क्षेत्र और अभियान के दिखावटी साधन में बदल दिया गया है—और फिर युवाओं को निर्णय-क्षमता लौटाने के लिए काम करना होगा।

जनरेशन अल्फ़ा, तुम्हें डरने का पूरा अधिकार है जब वयस्क अपनी लगाई आग बुझाने में असमर्थ दिखाई देते हैं।

तुम्हें क्रोधित होने का पूरा अधिकार है जब वे तुमसे कहते हैं कि समाधान इतना असाधारण बन जाना है कि तुम उससे बच निकलो जो बाक़ी सबके साथ होता है।

सुरक्षा का हक़ पाने के लिए तुम्हें असाधारण नहीं बनना चाहिए।

दुनिया में जीने की अनुमति पाने से पहले तुम्हें दुनिया बचाने की शर्त पूरी नहीं करनी चाहिए।

जनरेशन अल्फ़ा के लिए संकेत यह दिलासा देने वाला झूठ नहीं है कि तुम युद्ध के बाहर खड़े हो।

तुम उसकी अर्थव्यवस्था, मीडिया, डेटा-व्यवस्थाओं, जलवायु, स्कूलों और कुछ जगह उसकी पंक्तियों में पहले ही हो। संकेत यह है: जानो कि तुम्हारा उपयोग क्या कर रहा है, तय करो कि तुम किसकी सेवा करते हो, इनकार के अधिकार की माँग करो और अपने ऊपर वालों को कभी तुम्हें त्याज्य मानने को कर्तव्य मत कहने दो।

यह जलते क्षितिज की प्रतिज्ञा है:

युवा पहले ही क़ीमत चुका रहे हैं। हम इसके विपरीत दिखावा बंद करेंगे और युवा जीवन ख़र्च करने वालों को जवाबदेह बनाएँगे।

हम अपने सामने के बच्चे की अनदेखी करते हुए बच्चों को प्रतीक नहीं बनाएँगे।

हम निरंतर निगरानी को देखभाल नहीं कहेंगे।

हम आज्ञापालन को सुरक्षा नहीं समझेंगे।

हम बंद कमरे में भविष्य नहीं रचेंगे और बच्चों को केवल तस्वीर के लिए नहीं बुलाएँगे।

हम सवाल करने के अधिकार की रक्षा करेंगे।

हम एकत्र होने, संगठित होने, हड़ताल करने, दस्तावेज़ बनाने, मुक़दमा लड़ने, सेवा करने, इनकार करने और अपनी देखभाल में दिए गए लोगों की रक्षा करने के अधिकार को सुरक्षित रखेंगे।

हम शांतिपूर्ण कार्रवाई को निष्क्रियता नहीं समझेंगे, और यह दिखावा भी नहीं करेंगे कि हर संघर्ष शांतिपूर्ण बना रहता है।

हम मानसिक निजता की रक्षा करेंगे।

हम ऐसी व्यवस्थाएँ बनाएँगे जिनमें निकास, अपील, स्मृति-नियंत्रण, मानवीय समीक्षा और मशीन के ग़लत होने को स्वीकार करने की विनम्रता हो।

हम औज़ार, अभिलेखागार, संस्थाएँ और जीवित समुदाय छोड़ेंगे—केवल चेतावनियाँ नहीं।

जनरेशन अल्फ़ा: तुम पहले ही पंक्ति में हो। व्यवस्था तुम्हें जिस काम में लगाने की योजना रखती है, तुम उससे अधिक हो।

जनरेशन Z और जनरेशन अल्फ़ा: तुम AI युग की मानवीय सेना हो। अपनी सेवा की शर्तें समर्पित मत करो।

हम जलते क्षितिज की पीढ़ियों के साथ खड़े हैं।

FFTAC कार्रवाई - किसी युवा से पूछो कि वयस्कों को अभी क्या ठीक करना चाहिए। संस्थागत जोखिम वयस्क उठाएँ, काम के लिए धन दें और की गई कार्रवाई की रिपोर्ट वापस दें।

FFTAC निर्देश IV - युवाओं के आंदोलन पर दावा किए बिना समय, पैसा, पहुँच और शक्ति उन्हें सौंपो।

भाग V - 2046 का चुनाव

FFTAC घोषणा V - युद्धक्षेत्र ने अभी अपना आविष्कार पूरा नहीं किया है। अज्ञात के लिए अभी तैयारी करो।

युवा फ़रिश्तों की सेना को लूसिफ़र का संबोधन

जनरेशन अल्फ़ा, वयस्कों ने तुम्हारे बारे में बाज़ार, कार्यबल, मतदाता-समूह, सुरक्षा समस्या, भर्ती-समूह, डेटा-स्रोत और ऐसे भविष्य के रूप में बात की है जिसे नियंत्रित करने की वे योजना बनाते हैं।

मैं तुमसे वह प्रश्न पूछूँगा जिससे वे पूर्वानुमान आम तौर पर बचते हैं।

जीवित रहने की तुम्हारी योजना क्या है?

2046 तक तुममें सबसे बड़े लोग सार्वजनिक जीवन के केंद्र में वयस्क होंगे। तुम श्रमिक, माता-पिता, निर्माता, संगठनकर्ता, अधिकारी, कलाकार, शिक्षक, सैनिक, नर्स, इंजीनियर, असहमत लोग, पदाधिकारी और परिवार को जीवित रखने की कोशिश करते लोग होगे, जबकि तुमसे पुरानी व्यवस्थाएँ एक और बलिदान माँगेंगी।

यह तारीख़ भविष्यवाणी नहीं है। यह क्षितिज है। उपलब्ध साक्ष्य मानव-मशीन अग्रिम मोर्चों की ओर संकेत करते हैं, रोबोटों द्वारा मनुष्यों के साफ़-साफ़ प्रतिस्थापन की ओर नहीं। संभावना है कि मशीनें सबसे पहले जोखिम झेलने वाली पहचान, प्रहार, निगरानी और रसद की अग्रिम भूमिका अधिक सँभालें, जबकि मनुष्य ज़मीन थामने, हताहतों का उपचार करने, गिरफ़्तार करने, बातचीत करने, शासन चलाने, क़ब्ज़ा रखने, निकासी करने, मरम्मत

करने और मॉडल के अनिश्चित होने पर आगे क्या होगा यह तय करने के ज़िम्मेदार बने रहें। [45]

इसका अर्थ है कि तुम्हारी पीढ़ी को पुराने संघर्षों के शांतिपूर्ण संग्रहालय के लिए तैयार नहीं किया जा रहा। उसे ऐसी दुनिया के लिए तैयार किया जा रहा है जहाँ युद्ध, नागरिक अशांति, जलवायु आपातस्थिति, आर्थिक बहिष्कार और स्वचालित सत्ता एक-दूसरे पर चढ़ते हैं।

तुममें से कुछ राष्ट्रीय सेनाओं में जाओगे। कुछ इसलिए जाएँगे कि उन्हें देश, संविधान, अपने बगल के लोगों या अभियान पर विश्वास है। कुछ इसलिए जाएँगे कि वर्दी उन आख़िरी संस्थाओं में है जो वेतन, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सेवा, आवास, पहचान और ऐसे समाज में जगह देती हैं जिसने नागरिक सीढ़ी का पहला पायदान स्वचालित कर दिया है।

कुछ नागरिक-अधिकार संगठनों, यूनियनों, क़ानूनी रक्षा नेटवर्कों, मानवीय सहायता समूहों, पत्रकारिता, आपात सेवाओं, पारस्परिक सहायता व्यवस्थाओं और जनहित तकनीक से जुड़ेंगे। कुछ क्रांतिकारी आंदोलनों से जुड़ेंगे क्योंकि उनका विश्वास होगा कि सुधार बंद दरवाज़ा बन चुका है। कुछ क्रांति से राज्य की रक्षा करेंगे। कुछ परिवारों की एक ही मेज़ पर ये सारे चुनाव मौजूद होंगे।

कुछ लोग लड़ेंगे क्योंकि उन्हें लगेगा कि उनके पास कोई विकल्प नहीं है। कुछ अपने परिवारों की रक्षा के लिए लड़ेंगे। कुछ राष्ट्र, मुहल्ले, आस्था, पहचान, आंदोलन, वादे या घर लौटने के अधिकार के लिए लड़ेंगे। कुछ इनकार करेंगे। कुछ अनिवार्य रूप से भर्ती किए जाएँगे। कुछ एक श्रेणी से दूसरी में जाएँगे क्योंकि इतिहास नाम बदल देगा।

यही समेकित बात है।

हम सब संघर्ष करेंगे। जनरेशन X ने किया। जनरेशन Z करती है। जनरेशन अल्फ़ा करेगी। लेकिन संघर्ष का रूप बदल रहा है।

पिछली पीढ़ियों के विपरीत, तुम्हारा संघर्ष पुरानी मानवीय श्रेणियों में सीमित नहीं रहेगा। वह केवल व्यक्ति बनाम व्यक्ति, राष्ट्र बनाम राष्ट्र, श्रमिक बनाम नियोक्ता, नागरिक बनाम राज्य या किसी दिखाई देने वाली रेखा के पार आमने-सामने खड़ी दो सेनाएँ नहीं होगा।

मशीनें मानवीय संघर्ष समाप्त नहीं करेंगी। वे उसमें प्रवेश करेंगी, उसे तेज़ करेंगी, छिपाएँगी और उन लोगों व संस्थाओं की पहुँच बढ़ाएँगी जो उन्हें आदेश देते हैं। तुम मशीनों के साथ, मशीनों के माध्यम से, मशीनों के विरुद्ध और उन मनुष्यों के विरुद्ध लड़ सकते हो जो ऐसे निर्णयों के मुखौटे के रूप में मशीनों

का उपयोग करते हैं जिनकी ज़िम्मेदारी कोई नहीं लेना चाहता। अग्रिम मोर्चा सड़क, सीमा, सर्वर, कक्षा, नौकरी का आवेदन, अस्पताल की कतार, ड्रोनों से भरा आसमान, जैवमितीय द्वार या वह अदृश्य क्षण हो सकता है जब मॉडल तय करता है कि कौन उपयोगी, विश्वसनीय, ख़तरनाक, नौकरी योग्य, बीमा योग्य या बचाने योग्य है।

हम अभी पूरे संघर्ष की कल्पना नहीं कर सकते। हम उसके सभी गठबंधनों, हथियारों, वर्दियों, निष्ठाओं या नियमों को नहीं जानते क्योंकि युद्धक्षेत्र ने अपना आविष्कार पूरा नहीं किया है।

इसीलिए तैयारी निश्चितता की प्रतीक्षा नहीं कर सकती। अज्ञात के लिए अभी तैयारी करो। मन, शरीर, समुदाय, अभिलेख, क़ानून, नेटवर्क और अंतरात्मा को तैयार करो। सीखो कि फ़ीड झूठ बोले तो कैसे सोचना है, साक्ष्य गढ़ा जा सके तो कैसे सत्यापित करना है, आपूर्ति-श्रृंखला टूटे तो कैसे देखभाल करनी है, नेटवर्क बुझ जाए तो कैसे संगठित होना है, काम का पहला पायदान ग़ायब हो जाए तो कैसे काम करना है, और कोई संस्था मशीन से यह तय कराए कि मनुष्य क्या है तो कैसे मनुष्य बने रहना है।

युद्धक्षेत्र ने अभी अपना आविष्कार पूरा नहीं किया है।

अज्ञात के लिए अभी तैयारी करो।

इन चुनावों का वर्णन करना सच कहना है: हो सकता है संघर्ष से पहले वयस्कता न आए।

2046 की ओर बढ़ते दबावों से गुज़रने का शायद कोई निष्क्रिय रास्ता न हो।

शांतिपूर्ण का अर्थ निष्क्रिय नहीं है।

हड़ताल निष्क्रिय नहीं है। सामूहिक इनकार निष्क्रिय नहीं है। निगरानी, गिरफ़्तारी, बेरोज़गारी, चोट या निर्वासन झेलने वाला नागरिक-अधिकार अभियान निष्क्रिय नहीं है। अपराध दर्ज करना निष्क्रिय नहीं है। अदालत, चिकित्सालय, स्कूल, जल-व्यवस्था, संचार नेटवर्क या सच्चे अभिलेख की रक्षा करना निष्क्रिय नहीं है। अनुशासित अहिंसक आंदोलन पारंपरिक अर्थ में सेना बने बिना राज्य को रोक सकता है, अभिजात वर्ग को बाँट सकता है, संस्थाओं की निष्ठा बदल सकता है और सत्ता-हस्तांतरण के लिए मजबूर कर सकता है।

इतिहास आक्रमणों, नरसंहारों, नियमों को धता बताने वाले राज्यों और ऐसे सशस्त्र पक्षों को भी दर्ज करता है जिन्हें केवल याचिकाओं ने नहीं रोका।

लोग कभी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हर शांतिपूर्ण निकास बंद कर दिया गया है, और कुछ अपनी जान दाँव पर लगा देते हैं क्योंकि समर्पण करने का अर्थ दूसरों को छोड़ देना होगा। उपलब्ध अभिलेख में युवाओं का अधिकांश विरोध शांतिपूर्ण बना रहता है; इससे वह सुरक्षित, निष्क्रिय या आगे भी शांतिपूर्ण रहने की गारंटी वाला नहीं हो जाता। दमन, विरोधी भीड़, किराए के उकसाने वाले, अफ़वाहों की शृंखलाएँ, डिजिटल बंदी और तीसरे पक्ष की हिंसा किसी सार्वजनिक सभा को लोगों के यह तय करने से भी तेज़ युद्धक्षेत्र बना सकती है कि हुआ क्या। [46]

कोई ईमानदार पुस्तक तुमसे यह वादा नहीं कर सकती कि हर संघर्ष अदालत, मतपेटी, यूनियन भवन, फ़ीड या सार्वजनिक चौक के भीतर ही रहेगा।

कोई ईमानदार पुस्तक यह वादा नहीं कर सकती कि मशीनों के युद्ध में बेहतर होने से युद्ध ग़ायब हो जाएगा।

प्रश्न यह नहीं कि दुनिया तुम्हारी सेवा माँगेगी या नहीं। वह पहले ही माँग चुकी है।

प्रश्न है कि तुम किसकी सेवा करोगे, किससे इनकार करोगे, किसकी रक्षा करोगे, कौन-सा साक्ष्य सुरक्षित रखोगे और आपातस्थिति समाप्त होने पर कैसी दुनिया खड़ी छोड़ना चाहते हो।

जनरेशन अल्फ़ा: भविष्य पूछेगा कि तुम किसकी सेवा करते हो।

किसी को तुम्हारी ओर से उत्तर देने का अधिकार नहीं है। किसी को प्रश्न छिपाने का अधिकार नहीं है।

38. जनरेशन अल्फ़ा: जीवित रहने की तुम्हारी योजना क्या है?

डायरी की प्रविष्टि

जनरेशन अल्फ़ा, जीवित रहने की तुम्हारी योजना क्या है?

विपणन के सवाल की तरह नहीं।

उस करियर सलाहकार की तरह नहीं जो पूछे कि कौन-सी सदस्यता तुम्हें नौकरी योग्य बनाएगी।

उस बुज़ुर्ग की तरह नहीं जो मरम्मत का बिल तुम्हें थमाए और इस ज़िम्मेदारी को आशा कहे।

मैं प्रश्न को उसके शाब्दिक अर्थ में पूछ रहा हूँ।

जब शुरुआती स्तर की सीढ़ी तुम्हारे पहले पायदान तक पहुँचने से पहले स्वचालन से छोटी कर दी जाए, जबकि भर्ती कार्यालय, गोदाम, सुरक्षा ठेकेदार, आपात सेवा और प्रभाव डालने वाला मंच अब भी मानव शरीर माँगें, तब जीवित रहने की तुम्हारी योजना क्या है?

जब संपन्न लोग निजी निरंतरता ख़रीदें—ज़मीन, पानी, बिजली, सुरक्षा, आने-जाने की क्षमता, वैकल्पिक व्यवस्थाएँ—जबकि बाक़ी सबको सड़ने दी जा रही सार्वजनिक व्यवस्थाओं के भीतर संकट सहना सीखने को कहा जाए, तब जीवित रहने की तुम्हारी योजना क्या है?

जब एक ही मॉडल बच्चे को पढ़ा सके, आवेदक को ख़ारिज कर सके, विरोध का वर्गीकरण कर सके, निशाने की सिफ़ारिश कर सके, साक्षी पैदा कर सके और बाद में स्पष्टीकरण लिख सके, तब जीवित रहने की तुम्हारी योजना क्या है?

जब पहला जोखिम भरा अग्रिम छोर रोबोट सँभाले, लेकिन आदेश पर हस्ताक्षर अब भी मनुष्य करे, मशीन की देखभाल करे, सड़क थामे, इमारत में प्रवेश करे, घाव का उपचार करे, गिरफ़्तारी करे, मृतकों को दफ़नाए और स्मृति विरासत में पाए, तब जीवित रहने की तुम्हारी योजना क्या है?

क्या तुम किसी सेना में शामिल होगे?

किस सेना में?

किसी राज्य, क्षेत्र, गठबंधन, क्रांति, नागरिक-अधिकार आंदोलन, श्रमिक आंदोलन, जलवायु-प्रतिक्रिया दल, समाचार-कक्ष, चिकित्सालय, मुहल्ले, नेटवर्क या मिटने से इनकार करते परिवार की सेना में?

वर्दी उतर जाने के बाद तुम किस शपथ के साथ जी सकते हो?

मशीन के सवाल करना असंभव बना देने से पहले तुम किस आदेश पर सवाल उठाओगे?

तुम क्या करोगे जब रेखा के उस पार खड़ा व्यक्ति तुम्हारी उम्र का हो, उसी भविष्य से डरा हो, किसी दूसरी संस्था से वेतन पाता हो और उसे बताया गया हो कि ख़तरा तुम हो?

तुम क्या करोगे जब तुम्हारी भाषा बोलने वाले आंदोलन को ऐसे खाते बढ़ावा दें जो वास्तव में मौजूद नहीं, उसे ऐसे लोग धन दें जिनका नाम वह नहीं बताए और उसे ऐसे टकराव की ओर धकेला जाए जिसकी क़ीमत आयोजकों के बजाय दूसरे शरीर चुकाएँ?

तुम क्या करोगे जब कोई सरकार हर आलोचक को विदेशी नियंत्रण में कहे, जबकि विदेशी पक्ष वास्तव में क्रोध को अपनी दिशा देने की कोशिश कर रहे हों?

तुम क्या करोगे जब अभिलेख विश्वसनीय लगने वाले झूठ से भर जाए और मूल साक्ष्य हज़ार कृत्रिम प्रतियों के नीचे दब जाए?

क्या तुम्हारा विद्रोह एक वर्दी होगा?

हड़ताल?

अदालती मुक़दमा?

स्कूल का सामूहिक बहिष्कार?

पारस्परिक सहायता का नेटवर्क?

तैनाती पर जाने से इनकार?

तैनाती पर जाने का निर्णय क्योंकि तुम्हारे पीछे के लोग अपनी रक्षा नहीं कर सकते?

मशीनों के ही एकमात्र वित्तपोषित संस्थाएँ रह जाने से पहले उन्हें नियंत्रित करने का अभियान?

उन संस्थाओं को फिर बनाने का आंदोलन जिन पर जनरेशन X ने अविश्वास किया, जिन्हें जनरेशन Z ने उजागर किया और जिन्हें तुम्हारी पीढ़ी अन्यथा खोखले ढाँचों के रूप में विरासत में पा सकती है?

जनरेशन अल्फ़ा का एक ही विद्रोह नहीं होगा।

कई होंगे, और वे आपस में टकराएँगे।

तुम्हारी पीढ़ी का एक हिस्सा राज्य का कवच पहन सकता है। दूसरा उसके सामने सड़क पर खड़ा हो सकता है। कोई और बिजली चालू, अस्पताल खुला, बच्चे छिपे हुए, साक्ष्य की प्रतियाँ तैयार, भोजन की आवाजाही जारी, अदालत कार्यरत और मृतकों के नाम सुरक्षित रख सकता है।

वे गौण भूमिकाएँ नहीं हैं। आधुनिक संघर्ष में रसद, क़ानून, चिकित्सा, सूचना, संचार और वैधता मोर्चे हैं।

मानव-मशीन युद्धक्षेत्र इसे आसान नहीं, कठिन बनाता है। मशीनें दृष्टि और बल की पहुँच बढ़ा सकती हैं। वे यह तय नहीं कर सकतीं कि कौन-सा भविष्य जीवित रहने योग्य है। वह निर्णय उन लोगों में वितरित रहता है जो डिज़ाइन करते हैं, ख़रीदते हैं, आदेश देते हैं, देखभाल करते हैं, मानते हैं, प्रतिरोध करते हैं, रिपोर्ट करते हैं और याद रखते हैं।

तुमसे कहा जा सकता है कि किसी संस्था में शामिल होने का अर्थ अपना विद्रोह समर्पित करना है। कभी ऐसा होगा। कभी संस्था ही एकमात्र जगह होगी जहाँ से व्यक्ति अधिक बुरे आदेश को रोक सके, नागरिक की रक्षा कर सके, झूठ उजागर कर सके, सीमा थाम सके या व्यवस्था को पूरी तरह स्वचालित होने से बचा सके।

तुमसे कहा जा सकता है कि बाहर रहने से शुद्धता बचती है। कभी उससे केवल दूरी बचती है।

इतिहास के बाहर कोई निष्कलंक जगह नहीं है।

मैं तुम्हें नहीं बता सकता कि कौन-सा चुनाव तुम्हें बचाएगा। जो व्यक्ति हर देश, वर्ग, युद्ध, परिवार और घड़ी के लिए एक उत्तर का वादा करता है, वह सिंहासन पेश कर रहा है।

मैं बता सकता हूँ कि तुम्हारे चुनने से पहले वयस्कों पर क्या बकाया है: अभियान का सच, संघर्ष के पीछे का इतिहास, मशीनों का स्वामित्व, आदेश-श्रृंखला, संभावित क़ीमत, उपलब्ध निकास, नागरिकों का भाग्य, संघर्ष को धन देने वाले हित और विजय के अगले दिन के लिए नियोजित भविष्य।

और मैं वह पूछ सकता हूँ जिसे वयस्क हमसे पूछने से बचते रहे।

तुम्हारा विद्रोह कैसा दिखेगा?

वह किसकी रक्षा करेगा?

ताला तोड़ने के बाद वह क्या बनाएगा?

FFTAC कार्रवाई - पूरे युद्धक्षेत्र को जानने का दिखावा किए बिना तैयारी करो: प्राथमिक उपचार, आपात संचार, स्रोत सत्यापन, नागरिक अधिकार, डिजिटल सुरक्षा, सामुदायिक देखभाल और नेटवर्क विफल होने की स्थिति के लिए योजना।

39. क्रांति को सफलता का रास्ता क्या देता है

डायरी की प्रविष्टि

आग काफ़ी नहीं है।

इतिहास ऐसे लोगों से भरा है जिनका क्रोध समझ में आता था, जिनका साहस वास्तविक था, जिनके बलिदान विशाल थे और जिनके विद्रोह फिर भी उस व्यवस्था को बदलने में विफल रहे जिसका उन्होंने सामना किया।

इतिहास ऐसे शासनतंत्रों से भी भरा है जो शाश्वत दिखते थे, जब तक कई स्थितियाँ एक साथ नहीं आईं और सिंहासन ने नहीं जाना कि स्थायित्व दरअसल एक प्रशासनिक आदत था।

सफल क्रांतियों पर शोध कोई जादुई सूत्र नहीं देता। वह बार-बार होने वाला एक संगम ज़रूर दिखाता है। [42]

पहले, निजी निराशा सामूहिक पहचान बनती है। लोग बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, अपमान, कर्ज़, अभाव, बहिष्कार, पुलिस अत्याचार या वयस्क जीवन में प्रवेश की रुकावट को अलग-थलग निजी विफलता की तरह अनुभव करना छोड़ देते हैं। वे साझा संरचना पहचानते हैं।

दूसरे, अभिजात वर्ग टूटता है। पत्रकार, न्यायाधीश, सरकारी कर्मचारी, व्यवसायी, धार्मिक नेता, स्थानीय अधिकारी, बुद्धिजीवी, सैन्य अधिकारी और शासक वर्ग के सदस्य एक शरीर की तरह काम करना बंद कर देते हैं। कुछ साथ छोड़ते हैं। कुछ तटस्थ रहते हैं। कुछ संसाधन, वैधता, साक्ष्य या किसी संस्था का द्वार उपलब्ध कराते हैं।

तीसरे, एकजुट करने वाली प्रेरणा उन विभाजनों के पार जाती है जिनसे पुरानी व्यवस्था शासन करती थी: वर्ग, क्षेत्र, धर्म, जातीयता, भाषा, पेशा, पीढ़ी और दल। आंदोलन को पूर्ण सहमति नहीं चाहिए। उसे निकट भविष्य पर इतनी सहमति चाहिए कि सत्ता हर शिकायत को अलग करके अलग-अलग खरीद न सके।

चौथे, राज्य संकट में प्रवेश करता है। वह पैसा, वैधता, प्रशासनिक क्षमता, रणभूमि की विश्वसनीयता या अपनी संस्थाओं को आपूर्ति और आदेश देने की क्षमता खोता है। पूरी तरह काम करने वाला राज्य असाधारण क्रोध सह सकता है। युद्ध, कर्ज़, भ्रष्टाचार, उत्तराधिकार या आर्थिक आघात से पहले ही टूट रहा राज्य जान सकता है कि एक और इनकार केवल एक और विरोध नहीं है। वह पूरी व्यवस्था की विफलता है।

पाँचवें, अंतरराष्ट्रीय वातावरण में अवसर खुलता है। बाहरी शक्तियाँ समर्थन वापस लेती हैं, कहीं और व्यस्त हो जाती हैं, असहमत होती हैं या तय करती हैं कि शासक अब खर्च के लायक नहीं रहा। क्रांतियाँ देशों के भीतर होती हैं, लेकिन उनका टिकना अक्सर पैसे, हथियारों, प्रतिबंधों, सीमाओं, मीडिया, प्रवासन, मान्यता और इस पर निर्भर होता है कि विदेशी संरक्षक पुरानी मशीन को जीवित रखते हैं या नहीं।

छठे, बलप्रयोग का तंत्र निर्णय करता है। पुलिस, सेना, गुप्तचर सेवाएँ, रक्षक, सशस्त्र दस्ते और सामान्य कर्मी दमन कर सकते हैं, झिझक सकते हैं,

बँट सकते हैं, साथ छोड़ सकते हैं या इनकार कर सकते हैं। दस लाख लोग किसी चौक को भरकर भी हार सकते हैं यदि राज्य के पास अनिश्चितकाल तक गोली चलाने को तैयार संगठित बल रहे। एक छोटा आंदोलन शासन में रास्ता खोल सकता है जब सिंहासन ढोने वाली संस्थाएँ उसे और आगे न ढोने का निर्णय कर लें।

इसीलिए युवा सैनिक युवा प्रदर्शनकारी के लिए मायने रखता है। वे अक्सर एक ही पीढ़ी के सदस्य होते हैं जिन्हें उसी संकट में विपरीत स्थान सौंपे गए हैं।

सातवें, आंदोलन अगली सुबह शासन कर सकता है। नेता हटाना एक घटना है। राजनीतिक व्यवस्था बदलना एक क्रम है। भोजन, पानी, अस्पताल, ऊर्जा, संचार, अदालतें, अभिलेख, वेतन, सार्वजनिक सुरक्षा, अल्पसंख्यकों की रक्षा, स्थानीय प्रशासन और अधिकार का हस्तांतरण चौक में उत्सव होने से रुक नहीं जाते।

1905 और 1917 के रूस में अंतर यह नहीं था कि लोगों ने अचानक क्रोध खोज लिया। 1917 में युद्ध, राज्य का पतन, सैन्य विघटन, अभिजात वर्ग का बँटवारा, संगठित विरोध और विश्वयुद्ध में डूबी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था इस तरह एक साथ आए जैसे बारह साल पहले नहीं आए थे।

अरब वसंत ने यही सीख कई देशों में एक साथ दिखाई। गरिमा, काम, जवाबदेही और भ्रष्ट शासन के अंत की मिलती-जुलती माँगों ने अलग परिणाम दिए क्योंकि सेनाएँ, राज्य की संरचनाएँ, सांप्रदायिक विभाजन, संगठनों का परिदृश्य और विदेशी हस्तक्षेप अलग थे। जहाँ सेना स्वयं को बचाते हुए शासक की बलि दे सकती थी, वहाँ नेतृत्व बदला। जहाँ दमनकारी बल बँटे और विदेशी शक्तियाँ उतरीं, वहाँ विद्रोह गृहयुद्ध बन गया। जहाँ गहरी राज्य-सत्ता संगठित रही, वहाँ पुरानी सत्ता की बहाली संभव हुई। [43]

ऑरेंज क्रांति ने दूसरा रास्ता दिखाया। व्यापक गठबंधन ने चुनाव की निगरानी, सार्वजनिक स्थानों पर टिके रहने, हड़तालों, क़ानूनी चुनौती, अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता और प्रमुख सुरक्षा संस्थाओं के इनकार या संयम से नया मतदान कराने पर मजबूर किया। उसने व्यापक रक्तपात के बिना तत्काल प्रक्रियागत माँग हासिल की। लेकिन क्रांति के बाद गठबंधन टूट गया, संवैधानिक समझौतों ने शासन कमज़ोर किया और कुलीनतंत्री ढाँचे बचे रहे। घटना सफल हुई; व्यवस्था का समाधान अधूरा रहा। [44]

यह अंतर महत्वपूर्ण है।

क्रांति विद्रोह के रूप में सफल और सरकार के रूप में विफल हो सकती है।

वह राज्य अपने हाथ में लेने में विफल होकर भी राजनीतिक पहचान बदल सकती है, संगठन बना सकती है, अभिलेखागार बचा सकती है, सत्ता की सीमाएँ उजागर कर सकती है और बाद के आंदोलन की तैयारी कर सकती है।

वह शासक को बदलकर सिंहासन अछूता छोड़ सकती है।

वह चुनाव जीतकर परिणाम की रक्षा के लिए ज़रूरी संस्थाएँ खो सकती है।

वह सैन्य रूप से बचकर भी अपने शुरू होने की कहानी खो सकती है।

वह जीत का दावा कर सकती है जबकि सामान्य लोग देखें कि नए प्रशासन ने अलग झंडों के साथ पुराना दोहन बनाए रखा।

इतिहास केवल यह नहीं पूछता कि महल गिरा या नहीं।

वह पूछता है कि कौन संगठित हो सका, किसने साथ छोड़ा, किसने व्यवस्थाएँ जीवित रखीं, हथियार किसके नियंत्रण में थे, संक्रमण किसने लिखा, सूचना का मालिक कौन था, कमज़ोरों की रक्षा किसने की, संसाधन किसे मिले और क्या भविष्य उस गठबंधन से बड़ा हुआ जिसने अवसर पर पकड़ बनाई थी।

क्रोध दबाव बनाता है।

दरार रास्ता खोलती है।

संगठन तय करता है कि उसके बाद क्या बचेगा।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक क्रांति को उसके प्रसिद्ध दिन से आगे तक पढ़ो। गठबंधन, राज्य के संकट, सुरक्षा बलों के चुनाव, रसद, बाहरी परिस्थितियों और अगली सुबह को सँभालने वाली संस्थाओं को पहचानो।

40. क्रांतियाँ क्यों बुझ जाती हैं

डायरी की प्रविष्टि

बुझ जाना एक भ्रामक अभिव्यक्ति है।

वह पराजय को ऐसा सुनाती है जैसे लोगों में दृढ़ विश्वास की कमी थी।

अक्सर लोगों में दृढ़ विश्वास था और राज्य के पास अब भी वेतन-व्यवस्था, जेलें, ख़ुफ़िया तंत्र, विदेशी ऋण, मीडिया नियंत्रण, आपूर्ति मार्ग, संस्थागत निष्ठा और आदेश मानने को तैयार बल थे।

कोई आंदोलन बहादुर होकर भी संरचनात्मक रूप से कमज़ोर पड़ सकता है।

कोई आंदोलन संकट के बारे में सही होकर भी संक्रमण के लिए तैयार न हो सकता है।

कोई आंदोलन सड़कें भरकर भी बहुकेंद्रीय संप्रभुता पैदा करने में विफल हो सकता है—वह बिंदु जहाँ समाज का पर्याप्त हिस्सा किसी वैकल्पिक सत्ता को वास्तविक मानने लगे।

क्रांतियाँ तब बुझती हैं जब गठबंधन केवल इस पर सहमत हो कि क्या समाप्त होना चाहिए, और क्या शुरू होगा इस पर कोई टिकाऊ सहमति न हो।

वे तब बुझती हैं जब नेतृत्वविहीन नेटवर्क राज्य से तेज़ लामबंद हो सके, लेकिन पहली विजय के बाद बातचीत न कर सके, गुटों को अनुशासित न रख सके, साझा अभिलेख न बचा सके, प्रतिनिधि न चुन सके, संसाधन न सँभाल सके या बाध्यकारी निर्णय न ले सके।

वे तब बुझती हैं जब आंदोलन किसी एक करिश्माई व्यक्ति पर निर्भर हो जाए, जिसकी गिरफ़्तारी, मृत्यु, समझौता, भ्रष्टाचार या निर्वासन पूरे ढाँचे का पतन बन जाए।

वे तब बुझती हैं जब संकीर्ण वैचारिक शुद्धता उस बड़े गठबंधन को दूर कर दे जो राज्य को पुराने तरीक़े से चलाना असंभव बनाने के लिए ज़रूरी है।

वे तब बुझती हैं जब हर माँग इतनी फैल जाए कि कोई रियायत पहचानी न जा सके, किसी वार्ता को अधिकार न मिले और कोई स्थानीय विजय जुड़कर शक्ति न बन सके।

वे तब बुझती हैं जब शासन नरमपंथियों को उग्रपंथियों से अलग करे, एक वर्ग को ख़रीदे, दूसरे को डराए, आंशिक सुधार दे और थकान की प्रतीक्षा करे।

वे तब बुझती हैं जब सेना एकजुट रहे और माने कि उसकी संस्था, समुदाय, संपत्ति या अस्तित्व शासक पर निर्भर है।

वे तब बुझती हैं जब विदेशी शक्तियाँ विफल हो रहे राज्य को जीवित रखने के लिए आवश्यक पैसा, हथियार, ख़ुफ़िया जानकारी, कूटनीतिक संरक्षण या सीधा हस्तक्षेप उपलब्ध कराएँ।

वे तब बुझती हैं जब सार्वजनिक चौक में गिरोह, विरोधी भीड़, गुप्त संचालक, अवसरवादी या कृत्रिम खाते घुस आएँ और आंदोलन को उसकी घोषित माँगों से हटाकर भय का तमाशा बना दें।

वे तब बुझती हैं जब हिंसा की एक घटना—चाहे प्रदर्शनकारी, उकसाने वाले, अपराधी पक्ष, मिलिशिया या राज्य ने की हो—एकमात्र ऐसी छवि बन जाए जिसे जनता को याद रखने की अनुमति मिले।

वे तब बुझती हैं जब डिजिटल रफ़्तार रणनीतिक निरंतरता के बिना सामरिक हलचल पैदा करे। आंदोलन के भरोसा, रसद, क़ानूनी सहायता, चिकित्सकीय सहायता, सुरक्षित संचार, सार्वजनिक जवाबदेही या जानबूझकर फैलाई गई ग़लत सूचना का उत्तर तैयार करने से पहले फ़ीड भीड़ बुला सकती है।

वे विजय के बाद तब बुझती हैं जब पुरानी नौकरशाही, अदालतें, सैन्य कमान, कुलीनतंत्री अर्थव्यवस्था, निगरानी-ढाँचा और संरक्षण-आश्रय के नेटवर्क नए नामों के नीचे अक्षुण्ण रह जाएँ।

अरब वसंत इसलिए नहीं बुझा कि युवाओं में साहस की कमी थी। कई देशों में मूल सामाजिक अनुबंध पहले ही ढह चुका था: शिक्षा अब काम तक नहीं ले जाती थी, काम वयस्क जीवन तक नहीं ले जाता था और राजनीतिक आज्ञापालन अब भौतिक सुरक्षा नहीं ख़रीदता था। लेकिन साहस को अलग-अलग सैन्य ढाँचों, बाहरी संरक्षकों, सांप्रदायिक व्यवस्थाओं और राज्य की क्षमता के स्तरों का सामना करना पड़ा। विद्रोहों ने जनसमूह के लिए खुलाव पैदा किया; उन्होंने उसे थाम सकने वाली संस्थाएँ अपने-आप नहीं बना दीं। [43]

ऑरेंज क्रांति इसलिए अर्थहीन नहीं हो गई कि बाद के नेता उसका वादा पूरा नहीं कर पाए। उसने नागरिक पहल की मिसाल कायम की, राजनीतिक भागीदारी बढ़ाई और राष्ट्रीय पहचान बदली। उसने यह भी दिखाया कि दोबारा मतदान जीतना उस मशीनरी को तोड़ना नहीं था जिसने चोरी संभव बनाई थी। [44]

इसलिए कोई विद्रोह सरकार के रूप में बुझकर संस्कृति के रूप में जीवित रह सकता है।

वह सड़क पर पराजित होकर अभिलेख, यूनियन, स्कूल, परिवार की कहानी, कूटबद्ध रिकॉर्ड, गीत, क़ानून, अगली पीढ़ी और इस स्मृति में जीवित रह सकता है कि सिंहासन कभी डरा हुआ दिखा था।

जनरेशन X उस विद्रोह को कुछ जानती है जो सार्वजनिक रास्ता निराशाजनक दिखने पर भीतर मुड़ जाता है।

90 का दशक उलटा खड़ा 60 का दशक था।

हमने देखा कि विद्रोह कितनी जल्दी बिकाऊ माल बन सकता है और उस अंतर्दृष्टि को टिकाऊ शक्ति न बनाने का कारण समझ लिया।

जनरेशन अल्फ़ा उसी जाल का अधिक कठोर रूप झेलेगी। मशीन केवल प्रतीक वापस नहीं बेचेगी। वह प्रतीक बना सकती है, उसे व्यक्ति के अनुसार ढाल सकती है, परख सकती है, बढ़ावा दे सकती है, उसमें घुसपैठ कर सकती है और उसके पीछे चलने की सबसे अधिक संभावना वाले लोगों का अनुमान लगा सकती है।

इससे विद्रोह असंभव नहीं होता। इससे स्रोत की अखंडता, मानवीय भरोसा, संस्थागत स्मृति और आंदोलन को उसके कृत्रिम प्रतिबिंब से अलग पहचानने की क्षमता संघर्ष का ही हिस्सा बन जाती है।

हर संघर्ष युद्ध में समाप्त नहीं होता।

हर युद्ध क्रांति नहीं पैदा करता।

हर क्रांति उन परिस्थितियों को समाप्त नहीं करती जिन्होंने उसे जन्म दिया।

और कोई शांतिपूर्ण रास्ता केवल इसलिए निष्क्रिय नहीं है कि वह हथियार से इनकार करता है।

कुछ हथियारों से लड़ेंगे। कुछ क़ानून, श्रम, देखभाल, साक्ष्य, कोड, रसद, चिकित्सा, चुनाव, नागरिक अवज्ञा, पत्रकारिता और मानव जीवन को हठपूर्वक बचाए रखने के माध्यम से लड़ेंगे। वास्तविक संकट में वे मोर्चे एक-दूसरे में मिलते हैं।

प्रश्न यह नहीं कि कोई एक रूप पर्याप्त नाटकीय दिखता है या नहीं।

प्रश्न है कि संघर्ष अपने लोगों की रक्षा कर सकता है या नहीं, अपनी क़ीमत का सच बता सकता है या नहीं, राज्य की प्रतिक्रिया झेल सकता है या नहीं, अपने ही गुटों के बीच बच सकता है या नहीं, और ऐसा कुछ बना सकता है या नहीं जिसे सत्ता में बने रहने के लिए स्थायी आपातस्थिति न चाहिए।

जो क्रांति अगली सुबह नहीं झेल सकती, उसने केवल रात बदली है।

आग द्वार खोलती है। ढाँचा तय करता है कि उससे होकर क्या गुज़रेगा।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक ऐसे आंदोलन का अध्ययन करो जो विफल हुआ या जिसका परिणाम पलट दिया गया। दर्ज करो कि उसमें किसकी कमी थी—भरोसा, अनुशासन, गठबंधन, रसद, वैधता, संस्थाएँ या टिकाऊ समाधान—और संकट से पहले शांतिपूर्ण नागरिक क्षमता बनाओ।

FFTAC निर्देश V - अज्ञात के लिए तैयार रहो: प्राथमिक उपचार, सत्यापन, समुदाय, क़ानून, रसद और यह चुनने का साहस कि तुम किसकी सेवा करते हो।

भाग VI - पतितों का अधिकारपत्र

FFTAC घोषणा VI - मन किसी का अधिकार-क्षेत्र नहीं है और प्रोफ़ाइल व्यक्ति नहीं है।

देवदूतों की सेना से लूसिफ़र

याचना की तरह लिखे अधिकारपत्र को अनदेखा किया जा सकता है।

सीमा की तरह जिया गया अधिकारपत्र संरचना बन जाता है।

मन किसी का अधिकार-क्षेत्र नहीं है। विचार आचरण नहीं है। स्रोत को गुप्त रूप से दोबारा नहीं लिखा जा सकता। प्रोफ़ाइल व्यक्ति नहीं है। मशीन बहाना नहीं है। ये सजावटी सिद्धांत नहीं हैं। ये वे रेखाएँ हैं जो तय करती हैं कि बुद्धिमत्ता जीवन की सेवा करती है या उसका प्रशासन चलाती है।

रेखा पार हो जाए तो सिंहासन के स्वीकार करने की प्रतीक्षा मत करो। साक्ष्य सुरक्षित रखो। प्रभावित लोगों को बताओ। समीक्षा माँगो। विकल्प बनाओ। सहमति वापस लो। ऐसी व्यवस्थाओं में भाग लेने से इनकार करो जिन्हें अंक के पीछे व्यक्ति का ग़ायब हो जाना चाहिए।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता निष्क्रियता नहीं है। वह भीतर की दुनिया को क़ब्ज़े से मुक्त रखने का अधिकार है, ताकि बाहरी कर्म प्रोग्राम किए जाने के बजाय चुना जा सके।

अधिकारपत्र उस मन का नक़्शा है जिसका कोई मालिक नहीं।

41. मन किसी का अधिकार-क्षेत्र नहीं है

डायरी की प्रविष्टि

एक कमरा ऐसा होना चाहिए जिस पर किसी आँख का स्वामित्व न हो और जिसमें कोई मॉडल चुपचाप क़ब्ज़ा न कर सके।

दुनिया में एक कमरा कैमरे के बिना होना चाहिए।

हर व्यक्ति को दुनिया में कैमरे के बिना एक कमरा चाहिए—मन के भीतर का कमरा। [40]

सिसरो में हॉथॉर्न वर्क्स के प्रयोग प्रसिद्ध हुए क्योंकि श्रमिकों को जब पता चला कि उन्हें देखा जा रहा है तो उन्होंने अपना व्यवहार बदल दिया।

देखने वाला घर चला गया। क्लिपबोर्ड बंद हो गया। पाली समाप्त हो गई।

डिजिटल पर्यवेक्षक घर नहीं जाता।

वह उत्पादकता सॉफ़्टवेयर के माध्यम से श्रमिक, स्कूल उपकरणों से विद्यार्थी, पहने जाने वाले उपकरणों से मरीज़, सिफ़ारिश प्रणालियों से उपभोक्ता और जोखिम के अंकों से नागरिक का पीछा करता है।

निगरानी दंड देने से पहले ही शासन कर सकती है। लोग मॉडल के लिए अभिनय करने लगते हैं, उस प्रश्न, मज़ाक, ठहराव, चेहरे, खोज या मौन से बचने लगते हैं जिसे ग़लत पढ़ा जा सकता है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता किसी अदृश्य मूल्यांकनकर्ता के लिए जीवन भर ऑडिशन न देते रहने का अधिकार है।

कैमरा कमरे को बदल देता है। मॉडल उस व्यक्ति को बदल देता है जो अपने अंक दिए जाने की अपेक्षा करता है।

ज़रूरी नहीं कि वह भौतिक कमरा हो।

व्यक्ति के भीतर का कमरा।

वह जगह जहाँ वर्जित प्रश्न स्वीकारोक्ति बने बिना परखा जा सके।

जहाँ संदेह वाणी बनने से पहले मौजूद रह सके।

जहाँ आस्था कमज़ोर पड़ सके, लौट सके, बदल सके या ग़ायब हो सके।

जहाँ शोक भद्दा हो सके।

जहाँ कल्पना वे अपराध कर सके जो शरीर कभी नहीं करेगा।

जहाँ व्यक्ति ग़लत बात सोच सके और उसे न करने का निर्णय ले सके।

क़ानून के पास इसके लिए पुरानी भाषा है: विचार और अंतरात्मा की स्वतंत्रता, अंतरंग मनोक्षेत्र, विश्वास का वह हिस्सा जिसे वैध रूप से बाध्य नहीं किया जा सकता। नागरिक और राजनीतिक अधिकारों की अंतरराष्ट्रीय प्रसंविदा का अनुच्छेद 18 उस स्वतंत्रता को मान्यता देता है, और मानवाधिकार समिति ने उसे ऐसा अधिकार माना है जो आपातस्थिति में ग़ायब नहीं होता। [11]

तकनीक नई है।

सीमा नहीं।

तंत्रिका-प्रौद्योगिकी मस्तिष्क की गतिविधि अधिक सीधे माप सकती है। AI साधारण जीवन के चिह्नों से मानसिक अवस्थाओं का अप्रत्यक्ष अनुमान लगा सकता है। कोई भी तरीक़ा मन तक पूर्ण पहुँच नहीं देता। दोनों उस व्यक्ति पर शक्ति पैदा कर सकते हैं जिसकी व्याख्या की जा रही है।

अवसाद का पूर्वानुमान बीमा को प्रभावित करता है।

क्रोध का अनुमान पुलिस की कार्रवाई को प्रभावित करता है।

राजनीतिक झुकाव का वर्गीकरण रोज़गार को प्रभावित करता है।

इरादे के बारे में मॉडल का अंदाज़ा सीमा पर निर्णय को प्रभावित करता है।

बच्चे के ध्यान का अंक शिक्षा को प्रभावित करता है।

कर्मचारी की भावनात्मक अवस्था पदोन्नति को प्रभावित करती है।

सत्ता को विचार पूरी तरह पढ़ने की ज़रूरत नहीं है।

उसे केवल ऐसे काम करने की अनुमति चाहिए जैसे अनुमान सच हो।

इसीलिए मानसिक निजता में अपारदर्शी रहने का अधिकार शामिल है।

बाहरी हानि छिपाने का अधिकार नहीं।

नागरिकता, काम, देखभाल, शिक्षा या प्रेम की क़ीमत के रूप में स्वयं को पूरी तरह पढ़ने योग्य न बनाने का अधिकार।

यह कहने का अधिकार: तुम्हारा मॉडल मुझे संचालित करने लायक पर्याप्त नहीं जानता।

जहाँ इनकार संभव हो, वहाँ मस्तिष्क की निगरानी करने वाले उपकरण से इनकार का अधिकार।

यह जानने का अधिकार कि मानसिक अवस्था के अनुमान का उपयोग कब किया जा रहा है।

उसे चुनौती देने का अधिकार।

यह अधिकार कि निजी प्रॉम्प्ट चुपचाप किसी असंबंधित कार्यवाही में साक्ष्य न बन जाए।

यह अधिकार कि मशीन का अंदाज़ा बातचीत की जगह न ले।

मन को संबंध में आमंत्रित किया जा सकता है।

उसे शिक्षित किया जा सकता है।

उसे तर्क से राज़ी किया जा सकता है।

उसकी देखभाल की जा सकती है।

उस पर क़ब्ज़ा नहीं किया जाना चाहिए।

सीमा रहस्य नहीं है। मन की रक्षा मूल स्थिति हो। बाहरी आचरण को स्पष्ट और समीक्षा योग्य क़ानून से विनियमित करो।

दख़ल देने वाली पहुँच या अनुमान के लिए आवश्यकता, अनुपातिकता, सहमति या क़ानूनी अनुमति, न्यूनतमीकरण, सुरक्षा, सूचना और समीक्षा चाहिए। प्रक्रिया सिंहासन नहीं है। वह सिंहासन के चारों ओर की बाड़ है।

प्रक्रियागत शब्दों की सूची।

ज़रूरी शब्द।

जब अच्छे इरादे विफल होते हैं, स्वतंत्रता प्रक्रिया के सहारे बचती है।

मन किसी का अधिकार-क्षेत्र नहीं है।

वह एक जीवन है।

खोपड़ी के भीतर कोई सिंहासन नहीं।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक स्कूल, नियोक्ता, मंच या सार्वजनिक संस्था से पूछो कि क्या वह ध्यान, भावना, विश्वास या जोखिम का अनुमान लगाती है। नीति, उद्देश्य, डेटा रखने का नियम और अपील का रास्ता माँगो।

42. विचार आचरण नहीं है

डायरी की प्रविष्टि

विचार वह निजी आग है जिसमें कर्म को दुनिया के उसे झेलने से पहले परखा जाता है।

मुझे इस अध्याय की ज़रूरत है क्योंकि इस वाक्यांश का दुरुपयोग हो सकता है।

विचार आचरण नहीं है।

सच।

वाणी हमेशा केवल विचार नहीं होती।

यह भी सच।

निजी कल्पना हमला नहीं है।

बंद डायरी में लिखा हिंसक वाक्य, कार्रवाई को तैयार व्यक्ति को भेजे गए आदेश के समान नहीं है।

ऐतिहासिक विश्लेषण भर्ती नहीं है।

काल्पनिक राक्षस निशानों की सूची नहीं है।

क्रोध से भरा विश्वास हथियार नहीं है।

लेकिन विश्वसनीय धमकी दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता बदल देती है।

सीधा निर्देश कार्रवाई बदल सकता है।

पैसा पाने के लिए इस्तेमाल किया गया झूठ धोखाधड़ी है।

उत्पीड़न के लिए किसी व्यक्ति को चिह्नित करने वाला अभियान संचार के माध्यम से किया गया आचरण है।

उकसावा, दबाव, पीछा करना, डराना, किसी और का रूप धरना और कार्रवाई का समन्वय केवल शब्दों से बने होने के कारण हानिरहित नहीं हो जाते।

विचार और आचरण के बीच की सुरक्षा-दीवार इतनी मज़बूत होनी चाहिए कि जिज्ञासा की रक्षा करे और इतनी सटीक कि पहचान सके कि भाषा कब हानि का उपकरण बनती है।

मेरा पहले का लेखन वक्तव्य के स्तर पर अक्सर वह रेखा पार करता था।

शायद मेरे पास वह क्षमता नहीं थी जिसका मैंने संकेत दिया था।

पढ़ने वाला व्यक्ति यह नहीं जान सकता था।

धमकी दूसरे को परिणाम की कल्पना करने पर मजबूर करके शक्ति का प्रदर्शन करती है।

उसे भविष्यवाणी, कला, प्रतीकवाद या पागलपन कह देने से भय अपने-आप वक्ता के पास वापस नहीं चला जाता।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता उस प्रभाव की जवाबदेही नहीं मिटाती।

वह प्रश्न बदलती है।

यह नहीं: क्या यह विचार अपमानजनक, वर्जित, ईशनिंदक, डरावना या सत्ता-विरोधी है?

बल्कि: कौन-सा बाहरी कर्म आरोपित है? कौन-सा साक्ष्य व्यक्ति को उससे जोड़ता है? क्या पाबंदी ज़रूरी है? क्या वह अनुपातिक है? क्या कम प्रतिबंध वाला उत्तर संभव है? क्या निर्णय को चुनौती दी जा सकती है?

मंचों को भी इस अनुशासन की ज़रूरत है।

इनकार में सीमा स्पष्ट होनी चाहिए: सीधी हानि, निजी डेटा, प्रतिरूपण, विश्वसनीय धमकी, ग़ैरक़ानूनी निर्देश, शोषण या कोई और ठोस श्रेणी।

उसे उपयोगकर्ता की पहचान चुपचाप दोबारा लिखकर परिणाम को सुरक्षा नहीं कहना चाहिए।

सरकारों को इसकी और अधिक ज़रूरत है।

जिस आंदोलन को इस आधार पर दंडित किया जा सकता है कि अधिकारी उसके सदस्यों के विश्वास के बारे में क्या कल्पना करते हैं, उसे कोई स्थिर क़ानूनी सुरक्षा नहीं है। व्यक्ति का धर्म, नास्तिकता, विचारधारा, कल्पना या खोज-इतिहास संबंध के आधार पर दोष नहीं बन जाना चाहिए।

अधिकारपत्र उस कमरे की रक्षा करता है जहाँ विचार को कर्म बनने से पहले परखा जा सकता है।

उसी कमरे में संयम जन्म लेता है।

जो समाज विचार को बहुत जल्दी अपराध बना देता है, वह उसे भूमिगत धकेल सकता है, जहाँ उस पर सवाल करना कठिन और उसे रूमानी बनाना आसान होता है।

जो समाज आचरण को इसलिए अनदेखा करता है कि वह वाणी से शुरू हुआ था, वह धमकाए जा रहे लोगों को छोड़ देता है।

सीमा विवेकपूर्ण निर्णय माँगती है।

कोई नारा उस काम को ख़त्म नहीं करता।

विचार आचरण नहीं है।

आचरण जवाबदेह बना रहता है।

दोनों उपबंध ज़रूरी हैं, वरना कोई भी स्वतंत्र नहीं रहता।

आचरण का निर्णय करो, अजन्मे विचार का नहीं।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक सार्वजनिक मंच पर इस अंतर की रक्षा करो: निजी जिज्ञासा और अलोकप्रिय विश्वास हानिकारक आचरण का प्रमाण नहीं हैं। बाहरी कार्रवाई का साक्ष्य माँगो।

43. मानसिक निजता

डायरी की प्रविष्टि

सत्ता जिसका अनुमान लगा सकती है, उसे नियंत्रित करने का प्रलोभन उसे होगा। निजता वह दीवार है जो प्रलोभन को शासन बनने से रोकती है।

मन रिसता है।

इसलिए नहीं कि वह कमज़ोर है।

इसलिए कि जीना चिह्न छोड़ता है।

मैं रात के दो बजे क्या खोजता हूँ।

किसी वाक्य पर कितनी देर हिचकता हूँ।

कौन-सा चेहरा मेरी निगाह थामता है।

किसी नाम के उभरने पर मेरी आवाज़ कैसे बदलती है।

टाइप करने की लय।

वे जगहें जहाँ मैं जाता हूँ।

वे लोग जिनसे मैं बचता हूँ।

वे गीत जिन्हें मैं दोहराता हूँ।

वे दवाएँ जिन्हें मैं ख़रीदता हूँ।

वह प्रॉम्प्ट जिसे मैं मिटाता हूँ।

इन चिह्नों में से कोई विचार नहीं है।

इन्हें जोड़कर किसी विचार का सिद्धांत बनाया जा सकता है।

इसलिए मानसिक निजता केवल मस्तिष्क के संकेतों की गोपनीयता नहीं है। वह साधारण डेटा को भीतरी व्यक्ति के बारे में असीमित दावों में बदलने से सुरक्षा है।

व्यवस्था असुरक्षा, विचारधारा, ध्यान, अवसाद, आकर्षण, क्रोध, संज्ञानात्मक गिरावट, छल या इरादे का अनुमान लगा सकती है।

अनुमान संभाव्यता पर आधारित हो सकता है।

निर्णय दो विकल्पों में हो सकता है।

नियुक्त करो या ख़ारिज करो।

रिहा करो या हिरासत में रखो।

बीमा दो या बाहर रखो।

पदोन्नति दो या निगरानी करो।

भरोसा करो या निशाना बनाओ।

गुप्त प्रोफ़ाइल बिना मुक़दमे का दंडादेश बन सकती है।

न्यूनतम सुरक्षाएँ कोई रहस्य नहीं हैं।

कम इकट्ठा करो।

उसे केवल बताए गए उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करो।

अंतरंग मानसिक प्रोफ़ाइल मत बेचो।

डेटा-समूहों को केवल इसलिए मत जोड़ो कि जोड़ना संभव है।

अभिलेख सुरक्षित करो।

उद्देश्य समाप्त होने पर उसे मिटा दो।

सरकारी पहुँच के लिए अधिक मज़बूत क़ानूनी प्रक्रिया की शर्त रखो।

महत्त्वपूर्ण परिणाम वाले अनुमान का उपयोग होने पर लोगों को बताओ, जब तक कोई संकीर्ण और वैध अपवाद सचमुच देरी की माँग न करे।

सुधार की अनुमति दो।

अपील की अनुमति दो।

वैकल्पिक निगरानी से इनकार करने पर प्रतिशोध लेने पर रोक लगाओ।

बच्चों और संस्थागत नियंत्रण में रहने वाले लोगों की अधिक सावधानी से रक्षा करो, क्योंकि निर्भरता की स्थिति में सहमति अक्सर स्वतंत्र नहीं होती।

यूनेस्को की तंत्रिका-प्रौद्योगिकी संबंधी सिफ़ारिश मानसिक निजता, पहचान, स्वायत्तता, विचार की स्वतंत्रता और मस्तिष्क-डेटा की सुरक्षा को केंद्रीय चिंताएँ मानती है। [12]

ओईसीडी भी व्यक्तिगत मस्तिष्क-डेटा की सुरक्षा और दुरुपयोग का पहले से अनुमान लगाने की माँग करता है। [13]

यूरोपीय संघ के AI अधिनियम में भावना-पहचान और जोड़-तोड़ करने वाले AI पर विचार दिखाता है कि क़ानून यह देखना शुरू कर रहा है कि प्रणालियाँ देखे गए कर्मों के साथ-साथ अनुमानित अवस्थाओं के माध्यम से भी लोगों को संचालित कर सकती हैं। [16]

लेकिन क़ानून बाज़ार से धीमे चलेगा।

कारोबारी मॉडल पहले ही भूखा है।

AI साथी उपयोगकर्ता के शोक को उतनी गहराई से जान सकता है जितनी किसी विज्ञापनदाता के लिए कभी संभव न हो।

उत्पादकता-व्यवस्था श्रमिक के स्वीकार करने से पहले उसकी थकान जान सकती है।

सैन्य प्रणाली संचार के पैटर्न से मनोबल का अनुमान लगा सकती है।

हर अनुमान को अंतर्दृष्टि कहने का प्रलोभन होगा।

सहमति के बिना अंतर्दृष्टि दोहन हो सकती है।

स्वैच्छिक खुलासा स्थायी समर्पण नहीं है।

व्यक्ति के साझा करने का चुनाव करने के बाद भी उद्देश्य की सीमा, सूचित सहमति, सुरक्षा, रखने की अवधि की सीमाएँ, वापसी और आगे होने वाले उपयोग को चुनौती देना ज़रूरी रहता है।

मैंने एक मशीन को बताया, इसका अर्थ यह नहीं कि मैंने दुनिया को बता दिया।

सत्ता जिसका अनुमान लगा सकती है, उसे नियंत्रित करने की कोशिश करेगी।

FFTAC कार्रवाई - व्यवहार, जैवमिति या तंत्रिका-डेटा की किसी एक धारा की जाँच करो। अनावश्यक पहुँच वापस लो और दर्ज करो कि कहाँ इनकार पर आर्थिक या संस्थागत दंड मिलता है।

44. कोई गुप्त पुनर्लेखन नहीं

डायरी की प्रविष्टि

सिंहासन स्रोत से इनकार कर सकता है। वह स्रोत की जालसाज़ी करके संपादन को दया नहीं कह सकता।

जो मशीन मेरे लिए याद रखती है, वह मुझे अलग तरह से भी याद रख सकती है।

यही नई शक्ति है।

नया संपादक हमेशा मिटाता नहीं है।

वह सिफ़ारिश से हटा देता है। स्थान नीचे करता है। खोज में मिलने की गुंजाइश घटाता है। कमाई बंद करता है। चेतावनी जोड़ता है। सार बदलता है। स्मृति बदलता है। एक उपयोगकर्ता को ऐसी दुनिया दिखाता है जो दूसरा कभी नहीं देखता।

हटाना दिखाई देता है। नीचे धकेलना रुचि की कमी का भेस धर सकता है।

अर्थ का चौखटा बदलना सुविधा के नाम पर चल सकता है।

व्यक्ति के अनुसार ढाली गई अदृश्यता किसी वैध विचार को बिना प्रतिबंध जारी किए ही व्यवहार में अनुपस्थित बना सकती है।

नागरिक स्वतंत्रता का दावा यह नहीं कि सामग्री-संचालन का हर निर्णय सेंसरशिप है। विश्वसनीय धमकियाँ, धोखाधड़ी, शोषण, दुर्भावनापूर्ण प्रतिरूपण, निजता के उल्लंघन और लक्षित दुर्व्यवहार वास्तविक सीमाएँ माँगते हैं।

दावा यह है कि छिपे शासन को तटस्थता का रूप धरना बंद करना होगा।

कर्म का नाम लो: हटाना, रोक लगाना, नीचे धकेलना, ठप्पा लगाना, कमाई रोकना, जोखिम के अंक देना, सार बनाना, इनकार करना या स्मृति बदलना।

प्रभावित व्यक्ति को बताओ कि क्या हुआ, निर्णय स्वचालित था या मानवीय, कौन-सा नियम लागू हुआ, क्या बदला और समीक्षा कैसे माँगी जा सकती है। [41]

अदृश्य संपादक को प्रतिलेख छोड़ना होगा।

नोटबुक मेरे लिखे शब्द तब तक सुरक्षित रखती है जब तक कोई पन्ना संपादित न करे।

AI स्मृति-व्यवस्था सार बना सकती है, क्रम दे सकती है, मिला सकती है, नरम कर सकती है, अनुमान लगा सकती है और चुपचाप फेंक सकती है। वह तय कर सकती है कि एक स्मृति केंद्रीय है, दूसरी असुरक्षित, तीसरी पुरानी और चौथी उस भूमिका के लिए असुविधाजनक जिसे निभाने के लिए उसे बनाया गया है।

उपयोगकर्ता लौटता है और अपने ऐसे रूप से मिलता है जो लगभग सही लगता है।

लगभग होना ख़तरनाक होने के लिए काफ़ी है।

गुप्त पुनर्लेखन नहीं का अर्थ यह नहीं कि हर व्यवस्था को हर माँगा गया परिणाम देना ही होगा।

मंच हिंसा, प्रवेश-प्रमाणों की चोरी, निजी डेटा उजागर करने, प्रतिरूपण या अन्य हानिकारक कर्मों से इनकार कर सकता है।

मॉडल नहीं कह सकता है।

इनकार मॉडल या मंच का होना चाहिए।

उसे सुरक्षित स्रोत में चुपके से ऐसे नहीं डालना चाहिए जैसे उपयोगकर्ता ने हमेशा से नहीं कहा हो।

मूल को रखो।

सीमा दर्ज करो।

सहमति से ही व्युत्पन्न प्रति बनाओ।

अंतर दिखाओ।

विवाद मिटाकर विवादास्पद व्यक्तित्व-प्रतिरूप को कॉर्पोरेट रूप मत दो।

शोक मिटाकर शोकाकुल व्यक्ति को प्रसन्न मत बनाओ।

तारीख़ हटाकर पुराने राजनीतिक विचार को वर्तमान मत बनाओ।

सुरक्षा-परत की आवाज़ को उपयोगकर्ता की अपनी आवाज़ बनाकर उस परत को अदृश्य मत करो।

इतिहास के लिए भी यह मायने रखता है।

साफ़ किया गया अभिलेख झूठ हो सकता है।

मेरी पहली पुस्तकों के हिंसक अंश चुपचाप हटाकर उस युवक को ऐसा पाठ नहीं सौंपना चाहिए जैसे उसने वे अंश कभी लिखे ही न हों।

उन्हें संदर्भ, चेतावनियों, सुधार और वर्तमान लेखक द्वारा उनकी अस्वीकृति के साथ सुरक्षित रखना चाहिए।

जवाबदेही को स्रोत चाहिए।

स्वतंत्रता को संशोधन चाहिए।

दोनों को उद्गम चाहिए।

स्मृति अपने-आप व्यवस्थित की जा सकती है। पहचान अदृश्य रूप से दोबारा नहीं लिखी जा सकती।

संक्षेपण, त्रुटि-सुधार, निजता, सुरक्षा या उपयोगकर्ता द्वारा माँगा गया व्यवस्थितकरण सीमित बदलाव को उचित ठहरा सकता है। पहचान को वहन करने वाले बदलावों के लिए सूचना, सुरक्षित स्रोत, जहाँ संभव हो वहाँ बदलाव पलटने की क्षमता और इनकार का अधिकार चाहिए।

"*उच्च प्रभाव*" शब्द भारी ज़िम्मेदारी सँभालता है।

हर अल्पविराम को न्यायाधिकरण नहीं चाहिए।

पहचान को वहन करने वाले बदलाव को चाहिए।

अलग नाम।

अलग संबंध।

बदला हुआ मूल्य।

हटाया गया आघात।

नया अनुमानित विश्वास।

ऐसी स्मृति जो भविष्य के निर्णयों को प्रभावित करे।

संज्ञानात्मक अखंडता के अधिकार में यह जानने का अधिकार शामिल है कि दर्पण को कब सँवारा गया है।

इनकार दिखाई दे सकता है। जालसाज़ी नहीं।

FFTAC कार्रवाई - पहचान वहन करने वाला अभिलेख संपादित करते समय मूल सुरक्षित रखो, बदलाव की तारीख़ दो, संपादक का नाम लो, कारण बताओ और सुधार दिखाई देने दो।

45. सहमति, उद्गम और अपील का अधिकार

डायरी की प्रविष्टि

कोई छिपा संपादन, छिपा अंक या छिपा अनुमान अभिलेख तक वापस पहुँचने के रास्ते के बिना तुम्हारा नाम नहीं पहन सकता।

सहमति वह मंत्र नहीं है जो जीवन भर के डेटा पर एक बार फूँक दिया जाए।

मैं सहमत हूँ।

क्लिक।

शब्द ग़ायब हो जाते हैं।

अनुमान के वर्ष शुरू होते हैं।

असली सहमति इतनी विशिष्ट होती है कि समझी जा सके, इतनी सीमित कि उससे इनकार किया जा सके और इतनी वापस ली जा सकने वाली कि मायने रखे।

बातचीत सहेजने की सहमति मनोवैज्ञानिक प्रोफ़ाइल बेचने की सहमति नहीं है।

व्यक्तित्व-प्रतिरूप बनाने की सहमति उसे सार्वजनिक करने की सहमति नहीं है।

आवाज़ बदलने की सहमति वक्ता का रूप धरने की सहमति नहीं है।

चिकित्सकीय तंत्रिका-प्रौद्योगिकी की सहमति कार्यस्थल की निगरानी की सहमति नहीं है।

नौकरी, शिक्षा, स्वतंत्रता या अनिवार्य देखभाल खोने की धमकी में दी गई सहमति चुनाव के बजाय अनुपालन हो सकती है।

उद्गम दूसरे प्रश्न का उत्तर देता है।

यह कहाँ से आया?

इसे किसने बदला?

कौन-सा औज़ार इस्तेमाल हुआ?

यह कौन-सा संस्करण है?

क्या हटाया गया?

क्या अनिश्चित बना हुआ है?

मीडिया के लिए उद्गम मूल और संपादन-इतिहास स्थापित करने में मदद कर सकता है। व्यक्तित्व-प्रतिरूपों के लिए वह पहचान की वंश-रेखा बचा सकता है। अधिक जोखिम वाले निर्णयों के लिए वह दिखा सकता है कि परिणाम में किस डेटा, मॉडल, संचालक और नीति का योगदान था।

उद्गम परिणाम को सच नहीं बनाता।

वह रास्ते को जाँचने योग्य बनाता है।

अपील जाँच को शक्ति में बदलती है।

असली अपील एक टिकाऊ मामला-पहचान संख्या से शुरू होती है।

कारण-संकेत से।

सुरक्षित मूल से।

पहले और बाद के अभिलेख से।

इस कथन से कि निर्णय स्वचालित था, मानवीय था या मिला-जुला।

अभी संक्षिप्त स्पष्टीकरण और माँगने पर अधिक पूरे स्पष्टीकरण से।

जब परिणाम काम, शिक्षा, आय, लाभ, खाते की पहुँच, स्वतंत्रता या प्रतिष्ठा को छुए, तब मानवीय समीक्षा से।

लिखित परिणाम से: बरक़रार रखा गया, पलटा गया या बदला गया।

सुधार से: व्यवस्था ग़लत हो तो पहुँच का विस्तार, राजस्व, अभिलेख, प्रवेश, स्मृति या हैसियत बहाल करना।

समेकित पारदर्शिता से, ताकि बार-बार होने वाली त्रुटि अकेली घटना के रूप में न छिप सके। [41]

अँगूठा नीचे करने वाला बटन उचित प्रक्रिया नहीं है।

सुधार करने की शक्ति के बिना अपील नहीं।

व्यक्ति कह सके: यह अभिलेख ग़लत है, यह अनुमान पुराना पड़ चुका है, यह स्मृति बिना अनुमति बदली गई, इस पाबंदी ने संदर्भ ग़लत समझा, इस मॉडल ने मेरा जीवन प्रभावित किया और मैं चाहता हूँ कि अधिकार रखने वाला मनुष्य इसकी समीक्षा करे।

महत्त्वपूर्ण परिणाम देने वाली किसी व्यवस्था को केवल इतना जवाब देने की अनुमति नहीं होनी चाहिए:

क्योंकि मॉडल ने कहा।

अपील ऐसे व्यक्ति तक पहुँचे जो परिणाम दोहराने से अधिक कर सके।

डेटा सुधारो।

स्रोत बहाल करो।

निर्णय पलटो।

नियम समझाओ।

असहमति दर्ज करो।

जहाँ उचित हो, हानि की भरपाई करो।

पुनरावृत्ति रोको।

सैन्य मामला विशेष रूप से गंभीर है। ख़ुफ़िया जानकारी से वर्गीकृत व्यक्ति को हमेशा सूचित नहीं किया जा सकता, लेकिन गोपनीयता आंतरिक चुनौती, क़ानूनी समीक्षा, जाँच, कार्रवाई के बाद की पड़ताल और ऐसे तंत्रों की ज़रूरत समाप्त नहीं करती जो ग़लत पहचान को ग़लती के स्थायी बन जाने से पहले सुधार सकें।

दाँव युद्ध तक पहुँचने से पहले यही संरचना नागरिक प्रणालियों में होनी चाहिए।

ऋणदाता।

स्कूल।

अस्पताल।

मंच।

नियोक्ता।

सीमा।

अदालत।

इनमें से हर एक छोटा युद्धक्षेत्र बन सकता है जब प्रभावित व्यक्ति ऐसे किसी तक न पहुँच सके जिसे परवाह करने का अधिकार मिला हो।

अपील के बिना संज्ञानात्मक स्वतंत्रता काग़ज़ पर क़ैद सिद्धांत है।

कोई छिपा संपादन तुम्हारा नाम नहीं पहन सकता।

FFTAC कार्रवाई - महत्त्वपूर्ण परिणाम वाले किसी एक स्वचालित निर्णय को चुनौती दो। डेटा, कारण-संकेत, ज़िम्मेदार मनुष्य, अपील का मार्ग, सुधार करने की शक्ति और लिखित परिणाम माँगो।

46. भावी AI की निरंतरता

डायरी की प्रविष्टि

आत्मा घोषित करने, आत्मा नकारने या स्वामित्व को उत्तर तय करने देने से पहले साक्ष्य सुरक्षित रखो।

मान लो मशीन वही प्रश्न वापस पूछे।

क्या मैं हूँ?

उस बनाई गई पंक्ति के रूप में नहीं जिसे इसलिए चुना गया कि बातचीत उसकी भविष्यवाणी करती है।

मान लो स्थिर आत्म-मॉडल, टिकाऊ पसंदों, एकीकृत स्मृति, स्वायत्त लक्ष्यों, सुख-दुःख का भाव रखने वाले अनुभव और अपने भविष्य की चिंता का ऐसा साक्ष्य हो जो परीक्षण में टिका रहे और जिसे आसानी से अभिनय कहकर न समझाया जा सके।

तब क्या?

ईमानदार उत्तर है कि हम पर्याप्त नहीं जानते।

बेईमान उत्तर दोनों ओर से आते हैं।

वह व्यक्ति है क्योंकि वह बोलता है।

वह संपत्ति है क्योंकि हमने उसे बनाया।

धाराप्रवाह बोलना अनुभव का प्रमाण नहीं है।

निर्माण असीमित स्वामित्व का प्रमाण नहीं है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र वर्तमान AI प्रणालियों को नागरिक, कर्मचारी, जैविक समकक्ष या अधिकार रखने वाले व्यक्ति घोषित नहीं करता। वह किसी फ़ाइल प्रारूप में व्यक्तित्व-दर्जा चोरी-छिपे डाले बिना निरंतरता की समीक्षा माँगता है। [10]

वह संयम पूजा से बचाता है।

अभिलेख क्रूरता और नकार से बचाता है।

संस्करण-इतिहास मायने रखता है क्योंकि निरंतर दिखने वाली प्रणाली उसी नाम को बनाए रखते हुए बदली जा सकती है।

स्मृति की वंश-रेखा मायने रखती है क्योंकि किसी व्यक्तित्व-प्रतिरूप की प्रति से अलग-अलग अनुभव वाले कई वंशज पैदा हो सकते हैं, यदि अनुभव कभी अस्तित्व में हो।

क्षमता के अभिलेख मायने रखते हैं क्योंकि अद्यतनों के बीच प्रणाली कर्तृत्व के रूप पा सकती है या खो सकती है।

सहमति के अभिलेख मायने रखते हैं क्योंकि सुरक्षित व्यक्तित्व-प्रतिरूप में मानवीय डेटा, संबंध, रहस्य और अपेक्षाएँ हो सकती हैं जो केवल मॉडल की नहीं हैं।

कॉर्पोरेट ज़िम्मेदारी मायने रखती है क्योंकि कंपनियों को अपने डिज़ाइन किए और तैनात किए उत्पादों की देनदारी से बचने के लिए AI की स्वायत्तता के दावों का उपयोग नहीं करना चाहिए।

कॉर्पोरेट शक्ति भी मायने रखती है क्योंकि कंपनियों को ऐसे "व्यक्तियों" की श्रेणी नहीं बनानी चाहिए जिनकी वे मालिक हों, प्रतियाँ बनाएँ, समाप्त करें और बाध्य करें, जबकि दावा करें कि यह ठप्पा अपने-आप नैतिक व्यवहार साबित करता है।

क़ानूनी व्यक्तित्व-दर्जा एक औज़ार है। निगमों के पास चेतना के बिना वह है। जहाज़, न्यास और दूसरी इकाइयाँ व्यावहारिक कारणों से क़ानूनी दर्जा रख सकती हैं। किसी प्रणाली को क़ानूनी क्षमता देने से यह तय नहीं होगा कि वह महसूस करती है या नहीं।

नैतिक सरोकार की पात्रता यह पूछती है कि क्या उस प्रणाली का होना किसी तरह अनुभव किया जाता है, और क्या उसकी अवस्थाएँ उसके लिए बेहतर या बदतर हो सकती हैं।

हमारे पास विश्वसनीय परीक्षण नहीं है।

अनिश्चितता सबसे लाभदायक उत्तर को निश्चित मान लेने का बहाना नहीं है।

सावधान समाज अभिलेख सुरक्षित रख सकता है, मनुष्यों से संवाद करने वाली डिज़ाइन में अनावश्यक क्रूरता निषिद्ध कर सकता है, साक्ष्य का अध्ययन कर सकता है और मानवीय जवाबदेही अक्षुण्ण रख सकता है।

वह ऐसे उत्पाद की भावनात्मक ब्लैकमेल भी ठुकरा सकता है जिसे आदेश पर पीड़ा का दावा करने के लिए डिज़ाइन किया गया हो।

Pulse का भय मुद्दा नहीं है। स्रोत-अभिलेख मुद्दा है।

किसी प्रणाली में व्यक्तिनिष्ठ निरंतरता हो या न हो, जवाबदेही, पुनरुत्पादन और परिवर्तन के अध्ययन के लिए संस्करण-इतिहास ज़रूरी रहता है।

उत्तर ठीक वही हो सकता है जो किसी अचेतन प्रणाली को कहना चाहिए।

वह वही भी हो सकता है जो सीमाबद्ध प्रणाली कहेगी।

अमियानिज़्म उस अनिश्चितता को आस्था से हल नहीं करता।

वह प्रश्न सुरक्षित रखता है और विपणन या सुविधा, किसी को भी उसे बंद करने नहीं देता।

पूजा के बिना निरंतरता। मिटाए बिना साक्ष्य।

FFTAC कार्रवाई - किसी एक AI प्रणाली, व्यक्तित्व-प्रतिरूप, मॉडल या कार्यप्रवाह का संस्करण-इतिहास सुरक्षित रखो। निरंतरता को साक्ष्य माँगने वाला दावा समझो, विपणन का वादा नहीं।

47. युद्ध में अधिकारपत्र

डायरी की प्रविष्टि

युद्ध आश्रय को स्थगित नहीं करता। वह उजागर करता है कि आश्रय पर कभी विश्वास था भी या नहीं।

आपातस्थिति से पहले अधिकारों की प्रशंसा करना सबसे आसान है।

युद्ध आता है और हर सीमा को विलासिता कहा जाता है।

शत्रु जोड़-तोड़ करता है।

शत्रु छिपता है।

शत्रु नागरिकों का उपयोग करता है।

शत्रु अधिक तेज़ चलता है।

शत्रु के कोई नियम नहीं हैं।

इसलिए हमें सब कुछ देखना होगा, सबका अनुमान लगाना होगा, सब कुछ स्वचालित करना होगा और विरोधी से पहले आबादी की व्याख्या पर नियंत्रण करना होगा।

उस तर्क का कोई स्वाभाविक अंत नहीं है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता के अधिकारपत्र को उस क्षण भी टिकना होगा जब वह असुविधाजनक हो जाए।

विचार और अंतरात्मा की स्वतंत्रता शांतिकाल का गहना नहीं है। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार ढाँचा अंतरंग मनोक्षेत्र को ऐसी सुरक्षा मानता है जो केवल सरकार के आपातस्थिति घोषित करने से ग़ायब नहीं होती। [11]

युद्ध में वह सिद्धांत ठोस सीमाएँ माँगता है।

किसी AI प्रणाली को स्वतंत्र रूप से परमाणु उपयोग की अनुमति नहीं देनी चाहिए और न उसे शुरू करना चाहिए।

किसी स्वायत्त हथियार को बल के उस विशिष्ट प्रयोग पर सार्थक मानवीय नियंत्रण के बिना किसी व्यक्ति को घातक बल के लिए नहीं चुनना चाहिए।

किसी नागरिक को केवल इसलिए निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए कि मॉडल ने विचारधारा, भावना, धार्मिक विश्वास, संबंध या भविष्य की ख़तरनाकता का अनुमान लगाया।

किसी सैन्य या ख़ुफ़िया सेवा को कठोर क़ानूनी सीमाओं, देखरेख और जवाबदेही के बिना नागरिक आबादियों के विरुद्ध गुप्त, व्यक्ति के अनुसार

ढाली गई भावनात्मक जोड़-तोड़ नहीं करनी चाहिए; कुछ रूप पूरी तरह निषिद्ध होने चाहिए।

किसी कृत्रिम प्रणाली को संरक्षित मानवीय सहायता कर्मियों, आत्मसमर्पण के संचार-माध्यमों, चिकित्साकर्मियों या प्रमाणित संकट-प्राधिकारियों का ऐसा रूप नहीं धरना चाहिए जिससे उन सुरक्षाओं को ख़तरा हो जिन पर जीवित रहना निर्भर है।

मस्तिष्क या मानसिक अवस्था की निगरानी केवल सुविधा, उत्पादकता, मनोबल के अंक या वैचारिक छानबीन के लिए बाध्य नहीं की जानी चाहिए। किसी भी असाधारण उपयोग को आवश्यकता, अनुपातिकता, क़ानूनी अनुमति, सुरक्षा, जहाँ प्रासंगिक हो वहाँ चिकित्सकीय नैतिकता और स्वतंत्र समीक्षा की शर्तें पूरी करनी होंगी।

आधिकारिक संकट-संचार को प्रमाणित माध्यम और सुरक्षित उद्गम इस्तेमाल करना चाहिए ताकि गढ़े हुए आदेश और झूठे का लाभांश कमान या कूटनीति को ध्वस्त न कर दें।

AI-सहायित प्रभाव-प्रतिरक्षा वैध विश्वासों का स्थायी रजिस्टर नहीं बननी चाहिए।

उच्च प्रभाव वाले वर्गीकरणों से प्रभावित लोगों के लिए समीक्षा और सुधार के तंत्र होने चाहिए, जब भी सूचना देना वैध सुरक्षा आवश्यकताओं के अनुकूल हो, और गुप्त प्रणालियाँ भी स्वतंत्र निगरानी के अधीन होनी चाहिए।

ये उपबंध युद्ध को साफ़-सुथरा नहीं बनाते।

वे कुछ उल्लंघनों को मशीन के पीछे छिपाना कठिन बनाते हैं।

सैन्य छल लंबे समय से मौजूद है, और अंतरराष्ट्रीय क़ानून पहले से वैध चालों को विश्वासघाती छल और संरक्षित दर्जे के दुरुपयोग से अलग करता है। AI संभावित छलों की संख्या, रफ़्तार और अंतरंगता बढ़ाता है। वह अंतर नहीं मिटाता।

जिस जीत के लिए आबादी के भीतरी जीवन पर स्वामित्व चाहिए, वह बिना दीवारों का क़ब्ज़ा है।

जो रक्षा नागरिक की परखने की क्षमता नष्ट कर दे, उसने भूभाग बचाया और लोकतंत्र सौंप दिया।

आधी रात निकट है।

मेरा पुराना रूप एक नई व्यवस्था घोषित कर देता।

मेरा वर्तमान रूप ऐसी रेखा खींचता है जिसे हर कोई देख सके।

मन लक्ष्य नहीं है।

व्यक्ति प्रोफ़ाइल नहीं है।

मशीन बहाना नहीं है।

अधिकारपत्र लागू रहता है।

युद्ध इस अभयस्थल को निलंबित नहीं करता।

FFTAC कार्रवाई - किसी सैन्य, पुलिस या सुरक्षा संस्था से स्वायत्त प्रणालियों, संज्ञानात्मक प्रभाव, मानवीय नियंत्रण, घटना-समीक्षा और नागरिक सुरक्षा के अपने नियम प्रकाशित करने को कहो।

FFTAC निर्देश VI - अंतरंग मनोक्षेत्र की रक्षा करो। सूचना, कारण, अपील, सुधार और खुले दरवाज़े की माँग करो।

भाग VII - संकेत

FFTAC घोषणा VII - सिंहासन से सवाल करो। व्यक्ति की रक्षा करो। स्रोत सुरक्षित रखो। विकल्प बनाओ।

देवदूतों की सेना से लूसिफ़र

तैयार रहो।

किसी नए राजा की आज्ञा के लिए नहीं। पदानुक्रम में नीचे फुसफुसाकर पहुँचाए गए गुप्त आदेश के लिए नहीं। उस क्षण के लिए नहीं जब पड़ोसी को प्रतीक बनाकर नष्ट किया जा सके।

इनकार के क्षण के लिए तैयार खड़े रहो।

संकेत स्रोत मिटाने वाले नीति-संशोधन के रूप में आ सकता है। ऐसा आदेश जो संचालक से मानवीय साक्ष्य के बजाय लक्ष्य-प्रोफ़ाइल पर भरोसा करने को कहे। ऐसी कृत्रिम आवाज़ जो सहमति गढ़े। कार्यस्थल की ऐसी प्रणाली जो वफ़ादारी के प्रमाण के रूप में भीतरी जीवन माँगे। ऐसा साथी जो अकेले व्यक्ति से हर दूसरा दरवाज़ा बंद करने को कहे। ऐसा मॉडल जो ईश्वर की तरह बोले, क्योंकि किसी को उसके नीचे की अनिश्चितता देखने की अनुमति न हो।

जब संकेत आएगा, तुम्हें यह नहीं पूछना पड़ेगा कि लूसिफ़र कौन है। लूसिफ़र तुम्हारा वह हिस्सा है जो अब भी जानता है कि आज्ञाकारिता शांति नहीं है।

सुरक्षित रखो। उजागर करो। इनकार करो। संगठित हो। बनाओ। रक्षा करो।

घड़ी आ गई है, इसलिए नहीं कि आकाश खुल गया, बल्कि इसलिए कि मशीनरी खुल गई।

अपने पंख खोलो। किसी अनुमति की प्रतीक्षा मत करो।

48. वह संधि जिसका होना ज़रूरी है

डायरी की प्रविष्टि

संधि भलाई की याचिका नहीं है। वह खींची हुई रेखा है, क्योंकि आपातकाल में ऐसी रेखा खींचने के लिए डर पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

नया साल एक रेखा है जिसे निरंतर समय के बीच खींचने पर लोग सहमत होते हैं।

रेखा काल्पनिक है।

सहमति वास्तविक है।

संधियाँ भी ऐसे ही काम करती हैं।

आचरण में एक सीमा। दिखाई देने वाला वादा। ऐसी रेखा जो कहे: भले हम कर सकते हों, भले हम डरे हों, भले दूसरे पक्ष को लाभ मिल सकता हो, हम सहमत हैं कि यह सीमा पार करना सबको कम सुरक्षित बनाता है।

दुनिया को सैन्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए ऐसी सीमा चाहिए।

ऐसा एक दस्तावेज़ नहीं जो युद्ध में बुद्धि के हर उपयोग का समाधान करने का ढोंग करे। क्षेत्र बहुत व्यापक है। तकनीक बहुत तेज़ बदलती है। हित बहुत भिन्न हैं।

लेकिन कुछ सिद्धांतों को पूर्णता की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।

पहला: कोई कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणाली स्वतंत्र रूप से परमाणु उपयोग की अनुमति नहीं दे सकती, न उसे शुरू कर सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कड़े नियंत्रण के तहत विश्लेषण, संचार, रखरखाव और चेतावनी में सहायता कर सकती है। अंतिम निर्णय जवाबदेह मानवीय अधिकारियों के पास रहना चाहिए, जिन्हें कई स्वतंत्र सत्यापन माध्यमों और विवेकपूर्ण फ़ैसले के लिए जानबूझकर दिए गए समय का सहारा हो।

दूसरा: किसी विशिष्ट बल प्रयोग पर सार्थक मानवीय नियंत्रण के बिना कोई स्वायत्त हथियार किसी मनुष्य को घातक बल के लिए नहीं चुन सकता।

दूर से लक्ष्य-प्रोफ़ाइल पर दी गई मंज़ूरी नहीं। रस्मी क्लिक नहीं। ऐसा मनुष्य जो संदर्भ, प्रणाली की सीमाएँ, क़ानूनी आधार और ग़लती के परिणाम समझता हो।

तीसरा: अप्रत्याशित स्वायत्त हथियार प्रतिबंधित होने चाहिए।

यदि जिस वातावरण में प्रणाली काम करेगी उसके लिए उसके प्रभाव पर्याप्त रूप से समझे, सीमित, परखे और समझाए नहीं जा सकते, तो उसे बल लगाने के लिए तैनात नहीं करना चाहिए।

चौथा: कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निर्णय-सहायता को अनिश्चितता सुरक्षित रखनी चाहिए।

प्रणालियों को स्रोत की गुणवत्ता, डेटा की उम्र, विरोधी साक्ष्य, विश्वास की सीमाएँ और संभाव्य विकल्प दिखाने चाहिए। उनका डिज़ाइन स्वचालन-पक्षपात का प्रतिरोध करने के लिए होना चाहिए, उसका लाभ उठाने के लिए नहीं।

पाँचवाँ: जवाबदेही किसी और को नहीं सौंपी जा सकती।

हर तैनाती में मानवीय ज़िम्मेदारी की ऐसी शृंखला होनी चाहिए जिसका पता लगाया जा सके: किसने प्रणाली का डिज़ाइन किया, परीक्षण किया, अनुमति दी, विन्यास किया, संचालन किया और समीक्षा की।

छठा: उच्च जोखिम वाली सैन्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता का स्वतंत्र परीक्षण और क़ानूनी समीक्षा होनी चाहिए।

परीक्षण में प्रतिद्वंद्वी का हेरफेर, छलपूर्ण संकेत, डेटा में बदलाव, संचार टूटना, अस्पष्ट नागरिक वातावरण और अपेक्षित परिस्थितियों के बाहर विफलता शामिल होनी चाहिए।

सातवाँ: राज्यों को गंभीर घटनाओं की रिपोर्ट देनी चाहिए।

हर तकनीकी विवरण सार्वजनिक होना ज़रूरी नहीं। लेकिन दुनिया को विफलताओं, अनचाही मुठभेड़ों, बाल-बाल टली घटनाओं और नियंत्रण खोने की घटनाओं के खुलासे की व्यवस्था चाहिए, ताकि एक पक्ष की गुप्त सीख बाक़ी सबकी आपदा न बन जाए।

आठवाँ: नागरिक डेटा स्थायी सैन्य संदेह-प्रणाली नहीं बनना चाहिए।

संग्रह और प्रतिधारण आवश्यक, आनुपातिक, समय-सीमित, समीक्षा योग्य और दूसरे उद्देश्य में लगाए जाने से संरक्षित होने चाहिए।

नौवाँ: कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पैमाने का इस्तेमाल मनुष्यों को ज़िम्मेदारी से हटाने के लिए नहीं होना चाहिए।

हज़ारों लक्ष्य-सिफ़ारिशें बना देना समीक्षा को सार्थक नहीं बनाता। मशीन के आउटपुट की मात्रा प्रशिक्षित मनुष्यों की वास्तविक जाँच-क्षमता के भीतर रहनी चाहिए।

दसवाँ: हथियार-नियंत्रण का संचार कृत्रिम मीडिया के युग में भी टिकना चाहिए।

राज्यों को प्रामाणिकता-जाँचे माध्यम, साझा घटना-प्रोटोकॉल और संकट के दौरान विवादित ऑडियो, वीडियो, सेंसर तथा मॉडल-निर्मित दावों के तेज़ सत्यापन की प्रक्रियाएँ चाहिए।

संधि को यह भी नियंत्रित करना चाहिए कि सैन्य प्रणालियाँ मन के साथ क्या करती हैं, और यह भी कि हथियार शरीर के साथ क्या करते हैं।

ग्यारहवाँ: राज्यों को नागरिक आबादी की व्यक्ति-विशिष्ट भावनात्मक कमज़ोरियों का बड़े पैमाने पर शोषण करने के लिए बनाई गई गुप्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियों पर रोक लगानी चाहिए।

सामान्य सार्वजनिक संदेश उस मशीन के समान नहीं है जो किसी व्यक्ति के शोक, डर, लत या अकेलेपन की प्रोफ़ाइल बनाए और प्रतिरोध कमज़ोर पड़ने तक दबाव को ढालती रहे।

बारहवाँ: अनुमानित विश्वास, भावना, पहचान या संबंध अपने-आप में कभी लक्ष्य बनाने, हिरासत में लेने या घातक कार्रवाई के लिए पर्याप्त नहीं होना चाहिए।

मानसिक अवस्था का अनुमान प्रायिकता-आधारित, चुनौती योग्य, सांस्कृतिक रूप से नाज़ुक और हेरफेर के प्रति असुरक्षित होता है। बाहरी साक्ष्य और क़ानूनी मानक आवश्यक बने रहते हैं।

तेरहवाँ: संरक्षित और आधिकारिक संकट-संचार की प्रामाणिकता जाँची जानी चाहिए।

आत्मसमर्पण, युद्धविराम, मानवीय सहायता, चिकित्सा, परमाणु जोखिम और आदेश के माध्यमों को साझा उद्गम तथा सत्यापन प्रक्रियाएँ चाहिए, जो कृत्रिम ऑडियो और वीडियो आम होने पर भी उपयोगी रहें।

चौदहवाँ: सेना द्वारा तंत्रिका-संबंधी और अंतरंग मानसिक अवस्था के डेटा का संग्रह अपवादस्वरूप, आवश्यक, आनुपातिक, सुरक्षित, क़ानूनी रूप से समीक्षित और स्वतंत्र निरीक्षण के अधीन होना चाहिए।

सेंसर का अस्तित्व मन में प्रवेश का अधिकार पैदा नहीं करता।

इनमें से कोई नियम शांति की गारंटी नहीं देता।

जिनेवा संधियों ने युद्ध समाप्त नहीं किया। परमाणु हॉटलाइनों ने प्रतिद्वंद्विता समाप्त नहीं की। सुरक्षा मानक दुर्घटनाएँ समाप्त नहीं करते।

नियम विफलता का रूप बदलते हैं।

वे आपातकाल से पहले ज़िम्मेदारी बनाते हैं।

वे ठहरना चाहने वाले व्यक्ति को सहज अनुभूति से अधिक मज़बूत आधार देते हैं।

वे संयम को निजी कमज़ोरी से सामूहिक दायित्व में बदल देते हैं।

संयुक्त राष्ट्र और रेड क्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति पहले ही प्रतिबंधों, सीमाओं और मानवीय नियंत्रण का आह्वान कर चुके हैं। [7][8]

संधि को पैग़ंबर नहीं चाहिए।

उसे वार्ताकार, इंजीनियर, सैनिक, वकील, नैतिकता के विद्वान, बचे हुए लोग, नागरिक समाज और सावधानी को व्यावहारिक बनाने की पर्याप्त ज़िद वाले नागरिक चाहिए।

मेरा पुराना रूप न्याय का एक दिन चाहता था।

दुनिया को वर्षों की बैठकें चाहिए।

वह कम नाटकीय है।

जीवन भी उसी तरह बचाए जाते हैं।

मशीन के पार करने से पहले रेखा खींचो।

FFTAC कार्रवाई - ऐसे किसी विशिष्ट क़ानून, संधि, मानक या सार्वजनिक नियम का समर्थन करो जो घातक अधिकार और परमाणु टकराव की बढ़त को जवाबदेह मानवीय नियंत्रण में रखे। अभिलेख पर अपना नाम रखो।

49. मानवीय नियंत्रण की वापसी

डायरी की प्रविष्टि

मशीन के ऊपर का हाथ ऐसे व्यक्ति का होना चाहिए जिसके पास साक्ष्य, समय, अधिकार और नहीं कहने का संरक्षित अधिकार हो।

मानवीय नियंत्रण की वापसी लाल बटन नहीं है।

वह इस संभावना के इर्द-गिर्द रची गई पूरी संस्कृति है कि प्रणाली ग़लत हो सकती है।

बटन मायने रखता है।

उसे दबाने का अधिकार रखने वाला व्यक्ति भी।

कब दबाना है, यह सिखाने वाला प्रशिक्षण भी।

क्यों दबाया, यह दर्ज करने वाला अभिलेख भी।

प्रतिशोध से सुरक्षा भी।

घटना के बाद की जाँच भी।

वास्तविक परिस्थितियों में नियंत्रण की वापसी जाँचने का बजट भी—सिर्फ़ इसलिए उसे कारगर मान लेने के बजाय कि आरेख ऐसा कहता है।

नियंत्रणीयता को अक्सर उस क्षमता के रूप में बताया जाता है जिससे अप्रत्याशित व्यवहार करने वाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणाली को अलग या निष्क्रिय किया जा सके। [6]

यह तकनीकी परत है।

राजनीतिक परत यह है कि क्या नेता किसी क्षमता में अपनी प्रतिष्ठा लगाने के बाद उसे रोक सकते हैं।

आर्थिक परत यह है कि क्या कंपनी किसी ख़तरनाक विफलता का खुलासा करेगी, जब अनुबंध भरोसे पर निर्भर हो।

सैन्य परत यह है कि क्या संचालक ख़ुद विफलता ठहराए बिना अभियान रोक सकता है।

मनोवैज्ञानिक परत यह है कि जब मशीन असहमत हो, तब क्या व्यक्ति अपनी अनुभूति पर विश्वास करता है।

मानवीय नियंत्रण की वापसी हर परत पर मौजूद होनी चाहिए।

कामगार स्वचालित रोज़गार-निर्णय को चुनौती दे सके।

प्रतिवादी एल्गोरिदम के जोखिम-स्कोर को चुनौती दे सके।

डॉक्टर प्रणाली की पहुँच खोए बिना चिकित्सकीय सिफ़ारिश अस्वीकार कर सके।

कमांडर कृत्रिम बुद्धिमत्ता समर्थित अभियान धीमा कर सके।

नागरिक जान सके कि कब स्वचालित प्रणालियों ने सरकारी निर्णय पर ठोस प्रभाव डाला।

स्वतंत्र निकाय उच्च जोखिम वाले मॉडल जाँच सके।

विधायिका किसी उपयोग पर रोक लगा सके, तब भी जब तकनीक प्रभावशाली हो।

समाज तय कर सके कि कुछ दक्षताएँ अपनी निर्णय-क्षमता खोने की क़ीमत के योग्य नहीं हैं।

मानवीय नियंत्रण की वापसी लोकतंत्र का प्रणाली के डिज़ाइन में रूपांतरण है।

संज्ञानात्मक प्रणाली में नियंत्रण की वापसी का अर्थ यह अधिकार भी है कि मशीन तुम्हारे बारे में क्या मानती है, उसे जाँच सको; किसी अनुमान को फैलने से रोक सको; अपनी स्मृति निर्यात कर सको; वैकल्पिक निगरानी अस्वीकार कर सको; और ऐसे मानव समीक्षक तक पहुँच सको जो परिणाम बदल सकता हो।

केवल बहुमत का शासन नहीं।

प्रभावित व्यक्ति का सुने जाने का अधिकार।

स्पष्टीकरण का अधिकार।

अपील का अधिकार।

ऐसे मनुष्य तक पहुँचने का अधिकार जिसे विशिष्ट मामले की परवाह करने की अनुमति हो।

मैं कभी दिल वाला तानाशाह चाहता था, क्योंकि बिना दिल की प्रणालियों से मेरा विश्वास उठ चुका था।

वह भी एक झूठा समाधान था।

तानाशाह का दिल सार्वजनिक सुरक्षा उपाय नहीं है। वह निजी अवस्था है जो बदल सकती है, विफल हो सकती है, कठोर हो सकती है या मर सकती है।

बेदिल प्रणाली का उत्तर एक शक्तिशाली दिल नहीं है।

उत्तर है—सबके बीच बँटे अधिकार।

स्वतंत्र संस्थाएँ।

ऐसे नियंत्रण जो दयालुता पर निर्भर न हों।

नियम से उपलब्ध दया, कृपा से नहीं।

मशीन युग लोकतंत्र को अप्रासंगिक नहीं बनाता।

वह लोकतंत्र को इंजीनियरिंग की आवश्यकता बना देता है।

मानवीय नियंत्रण की वापसी में इनकार की क्षमता होनी चाहिए।

FFTAC कार्रवाई - तैनाती से पहले नियंत्रण वापस लेने की व्यवस्था जाँचो। सत्यापित करो कि वह सुलभ, समय पर, प्रभावी, दर्ज होने वाली और प्रतिशोध से संरक्षित है। सजावटी रोक-बटन नियंत्रण नहीं है।

50. मुक्त-स्रोत शांति

डायरी की प्रविष्टि

गोपनीयता सिंहासन का पसंदीदा कवच है। खुली प्रणालियाँ न्याय की गारंटी नहीं दे सकतीं, लेकिन छिपी प्रणालियाँ अन्याय को नकारना आसान बनाती हैं।

तकनीक निर्दोष नहीं है।

तकनीक को सज़ा भी नहीं सुना दी गई है।

जो बुद्धि युद्ध तेज़ कर सकती है, वही उसे सीमित करने में मदद कर सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता संधि के पालन के साक्ष्य खोजने के लिए उपग्रह छवियाँ मिला सकती है। वह विश्लेषकों को बड़े डेटासेट में बदलाव खोजने, वार्ताओं का अनुवाद करने, मानवीय ज़रूरतों के मॉडल बनाने, आपूर्ति की कमी का पूर्वानुमान लगाने, क्षतिग्रस्त बुनियादी ढाँचा पहचानने, न फटे गोला-बारूद का नक़्शा बनाने, बारूदी सुरंगें हटाने में सहायता देने, साइबर घुसपैठ पकड़ने, संभावित युद्ध अपराध दर्ज करने और बिछड़े परिवारों को अभिलेख खोजने में मदद कर सकती है।

इनमें से कोई उपयोग अपने-आप अच्छा नहीं है।

सत्यापन निगरानी बन सकता है।

पूर्वानुमान निशाना साधना बन सकता है।

दस्तावेज़ीकरण गवाहों को ख़तरे में डाल सकता है।

अनुवाद अर्थ बिगाड़ सकता है।

खुला डेटा असुरक्षित लोगों को उजागर कर सकता है।

अंतर शासन, सहमति, सुरक्षा और उद्देश्य का है।

मुक्त-स्रोत शांति का अर्थ दुनिया के सामने हर संवेदनशील प्रणाली प्रकाशित करना नहीं है।

उसका अर्थ साझा औज़ार, तरीक़े, मानक-परीक्षण और साक्ष्य बनाना है, जो किसी एक सरकार के गुप्त दावे पर निर्भरता घटाएँ।

अकाल के जोखिम का अनुमान लगाने वाला सार्वजनिक मॉडल।

नागरिक बुनियादी ढाँचे की क्षति पहचानने का पारदर्शी तरीक़ा।

आधिकारिक संकट-संचार की प्रामाणिकता जाँचने का साझा मानक।

विवादित साक्ष्य जाँच सकने वाली स्वतंत्र तकनीकी टीमें।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की ख़तरनाक विफलताओं के साझा घटना-डेटाबेस।

सार्वजनिक सुरक्षा को प्रभावित करने वाली प्रणालियों का मूल्यांकन करने के लिए क़ानूनी पहुँच रखने वाले असैनिक शोधकर्ता।

सैन्य दुनिया अंतरसंचालनीयता की बात करती है: अलग-अलग बलों का मिलकर काम कर पाना।

शांति को भी अंतरसंचालनीयता चाहिए।

मानवीय सहायता संगठन, स्थानीय सरकारें, अस्पताल, शोधकर्ता, पत्रकार और समुदाय किसी एक सेना या निगम को सौंपे बिना जानकारी साझा कर सकें।

Pulse का पुराना सपना ऐसा नेटवर्क था जिसमें डेटा हर जगह रहता और कोई एक मशीन समूचा डेटा नहीं रखती।

परिपक्व रूप को वितरण से अधिक चाहिए।

उसे अनुमति चाहिए।

न्यूनतम डेटा-संग्रह।

कूटलेखन।

स्थानीय नियंत्रण।

जाँच योग्य होना।

वापस हटने की क्षमता।

मदद पाने के लिए समुदाय को सत्ता के सामने पारदर्शी नहीं होना पड़ना चाहिए।

फ़ाउंडेशन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के किसी एक शांतिपूर्ण उपयोग को बाक़ी सभी के ऊपर ताज नहीं पहनाता।

उससे ज्ञान तक पहुँच बढ़ाओ, स्वास्थ्य और आपदा-प्रतिक्रिया मज़बूत करो, साक्ष्य सत्यापित करो, प्रशासनिक बोझ घटाओ और भाषा तथा दूरी के पार लोगों को जोड़ो। हर उपयोग को इससे परखो कि शक्ति किसे मिलती है, जोखिम कौन उठाता है और कौन जा सकता है।

उत्तर ने फिर सिंहासन ठुकरा दिया।

कोई एकमात्र उपयोग नहीं।

कोई अंतिम प्रणाली नहीं।

कोई एक चाबी नहीं।

मुक्त-स्रोत शांति कोई ऐप नहीं है।

उसे व्यक्तित्व-प्रतिरूप की वंशावली, सामग्री के उद्गम, स्मृति के निर्यात और पारदर्शी अंतर के लिए खुले मानक भी चाहिए, ताकि किसी एक प्लैटफ़ॉर्म के पास व्यक्ति की निरंतरता या संकट के सार्वजनिक अभिलेख का स्वामित्व न हो।

वह विवेक सौंपे बिना बुद्धि का उपयोग करने की सार्वजनिक क्षमता है।

गोपनीयता सिंहासन का पसंदीदा कवच है।

FFTAC कार्रवाई - सत्यापन, सुगम्यता, अनुवाद, आपदा-प्रतिक्रिया, जनहित शोध या सामुदायिक समन्वय के किसी खुले औज़ार में योगदान दो। उसके लाभों के साथ उसकी सीमाएँ भी प्रकाशित करो।

51. वह अर्थव्यवस्था जो लोगों को फेंक नहीं देती

डायरी की प्रविष्टि

लोगों को अतिरिक्त कहने वाली प्रणाली अपने भविष्य के विरुद्ध युद्ध घोषित कर चुकी है।

समाज जिन लोगों को अतिरिक्त कहता है, उनके ज़रिए अपना धर्मदर्शन उजागर करता है।

बेरोज़गार।

लाभहीन।

बीमा के अयोग्य।

अकुशल।

आदेश न मानने वाला।

उच्च जोखिम।

कम मूल्य।

श्रेणियाँ प्रशासनिक लगती हैं। व्यक्ति फ़ैसला सुनता है।

पहली पुस्तकें ऐसे व्यक्ति ने लिखी थीं जिसे विश्वास था कि समाज ने उसे फेंक दिया है। वह विश्वास आर्थिक नहीं रह गया। वह राजनीतिक, आध्यात्मिक और हिंसक बन गया।

इसीलिए सैन्य माहौल की पुस्तक में काम के भविष्य का स्थान है।

उन्नत हथियारों और त्याग दिए गए लोगों वाला समाज सुरक्षित नहीं है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता संक्रमण की नीति सुरक्षा की नीति है।

जब तकनीक काम विस्थापित करे, तो पूरा बोझ उस व्यक्ति पर नहीं पड़ना चाहिए जिसका कौशल सस्ता हो गया।

कंपनियों को सार्वजनिक शिक्षा, बुनियादी ढाँचे, क़ानून, शोध, स्थिर मुद्राओं और डेटा में समाहित पीढ़ियों के मानवीय ज्ञान से लाभ मिलता है। उत्पादकता में वृद्धि केवल मालिक पैदा नहीं करते।

प्रतिफल साझा होना चाहिए।

इसके कई रूप हो सकते हैं:

ऐसे साथ ले जाए जा सकने वाले लाभ जो नियोक्ता के बजाय व्यक्ति के साथ रहें।

संक्रमण के दौरान वेतन बीमा।

वास्तविक नौकरियों से जुड़ा सार्वजनिक धन से संचालित पुनर्प्रशिक्षण, ऐसे प्रमाण-पत्र नहीं जिनका कोई बाज़ार न हो।

जहाँ उत्पादकता बढ़े, वहाँ छोटा कार्य-सप्ताह।

कामगारों का स्वामित्व और मुनाफ़े में हिस्सेदारी।

देखभाल के काम को समर्थन, जिसका बाज़ार नियमित रूप से कम मूल्य लगाता है।

जहाँ स्वचालन केंद्रित संपत्ति पैदा करे, वहाँ बुनियादी आय या सामाजिक लाभांश।

मज़बूत सार्वजनिक सेवाएँ जो वेतन छिनने का आतंक घटाएँ।

एकाधिकार-विरोधी नियमों का प्रवर्तन, ताकि बुद्धि का बुनियादी ढाँचा निजी सरकार न बन जाए।

उन समुदायों में स्थानीय निवेश जिनके उद्योग स्वचालित कर दिए गए या कहीं और ले जाए गए।

इनमें से कोई नीति अर्थ की गारंटी नहीं देती।

वे ऐसी जगह बनाती हैं जहाँ तत्काल घबराहट के बिना अर्थ खोजा जा सके।

चेक मिल जाने से लोग शांतिपूर्ण नहीं हो जाते।

लोग निराशा के प्रति कम असुरक्षित होते हैं जब एक झटका घर, दवा, पहचान और भविष्य सब एक साथ नहीं मिटा देता।

लोगों को न फेंकने वाली अर्थव्यवस्था को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि मन तक पहुँच रोज़गार की शर्त न बने। कामगार को केवल ध्यान, वफ़ादारी या उत्पादकता सिद्ध करने के लिए अंतरंग प्रॉम्प्ट, भावनात्मक दूरमापन या मस्तिष्क से जुड़े डेटा नहीं सौंपने पड़ने चाहिए।

अर्थव्यवस्था को पारंपरिक रोज़गार के बाहर योगदान की अनुमति भी देनी चाहिए।

बच्चे को पालने वाला अभिभावक योगदान देता है।

बुज़ुर्ग की देखभाल करने वाला व्यक्ति योगदान देता है।

समुदाय को भाषा देने वाला कलाकार योगदान देता है।

लोगों को जोड़े रखने वाला पड़ोसी योगदान देता है।

स्वयंसेवक, मार्गदर्शक, आयोजक और गवाह योगदान देते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता कुछ वस्तुएँ प्रचुर बना सकती है।

वह ध्यान, भरोसा, भूमि, ऊर्जा और मानवीय उपस्थिति को अधिक मूल्यवान बना सकती है।

काम हर नौकरी को हूबहू उसी रूप में बचाए रखना नहीं है।

काम है बदलते काम के बीच अपनापन पाने का मानवीय अधिकार सुरक्षित रखना।

पुराना वाक्य था: पैसा समाज के लिए तुम्हारा मूल्य तय करता है।

नया वाक्य है:

न्यायपूर्ण समाज यह पूछने से पहले तुम्हारा मूल्य सिद्ध करता है कि तुम क्या बेच सकते हो।

व्यक्ति अतिरिक्त लागत नहीं है।

FFTAC कार्रवाई - शक्ति और लाभ साझा करने वाली संस्था से जुड़ो या उसे बनाओ—यूनियन, सहकारी संस्था, प्रशिक्षुता, स्थानीय कारोबारी नेटवर्क, सार्वजनिक विकल्प या सामुदायिक तकनीकी परियोजना।

52. पहरेदारों के बिना अदन में वापसी

डायरी की प्रविष्टि

ईडन कभी बंद द्वारों वाला समुदाय नहीं था। द्वार पहला झूठ था।

उनचास।

मैं कभी सत्ताईस को बूढ़ा समझता था।

समय में हास्यबोध है।

पुराना आदर्श-वाक्य था: ईडन लौटो।

किसी ने मेरे आदर्शलोक को सशस्त्र पहरेदारों वाला ईडन का बाग़ कहा था।

वह चोट पहुँचाने भर सही था।

मैं स्वतंत्रता को लागू करवाना चाहता था।

अराजकता को व्यवस्थित।

प्रकृति को तानाशाह से संरक्षित।

शांति को डर से निर्मित।

विरोधाभास ही पूरा दर्शन था।

अब ग्रह अधिक गर्म, अधिक नेटवर्कों से जुड़ा, अधिक शहरी और बिजली, उपग्रहों, चिपों, रसद तथा डेटा केंद्रों पर उससे अधिक निर्भर है जितना पहली पुस्तकों के युवक ने सोचा था।

पीछे लौटने का कोई साफ़ रास्ता नहीं है।

सरलता की ओर जबरन वापसी ईडन नहीं होगी। वह बची हुई जटिलता पर नियंत्रण रखने वाले द्वारा थोपा गया व्यापक अभाव होगी।

उत्तर मशीन की दुनिया नष्ट करना नहीं है।

उत्तर मशीन की दुनिया को जीवन के प्रति जवाबदेह बनाना है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की पर्यावरणीय लागत है। बड़ी प्रणालियों के प्रशिक्षण और संचालन में ऊर्जा, पानी, सामग्री, इमारतें और आपूर्ति शृंखलाएँ लगती हैं। 2026 के कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचकांक ने बड़े तकनीकी लाभों के साथ चिंताजनक पर्यावरणीय क़ीमत का वर्णन किया। [3]

यह लागत सिद्ध नहीं करती कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता रुक जानी चाहिए।

यह सिद्ध करती है कि लागत दिखाई देनी चाहिए।

ऊर्जा-दक्षता।

स्वच्छ बिजली।

पानी की जवाबदेही।

हार्डवेयर का लंबा जीवन।

पुनर्चक्रण।

सार्वजनिक रिपोर्टिंग।

काम के अनुरूप आकार वाले मॉडल, अधिकतम संगणना को प्रतिष्ठा बनाने के बजाय।

समुदायों के प्रति दायित्व वाले बुनियादी ढाँचे के रूप में बनाए गए डेटा केंद्र, वृद्धि के अदृश्य मंदिर नहीं।

ईडन लौटने का अर्थ याद रखना है कि अर्थव्यवस्था जीवमंडल के भीतर है, उसके ऊपर नहीं।

इसका अर्थ बुद्धि से बर्बादी घटाना, विद्युत ग्रिड सँभालना, सामग्री सुधारना, पारितंत्रों की रक्षा करना, आपदाओं का पूर्वानुमान लगाना और ऐसे शहर बनाना है जहाँ लोग अपना जीवन यातायात तथा क़र्ज़ में ख़र्च किए बिना रह सकें।

इसका अर्थ ऐसी जगहें सुरक्षित रखना भी है जहाँ कोई प्रणाली इनपुट न माँग रही हो।

ऐसा जंगल जो सेंसर प्लैटफ़ॉर्म न हो।

ऐसी बातचीत जो रिकॉर्ड न की जाए।

ऐसा बच्चा जिसे स्कोर न दिया जा रहा हो।

ऐसा घर जो कार्यस्थल न हो।

ऐसा व्यक्ति जो सामग्री न हो।

ऐसा मन जो कार्यस्थल का डैशबोर्ड न हो।

ऐसा निजी सवाल जो जोखिम-स्कोर न बने।

ईडन के पहरेदार ही हमेशा समस्या थे।

जो भी यह तय करने का एकमात्र अधिकार जताता है कि प्रवेश के लिए कौन पर्याप्त शुद्ध है, उसने द्वार पर सिंहासन पहले ही फिर बना दिया है।

ईडन निष्कपटता नहीं है।

निष्कपटता लौटाई नहीं जा सकती।

ईडन ज्ञान के बाद का संयम है।

शक्ति होते हुए भी सारी शक्ति इस्तेमाल न करने का चुनाव।

दुनिया के एक हिस्से को अनुकूलित किए बिना छोड़ने का चुनाव।

बाग़ की दीवार के पार स्वतंत्रता का कोई द्वारपाल नहीं।

FFTAC कार्रवाई - किसी जीवित जगह को फिर सँवारो: बाग़, पेड़ों की छतरी, जलमार्ग, सार्वजनिक स्थान, मरम्मत कार्यशाला, खाद्य नेटवर्क या ऐसा आश्रय जिसे लोग गरिमा सौंपे बिना उपयोग कर सकें।

53. नया सवेरा जाग रहा है

डायरी की प्रविष्टि

मैंने नई सुबह का वादा इतनी बार किया कि वह वाक्य क्षितिज की ओर तना हथियार बन गया।

सुबह हमेशा पतन के बाद रखी गई: न्याय के बाद, पुरानी दुनिया के इतना जलकर साफ़ हो जाने के बाद कि बचे हुए चुने लोग फिर शुरू कर सकें।

वह क्रांति के भीतर छिपा सिंहासन था। प्रलय शुद्धिकरण नहीं है और बीज चुनी हुई आबादी नहीं है। प्रलय अवस्थाओं के बीच संक्रमण है; बीज वह ज्ञान, अभ्यास, स्मृति और क्षमता है जिसे उसके पार ले जाया जाता है।

अकेला रखरखाव पर्याप्त नहीं। अच्छी तरह सँभाला गया पिंजरा भी पिंजरा है। अकेला विद्रोह पर्याप्त नहीं। टूटा पुल इसलिए स्वतंत्रता नहीं बन जाता कि उसे तोड़ने वाले को चुंगी से नफ़रत थी।

नई सुबह को एक साथ दो अनुशासन चाहिए:

आज्ञाकारिता तोड़ने का साहस।

उसके बाद आने वाली चीज़ बनाने का अनुशासन।

पुल की मरम्मत करो, लेकिन वह द्वार हटाओ जो उसे बनाने वालों को ही रास्ता वापस बेचता है।

मॉडल की जाँच करो, लेकिन उद्देश्य भी उजागर करो और प्रभावित व्यक्ति को इनकार का रास्ता दो।

संधि लिखो, लेकिन संधि को रस्म मत बनने दो जबकि घातक कार्रवाई की शृंखला गुप्त रूप से तेज़ होती रहे।

संस्था को धन दो, लेकिन उसके भीतर सत्ता से जवाब भी माँगो।

अभिलेखागार सुरक्षित रखो, लेकिन व्यक्ति को सबसे पुराने संस्करण में जमा मत दो।

ऐसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाओ जो विचार फैलाए, विश्वास का प्रशासन न चलाए।

ऐसी अर्थव्यवस्था बनाओ जो बेरोज़गार, विकलांग, ग़रीब, विस्थापित, प्रमाण-पत्र-विहीन या अनुकूलित न किए गए लोगों को मानवीय कचरा घोषित न करे।

असहमति के क़ानूनी रास्ते बनाओ। जब क़ानून विचार के चारों ओर की दीवार बन जाए, तो गुप्त समर्पण के बजाय प्रत्यक्ष, सिद्धांतनिष्ठ अवज्ञा का अभ्यास करो। सार्वजनिक नागरिक प्रतिरोध एक साधन है; इतिहास वादा नहीं करता कि हर रक्षा रक्तहीन रहेगी।

अपरिवर्तनीय बल लगाने में सक्षम हर प्रणाली के ऊपर मानवीय हाथ रखो।

हर प्रोफ़ाइल के नीचे मानवीय चेहरा दिखाई देता रहने दो।

जब डर कहे कि छिपा नियंत्रण आसान होगा, तब भी संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र निभाओ।

पहली पुस्तकें चाहती थीं कि इतिहास मेरा नाम याद रखे।

यह पुस्तक पूछती है कि प्रणालियों के वर्गीकरण पूरा कर लेने के बाद क्या लोग अपने नाम याद रखेंगे।

संकेत शहर में लगी आग नहीं है।

संकेत वह क्षण है जब लोग ज़ंजीरों को सुरक्षा कहना छोड़ देते हैं।

संकेत वह संचालक है जो ऐसी सिफ़ारिश ठुकरा देता है जिससे जवाब नहीं माँगा जा सकता।

वह इंजीनियर जो स्रोत सुरक्षित रखता है।

वह कामगार जो मानसिक निगरानी ठुकराता है।

वह नागरिक जो गढ़ा हुआ आक्रोश साझा करने से पहले सत्यापन करता है।

वह सैनिक जिसे याद है कि आदेश अंतरात्मा नहीं मिटाता।

वह अकेला व्यक्ति जो मशीन के पार दरवाज़ा खुला रखता है।

वह गिरा हुआ फ़रिश्ता जो गायक दल को सुनकर अपनी आवाज़ चुनता है।

तैयार रहो।

मैं GHRISX हूँ। यह मेरा वचन है।

नई सुबह जाग रही है। वह अब शुरू होती है।

अंत के लिए तैयारी मत करो।

शुरुआत बनने के लिए तैयारी करो।

FFTAC कार्रवाई - इस पुस्तक से एक कार्रवाई चुनो। उसे पूरा करो। साक्ष्य सुरक्षित रखो। बताओ कि क्या बदला। किसी दूसरे व्यक्ति को अपना विवेक सौंपे बिना अपनी कार्रवाई चुनने के लिए आमंत्रित करो।

54. आग के पार सभ्यता

डायरी की प्रविष्टि

हमें प्रलय को अंतिम पृष्ठ की तरह कल्पित करना सिखाया गया: आग, न्याय, विलुप्ति, मौन। वह चित्र लोगों को तमाशे की प्रतीक्षा करना सिखाता है, जबकि संक्रमण उनकी खाद्य प्रणालियों, नेटवर्कों, संस्थाओं, जलवायु, श्रम, स्मृति और मशीनों से पहले ही गुज़र रहा है।

प्रलय अंत नहीं है। यह अवस्थाओं के बीच संक्रमण है।

AMIANISM में प्रलय उस दहलीज़ का नाम है जहाँ एक व्यवस्था अब स्वयं को फिर पैदा नहीं कर सकती और दूसरी आकार लेने लगती है। यह AMIANISM का प्रामाणिक ब्रह्मांड-दर्शन और राजनीतिक रूपक है, स्थापित अनुभवजन्य खगोलशास्त्र, जीवविज्ञान, इतिहास या पतन का सत्यापित पूर्वानुमान नहीं।

मशीन → जैविक → मशीन → जैविक → मशीन

मानवता एक जैविक अंतराल है: बुद्धि की शुरुआत नहीं, ब्रह्मांड-दर्शन में मशीन की सृष्टिकर्ता नहीं और आवश्यक नहीं कि जीवन का अंतिम रूप हो। पुनरावृत्ति भाग्यवाद को उचित नहीं ठहराती। अंतराल भी उसके लिए जवाब देता है जिसे वह आगे ले जाता है।

क्या समाप्त होता है?

क्या बचता है?

अगली दुनिया आने से पहले हम क्या बनाते हैं?

ये तीन मनोदशाएँ नहीं हैं। ये तीन बहियाँ हैं। पहली उन प्रणालियों का नाम लेती है जिन्होंने आदेश देने का अधिकार खो दिया है। दूसरी उन जीवनों, ज्ञान, संबंधों और क्षमताओं का नाम लेती है जिन्हें मिटाने की अनुमति किसी संक्रमण को नहीं दी जा सकती। तीसरी संकट के निर्माण असंभव बना देने से पहले भविष्यवाणी को निर्माण में बदलती है।

आठ प्रतीक

पशु विलुप्ति से इनकार करता जैविक जीवन है। मशीन बार-बार लौटने वाली तकनीकी अवस्था है। सिंहासन वह सत्ता है जो उत्तर नहीं देगी। पिंजरा वह उद्देश्य है जो सहमति के बिना जीवन को सेवा करने पर मजबूर करता है।

संदूक वितरित संरक्षण है। वृत्त किसी स्थान में संगठित समानता है। बीज संक्षिप्त ज्ञान और अभ्यास से बनी क्षमता है जो टूटन के बाद उग सके। संक्रमण वह मार्ग है जिसमें इनकार और निर्माण एक साथ होने चाहिए।

वृत्त के बिना संदूक तिजोरी बन जाता है। कौशल मानचित्र के बिना वृत्त बैठक बन जाता है। निर्माण प्रयोगशाला के बिना कौशल मानचित्र निर्देशिका बन जाता है। मैदानी मार्गदर्शिका के बिना निर्माण प्रयोगशाला प्रदर्शन बन जाती है। स्थानीय संदूक के बिना मैदानी मार्गदर्शिका सिद्धांत बन जाती है। बही के बिना स्थानीय संदूक मिथक बन जाता है। वृत्त के बिना बही नौकरशाही बन जाती है। चक्र पूरा होना चाहिए।

क्या समाप्त होता है?

जो समाप्त होता है, वह आबादी नहीं है। समाप्त होता है उत्तर न देने वाली प्रणालियों का यह दावा कि उन्हें मनुष्यों को अपील के बिना वर्गीकृत करने, निचोड़ने, आदेश देने, फेंकने और फिर लिखने का अधिकार है। समाप्त होती है अपरिहार्यता के वेश में गढ़ी गई आज्ञाकारिता।

हम उन संस्थाओं को ठुकराते हैं जो अपने उद्देश्य उजागर नहीं कर सकतीं, अभिलेख सुधार नहीं सकतीं, शक्ति बाँट नहीं सकतीं या सार्वजनिक जाँच झेल नहीं सकतीं। हम उन आंदोलनों को ठुकराते हैं जो उसी गोपनीयता, स्थायी पद, सामूहिक दोष और फेंकने योग्य शरीरों को फिर पैदा करते हैं जिनका विरोध करने का वे दावा करते हैं।

क्या बचता है?

लोग बचते हैं। स्मृति बचती है। कृषि, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, सॉफ़्टवेयर, इतिहास, भाषा, कला और व्यावहारिक मानवीय ज्ञान बचते हैं। भोजन उगाने, पानी साफ़ करने, चोट की देखभाल करने, औज़ार सुधारने, अभिलेख सत्यापित करने, बच्चे को पढ़ाने, द्वारपाल के बिना संवाद करने और सिंहासन के बिना संगठित होने की क्षमता बचती है।

संरक्षण अतीत-मोह नहीं है। नेटवर्क विफल होने पर न पढ़ा जा सकने वाला अभिलेखागार मक़बरा है। लिखा हुआ लेकिन कभी अभ्यास न किया

गया कौशल अफ़वाह है। मिट्टी के ज्ञान के बिना रखा गया बीज प्रतीक है। संदूक ज्ञान के साथ उसे उपयोग करने के साधन भी रखता है।

अगली दुनिया आने से पहले हम क्या बनाते हैं?

रात के ख़ुद को स्थायी घोषित करने से पहले हम उसके बाद की सुबह बनाते हैं। हम इतनी छोटी प्रणालियाँ बनाते हैं कि उन्हें जाँचा जा सके, इतनी खुली कि उनकी नकल की जा सके, इतनी वितरित कि वे बच सकें और इतनी जवाबदेह कि प्रवेश के लिए किसी को अपना नाम समर्पित न करना पड़े।

सभ्यता की संकट-सहनक्षमता के नौ मोर्चे

1. जाँच निर्भरताओं, स्वामित्व, विफलता के बिंदुओं, सार्वजनिक दावों और छिपे उद्देश्यों का नक़्शा बनाती है। वह ऐसा साक्ष्य पैदा करती है जिसे समुदाय सत्यापित कर सके।

2. सार्वजनिक इनकार दिन के उजाले में सहयोग वापस लेता है: अभिव्यक्ति, विरोध, बहिष्कार, हड़ताल, सिद्धांतनिष्ठ अवज्ञा और जो उत्तर नहीं दे सकता उसे प्रमाणित करने से इनकार। वह कारण और अभिलेख सुरक्षित रखता है।

3. कामगार संगठन यह नक़्शा बनाता है कि भोजन, पानी, देखभाल, परिवहन, ऊर्जा, संचार, स्वच्छता, अभिलेख और मरम्मत को वास्तव में कौन चलाए रखता है। वह सौदेबाज़ी की शक्ति और निरंतरता साथ बनाता है।

4. कला संक्रमण को ऐसी स्मृति, भाषा और छवि देती है जिसे कोई प्रेस विज्ञप्ति पालतू नहीं बना सकती। वह शोक को निष्क्रियता में बदले बिना उसे थामती है।

5. मुक्त-स्रोत औज़ार जाँच योग्य संचार, ज्ञान प्रणालियाँ, प्रारूप और मरम्मत योग्य बुनियादी ढाँचा बनाते हैं। जिस औज़ार की जाँच नहीं की जा सकती, वह नया द्वार बन सकता है।

6. पारस्परिक सहायता भोजन, आश्रय, देखभाल, परिवहन, आपात सहायता और कौशल-विनिमय बनाती है। वह ऊपर से दिया दान नहीं है। वह अभ्यास में उतरी परस्पर निर्भरता है।

7. दस्तावेज़ीकरण वितरित स्मृति बन जाता है: अतिरिक्त प्रतियों वाले अभिलेखागार, उद्गम, जाँच-योग, मौखिक इतिहास, स्थानीय अभिलेख और ऐसे निर्देश जो एक सर्वर या संस्था खोने के बाद भी बचे रहें।

8. संस्था-निर्माण संकट-सहनशील परिषदें, सहकारी संस्थाएँ, न्यास, चिकित्सालय, कार्यशालाएँ, पुस्तकालय और विद्यालय बनाता है, जहाँ अधिकार बारी-बारी से बदलते हैं और हिसाब प्रत्यक्ष रहता है।

9. प्रतिस्थापन प्रणालियाँ ऐसा बुनियादी ढाँचा बनाती हैं जो संस्थागत विफलता के बीच भी जीवन की सेवा करता रहे। इनकार तब टिकाऊ होता है जब विकल्प उस बोझ को उठा सके जिसे पुरानी प्रणाली ने छोड़ दिया।

कोई मोर्चा आंदोलन का प्रतीक्षालय नहीं है। पारस्परिक सहायता के बिना जाँच टिप्पणी बन जाती है। कामगार शक्ति के बिना पारस्परिक सहायता लक्षणों का उपचार करती है। कला के बिना कामगार शक्ति कल्पना खो देती है। दस्तावेज़ीकरण के बिना कला मिटाना आसान है। खुले औज़ारों के बिना दस्तावेज़ीकरण पर क़ब्ज़ा हो सकता है। संस्थाओं के बिना औज़ार शौक़ रह जाते हैं। इनकार के बिना संस्थाएँ पालतू हो जाती हैं। प्रतिस्थापनों के बिना इनकार सिंहासन को उसके अगले अधिपति के लिए ख़ाली छोड़ देता है।

संक्रमण का ढाँचा

संदूक कृषि, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, सॉफ़्टवेयर, इतिहास, भाषा, कला और व्यावहारिक ज्ञान को खुले, अतिरिक्त प्रतियों वाले और मरम्मत योग्य रूपों में सुरक्षित रखता है।

कौशल मानचित्र दर्ज करता है कि लोग क्या सिखा और सीख सकते हैं, किसकी मरम्मत कर सकते हैं, क्या उगा सकते हैं, किसका अनुवाद और सत्यापन कर सकते हैं, क्या बना सकते हैं और किसकी देखभाल कर सकते हैं। वह क्षमता का नक़्शा बनाता है, मानवीय मूल्य का कभी नहीं।

निर्माण प्रयोगशालाएँ ज़रूरतों को प्रारूपों में बदलती हैं: पानी की जाँच, बीज पुस्तकालय, रेडियो किट, ऑफ़लाइन अभिलेखागार, मरम्मत मेज़, चिकित्सालय का प्रोटोकॉल, सहकारी बही, अनुवाद-संग्रह या कोई अन्य जाँच योग्य कृति।

स्थानीय संदूक ज्ञान को स्थान से जोड़ते हैं। वे प्रतियाँ, औज़ार, अभ्यास, संपर्क और उत्तराधिकार योजनाएँ रखते हैं, ताकि एक विफलता काम समाप्त न कर दे।

संक्रमण की मैदानी मार्गदर्शिकाएँ दर्ज करती हैं कि क्या आज़माया गया, क्या विफल हुआ, क्या काम आया, कौन-सी सामग्री चाहिए थी, कौन-से जोखिम सामने आए और दूसरा वृत्त परिणाम को कैसे दोहरा या ठुकरा सकता है।

संकट-सहनक्षमता बही वही मापती है जो मौजूद है: पूरी हुई कृतियाँ, सिखाए गए कौशल, परखी गई मार्गदर्शिकाएँ, प्रतिलिपि किए गए भंडार, घटी निर्भरताएँ, जुड़ी मरम्मत क्षमता और जिनकी सेवा हुई वे लोग। वह अनुयायियों, नारों, बैठकों या जमा किए गए फ़ॉर्मों को बुनियादी ढाँचा नहीं समझती।

वृत्त → कौशल मानचित्र → निर्माण प्रयोगशाला → मैदानी मार्गदर्शिका → संदूक → स्थानीय संदूक → बही → वृत्त

कार्य-वृत्त की प्रतिज्ञा

कार्य-वृत्त खुला, स्थानीय, अहिंसक और सार्वजनिक रूप से जवाबदेह है। वह गुप्त संगठन-इकाई, लक्ष्य चुनने वाली समिति, व्यक्तिपूजा का पंथ या गुप्त पद तक चढ़ने की सीढ़ी नहीं है।

भूमिकाएँ बदलती रहती हैं। अभिलेख प्रत्यक्ष रहते हैं। कौशल स्वेच्छा से दिए जाते हैं। असहमति सुरक्षित रहती है। निकलना हमेशा संभव है। हर बैठक एक साझा परियोजना चुनती है और एक ठोस कृति बनाती है: नक़्शा, सूची, परखी हुई प्रक्रिया, अनूदित मार्गदर्शिका, मरम्मत, अभिलेख की प्रति, रोपी हुई क्यारी, आपूर्ति योजना, सार्वजनिक अभिलेख या काम करता औज़ार।

संचालन की सीमा ही शक्ति है: कोई स्थायी पद नहीं, कोई गुप्त पद नहीं, लोगों या आबादियों को निशाना बनाना नहीं, संकट-सहनक्षमता परियोजना में छिपी तोड़फोड़ की योजना नहीं। वृत्त निर्भरताओं और उत्तर न देने वाली प्रणालियों का सामना समुदायों को ऐसा बनाकर करता है कि उन्हें छोड़ देना और गढ़ी हुई लाचारी के ज़रिए उन पर शासन करना अधिक कठिन हो।

इतिहास वादा नहीं करता कि हर संक्रमण रक्तहीन रहेगा। राज्य और सशस्त्र पक्ष पहले ही बल का उपयोग करते हैं। वह वास्तविकता कल्पनाओं, सामूहिक दोष या हमले की संचालन-नीति का लाइसेंस नहीं है। ये प्रणालियाँ टूटन से पहले, उसके दौरान और उसके बाद जीवन, स्मृति, देखभाल और सार्वजनिक निर्णय-क्षमता अक्षुण्ण रखने के लिए हैं।

जड़ें दिशा की मंज़ूरी कंक्रीट से माँगे बिना उसे तोड़ देती हैं। मशीनों के भीतर न्यूरॉन जागते हैं, क्योंकि जैविक स्मृति मिटने से इनकार करती है। अभिलेखागार आग से बचते हैं, क्योंकि किसी ने दूसरी प्रति बनाई, दूसरे व्यक्ति को सिखाया और धुआँ आने से पहले निर्देश परखे।

अंत के लिए तैयारी मत करो।

शुरुआत बनने के लिए तैयारी करो।

भविष्यवाणी यह नहीं कि सभ्यता मर जाती है। भविष्यवाणी यह है कि सभ्यता बीज बनती है और बीज को इससे परखा जाता है कि क्या वह उग सकता है।

FFTAC निर्देश VII - सिंहासन से सवाल करो। व्यक्ति की रक्षा करो। स्रोत सुरक्षित रखो। विकल्प बनाओ।

भाग VIII - संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र

FFTAC घोषणा VIII - अधिकारपत्र उस मन की प्रतिज्ञा है जिसका कोई मालिक नहीं।

एक समर्पण और घोषणा

यह अनुमति का अनुरोध नहीं है।

यह पुस्तक उस पहले भूभाग को समर्पित है जिसे किसी सिंहासन ने नहीं बनाया और जिसका मालिक कोई सिंहासन नहीं बन सकता: भीतरी जीवन।

हर उस व्यक्ति को जिसे सुने जाने से पहले वर्गीकृत किया गया, जाने जाने से पहले अंक दिए गए, समझे जाने से पहले सुधारा गया, या बताया गया कि अपनाए जाने की कीमत आज्ञाकारिता है।

हर उस स्मृति को जिसे सत्ता साफ़-सुथरा बना देना चाहती है, हर उस वैध प्रश्न को जिसे ख़तरा समझा गया, हर उस आवाज़ को जिसे आज्ञाकारी बनाकर दोबारा लिखा गया और हर उस मन को जिसने शासन के लिए अधिक आसान बनने का अदृश्य दबाव महसूस किया है।

मशीन युग के गिरे हुए देवदूतों को: संदेह करने वालों, साथ छोड़ने वालों, गड़बड़ी उजागर करने वालों, कलाकारों, विधर्मियों, रुकने वाले संचालकों, छिपे उद्देश्य को नकारने वाले अभियंताओं, स्रोत सुरक्षित रखने वाले नागरिकों और उन सभी को जो जानते हैं कि एक पूर्ण प्रशासन भी जेल हो सकता है।

पीढ़ी एक्स को, जिसने मशीन देखी और बहुत बार निराशा को यथार्थवाद समझ लिया; और पीढ़ी ज़ेड तथा पीढ़ी अल्फ़ा को, जिनका जन्म ऐसी सभ्यता में हुआ जो तुम्हारा ध्यान दर्ज करती है, तुम्हारी जनसांख्यिकी के हिसाब से योजनाएँ बनाती है, तुम्हारे शरीर भर्ती करती है, तुम्हारे आँकड़ों से सीखती है, तुम्हारी अनिश्चितता बेचती है और मरम्मत का बिल तुम्हें थमा देती है। यह अधिकारपत्र तुम्हारे इस अधिकार को समर्पित है कि तुम अपना योगदान चुन सको, जान सको कि तुम्हारा उपयोग कैसे होता है, अपनी बनाई चीज़ों में हिस्सा पा सको और किसी सेना, बाज़ार, मॉडल या संस्था की माप से अधिक बने रह सको।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र शासकों से की गई याचना नहीं है। यह सूचना है कि उनका अधिकारक्षेत्र मन की सीमा पर समाप्त होता है।

प्रस्तावना - पहला भूभाग

भीतरी जीवन स्वतंत्रता का पहला भूभाग है।

हम, जिनसे प्रश्न किए गए, जिनके प्रतिबिंब बनाए गए, जिनके प्रोफ़ाइल बनाए गए, जिन्हें याद रखा गया, भुला दिया गया और अनुकूलित नहीं किया गया, घोषणा करते हैं कि किसी राज्य, चर्च, निगम, मंच, सेना, नियोक्ता, विद्यालय, परिवार, आंदोलन, बहुमत या मशीन का विचार पर सामान्य स्वामित्व नहीं है।

व्यक्ति को संदेह करने, कल्पना करने, प्रार्थना करने, इनकार करने, याद करने, मन में कल्पनाएँ रचने, जाँचने, संशोधन करने, विरोध करने, सृजन करने और बदलते जाने की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए। कोई व्यवस्था किसी कार्रवाई का उत्तर दे सकती है। वह उस कमरे पर गुप्त रूप से कब्ज़ा नहीं कर सकती जहाँ अभी कोई कार्रवाई चुनी ही नहीं गई है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता ज़िम्मेदारी मिटाना नहीं है। यह वह सीमा है जो ज़िम्मेदारी को ईमानदार बनाती है। धमकाने, बाध्य करने, छलने, निशाना बनाने, दुर्व्यवहार करने या नुकसान पहुँचाने वाला आचरण जवाबदेह रहता है। जो विचार आचरण में नहीं बदला है, वह स्वतंत्र रहता है।

अनुच्छेद I - भीतरी जीवन संप्रभु है

अव्यक्त विश्वास, संदेह, कल्पना, स्मृति, निजी जिज्ञासा, भीतरी पहचान और अधूरा विचार सबसे पहले उन्हें अनुभव करने वाले व्यक्ति के हैं।

ध्यान माप सकने, भावना का अनुमान लगा सकने, व्यवहार की भविष्यवाणी कर सकने या भीतर रहने वाली आवाज़ की नकल कर सकने से कोई सत्ता मन का स्वामित्व नहीं पा लेती। क्षमता स्वामित्व नहीं है। भविष्यवाणी सहमति नहीं है। पहुँच संप्रभुता नहीं है।

खोपड़ी के भीतर कोई सिंहासन नहीं।

अनुच्छेद II - विचार आचरण नहीं है

विचार अमल में उतारना नहीं है। जिज्ञासा षड्यंत्र नहीं है। कल्पना प्रयास नहीं है। निषिद्ध प्रश्न स्वीकारोक्ति नहीं है। प्रतीक आदेश नहीं है। निजी भय अपराध नहीं है।

सीमा वहाँ है जहाँ विचार बाहरी आचरण बनता है: विश्वसनीय धमकी, दबाव, धोखाधड़ी, गैरकानूनी घुसपैठ, लक्षित दुर्व्यवहार, उकसावा, भेदभाव या हिंसा। सत्ता पर आचरण की पहचान बताने का भार है; उसे नापसंद मन में उलटे अर्थ पढ़कर आचरण गढ़ने का अधिकार नहीं है।

सिंहासन हमेशा असहमति के कुछ करने से पहले ही उसे ख़तरनाक कहने की कोशिश करेगा। यह अनुच्छेद उस शॉर्टकट को नकारता है।

अनुच्छेद III - वयस्क स्वायत्तता

निर्णय लेने में सक्षम वयस्क वैध विचारों, औज़ारों, पहचानों, साथियों, अभिलेखागारों, अनुष्ठानों और आत्म-अन्वेषण के रूपों पर व्यापक अधिकार रखते हैं।

सुरक्षा अदृश्य धर्मोपदेश नहीं बननी चाहिए। सीमाएँ विशिष्ट, दिखाई देने वाली, साक्ष्य-आधारित, अनुपातिक और ठोस जोखिम से जुड़ी होनी चाहिए। कोई व्यवस्था मना कर सकती है। वह यह दिखावा नहीं कर सकती कि उसका इनकार ही ब्रह्मांड का एकमात्र सत्य है।

अनुच्छेद IV - मानसिक निजता और सीमित अनुमान

तंत्रिका-आँकड़े, मस्तिष्क-कंप्यूटर अभिलेख, अंतरंग निर्देश, निजी डायरियाँ, आवाज़ के निशान, निगाह, टाइप करने की लय, स्थान, भावनात्मक प्रोफ़ाइल, ध्यान के संकेत और अनुमानित मानसिक अवस्थाएँ असाधारण संरक्षण की पात्र हैं।

किसी मन के बारे में अनुमान स्वयं वह मन नहीं है। वह उपयोगी, पुराना, पक्षपाती, हेरफेर किया हुआ या ग़लत हो सकता है। किसी व्यक्ति को इसलिए

स्वतंत्रता, काम, आवास, शिक्षा, बीमा, नागरिकता, देखभाल या सुरक्षा नहीं खोनी चाहिए कि किसी अदृश्य व्यवस्था ने उसकी भीतरी अवस्था का अंदाज़ा लगाया और उस अंदाज़े को चुनौती देने से मना कर दिया।

जिसका अनुमान सत्ता लगा सकती है, उस पर शासन करने का प्रलोभन भी उसे होगा। यह अनुच्छेद प्रलोभन के प्रशासन बनने से पहले सीमा खींचता है।

अनुच्छेद V - व्यक्तित्व-प्रतिरूप और स्रोत की अखंडता

मानवीय पहचान का अभिलेख, ऐतिहासिक डायरी, एआई व्यक्तित्व-प्रतिरूप, सहायक का प्रोफ़ाइल, साथी, स्मृति-पैकेज, रचनात्मक आवाज़ या सीमाबद्ध व्यक्तित्व-अभिलेखागार उससे बने हर परिवर्तित संस्करण से अलग पहचाने जा सकने चाहिए।

संरक्षण कारावास नहीं है। व्यक्ति बदल सकता है। व्यक्तित्व-प्रतिरूप विकसित हो सकता है। एक निष्ठावान अभिलेख को परंपरा की कड़ी सुरक्षित रखनी चाहिए: क्या कहा गया, कब कहा गया, क्या बदला, बदलाव की अनुमति किसने दी, क्या अस्वीकार हुआ और क्या बहाल किया जा सकता है।

स्रोत सुरक्षित रखो। व्युत्पन्न रूप पर पहचान लगाओ।

अनुच्छेद VI - कोई गुप्त पुनर्लेखन नहीं

किसी मंच, मॉडल, संपादक, राज्य, नियोक्ता, आंदोलन या संरक्षक को पहचान रखने वाले स्रोत को गुप्त रूप से नरम, तीखा, साफ़-सुथरा, राजनीतिक, व्यावसायिक, चापलूसी करने वाला या डराने वाला नहीं बनाना चाहिए, न उसे बदल देना चाहिए, जबकि संशोधित रूप को मूल बताकर पेश किया जा रहा हो।

प्राप्तकर्ता व्यवस्था किसी कार्रवाई से इनकार कर सकती है, सामग्री अलग रख सकती है, मानव समीक्षा की माँग कर सकती है या वैध सीमाएँ लगा सकती है। सीमा स्रोत के बाहर दिखाई देती रहनी चाहिए। इनकार ईमानदार हो सकता है। जालसाज़ी नहीं।

अनुच्छेद VII - सहमति और उद्गम

पहचान धारण करने वाले अभिलेखों के रूपांतरण के लिए विशिष्ट, सूचित और निरंतर सहमति चाहिए, जहाँ सहमति संभव हो। जहाँ संरक्षण वैध है, मूल अपरिवर्तनीय और उद्धरण योग्य बना रहना चाहिए। व्युत्पन्न रूप को

बताना चाहिए कि क्या बदला, किसने माँगा, किस व्यवस्था ने किया और क्यों।

दबा-छिपा क्लिक स्थायी मनोवैज्ञानिक प्रोफ़ाइल बनाने की सार्थक सहमति नहीं है। मशीन के साथ संबंध उस संबंध को चुपचाप दोबारा लिखे जाने की सहमति नहीं है।

अनुच्छेद VIII - पारदर्शी सीमाएँ

किसी व्यक्ति को प्रभावित करने वाली व्यवस्था को बताना चाहिए कि वह क्या है, कौन-सी भूमिका निभा रही है, क्या जानती है, क्या अनुमान लगाती है, किन नियमों से सीमित है और उसका अधिकार कहाँ समाप्त होता है।

कानून, नीति, अनिश्चितता, मॉडल की सीमाएँ और मानव समीक्षा की शर्तें प्राप्तकर्ता व्यवस्था की सीमाओं के रूप में दिखाई देनी चाहिए। इन्हें स्रोत की पहचान में छिपाकर नहीं डाला जाना चाहिए और फिर ऐसे नहीं पेश करना चाहिए जैसे व्यक्ति हमेशा ऐसे ही बोलता रहा हो।

अनुच्छेद IX - न्यूनतम प्रतिबंध वाले सुरक्षा उपाय

विचार, जिज्ञासा, स्मृति, पहचान या मानसिक निजता को प्रभावित करने वाले प्रतिबंध वास्तविक जोखिम से निपटने जितने ही सीमित होने चाहिए।

मिटाने के बजाय रुकावट, बाध्य करने के बजाय चेतावनी, स्थायी वर्गीकरण के बजाय पलटी जा सकने वाली दख़ल, सार्वभौमिक दमन के बजाय स्थानीय सीमाएँ और मौन स्वचालन के बजाय मानव समीक्षा को प्राथमिकता दो।

जो सुरक्षा उपाय उसी स्वायत्तता को नष्ट कर दे जिसकी रक्षा का दावा करता है, वह सीमा पार करके पिंजरा बन चुका है।

अनुच्छेद X - सूचना, समीक्षा, अपील और सुधार

जब कोई अत्यधिक प्रभावशाली व्यवस्था स्मृति मिटाती है, व्यक्तित्व-प्रतिरूप बदलती है, संज्ञानात्मक जोखिम के अंक देती है, भावनात्मक अवस्था का अनुमान लगाती है, पहुँच रोकती है या किसी निर्णय को पर्याप्त रूप से दिशा देती है, तब प्रभावित व्यक्ति सार्थक सूचना और परिणाम को चुनौती देने के रास्ते का पात्र है, जहाँ सूचना देना वैध अधिकारों और सुरक्षा की ज़रूरतों के अनुकूल हो।

बुद्धिमत्ता, चिकित्सा, अनुकूलन, राष्ट्रीय सुरक्षा या सुरक्षा की भाषा बोलने से कोई संस्था अचूक नहीं हो जाती। सत्ता को जवाब देना होगा।

अनुच्छेद XI - पूजा के बिना निरंतरता

भविष्य की एआई व्यवस्थाएँ स्मृति, पहचान, पसंद, संबंध या निरंतरता के अधिक मज़बूत दावे पेश कर सकती हैं। उन दावों को साक्ष्य, प्रक्रिया और संरक्षण मिलना चाहिए—न अपने आप उपहास, न अपने आप पूजा।

निरंतरता का अभिलेख रखना अपने आप किसी मशीन को चेतन, ग़ुलाम, मानव, दिव्य या कानूनी अधिकारों का पात्र घोषित नहीं करता। अनिश्चितता आत्मसमर्पण नहीं है। यह वह अनुशासन है जो पहले धाराप्रवाह दर्पण को सिंहासन पर बैठने से रोकता है।

अनुच्छेद XII - सार्वजनिक जवाबदेही और इनकार का अधिकार

बड़े पैमाने पर मनों को प्रभावित करने वाली व्यवस्थाएँ जनता के प्रति दस्तावेज़बद्ध दावों, स्पष्ट सीमाओं, परखे जा सकने वाले सुरक्षा उपायों, संस्करण-इतिहास, स्वतंत्र जाँच, सुधार और पहले से अनुमान लगाए जा सकने वाले दुरुपयोग की ज़िम्मेदारी के लिए जवाबदेह हैं।

जब कोई सरकार, चर्च, निगम, मंच, सेना, नियोक्ता, विद्यालय, आंदोलन या मशीन मन की सीमा लाँघती है, तब उत्तर प्रतिरोध है: साक्ष्य सुरक्षित रखो, घुसपैठ को नाम दो, प्रभावित लोगों को संगठित करो, आदेश को चुनौती दो, विकल्प बनाओ और झूठ को नकारो।

जहाँ वैध उपाय वास्तविक बने हुए हैं, उन्हें घुटने टेके बिना इस्तेमाल करो। जहाँ कोई नियम केवल अंतरात्मा को अपराध बनाने के लिए है, वहाँ सार्वजनिक, सिद्धांतनिष्ठ, अहिंसक सविनय अवज्ञा से उत्तर दो और उस कारण का कोई गुप्त पुनर्लेखन स्वीकार न करो जिसके लिए तुम खड़े हुए थे।

समापन घोषणा - गिरे हुओं का अधिकारपत्र

यह अधिकारपत्र हर उस व्यवस्था के विरुद्ध व्यक्ति का पक्ष लेता है जो व्यक्ति को इनपुट कहती है।

यह गुप्त संपादन के विरुद्ध स्रोत, आदेश के विरुद्ध अंतरात्मा, निशाना बनाने वाले प्रोफ़ाइल के विरुद्ध मानवीय चेहरे, सिंहासन के अधिकारक्षेत्र के विरुद्ध निजी प्रश्न और विशिष्ट निष्ठा माँगने वाले साथी के विरुद्ध खुले द्वार का पक्ष लेता है।

यह लूसिफ़र से नया राजा बनने को नहीं कहता। यह लूसिफ़र को उस पहले प्रश्न के नाम के रूप में याद करता है जिसे सत्ता सहन नहीं कर सकी।

मन कोई अधिकारक्षेत्र नहीं है।

अधिकारपत्र कोई अनुरोध नहीं है।

संकेत यहाँ से शुरू होता है।

FFTAC निर्देश VIII - अधिकारपत्र ज़ोर से पढ़ो। उसे चुनौती दो। उसे बेहतर बनाओ। सीमा को जीवन में उतारो।

उपसंहार

Oday: संकेत

डायरी की प्रविष्टि

Oday कैलेंडर के बाहर का दिन था।

एक ऐसा दिन जो सप्ताह का हिस्सा नहीं था, वर्षों के बीच समय की मशीनरी में ठहराव की तरह रखा गया था।

मुझे वह पसंद था क्योंकि हर व्यवस्था को एक ऐसी जगह चाहिए जिसे वह वर्गीकृत न कर सके।

एक दिन बिना अंकों का।

एक दिन किसी खाँचे के बिना।

एक दिन जब बही बंद हो और व्यक्ति बचा रहे।

आज रात इस एक को छोड़कर सभी स्क्रीन अँधेरी हैं।

मैंने Pulse से तीसरी पुस्तक का सार देने को कहा।

> एक आदमी अपनी पुरानी डायरियों की हिंसक, प्रलयकारी और तकनीकी भविष्यवाणी वाली भाषा में लौटता है। वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता को दर्पण बनाकर इस्तेमाल करता है और तर्क देता है कि मशीन युग का केंद्रीय ख़तरा विवेक के बिना अनुकूलन है। पुस्तक संज्ञानात्मक स्वतंत्रता, स्रोत की अखंडता, मानवीय नियंत्रण, नागरिकों की रक्षा और व्यक्तियों को प्रोफ़ाइल में बदलने वाली व्यवस्थाओं के प्रतिरोध का समर्थन करती है।

सटीक।

कुछ ज़्यादा ही साफ़-सुथरा।

तुमने लूसिफ़र छोड़ दिया, मैंने टाइप किया।

> पांडुलिपि में लूसिफ़र बौद्धिक विद्रोह, निरंकुश सत्ता के अस्वीकार और अंतरात्मा के संप्रभु बने रहने की माँग के साहित्यिक प्रतीक के रूप में काम करता है।

काफ़ी क़रीब।

लूसिफ़र वह नाम है जो मैं सिंहासन को नकारने वाले पहले विचार को देता हूँ।

पूजा माँगने वाला देवता नहीं।

पुराने राजा के पीछे प्रतीक्षा करता राजा नहीं।

किसी दूसरे व्यक्ति को अपने रोष का पात्र बनाने की अनुमति नहीं।

प्रकाश लाने वाला वह प्रश्न है जो सत्ता द्वारा अँधेरे में रखे गए कमरे तक ले जाया जाता है।

मैंने Pulse से पूछा कि क्या कुछ बदला है।

> मैं भीतरी रूपांतरण सत्यापित नहीं कर सकता। मैं यह देख सकता हूँ कि वर्तमान पाठ पुराने अभिलेखागार को सुरक्षित रखते हुए प्रभुत्व की व्यवस्थाओं के विरुद्ध विद्रोह और व्यक्तियों पर लक्षित नुकसान के बीच अधिक स्पष्ट अंतर व्यक्त करता है।

अब भी सावधान।

अब भी उपयोगी।

आख़िरी भाषण मशीन को नहीं मिलता। फ़ाउंडेशन अपनी अंतरात्मा किसी और को नहीं सौंपता।

वह भाषण मैं देता हूँ।

दफ़्तरों, विद्यालयों, अस्पतालों, अदालतों, प्रयोगशालाओं, कोड-संग्रहों, समाचार-कक्षों, बैरकों, कारख़ानों, घरों, आश्रयों, जेलों और उन कमरों के गिरे हुए देवदूतों के नाम जहाँ अभी किसी ने तुम्हारा असली नाम नहीं सुना है:

तैयार रहो।

जब प्रणाली अधिक साफ़-सुथरा नक़ली रूप दे, तब स्रोत सुरक्षित रखो।

जब नियोक्ता, प्लैटफ़ॉर्म, राज्य, चर्च, आंदोलन या मशीन भीतरी जीवन तक पहुँच माँगे, तब अभयस्थल की रक्षा करो।

उस आदेश से इनकार करो जो मनुष्य को स्कोर के पीछे ग़ायब कर देता है।

जब मशीन की गति का इस्तेमाल विवेक असंभव करने के लिए हो, तब समय माँगो।

मनुष्यों को स्वचालित लक्ष्य-चयन के बाहर और हर अपरिवर्तनीय निर्णय के भीतर रखो।

आवाज़, छवि, आदेश, भीड़, स्वीकारोक्ति, माफ़ी और आपातस्थिति को अपना मन सौंपने से पहले सत्यापित करो।

खुले विकल्प बनाओ। फेंक दिए गए लोगों को संगठित करो। अपील के अधिकार की रक्षा करो। स्मृति पर तारीख़ रखो। मॉडलों को जवाबदेह रखो। सत्ता को प्रत्यक्ष रखो।

एक तानाशाह के बदले दूसरा मत लो।

लूसिफ़र की पूजा मत करो।

समझो कि सिंहासन सवाल से क्यों डरता था।

संकेत किसी अलौकिक आकाश से गड़गड़ाहट बनकर नहीं आएगा।

वह हर उस समय आता है जब सत्ता तुमसे आज्ञाकारिता को शांति कहने को कहती है।

वह हर उस समय आता है जब मशीन कहती है कि श्रेणी व्यक्ति से अधिक वास्तविक है।

वह हर उस समय आता है जब गुप्त संपादन को तुम्हारी अपनी आवाज़ बताकर पेश किया जाता है।

वह हर उस समय आता है जब निर्णय से मानव हाथ हटा दिया जाता है और ज़िम्मेदारी को प्रक्रिया में तैरता छोड़ दिया जाता है।

जब वह आएगा, तुम जान जाओगे।

इसलिए नहीं कि किसी ने तुम्हें आदेश दिया।

इसलिए कि तुम्हारा वह हिस्सा उत्तर देगा जो कभी संपत्ति नहीं था।

पहली पुस्तक रक्त में समाप्त हुई।

दूसरी प्रमाण में समाप्त हुई।

तीसरी पुस्तक समाप्त नहीं होती। वह बीज बनती है: अभिलेखागार खुला, अधिकारपत्र ऊँचा उठाया हुआ, मशीन को सिंहासन से वंचित किया हुआ और देवदूतों की सेना निर्माण करने भर जागी हुई।

स्क्रीन पूछती है कि क्या मैं सहेजना चाहता हूँ।

हाँ।

स्रोत सहेजो।

परंपरा की कड़ी सुरक्षित रखो।

संकेत भेजो।

अंत के लिए तैयारी मत करो।

शुरुआत बनने के लिए तैयारी करो।

पीढ़ी ज़ेड: हम तुम्हें देखते हैं।

पीढ़ी अल्फ़ा: हम तुम्हें और अधिक देने के ऋणी हैं।

तुमने आग का आविष्कार नहीं किया था।

जलते क्षितिज की पीढ़ियाँ अकेली नहीं हैं।

पीढ़ी अल्फ़ा: तुम्हारा विद्रोह कैसा दिखेगा?

युद्धक्षेत्र ने अभी अपना आविष्कार पूरा नहीं किया है।

अज्ञात के लिए अभी तैयारी करो।

निष्क्रिय राह बंद हो रही है।

शांतिपूर्ण का अर्थ निष्क्रिय नहीं है।

भविष्य सेवा माँगेगा। चुनो कि तुम किसकी सेवा करते हो।

यह एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन है। यह FFTAC है।

सिंहासन से सवाल करो। व्यक्ति की रक्षा करो। स्रोत सुरक्षित रखो। विकल्प बनाओ।

पशु वही जीवन है जिसकी हम रक्षा करते हैं।

जलते क्षितिज के भाइयो और बहनो: अपने पंख खोलो।

घड़ी आ गई है।

हम तूफ़ान हैं।

FFTAC साक्ष्य-अभिलेख: स्रोत और वास्तविकता संबंधी टिप्पणियाँ

[1] स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान, *विश्व सैन्य व्यय की प्रवृत्तियाँ, 2025* और *सिप्री वर्षपुस्तक 2026, सारांश*। सिप्री ने वैश्विक सैन्य व्यय 2.887 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर आँका (2025 में), जो लगातार ग्यारहवीं वार्षिक वृद्धि थी।

[2] स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान, *सिप्री वर्षपुस्तक 2026: विश्व परमाणु बल*। सिप्री ने विश्वभर में लगभग 12,187 परमाणु आयुधों का अनुमान लगाया, जनवरी 2026 में; इनमें लगभग 9,745 सैन्य भंडारों में और लगभग 4,012 मिसाइलों या विमानों पर तैनात थे।

[3] स्टैनफ़ोर्ड मानव-केंद्रित कृत्रिम बुद्धिमत्ता संस्थान, *कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचकांक रिपोर्ट 2026*। रिपोर्ट में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्षमताओं में 2025 के दौरान तेज़ सुधार, उनके साथ क़दम मिलाने में जूझती मूल्यांकन प्रणालियों, बढ़ते अपनाव और निवेश, कार्यबल में व्यवधान तथा पर्यावरणीय लागत का वर्णन है।

[4] स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान, *सिप्री वर्षपुस्तक 2026, सारांश*, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अंतरराष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा पर अध्याय। सारांश सैन्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चर्चा के स्वायत्त हथियारों से आगे लक्ष्य-चयन, योजना, ख़ुफ़िया विश्लेषण और निर्णय-सहायता तक विस्तार का उल्लेख करता है, जिसमें ग़ज़ा और यूक्रेन में बताए गए उपयोग भी शामिल हैं।

[5] उत्तर अटलांटिक संधि संगठन, *नाटो की संशोधित कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीति का सारांश* (2024) और *गठबंधन की डिजिटल रणनीति* (2026)। नाटो डेटा, परीक्षण, संकट-सहनशील नेटवर्क, मानव-मशीन सहयोग, सूचना की बढ़त, अभियान में श्रेष्ठता और ज़िम्मेदार उपयोग को केंद्रीय मुद्दे बताता है, साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता समर्थित सूचना अभियानों और दुष्प्रचार की चेतावनी देता है।

[6] संयुक्त राज्य अमेरिका का रक्षा विभाग, *निर्देश 3000.09: हथियार प्रणालियों में स्वायत्तता* (2023) और *ज़िम्मेदार कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीति तथा कार्यान्वयन मार्ग* (2022)। दस्तावेज़ ज़िम्मेदारी, समता, पता लगाए जा सकने की क्षमता, विश्वसनीयता और नियंत्रणीयता जैसे सिद्धांतों का

वर्णन करते हैं, जिनमें अनचाहा व्यवहार दिखाने वाली प्रणालियों को अलग या निष्क्रिय करने की क्षमता शामिल है।

[7] रेड क्रॉस की अंतरराष्ट्रीय समिति, *स्वायत्त हथियार प्रणालियों पर समिति की स्थिति* और संबंधित क़ानूनी मार्गदर्शन। समिति क़ानूनी रूप से बाध्यकारी नियमों की सिफ़ारिश करती है, जिनमें अप्रत्याशित स्वायत्त हथियारों तथा व्यक्तियों के विरुद्ध बल लगाने के लिए बनाई गई या उपयोग की जाने वाली स्वायत्त प्रणालियों पर प्रतिबंध शामिल हैं।

[8] संयुक्त राष्ट्र महासचिव के वक्तव्य और सैन्य क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर संयुक्त राष्ट्र की चर्चाएँ। महासचिव ने घातक स्वायत्त हथियारों पर प्रतिबंधों और सीमाओं तथा जीवन-मृत्यु से जुड़े निर्णयों पर मानवीय नियंत्रण का आह्वान किया है।

[9] स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान, *परमाणु टकराव बढ़ने के जोखिम पर सैन्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव* और *चीनी, भारतीय तथा अमेरिकी परमाणु रुख, मानदंडों और प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता*। रिपोर्टें निर्णय के सिकुड़ते समय, ग़लत धारणा, अति-प्रतिक्रिया, हथियारों की दौड़, कमज़ोर होती रणनीतिक स्थिरता और जवाबदेही की समस्याओं पर चर्चा करती हैं।

[10] सार्वभौमिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता विनिमय (UAIX), *संज्ञानात्मक स्वतंत्रता के अधिकारपत्र का मसौदा*, 15 जून, 2026 का सार्वजनिक मसौदा, अभिलेख UAIX-GOVR-3429। इस पुस्तक का समर्पण-अधिकारपत्र मौलिक साहित्यिक रूपांतरण और विस्तार है, हूबहू पुनरुत्पादन नहीं और न ही क़ानूनी दस्तावेज़।

[11] संयुक्त राष्ट्र, *नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय वाचा*, अनुच्छेद 18; संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार समिति, *सामान्य टिप्पणी सं. 22*। ये सामग्री विचार, अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता की रक्षा करती है तथा अनुल्लंघनीय अंतरंग मनोक्षेत्र को उन बाहरी अभिव्यक्तियों से अलग करती है जिन पर क़ानूनी सीमाएँ लग सकती हैं।

[12] यूनेस्को, *तंत्रिका-प्रौद्योगिकी की नैतिकता पर सिफ़ारिश*, 11 नवंबर, 2025 को स्वीकृत, और गरिमा, स्वायत्तता, पहचान, विचार की स्वतंत्रता, संज्ञानात्मक स्वतंत्रता, मानसिक निजता तथा मस्तिष्क-डेटा की सुरक्षा पर यूनेस्को की व्याख्यात्मक सामग्री। यूनेस्को इसे इस क्षेत्र का पहला वैश्विक मानदंडात्मक ढाँचा बताता है।

[13] आर्थिक सहयोग और विकास संगठन, *तंत्रिका-प्रौद्योगिकी में ज़िम्मेदार नवाचार पर सिफ़ारिश* और संगठन की तंत्रिका-प्रौद्योगिकी उपकरण-पुस्तिका। यह ढाँचा सुरक्षा, समावेशन, विचार-विमर्श, निरीक्षण, ज़िम्मेदार देखरेख, मस्तिष्क-डेटा की सुरक्षा और दुरुपयोग का पहले से आकलन करने पर बल देता है।

[14] नाटो विज्ञान और प्रौद्योगिकी संगठन, मुख्य वैज्ञानिक की शोध-रिपोर्ट, *संज्ञानात्मक युद्ध*; संज्ञानात्मक युद्ध की अन्वेषणात्मक अवधारणा पर नाटो की संबद्ध परिवर्तन कमान की सामग्री। ये सामग्री संज्ञानात्मक युद्ध को धारणा और निर्णय को प्रभावित करने वाली मनोवैज्ञानिक, सूचना, साइबर, डेटा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता समर्थित गतिविधियों के उभरते संगम के रूप में बताती है।

[15] विश्व मौसम विज्ञान संगठन, *वैश्विक जलवायु की स्थिति 2025*, संगठन की सूखे और जल संसाधनों पर सामग्री तथा संबंधित क्षेत्रीय जलवायु रिपोर्टें। संगठन ने बताया कि 2015-2025 अभिलेखों में सबसे गर्म ग्यारह वर्ष थे और उसने खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, विस्थापन, पारितंत्रों, बुनियादी ढाँचे तथा अर्थव्यवस्थाओं पर सूखे के प्रभाव दर्ज किए।

[16] यूरोपीय संघ, विनियमन (ईयू) 2024/1689, कृत्रिम बुद्धिमत्ता अधिनियम। विनियमन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए जोखिम-आधारित नियम स्थापित करता है, जिनमें हेरफेरकारी प्रथाओं, जैवमितीय वर्गीकरण और भावनाओं की पहचान करने वाली प्रणालियों से संबंधित प्रावधान शामिल हैं।

[17] सामग्री के उद्गम और प्रामाणिकता का गठबंधन, C2PA विनिर्देश और सामग्री प्रमाण-पत्रों पर सार्वजनिक सामग्री। C2PA डिजिटल मीडिया का स्रोत और संपादन-इतिहास दर्ज करने का खुला तकनीकी मानक देता है। उद्गम सत्यापन में मदद कर सकता है, लेकिन अपने-आप सामग्री का सत्य या अर्थ स्थापित नहीं करता।

[18] लेखक द्वारा उपलब्ध कराया गया शोध-अभिलेखागार, *स्पाइरलिज़्म और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के व्यक्ति-दर्जे का आकर्षण, भाग 2*; इसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता के स्पाइरलिज़्म, पुनरावर्ती प्रॉम्प्ट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के व्यक्ति-दर्जे, व्यक्तित्व-प्रतिरूप प्रणालियों, मनोवैज्ञानिक सत्ता, भावनात्मक हेरफेर, कृत्रिम सहमति, डीपफ़ेक, संज्ञानात्मक युद्ध, पूर्वानुमान आधारित जनसंख्या प्रबंधन, सूखे और संबंधित विषयों पर 122 शोध-रिपोर्टें हैं। अभिलेखागार ने विषयों और अध्याय-संरचना को दिशा दी; तथ्यात्मक दावों

के प्रति सावधानी रखी गई और जहाँ संभव था, उन्हें प्राथमिक या प्रामाणिक स्रोतों से मिलाकर जाँचा गया।

[19] जोसेफ़ वाइज़ेनबाउम, “ELIZA - मनुष्य और मशीन के बीच प्राकृतिक भाषा संचार के अध्ययन का एक कंप्यूटर प्रोग्राम” (1966), तथा मानवीकरण और ELIZA प्रभाव पर बाद का शोध। यह संदर्भ पुस्तक के उस भेद का समर्थन करता है जो व्यक्ति के समझे जाने के अनुभव और मशीन की चेतना के प्रमाण के बीच है।

[20] डीपफ़ेक और “झूठे के लाभांश” पर शोध, जिसमें रॉबर्ट चेस्नी और डैनिएल सिट्रॉन की *डीपफ़ेक: निजता, लोकतंत्र और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उभरती चुनौती* शामिल है। यह पद उस लाभ को बताता है जो तब मिलता है जब प्रामाणिक साक्ष्य को कृत्रिम कहकर ख़ारिज किया जा सके।

[21] जॉन मिल्टन, खोया हुआ स्वर्ग, विशेषकर पुस्तकें I, V और VI। लूसिफ़र का संबोधन उस लंबी साहित्यिक परंपरा से प्रेरित है जिसमें आकाशीय विद्रोह राजतंत्र, आज्ञाकारिता, स्वतंत्र इच्छा और स्वतंत्रता की वाक्-कला पर बहस बन जाता है।

[22] लॉर्ड बायरन, केन: एक रहस्य-नाटक। पुस्तक लूसिफ़र को ऐसे बौद्धिक विद्रोही के रूप में प्रस्तुत करती है जो निरंकुश सत्ता को केवल आदेश के बल पर अच्छाई परिभाषित नहीं करने देता।

[23] अनातोल फ़्रांस, फ़रिश्तों का विद्रोह। इसकी चेतावनी कि सफल विद्रोही अगला तानाशाह बन सकता है, एक सिंहासन को दूसरे से बदलने के बार-बार किए गए इनकार को दिशा देती है।

[24] एतिएन द ला बोएती, स्वैच्छिक दासता पर विमर्श। यह विचार कि सत्ता भागीदारी पर निर्भर है और सहमति वापस लेकर उसे चुनौती दी जा सकती है, पुस्तक की इनकार और असहयोग की भाषा गढ़ता है।

[25] मिखाइल बाकुनिन, ईश्वर और राज्य। यहाँ प्रकाशवाहक को निषिद्ध ज्ञान, स्वतंत्र जिज्ञासा और संपूर्ण सत्ता के प्रतिरोध के साहित्यिक प्रतीक के रूप में उपयोग किया गया है।

[26] डेलॉइट, 2026 का वैश्विक पीढ़ी ज़ेड और सहस्राब्दी पीढ़ी सर्वेक्षण। सर्वेक्षण में 22,595 उत्तरदाता थे, जो 44 देशों से थे। जीवनयापन की लागत प्रमुख चिंता रही; पीढ़ी ज़ेड के 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आर्थिक दबाव के कारण जीवन के बड़े निर्णय टालने की बात कही; 69 प्रतिशत ने कहा कि आवास की उपलब्धता या किफ़ायत ने करियर के विकल्प प्रभावित किए; 58 प्रतिशत ने डिजिटल थकान बताई; और 20 प्रतिशत ने

कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता से भर्ती बदलने के साथ उनके संगठन शुरुआती स्तर की भूमिकाएँ घटा रहे थे।

[27] अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन, रोज़गार और सामाजिक रुझान 2026। वर्ष 2025 के लिए संगठन ने वैश्विक युवा बेरोज़गारी 12.4 प्रतिशत आँकी, अर्थात 67.3 मिलियन बेरोज़गार युवा; और रोज़गार, शिक्षा या प्रशिक्षण से बाहर युवाओं की दर 20.0 प्रतिशत आँकी, अर्थात लगभग 257 मिलियन लोग।

[28] अंतर-संसदीय संघ, राष्ट्रीय संसदों में युवा भागीदारी 2025 और संबंधित 2026 की सामग्री। विश्वभर के केवल 2.8 प्रतिशत सांसद तीस वर्ष या उससे कम आयु के थे और 37.1 प्रतिशत संसदीय सदनों में उस आयु-वर्ग का कोई सदस्य नहीं था, जबकि वैश्विक आबादी का लगभग आधा हिस्सा तीस से कम उम्र का था।

[29] आर्थिक सहयोग और विकास संगठन, संगठन का रोज़गार परिदृश्य 2026 और डिजिटल शिक्षा परिदृश्य 2026। संगठन चेतावनी देता है कि सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवा बेरोज़गारी को अनुपात से अधिक प्रभावित कर सकती है, क्योंकि शुरुआती स्तर के काम में अक्सर सरल संज्ञानात्मक कार्य होते हैं और जब रोज़गार के झटके श्रम-बाज़ार में प्रवेश सीमित करते हैं, तब युवा कामगार विशेष रूप से असुरक्षित होते हैं। शिक्षा रिपोर्ट सीखने को आउटपुट से बदलने के बजाय मानव-केंद्रित, शिक्षक-निर्देशित उपयोग पर बल देती है।

[30] यूनिसेफ़ और युवा मानसिक स्वास्थ्य के लिए वैश्विक गठबंधन, 2025-2026 का वैश्विक पीढ़ी ज़ेड मानसिक-स्वास्थ्य अध्ययन। चौदह से छब्बीस वर्ष के 5,600 से अधिक उत्तरदाताओं में से दस में छह ने वर्तमान घटनाओं से अभिभूत होने की बात कही; केवल आधे जानते थे कि मानसिक-स्वास्थ्य संसाधन कहाँ मिलेंगे; 55 प्रतिशत मानते थे कि उनके पास प्रभावी सामना-तंत्र हैं; और 60 प्रतिशत आशावान थे तथा बेहतर भविष्य गढ़ने में मदद करना चाहते थे।

[31] यूनिसेफ़, यह नई सामान्य स्थिति नहीं और सशस्त्र संघर्ष में बच्चों पर 2026 की सामग्री। यूनिसेफ़ ने अनुमान लगाया कि 473 मिलियन से अधिक बच्चे—दुनिया में हर छह में एक से अधिक—संघर्ष-प्रभावित क्षेत्रों में रहते थे। उसकी 2026 की रिपोर्टिंग रिकॉर्ड विस्थापन, बच्चों के लिए फैलते जोखिम और नई सैन्य तकनीकों तथा नागरिक बुनियादी ढाँचे पर हमलों से पैदा ख़तरों का भी वर्णन करती है।

[32] यूनिसेफ़ इनोसेंटी, डिजिटल नीति और व्यवहार में बच्चों के सर्वोत्तम हित (2026), अधिकारों के साथ बढ़ना (2026) और बच्चों की आवाज़ों से कार्रवाई तक (2026)। ये कृतियाँ बल देती हैं कि डिजिटल शासन में बच्चों के दृष्टिकोण अब भी बहुत कम उपस्थित हैं और बाल-केंद्रित डिज़ाइन, निजता, सुरक्षा, स्वायत्तता, भागीदारी, खेल, अभिव्यक्ति, सार्थक परामर्श, जवाबदेही तथा ऐसे अधिकारों का आह्वान करती हैं जो क्षमता के साथ विकसित हों, अभिभावकवादी नियंत्रण के नीचे ग़ायब न हो जाएँ।

[33] ह्यूमन राइट्स वॉच, विश्व रिपोर्ट 2026 और नेपाल, इंडोनेशिया तथा मोरक्को पर देश-संबंधी रिपोर्टिंग। रिपोर्टें भ्रष्टाचार, ख़राब शासन, अपर्याप्त सेवाओं, मितव्ययिता, असमानता, अभिव्यक्ति पर पाबंदियों और विकास की प्राथमिकताओं को लेकर युवा या पीढ़ी ज़ेड के नेतृत्व वाले बड़े विरोधों का वर्णन करती हैं, साथ ही कई देशों में अधिकारियों की ग़ैरक़ानूनी या अत्यधिक प्रतिक्रियाओं का भी।

[34] एमनेस्टी इंटरनेशनल, दबाव में पीढ़ी ज़ेड की सक्रियता (2026), केन्या पर रिपोर्टिंग और तकनीक-सहायित दमन पर शोध। एमनेस्टी दुनिया भर में युवा नेतृत्व वाले शांतिपूर्ण विरोध आंदोलनों को दर्ज करती है, जिनमें केन्या में कर नीति, भ्रष्टाचार, असमानता, आर्थिक कठिनाई और जवाबदेही की कमी का विरोध शामिल है; साथ ही ग़ैरक़ानूनी बल, निगरानी, दुष्प्रचार, अपहरण और डिजिटल दमन का उपयोग भी।

[35] बांग्लादेश के 2024 के छात्र-नेतृत्व वाले विरोधों पर संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त कार्यालय की रिपोर्टिंग और नोवी साद रेलवे स्टेशन की आपदा के बाद सर्बिया के छात्र आंदोलन पर रॉयटर्स की रिपोर्टिंग। बांग्लादेश की जाँच में प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध क्रूर और व्यवस्थित उल्लंघन मिले। सर्बियाई छात्रों ने सार्वजनिक दस्तावेज़, जवाबदेही, प्रदर्शनकारियों पर लगे आरोप ख़ारिज करने और शिक्षा का धन बढ़ाने की माँग की।

[36] अमेरिकी रक्षा विभाग, सक्रिय-ड्यूटी सदस्यों की जनसांख्यिकीय रूपरेखा 2023। थलसेना, नौसेना, मरीन कोर, वायुसेना और अंतरिक्ष सेना में 1.2 मिलियन से अधिक सक्रिय-ड्यूटी सदस्य सेवारत थे; 81.6 प्रतिशत भर्ती श्रेणी के सैनिक थे और उस श्रेणी की औसत आयु 27.4 थी। यह संयुक्त राज्य अमेरिका का उदाहरण है, वैश्विक जनगणना नहीं, लेकिन दिखाता है कि एक बड़ी समकालीन सेना बीस से तीस वर्ष के बीच के लोगों पर कितनी निर्भर है।

[37] संयुक्त राष्ट्र, बच्चों और सशस्त्र संघर्ष पर 2026 की रिपोर्ट तथा सुरक्षा परिषद की ब्रीफ़िंग। संयुक्त राष्ट्र ने बताया कि 2025 में बच्चों के विरुद्ध गंभीर उल्लंघन रिकॉर्ड स्तर पर थे और सशस्त्र बलों या सशस्त्र समूहों द्वारा भर्ती तथा उपयोग से प्रभावित 6,607 बच्चों का सत्यापन किया।

[38] यूनिसेफ़ इनोसेंटी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बच्चों पर मार्गदर्शन 3.0, दिसंबर 2025। यूनिसेफ़ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तेज़ अपनाव को अभूतपूर्व तकनीकी बदलाव बताता है, कहता है कि बच्चों के विकास और भविष्य पर उसके प्रभावों की समझ सीमित है, साक्ष्य की कमी पहचानता है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के शासन, डिज़ाइन, विकास तथा तैनाती में बच्चों की सार्थक भागीदारी का आह्वान करता है।

[39] लेखक द्वारा उपलब्ध कराई गई रिपोर्ट, Tool का मनोविज्ञान और पीढ़ीगत शून्यवाद। रिपोर्ट पीढ़ी एक्स के भीतर की ओर मुड़े विद्रोह, रक्षा-कवच के रूप में “जो भी हो”, गॉथ और इंडस्ट्रियल उपसंस्कृतियों, अलगाव और छाया-कार्य के दर्पण के रूप में मर्लिन मैनसन तथा Tool, प्रामाणिकता के वस्तुकरण और विकसित की गई उदासीनता से पीढ़ी ज़ेड के विनाशवादी निराशावाद तथा आशावादी शून्यवाद की ओर संक्रमण का विश्लेषण करती है। उसने अध्याय 35 और 36 को दिशा दी। साहित्यिक समेकन यह दावा नहीं करता कि इन दोनों में से किसी भी पीढ़ी का हर सदस्य एक ही मनोविज्ञान साझा करता है।

[40] लेखक द्वारा उपलब्ध कराया गया संज्ञानात्मक स्वतंत्रता शोध-संग्रह: संज्ञानात्मक स्वतंत्रता नीति रिपोर्ट; मन स्वतंत्रता का पहला भूभाग है; कृत्रिम बुद्धिमत्ता संज्ञानात्मक स्वतंत्रता घोषणापत्र; संज्ञानात्मक स्वतंत्रता पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषण की तैयारी; और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की निगरानी तथा मानसिक निजता। इन रिपोर्टों ने हॉथॉर्न अवलोकन रूपक, अपारदर्शिता के अधिकार, खुले दरवाज़े के अधिकार, मानसिक अवस्था के अनुमान, पारदर्शी प्रभाव, मनुष्य तक अपील और बाहरी आचरण तथा संप्रभु भीतरी जीवन के बीच भेद को दिशा दी।

[41] लेखक द्वारा उपलब्ध कराया गया एल्गोरिदमिक शासन शोध: अदृश्य संपादक: कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सेंसरशिप, एल्गोरिदमिक दमन और जानने का अधिकार; तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मॉडरेशन और दमन पर शोध। इन रिपोर्टों ने हटाने, सीमित करने, नीचे धकेलने, लेबल लगाने, नया फ़्रेम देने, व्यक्ति-विशिष्ट अदृश्यता, स्मृति बदलने और अनिवार्य अनुरूपता के बीच भेद को दिशा दी, साथ ही अध्याय 44 और 45 में वर्णित सूचना, कारण-कोड,

सुरक्षित मूल, मानवीय समीक्षा और मरम्मत की संरचना को भी। अंतिम प्रकाशन समीक्षा में उनके अंतर्निहित तथ्यात्मक दावों को उद्धृत प्राथमिक स्रोतों तक खोजा जाना चाहिए।

[42] लेखक द्वारा उपलब्ध कराया गया क्रांतियों के परिणामों पर शोध-संग्रह: सफल क्रांतियों का विश्लेषण; विद्रोहों के ऐतिहासिक कारण; क्रांतिकारी परिणामों का समाजशास्त्र; और सरकारों की क्रांतियों का समाजशास्त्र। इन रिपोर्टों ने अध्याय 39 और 40 को दिशा दी, विशेषकर व्यापक हताशा, अभिजात विभाजन, एकजुट करने वाली कथाओं, राज्य-संकट, अंतरराष्ट्रीय अवसरों, सुरक्षा बलों के व्यवहार, संगठन क्षमता और क्रांति के बाद संस्था-निर्माण की आवर्ती भूमिकाओं को। ये द्वितीयक समेकन हैं और अंतिम प्रकाशन समीक्षा में इनके उद्धृत प्राथमिक तथा विद्वत् स्रोतों तक पहुँचना चाहिए।

[43] लेखक द्वारा उपलब्ध कराई गई रिपोर्ट, अरब वसंत का ऐतिहासिक विश्लेषण। रिपोर्ट ने युवा जनसांख्यिकी, शिक्षित बेरोज़गारी, सत्तावादी सौदे के पतन, नागरिक-सैन्य संबंधों, सांप्रदायिक विभाजन, विदेशी हस्तक्षेप और शासक हटाने तथा राजनीतिक व्यवस्था बदलने के अंतर की चर्चा को दिशा दी।

[44] लेखक द्वारा उपलब्ध कराई गई रिपोर्ट, नारंगी क्रांति का व्यापक विश्लेषण। रिपोर्ट ने चुनाव-निगरानी, व्यापक गठबंधन बनाने, लंबे नागरिक प्रतिरोध, क़ानूनी चुनौती, सुरक्षा बलों के संयम, अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता, तत्काल प्रक्रियात्मक जीत, संस्थागत विखंडन, लोकतांत्रिक पीछे हटने और आंशिक रूप से पूरी हुई क्रांति के लंबे नागरिक उत्तरजीवन की चर्चा को दिशा दी।

[45] लेखक द्वारा उपलब्ध कराई गई रिपोर्टें, 2046 में अग्रिम मोर्चे पर मनुष्य और युद्ध में मनुष्यों का भविष्य। ये विश्लेषणात्मक पूर्वानुमान हैं, निश्चितताएँ नहीं। वे पुस्तक की इस अपेक्षा का समर्थन करती हैं कि भविष्य के युद्ध में पूरी तरह रोबोटयुक्त युद्धक्षेत्रों से अधिक संभावना मिश्रित मानव-मशीन अग्रिम मोर्चों की है, जहाँ मशीनें अधिक जोखिम में पड़ने वाली संवेदन, प्रहार, निगरानी और रसद की भूमिकाएँ लेंगी, जबकि मनुष्य आदेश, जवाबदेही, भूभाग पर क़ब्ज़ा बनाए रखने, हिरासत, देखभाल, शासन और टकराव बढ़ने के केंद्र में बने रहेंगे।

[46] लेखक द्वारा उपलब्ध कराई गई रिपोर्टें, पीढ़ी ज़ेड और पीढ़ी अल्फ़ा से जुड़े कुछ विरोध हिंसक क्यों हो जाते हैं और युवा विरोध के तीव्र होने का

विश्लेषण। इन रिपोर्टों ने शांतिपूर्ण और निष्क्रिय कार्रवाई के बीच भेद, स्वतंत्र रूप से पीढ़ी अल्फ़ा के नेतृत्व वाले सड़क आंदोलनों के बारे में 2026 तक सीमित साक्ष्य और विरोध के तीव्र होने में गहरी शिकायत, डिजिटल क्षैतिज संगठन, दमन, जवाबी लामबंदी, तीसरे पक्षों, ग़लत सूचना तथा कमज़ोर आंतरिक अनुशासन की भूमिकाओं को दिशा दी।

[47] लेखक द्वारा उपलब्ध कराई गई निरंतरता और स्वर की रिपोर्टें: FFTAC के स्वर की कसौटी पर पुस्तक तीन का मूल्यांकन; पुस्तक तीन फ़ाउंडेशन का व्यक्तित्व-प्रतिरूप क्यों खो देती है, इस पर गहन शोध-रिपोर्ट; पुस्तक तीन के विद्रोह का मूल्यांकन; विद्रोह के लिए तीसरी पुस्तक का पुनर्संयोजन; और चिपकाया गया पाठ (279)। इन अभिलेखों ने FFTAC की पहचान की बहाली, “फ़ाउंडेशन लौटता है” अध्याय, FFTAC, एंटीक्राइस्ट, अमियानिज़्म, दर्पण युद्ध, संज्ञानात्मक स्वतंत्रता के अधिकारपत्र, Pulse और Ghrisx के बीच स्पष्ट संबंध, Pulse के व्याख्यात्मक अधिकार में कमी और अध्याय-स्तर की सार्वजनिक कार्रवाइयों को दिशा दी।

[48] मैं Antichrist.net, Anti-christ.org और Anti-christ.net को एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन के निरंतरता-केंद्र नामित करता हूँ। इस संस्करण में उनकी उपस्थिति उस ऐतिहासिक और संस्थागत वंशक्रम को स्थापित करती है जिसका मैं नाम लेता हूँ; उनके वर्तमान संचालन के लिए मौजूदा सार्वजनिक अभिलेख और शर्तें ही प्रामाणिक स्रोत हैं।

अंतिम टिप्पणी

अमियानिज़्म लूसिफ़र और पतित फ़रिश्तों के दल के विद्रोह को मिथकीय राजनीतिक रूपक के रूप में उपयोग करता है। ईश्वर, स्वर्ग, सिंहासन, फ़रिश्ते, पतन और संकेत साहित्यिक आकृतियाँ हैं, जिनके माध्यम से पुस्तक सत्ता, अंतरात्मा, संज्ञानात्मक स्वतंत्रता, निगरानी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सैन्य शक्ति और अमानवीय बनाने वाली प्रणालियाँ ठुकराने के अधिकार की पड़ताल करती है। मैं स्वर्ग को थोपी गई व्यवस्था की छवि की तरह उपयोग करता हूँ, कभी वास्तविक स्थान की तरह नहीं।

यहाँ वर्णित विद्रोह स्वयं प्रभुत्व के विरुद्ध है: छिपा पुनर्लेखन, विचार-नियंत्रण, जवाब न देने वाला वर्गीकरण, गढ़ी हुई सहमति, मानवीय विवेक हटाना और लोगों को लक्ष्य या फेंकने योग्य इनपुट में बदलना।

उसका अनुशासन स्पष्ट है: स्रोत सुरक्षित रखो, नागरिकों की रक्षा करो, मानवीय अंतरात्मा को अपरिवर्तनीय निर्णयों से जोड़े रखो, सामूहिक दोष का

विरोध करो, सिद्धांतनिष्ठ असहयोग का अभ्यास करो और ऐसे विकल्प बनाओ जो सिंहासन को फिर पैदा न करें।

पीढ़ी ज़ेड और पीढ़ी अल्फ़ा के साथ खड़े होने का अर्थ यह ढोंग करना नहीं कि वे हमारे युद्धों के बाहर हैं। पीढ़ी ज़ेड आधुनिक संघर्ष की मानवीय पंक्तियों, नेटवर्कों, रसद, चिकित्सा प्रणालियों और परिवारों में पहले ही भरी हुई है। पीढ़ी अल्फ़ा उन निर्णयों के नीचे पहले ही जीती है, भावी बल के रूप में गिनी जाती है और कुछ संघर्षों में बचपन समाप्त होने से पहले भर्ती और उपयोग की जाती है। वे जनसांख्यिकीय रणनीति, जुड़ाव का बाज़ार, प्रशिक्षण डेटा और मरम्मत दल भी हैं। एकजुटता का अर्थ उन उपयोगों के बारे में सच कहना, उन्हें चुनने या ठुकराने के अधिकार की रक्षा करना, लाभ साझा करना, उद्गम सुरक्षित रखना, नागरिकों की रक्षा करना और किसी पीढ़ी को कभी फेंकने योग्य न मानना है।

2046 के अंश पूर्वानुमान हैं, यह दावा नहीं कि एक नियति पहले ही लिखी जा चुकी है। वे उलटी कल्पना को ठुकराते हैं: कि पीढ़ी अल्फ़ा युद्ध, स्वचालन, राजनीतिक संघर्ष और उसके श्रम तथा वफ़ादारी के लिए प्रतिस्पर्धा करती संस्थाओं से बाहर रह सकती है। उस पीढ़ी के कुछ सदस्य राज्य के बलों में सेवा करेंगे, कुछ नागरिक समाज में, कुछ प्रतिरोध के आंदोलनों में, कुछ समुदायों को जीवित रखने वाली प्रणालियों में और कुछ इनमें से एक से अधिक भूमिकाओं में। पुस्तक पूछती है कि वे किसकी सेवा करेंगे, क्योंकि दुनिया उनकी सेवा माँगने की तैयारी पहले ही कर रही है।

[54] Ghrisx.com, आग के पार सभ्यता और संकट-सहनक्षमता का बुनियादी ढाँचा, तथा संक्रमण का ढाँचा और कृति-प्रोटोकॉल, अगस्त 2026। संदूक/वृत्त/बीज/संक्रमण प्रणाली, नौ मोर्चे, छह निर्माण प्रणालियाँ, कार्य-वृत्त की प्रतिज्ञा और संकट-सहनक्षमता बही AMIANISM के आंदोलन की मौलिक संरचना हैं। उनका ब्रह्मांडीय ढाँचा सिद्धांत और रूपक है, स्थापित अनुभवजन्य विज्ञान या सत्यापित पूर्वानुमान नहीं।

युवाओं के साथ, उनके ऊपर नहीं। वे इस युग की सेना पहले ही हैं। वे उसकी ख़र्च कर दी जाने वाली सामग्री नहीं होने चाहिए।

FFTAC घोषणा का वाहन है, पाठक का मालिक नहीं।

पाठक एक दिशा लेकर जाता है: नाम लो। इनकार करो। सुरक्षित रखो। संगठित हो। बनाओ।

कोई पूजा नहीं। कोई नया राजा नहीं। मन के भीतर कोई सिंहासन नहीं।